तोहफ़ा गोलड़विय:

Tohfa Goladwiyyah

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

Tohfa Goladwiyyah

(in Hindi)

by

Hazrat Mirza Ghulam Ahmad

The Promised Messiah & Imam Mahdi[as]

तोहफ़ा गोलड़विय:

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : तोहफ़ा गोलड़विय:
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक : डाक्टर अन्सार अहमद, एम.ए., एम.फिल, पी एच,डी
पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
टाइप, सैटिंग : नादिया परवेज़ा
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) अप्रैल 2019 ई०
संख्या : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book : Tohfa Golarwiya
Author : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator : Docter Ansar Ahmad, M.A., M.Phil, Ph.D
P.G.D.T., Hons in Arabic
Type Setting : Nadiya Perveza
Edition : 1st Edition (Hindi) April 2019
Quantity : 1000
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian,
143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक 'तोहफ़ा गोलड़विय:' का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य,मुकर्रम सैयद मुहियुद्दीन फ़रीद,मुकर्रम इब्नुल महदी ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रिव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

तोहफ़ा गोलड़विय:

1896 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक अंजाम-ए-आथम में जिन गद्दी नशीनों को मुबाहले की दावत दी थी उनमें पीर मेहर अली शाह गोलड़वी का नाम भी था। मालूम होता है कि पीर साहिब पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में सुधारणा रखते हैं। अतः सन् 1896-1897 की बात है कि उनके एक मुरीद बाबू फ़ीरोज़ अली स्टेशन मास्टर गोलड़ा ने (जो बाद में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करके सिलसिले में सम्मिलित हो गए थे) जब पीर साहिब से हज़रत अक़्दस के बारे में राय पूछी तो उन्होंने अविलम्ब उत्तर दिया –

"इमाम जलालुद्दीन सुयूती रह. फरमाते हैं कि साधना की मंज़िलों के कुछ स्थान ऐसे हैं कि अधिकतर ख़ुदा के बन्दे वहां पहुंचकर मसीह-व-महदी बन जाते हैं। कुछ उनके समवर्ण हो जाते हैं। मैं यह नहीं कह सकता कि यह व्यक्ति साधना की मंजिलों (मनाज़िले सुलूक के पड़ावों) में उस स्थान पर है या वास्तव में वही महदी है जिस का वादा जनाव सरवर-ए-कायनात अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इस उम्मत से किया है। झूठे धर्मों के लिए यह व्यक्ति तेज़ तलवार का काम कर रहा है और निस्सन्देह समर्थन प्राप्त है।"

(अलहकम 24, जून 1904 पृष्ठ-5, कालम 2,3)

परन्तु इसके कुछ समय के पश्चात् आप विरोध के मैदान में आ गए और जनवरी 1900 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध उर्दू में 'शम्सुल हिदाय: फ़ी इस्बात हयातिल मसीह' नामक पुस्तक प्रकाशित की जो वास्तव में उनके एक मुरीद मौलवी मुहम्मद ग़ाज़ी की लिखी हुई थी जिसकी चर्चा भी उन्होंने अपने एक पत्र बनाम हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन[रज़ि॰] दिनांक 26 शवाल 1317 हिज्री तदनुसार 28 मार्च 1900 ई. में कर दी थी। जब उस पत्र की चर्चा हुई तो पीर साहिब ने अपने एक मुरीद (शिष्य) के प्रश्न पर ऐसा व्यक्त

किया कि जैसे उन्होंने यह पुस्तक स्वयं लिखी है। हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब[रज़ि॰] पीर साहिब की दो रंगी पर चुप न रह सके और आप ने 24, अप्रैल 1900 ई. के अख़बार 'अलहकम' में ये सभी पत्र प्रकाशित कर दिए। जिस पर उनके मुरीदों में अटकलें लगने लगीं और इधर मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही[रज़ि॰] ने 'शम्सुल हिदाया' का उत्तर "शम्से बाज़िग़:" के नाम से प्रकाशित कर दिया। चूंकि शम्सुल हिदाय: के अन्त में मुबाहसे की दावत भी दी गई थी, इसलिए मौलवी साहिब ने दिनांक 9, जुलाई 1900 ई. विज्ञापन द्वारा पीर साहिब को सूचना दे दी कि "मैं मुबाहसे के लिए तैयार हूं।"

(अलहकम 9, जुलाई 1900 ई.)

पीर साहिब का विरोध और फिर दोनों सदस्यों की ओर से तफ़्सीर लिखने के मुकाबले से संबंधित जो विज्ञापन प्रकाशित हुए आदर्णीय मौलवी दोस्त मुहम्मद साहिब ने उनका तारीख़-ए-अहमदियत में वर्णन किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 20 जुलाई 1900 ई. को सच और झूठ में अन्तर करने के लिए तफ़्सीर लिखने में ज्ञान की तुलना करने के लिए निमंत्रण दिया और फ़रमाया- लाहौर जो पंजाब की राजधानी है वहां एक जल्सा करके और पर्ची निकाल कर पवित्र क़ुर्आन की कोई सूरह निकाल कर दुआ करके चालीस आयतों की वास्तविकताएं तथा मआरिफ़ सरस एवं सुबोध अरबी भाषा में दोनों सदस्य ठीक उसी जल्से में सात घंटे के अन्दर लिख कर तीन विद्वानों के सुपुर्द कर दें जिनकी उपस्थिति एवं चयन का प्रबंध करना पीर मेहर अली शाह साहिब का दायित्व होगा।

पीर साहिब ने इस चेलेन्ज को शर्तों सहित स्वीकार तो न किया, हां तिथि और समय निर्धारित किए बिना चुपके से लाहौर पहुंच कर एक विज्ञापन प्रकाशित किया, जिसमें लिखा कि प्रथम हम क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों के अनुसार बहस करेंगे, उसमें यदि तुम पराजित हो जाओ तो हमारी बैअत कर लो इसके बाद हमें वह (तफ़्सीरी) चमत्कारिक मुकाबला भी स्वीकार है।

हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने पीर साहिब की इस छल से भरी चाल

का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि भला बैअत कर लेने के बाद चमत्कारिक मुक़ाबला करने के क्या मायने? और फ़रमाया उन्होंने मौखिक मुबाहसे का बहाना बना कर तफ़्सीरी मुकाबले से पलायन करने का मार्ग निकाला है और लोगों को यह धोखा दिया है कि जैसे वह मेरी दावत को स्वीकार करता है। हालांकि मैं अंजाम आथम में यह दृढ़ कर चुका हूं कि भविष्य में हम (मौखिक) मुबाहसे नहीं करेंगे। परनतु उन्होंने इस विचार से मौखिक बहस का निमंत्रण दिया कि "यदि वह मुबाहसा नहीं करेंगे तो हम जनता में विजय का डंका बजा देंगे और यदि मुबाहसा करेंगे तो कह देंगे कि इस व्यक्ति ने ख़ुदा तआला के साथ प्रतिज्ञा (अहद) करके तोड़ दिया।''

(देखो रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-17 के पृष्ठ 87 से 90 और पृष्ठ 454, 455 हाशिया पृष्ठ 448-450 उर्दू एडिशन)

वास्तव में न पीर साहिब ज्ञान संबंधी इतनी योग्यता रखते थे कि वह ऐसी तफ़्सीर लिखते और न ही उन्हें क्रियात्मक तौर पर मुकाबले में निकलने का साहस हुआ।

तोहफ़ा गोलड़विय: पुस्तक की रचना

इसी बीच में आपने तोहफ़ा गोलड़विया पुस्तक लिखी जिसमें आपने अपने दावे की सच्चाई के शक्तिशाली तर्क दिए और क़ुर्आन एवं हदीस के स्पष्ट आदेशों से सिद्ध किया कि आन वाले मसीह मौऊद का उम्मत-ए-मुहम्मदिया में से प्रकट होना आवश्यक था और उसके प्रकटन का यही युग था, जिसमें अल्लाह तआला ने मुझे अवतरित किया है।

तोहफ़ा गोलड़विय: लिखने का उद्देश्य

जैसा कि टायटल पेज पर लिखा है पीर मेहर अली शाह साहिब गोलड़वी और उनके मुरीदों तथा सहपंथियों पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो। जैसा कि "पचास रुपए के इनामी विज्ञापन" में लिखा है –

"मुझे ख़याल आया कि जन सामान्य जिन में स्वाभाविक तौर पर सोचने का तत्व कम होता है वे यद्यपि यह बात तो समझ लेंगे कि पीर साहिब सरस

अरबी भाषा में तफ़्सीर लिखने पर समर्थ नहीं थे इसी कारण से तो टाल दिया, परन्तु साथ ही उनको यह विचार भी आएगा कि वह पुस्तकीय मुबाहसों पर अवश्य समर्थ होंगे, तभी तो निवेदन प्रस्तुत कर दिया और अपने दिलों में सोचेंगे कि उनके पास हज़रत मसीह के जीवित रहने और मेरे तर्कों के खण्डन में कुछ तर्क हैं और यह तो मालूम नहीं होगा कि यह मौखिक मुबाहसे का साहस भी मेरी उस बहस के त्याग पर दृढ़ प्रतिज्ञा ने उनको दिलाया है जो अंजामे आथम में प्रकाशित हो कर लाखों लोगों में प्रसिद्ध हो चुकी है। इसलिए मैं यह पुस्तक लिख कर इस समय शरई सही इक़रार करता हूं कि यदि वह इस के मुकाबले पर कोई पुस्तक लिख कर मेरे उन समस्त तर्कों को प्रथम से अन्त तक तोड़ दे और फिर मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी बटाला में एक सभा आयोजित करके हम दोनों की उपस्थिति में मेरे समस्त तर्कों को दर्शकों के सामने एक-एक करके वर्णन करें और फिर प्रत्येक तर्क के मुकाबले पर जिसे वह बिना किसी कमी बेशी तथा परिवर्तन के दर्शकों को सुना दें तथा ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहें कि उत्तर सही है और प्रस्तुत किए गए तर्क का उन्मूलन करते हैं तो मैं पचास रुपए की राशि पीर साहिब की विजय पर उनको उसी सभा में दे दूंगा। .... परन्तु उन्होंने इनामी पुस्तक का उत्तर न दिया तो निस्सन्देह लोग समझ जाएंगे कि वह सीधे ढंग से मुबाहसों पर समर्थ नहीं।"

(तोहफ़ा गोलड़विय: रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 17, पृष्ठ-36, उर्दू एडिशन)

लिखने का समय

मेरे नज़दीक तोहफ़ा गोलड़विय: सन् 19000 ई. में लिखी गई। तोहफ़ा गोलड़विय: का प्रारंभिक परिशिष्ट (ज़मीमा) जो वास्तव में अरबईन न. 3 है वह सितम्बर से नवम्बर 1900 ई. के मध्यवर्ती समय की रचना है। क्योंकि अरबईन न. 2 जिसके अन्त में 27 सितम्बर 1900 ई. की तिथि लिखी है, उसके संबंध में हज़रत अक़्दस फ़रमाते हैं –

"अरबईन न. 2 के पृष्ठ 30 पर सभा के आयोजन की जो तिथि तय की

गई है अर्थात् 15 अक्टूबर 1900 ई. वह उस समय तय की गई थी जबकि हमने 7,अगस्त1900 ई. को लेख लिखकर कातिब के सुपुर्द किया था, परन्तु इसी बीच पीर मेहर अली शाह साहिब गोलड़वी के साथ विज्ञापन जारी हुए और पुस्तक तोहफ़ा गोलड़विय: के तैयार करने के कारण अरबईन न.2 का छपना स्थगित रहा। इसलिए हमारी राय में कथित समय सीमा अब अपर्याप्त है। अत: हम उचित समझते हैं कि 15, अक्टूबर के स्थान पर 25 दिसम्बर 1900 ई. निर्धारित कर दी जाए।" (यही जिल्द पृष्ठ-478 ज़मीमा अरबईन न. 3 तिथि 29 सितम्बर 1900 ई. के सन्दर्भ से)

इस से ज्ञात हुआ पुस्तक तोहफ़ा गोलड़विय: अगस्त 1900 ई. में हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम लिख रहे थे इसी प्रकार हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने दिनांक 15 दिसम्बर 1900 ई. जब पीर मेहर अली शाह साहिब गोलड़वी के सत्तर दिन में सूरह फ़ातिहा की सरस-सुबोध अरबी भाषा में तफ़्सीर लिखने के लिए निमंत्रण दिया तो उस समय फ़रमाया –

"15 दिसम्बर 1900 ई. से इस कार्य के लिए हम दोनों को सत्तर दिन की अवकाश है .... मैं इस कार्य को इन्शा अल्लाह तोहफ़ा गोलड़विय: को पूर्ण करने के पश्चात् आरंभ कर दूंगा।"

(तोहफ़ा गोलड़विय: रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 17, हाशिया पृष्ठ-450, उर्दू एडिशन)
अरबईन न. 4 के सन्दर्भ से)

अत: इसके अनुसार हज़रत अक़्दस की ओर से 23, फरवरी 1901 ई. को 'एजाज़ुल मसीह' के नाम पर सरस-सुबोध अरबी में सूरह फ़ातिहा की तफ़्सीर छप कर प्रकाशित हो गई.

(अलहकम 03, मार्च 1901 पृष्ठ-2, कालम-3 और अल हकम 11 मार्च सन् 1901 पृष्ठ-5 कालम-1)

इस से स्पष्ट है कि पुस्तक तोहफ़ा गोलड़विय: 'एजाज़ुल मसीह' लिखने से पहले तैयार हो चुकी थी। अत: निश्चित तौर पर स्वीकार करना पड़ता है कि तोहफ़ा गोलड़विय: पुस्तक लिखने का समय 1900 ई. है। यद्यपि उस के

प्रकाशित होने में विलम्ब हो गया हो और जिस प्रकार तिरयाक़ुल क़ुलूब छप कर पड़ी रही और अन्ततः एक-दो पृष्ठ 1902 ई. में लिख कर वह प्रकाशित कर दी गई। इसी प्रकार तोहफ़ा गोलड़विय: के संबंध में हुआ। अतः टायटल पेज पर उसके पृष्ठ 2 पर पचास रुपए का इनामी विज्ञापन 1902 ई. में लिखकर 1902 में प्रकाशित किया गया।

ख़ाकसार
जलालुद्दीन शम्स
रब्वाह 11, अक्टूबर 1965ई.

पचास रुपए का इनामी विज्ञापन

मैं चूंकि अपनी पुस्तक अंजाम आथम के अन्त में वादा कर चुका हूं कि भविष्य में किसी मौलवी इत्यादि के साथ मौखिक बहस नहीं करूंगा। इसलिए पीर मेहर अली साहिब का मौखिक बहस निवेदन जो मेरे पास पहुंचा मैं किसी प्रकार उसे स्वीकार नहीं कर सकता। अफ़सोस कि उन्होंने केवल धोखा देने के लिए इस जानकारी के बावजूद कि मैं ऐसी मौखिक बहसों से पृथक रहने के लिए जिनका परिणाम अच्छा नहीं निकला, ख़ुदा तआला के सामने वादा कर चुका हूं कि मैं ऐसे मुबाहसों से दूर रहूंगा, फिर भी मुझ से बहस करने का निवेदन कर दिया। मैं निस्सन्देह जानता हूं कि उनका यह निवेदन केवल उस शर्मिन्दगी से बचने के लिए है जो वह उस चमत्कारिक मुकाबले के समय जो अरबी में तफ़्सीर लिखने का मुक़ाबला था अपने बारे में विश्वास रखते थे कि मानो जनता के विचारों को किसी अन्य ओर उल्टा कर सफल हो गए और पर्दा बना रहा।

प्रत्येक दिल ख़ुदा के सामने है और हर एक सीना अपने गुनाह को महसूस कर लेता है परन्तु मैं सच्चाई की सहायता के कारण हरगिज़ नहीं चाहता कि यह झूठी सफलता भी उनके पास रह सके। इसलिए मुझे ख़याल आया कि जनता जिन में विचार करने का तत्त्व स्वाभाविक तौर पर कम होता है वे यद्यपि ये बात तो समझ लेंगे कि पीर साहिब सरस अरबी में तफ़्सीर लिखने पर समर्थ नहीं थे। इसी कारण से तो टाल दिया परन्तु साथ ही उनको यह विचार भी आएगा कि उदाहृत प्रमाणों द्वारा मुबाहसों पर वह अवश्य समर्थ होंगे तभी तो निवेदन प्रस्तुत कर दिया और अपने दिलों में सोचेंगे कि उनके पास हज़रत मसीह के जीवित रहने और मेरे तर्कों के खण्डन में कुछ सबूत हैं। और यह तो मालूम नहीं होगा कि यह मौखिक मुबाहसे का साहस भी मेरे ही मौखिक बहस के त्याग ने उनको दिलाया है, जो अंजाम-ए-आथम में प्रकाशित हो कर लाखों लोगों में प्रसिद्ध हो

चुका है। इसलिए मैं यह पुस्तक लिख कर इस समय शरई सही इक़रार करता हूं कि यदि वह इसके मुकाबले पर कोई पुस्तक लिख कर मेरे उन समस्त तर्कों का प्रारंभ से अन्त तक खण्डन कर दें और फिर अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी बटाला में एक सभा आयोजित करके हम दोनों की उपस्थिति में मेरे समस्त तर्कों को एक, एक करके दर्शकों के सामने वर्णन कर दें, फिर प्रत्येक सबूत के मुकाबले पर जिसको वह बिना किसी कमी बेशी और परिवर्तन के दर्शकों को सुना देंगे। पीर साहिब के उत्तरों को सुना दें और ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहें कि ये उत्तर सही हैं और प्रस्तुत तर्क का उन्मूलन करते हैं तो मैं पीर साहिब की विजय पर पचास रुपए बतौर इनाम उसी सभा में दे दूंगा, और यदि पीर साहिब लिख दें तो मैं यह पचास रुपए की राशि अग्रिम तौर पर मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के पास जमा कर दूंगा। परन्तु यह पीर साहिब का दायित्व होगा कि वह मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब को निर्देश दें ताकि वह पचास रुपए अपने पास बतौर अमानत रख कर नियमानुसार रसीद दे दें तथा उपरोक्त तथा कथित पद्धति की पाबंदी से क़सम खा कर उनको अधिकार होगा कि वह मेरी अनुमति के बिना पचास रुपए पीर साहिब को दे दें। क़सम खाने के बाद उन पर मेरी कोई शिकायत नहीं होगी, केवल ख़ुदा पर दृष्टि होगी जिसकी वह क़सम खाएंगे। पीर साहिब का यह अधिकार नहीं होगा कि यह बेकार बहाना प्रस्तुत करें कि मैंने पहले से खण्डन करने के लिए पुस्तक लिखी है। क्योंकि इनामी पुस्तक का उन्होंने उत्तर न दिया तो नि:संदेह लोग समझ जाएंगे कि वह सीधे ढंग से मुबाहसों पर भी समर्थ नहीं है।

विज्ञापन – मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान

1, सितम्बर 1902 ई०

परिशिष्ट तोहफ़ा गोलड़विय:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

رَبَّنَا افۡتَحۡ بَیۡنَنَا وَ بَیۡنَ قَوۡمِنَا بِالۡحَقِّ وَ اَنۡتَ خَیۡرُ الۡفَاتِحِیۡنَ

(अल आराफ़-९०)

हे हमारे ख़ुदा हम में और हमारी क़ौम में सच्चा फैसला कर और तू उचित फैसला करने वाला है।

आमीन

पांच सौ रुपए का इनामी विज्ञापन

हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब ज़िलेदार नहर के नाम तथा इसी प्रकार इस विज्ञापन में ये समस्त लोग भी सम्बोधित हैं जिन के नाम निम्नलिखित हैं।

मौलवी पीर मेहर अली शाह साहिब गोलड़वी, मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी, मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब भोपाली, मौलवी हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब भोपाली, मौलवी तलत्तुफ़ हुसैन साहिब देहलवी, मौलवी अब्दुल हक़ साहिब देहलवी लेखक तफ़्सीर हक़्क़ानी, मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही, मौलवी मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब देवबन्दी वर्तमान शिक्षक बछरायूं, ज़िला मुरादाबाद, शैख़ खलीलुर्रहमान साहिब जमाली सरसावा, ज़िला-सहारनपुर, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ साहिब लुधियाना, मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब लुधियाना, मौलवी अहमदुल्लाह साहिब अमृतसरी, मौलवी अब्दुल जब्बार साहिब ग़ज़नवी अमृतसरी, मौलवी

गुलाम रसूल साहिब उर्फ़ रुसुल बाबा, मौलवी अब्दुल्लाह साहिब टोंकी लाहौर, मौलवी अब्दुल्लाह साहिब चकड़ालवी लाहौर, डिप्टी फ़तहअली शाह साहिब डिप्टी कलक्टर नहर लाहौरी, मुंशी इलाही बख़्श साहिब एकाउन्टेन्ट लाहौर, मुंशी अब्दुलहक़ साहिब एकाउन्टेन्ट पेन्शनर, मौलवी मुहम्मद हसन साहिब अबुलफ़ैज़ निवासी भैं, मौलवी सय्यद उमर साहिब वाइज़ हैदराबाद, उलेमा नुदरतुल इस्लाम मारिफ़त मौलवी मुहम्मद अली साहिब सेक्रेटरी नदवतुल उलेमा, मौलवी सुल्तानुद्दीन साहिब जयपुर, मौलवी मसीहुज़्ज़मान साहिब उस्ताद निज़ाम हैदराबाद दकन, मौलवी अब्दुल वाहिद खान साहिब शाहजहांपुरी, मौलवी एजाज़ हुसैन ख़ान साहिब शाहजहांपुर, मौलवी रियासत अली ख़ान साहिब शाहजहांपुर, सय्यद सूफ़ी जानशाह साहिब मेरठ, मौलवी इस्हाक़ साहिब पटियाला, समस्त उलेमा कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास, हिन्दुस्तान के समस्त सज्जाद: नशीन-व-मशाइख, मुसलमानों के समस्त बुद्धिजीवी न्यायवान, संयमी तथा ईमानदार।

स्पष्ट हो कि हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब जिलेदार नहर ने अपने मोटी बुद्धि रखने तथा जानबूझ कर काम खराब करने वाले मौलवियों की शिक्षा से लाहौर में एक मज्लिस में जिसमें मिर्ज़ा ख़ुदा-बख़्श साहिब नवाब मुहम्मद अली खान साहिब के साथ और मियां मेराजुद्दीन साहिब लाहौरी, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, सूफ़ी मुहम्मद अली साहिब क्लर्क, मियां चट्टू साहिब लाहौरी, ख़लीफ़ा रजबुद्दीन साहिब व्यापारी लाहौरी, शैख़ याकूब अली साहिब एडीटर अखबार अलहकम, हकीम मुहम्मद हुसैन साहिब क़ुरैशी, हकीम मुहम्मद हुसैन साहिब व्यापारी मरहम-ए-ईसा, मियां चिराग़दीन साहिब कलर्क तथा मौलवी यार मुहम्मद साहिब उपस्थित थे। बड़े आग्रहपूर्वक यह वर्णन किया कि यदि कोई नबी, रसूल या कोई ख़ुदा की ओर से मामूर होने का झूठा दावा करे और इस प्रकार से लोगों को गुमराह करना चाहे तो वह झूठ गढ़ने के बाद तेईस वर्ष तक या इस से अधिक जीवित रह सकता है अर्थात् ख़ुदा पर झूठ बांधने के पश्चात् इतनी आयु पाना उसकी सच्चाई का तर्क नहीं हो सकता तथा वर्णन किया कि ऐसे कई लोगों का नाम मैं उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत कर सकता हूं जिन्होंने

नबी, रसूल या ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा किया और तेईस वर्ष तक या इससे अधिक समय तक लोगों को सुनाते रहे कि हम पर ख़ुदा का कलाम उतरता है, हालांकि वे झूठे थे। अत: हाफ़िज़ साहिब ने मात्र अपने अवलोकन (देखने) का हवाला देकर उपरोक्त दावे पर बल दिया, जिस से अनिवार्य होता था कि पवित्र क़ुर्आन का वह तर्क निम्नलिखित आयत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ुदा की ओर से होने के बारे में है सही नही है और जैसा ख़ुदा तआला ने सर्वथा वास्तविकता के विरुद्ध उस तर्क को ईसाइयों, यहूदियों तथा मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) के सामने प्रस्तुत किया है तथा जैसा कि इमामों और व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरीन) ने भी मात्र मूर्खता से इस तर्क को विरोधियों के सामने प्रस्तुत किया यहां तक कि 'शरह अक़ायद नसफ़ी' में भी जो अहले सुन्नत की आस्थाओं के बारे में एक पुस्तक है आस्था के रूप में इस तर्क को लिखा है और उलेमा ने इस बात पर भी सहमति की है कि क़ुर्आन का तिरस्कार या क़ुर्आन का तर्क कुफ़्र की बात है। परन्तु न मालूम कि हाफ़िज़ साहिब को किस पक्षपात ने इस बात पर तत्पर कर दिया कि क़ुर्आन के हाफ़िज़ होने के दावे के बावजूद निम्नलिखित आयतों को भूल गए और वे ये हैं

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۙ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ

(अलहाक़्क़: - 41 से 48)

इसका अनुवाद यह है – कि यह क़ुर्आन रसूल का कलाम है अर्थात् वह्यी के माध्यम से उसे पहुंचा है और यह शायर (कवि) का कलाम नहीं परन्तु चूंकि तुम्हें ईमान की दक्षता (फ़िरासत) से कम हिस्सा है, इसलिए तुम उसको पहचानते नहीं और यह ज्योतिषी का कलाम नहीं है अर्थात् उसका कलाम नहीं जो जिन्नों से कुछ संबंध रखता हो, किन्तु तुम्हें सोचने और विचार करने का बहुत

कम हिस्सा दिया गया है इसलिए ऐसा समझते हो। तुम नहीं सोचते कि काहिन (ज्योतिषी) किस अधम और अपमानित स्थिति में होते हैं अपितु यह समस्त लोकों के प्रतिपालक का कलाम (वाणी) है जो मर्त्यलोक (संसार) और परलोक दोनों का प्रतिपालक है अर्थात् जैसा कि वह तुम्हारे शरीरों को प्रशिक्षण देता है इसी प्रकार वह तुम्हारी रूहों (आत्माओं) को भी प्रशिक्षित करना चाहता है और इसी प्रतिपालन की मांग के कारण उसने इस रसूल को भेजा है और यदि यह रसूल कुछ अपनी ओर से बना लेता और कहता कि अमुक बात ख़ुदा ने मुझ पर वह्यी की है हालांकि वह कलाम उसका होता न ख़ुदा का तो हम उसका दायां हाथ पकड़ लेते और फिर उसकी सब से बड़ी रक्त की धमनी जो हृदय को जाती है काट देते और तुम में से कोई उसे बचा न सकता, अर्थात् यदि वह हम पर झूठ बांधता तो उसका दण्ड मृत्यु था क्यों कि वह इस स्थिति में अपने झूठे दावे से झूठ बांधने तथा कुफ्र की ओर बुलाकर गुमराही की मृत्यु से मारना चाहता तो उसका मरना उस दुर्घटना से उत्तम है कि समस्त संसार उसकी झूठ बनाई हुई शिक्षा से तबाह हो। इसलिए अनादिकाल से हमारा यही नियम है कि हम उसी को मार देते हैं जो संसार के लिए विनाश के मार्ग प्रस्तुत करता है तथा झूठी शिक्षा और झूठी आस्थाएं प्रस्तुत कर के ख़ुदा की प्रजा की रूहानी मृत्यु (आध्यात्मिक मृत्यु) चाहता है और ख़ुदा पर झूठ बांधकर घृष्टता करता है।

अब इन आयतों से बिल्कुल स्पष्ट है कि अल्लाह तआला आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई पर यह तर्क प्रस्तुत करता है कि यदि वह हमारी ओर से न होता तो हम उसे मार देते और वह कदापि जीवित न रह सकता यद्यपि तुम लोग उसके बचाने के लिए प्रयास भी करते। परन्तु हाफ़िज़ साहिब इस तर्क को नहीं मानते तथा कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह्यी सम्पूर्ण अवधि तेईस वर्ष की थी और मैं इस से अधिक अवधि तक के लोग दिखा सकता हूं, जिन्होंने नबी और रसूल के झूठे दावे किए थे और झूठ बोलने तथा ख़ुदा पर झूठ बांधने के बावजूद तेईस वर्ष से अधिक समय तक जीवित रहे। इसलिए हाफ़िज़ साहिब के निकट पवित्र क़ुर्आन का यह

तर्क असत्य और अधम है और इस से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत सिद्ध नहीं हो सकती, किन्तु आश्चर्य जब कि मौलवी रहमतुल्लाह साहिब (स्वर्गीय) और स्वर्गीय मौलवी सय्यद आले हसन साहिब ने अपनी पुस्तक 'इज़ाला औहाम' और 'इस्तिफ़्सार' में पादरी फण्डल के सामने यही तर्क प्रस्तुत किया था तो पादरी फण्डल साहिब को इस का उत्तर नहीं आया था और इसके बावजूद कि ये लोग इतिहास की छान-बीन करने में बहुत महारत रखते हैं परन्तु वह इस तर्क का खण्डन करने के लिए कोई उदाहरण प्रस्तुत न कर सका★ और निरुत्तर रह गया। और आज हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब मुसलमानों के सपूत कहला कर इस क़ुर्आनी तर्क से इन्कार करते हैं और यह मामला केवल मौखिक ही नहीं रहा अपितु इस बारे में एक ऐसी तहरीर हमारे पास मौजूद है जिस पर हाफ़िज़ साहिब के हस्ताक्षर हैं जो उन्होंने बिरादरम मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब को इस प्रतिज्ञा का इक़रार करते हुए दी है कि हम ऐसे झूठ बनाने वालों का प्रमाण देंगे जिन्होंने ख़ुदा के नबी या रसूल होने का दावा किया और फिर वे दावे के पश्चात् तेईस वर्ष से अधिक जीवित रहे। स्मरण रहे कि यह साहिब मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी के गिरोह में से हैं और बड़े एकेश्वरवादी प्रसिद्ध हैं। इन लोगों की आस्थाओं का बतौर नमूना यह हाल है जिसका हमने उल्लेख किया। यह बात किसी से गुप्त नहीं कि क़ुर्आन के प्रस्तुत तर्कों को झूठा कहना क़ुर्आन को झूठा कहना है। यदि पवित्र क़ुर्आन के एक तर्क को अस्वीकार किया जाए तो शान्ति भंग हो जाएगी और इस से अनिवार्य हो जाएगा कि क़ुर्आन के

★हाशिया :- पादरी फण्डल साहिब ने अपनी पुस्तक 'मीजानुल हक' में केवल यह उत्तर दिया था कि अवलोकन इस बात पर गवाह है कि संसार में कई करोड़ मूर्तिपूजक मौजूद हैं। परन्तु यह नितान्त बेकार उत्तर है क्यों कि मूर्ति पूजक लोग मूर्ति पूजा में अपने ख़ुदा की ओर से वह्यी आने का दावा नहीं करते। यह नहीं कहते कि ख़ुदा ने हमें आदेश दिया है कि मूर्ति-पूजा का संसार में प्रयास करो। वे लोग पथ-भृष्ट हैं न कि ख़ुदा पर झूठ बांधने वाले। यह बात विवादित बात से कुछ संबंध नहीं रखती अपितु एक चीज़ का दूसरी चीज़ पर बिना किसी अनुकूलता और समानता के अनुमान करना है क्योंकि बहस तो नुबुव्वत के दावे और ख़ुदा पर झूठ बांधने के बारे में है न केवल पथभ्रष्टता में। इसी से ।

समस्त तर्क जो एकेश्वरवाद (तौहीद) और रिसालत के प्रमाण में हैं सब के सब असत्य और अधम हों और आज तो हाफ़िज़ साहिब ने इस खण्डन के लिए यह बीड़ा उठाया कि मैं सिद्ध कर सकता हूं कि लोगों ने तेईस वर्ष तक या इस से अधिक नबी या रसूल होने के दावे किए और फिर जीवित रहे और कल शायद हाफ़िज़ साहिब यह भी कह दें कि क़ुर्आन का यह तर्क भी कि

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا (अलअंबिया - 23)

असत्य है और दावा करें कि मैं दिखा सकता हूं कि ख़ुदा के अतिरिक्त और भी कुछ ख़ुदा हैं जो सच्चे हैं परन्तु पृथ्वी और आकाश फिर भी अब तक मौजूद हैं। अत: ऐसे बहादुर हाफ़िज़ साहिब से सब कुछ प्रत्याशित (उम्मीद) है किन्तु एक ईमानदार व्यक्ति के शरीर पर एक कपकपी आरंभ हो जाती है जब कोई यह बात जीभ पर लाए कि अमुक बात जो क़ुर्आन में है वह वास्तविकता के विरुद्ध है या क़ुर्आन का अमुक तर्क असत्य है अपितु जिस बात में क़ुर्आन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर चोट पड़ती हो ईमानदार का काम नहीं कि उस अपवित्र पहलू को अपनाए और हाफ़िज़ साहिब की नौबत इस सीमा तक केवल इसलिए पहुंच गई है कि उन्होंने अपने कुछ पुराने साथियों के साथ के कारण मेरे ख़ुदा की ओर से होने के दावे का इन्कार करना उचित समझा और चूंकि झूठे को ख़ुदा तआला इसी दुनिया में अपराधी और लज्जित कर देता है। इसलिए हाफ़िज़ साहिब भी अन्य इन्कारियों की भांति ख़ुदा के इल्ज़ाम के नीचे आ गए तथा ऐसा संयोग हुआ कि एक मज्लिस में जिसकी हम ऊपर चर्चा कर आए हैं मेरी जमाअत के कुछ लोगों ने हाफ़िज़ साहिब के सामने यह तर्क प्रस्तुत किया कि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में एक नंगी तलवार की भांति यह आदेश देता है कि यह नबी यदि मुझ पर झूठ बोलता और किसी बात में झूठ बनाता तो मैं उसकी हृदय को रक्त ले जाने वाली धमनी काट देता और वह इतने लम्बे समय तक जीवित न रह सकता। अत: अब जब हम अपने इस मसीह मौऊद को इस पैमाने से नापते हैं तो बराहीन अहमदिया के देखने से सिद्ध होता है कि यह दावा ख़ुदा की ओर से होने तथा ख़ुदा से वार्तालाप का

दावा लगभग तीस वर्ष से है और इक्कीस वर्ष से बराहीन अहमदिया प्रकाशित है। फिर यदि इस अवधि तक इस मसीह का मृत्यु से अमन में रहना उसके सच्चे होने पर प्रमाण नहीं है तो इस से अनिवार्य होता है कि नऊज़ुबिल्लाह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तेईस वर्ष तक मृत्यु से सुरक्षित रहना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चा होने पर भी प्रमाण नहीं है, क्योंकि जबकि ख़ुदा तआला ने यहां एक झूठे तौर पर नबी का दावा करने वाले को तीस वर्ष तक ढील दी और

(अल हाक़्क़: - 45) لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا

के वादे का कुछ ध्यान न रखा तो इसी प्रकार नऊज़ुबिल्लाह यह भी अनुमान के निकट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी झूठा होने के बावजूद ढील दे दी हो, किन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का झूठा होना असंभव है। अत: जो बात असंभव को अनिवार्य करे वह भी असंभव है और स्पष्ट है कि यह क़ुर्आन का तर्क नितान्त स्पष्ट तभी ठहर सकता है जब कि वह व्यापक नियम (क़ाइद: कुल्लिय:) माना जाए कि ख़ुदा उस झूठ बनाने वाले को जो प्रजा को गुमराह करने के लिए ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा करता हो कभी ढील नहीं देता। क्योंकि इस प्रकार से उसकी बादशाहत में गड़बड़ी पड़ जाती है तथा सच्चे और झूठे में अन्तर जाता रहता है। अतएव जब मेरे दावे के समर्थन में यह तर्क प्रस्तुत किया गया तो हाफ़िज़ साहिब ने इस तर्क से बहुत इन्कार करके इस बात पर बल दिया कि झूठे का तेईस वर्ष तक या इस से अधिक जीवित रहना वैध (जायज़) है और कहा कि मैं वादा करता हूं कि मैं ऐसे झूठों का उदाहरण प्रस्तुत करूंगा जो रसूल होने का झूठा दावा करके तेईस वर्ष तक या इस से अधिक जीवित रहे हों। किन्तु अब तक कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया तथा जिन लोगों की इस्लाम की पुस्तकों पर दृष्टि है वे भली भांति जानते हैं कि आज तक उम्मत के उलेमा में से किसी ने यह आस्था प्रकट नहीं की कि कोई ख़ुदा पर झूठ बांधने वाला व्यक्ति आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भांति तेईस वर्ष तक जीवित रह सकता है

अपितु यह तो स्पष्ट तौर पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्मान पर प्रहार और नितान्त निरादर है तथा ख़ुदा तआला के प्रस्तुत तर्क का तिरस्कार है। हां उन का यह अधिकार था कि मुझ से इस का प्रमाण मांगते कि मेरे ख़ुदा का मामूर होने की अवधि तेईस वर्ष या अब तक उस से अधिक हो चुकी है या नहीं। किन्तु हाफ़िज़ साहिब ने मुझ से यह प्रमाण (सबूत) नहीं मांगा, क्योंकि हाफ़िज़ साहिब अपितु समस्त उलेमा-ए-इस्लाम तथा हिन्दू और ईसाई इस बात को जानते हैं कि बराहीन अहमदिया जिसमें यह दावा है और जिस में बहुत से ख़ुदा से हुए वार्तालाप लिखे हैं उसके प्रकाशित होने पर इक्कीस वर्ष गुज़र चुके हैं और उसी से स्पष्ट होता है कि ख़ुदा से वार्तालाप होने का यह दावा लगभग तीस वर्ष से प्रकाशित किया गया है तथा इल्हाम اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ जो मेरे पिता श्री के निधन पर एक अंगूठी पर खोदा गया था जो अमृतसर में एक मुहर बनाने वाले से खुदवाया गया था वह अंगूठी अब तक मौजूद है तथा वे लोग मौजूद हैं जिन्होंने तैयार करवाई तथा बराहीन अहमदिया मौजूद है जिसमें यह इल्हाम اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ लिखा गया है और जैसा कि अंगूठी से सिद्ध होता है यह भी छब्बीस वर्ष का समय है। अत: चूंकि यह तीस वर्ष तक का समय बराहीन अहमदिया से सिद्ध होता है जिसमें किसी इन्कार की गुंजायश नहीं और इसी बराहीन का मौलवी मुहम्मद हुसैन ने रेव्यू (समीक्षा) भी लिखा था। इसलिए हाफ़िज़ साहिब को यह सामर्थ्य तो न हुई कि इस बात का इन्कार करें जो इक्कीस वर्ष से बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो चुकी है, विवश होकर पवित्र क़ुर्आन के तर्क पर प्रहार कर दिया कि कहावत प्रसिद्ध है कि मरता क्या न करता। अत: हम इस विज्ञापन में हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब से वह उदाहरण मांगते हैं जिसे प्रस्तुत करने का उन्होंने अपनी हस्ताक्षर की हुई तहरीर में वादा किया है। हम निस्सन्देह जानते हैं कि क़ुर्आनी तर्क का कभी खण्डन नहीं हो सकता। यह ख़ुदा का प्रस्तुत किया हुआ तर्क है न कि किसी मनुष्य का। संसार में कई दुर्भाग्यशाली और अभागे आए और उन्होंने क़ुर्आन के इस तर्क का खण्डन करना चाहा किन्तु स्वयं ही संसार से कूच कर गए परन्तु यह तर्क टूट न सका।

हाफ़िज़ साहिब इल्म (ज्ञान) से अनभिज्ञ हैं, उनको ज्ञात नहीं कि हज़ारों प्रसिद्धि उलेमा और औलिया हमेशा इसी तर्क को काफ़िरों के सामने प्रस्तुत करते रहे और किसी ईसाई या यहूदी को सामर्थ्य नहीं हुई कि किसी ऐसे व्यक्ति का पता दे जिसने झूठे तौर पर ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा करके जीवन के तेईस वर्ष पूरे किए हों। फिर हाफ़िज़ साहिब की क्या वास्तविकता और क्या पूंजी है कि इस तर्क का खण्डन कर सकें। विदित होता है कि इसी कारण कुछ मूर्ख और नासमझ मौलवी मेरे मारने के लिए भांति-भांति के छल सोचते रहे हैं ताकि यह अवधि पूरी न होने पाए। जैसा कि यहूदियों ने नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह को रफ़ा से वंचित ठहराने के लिए सलीब का छल सोचा था ताकि उस से तर्क ग्रहण करें कि इसा बिन मरयम उन सच्चों में से नहीं है जिन का ख़ुदा की ओर रफ़ा होता रहा है। परन्तु ख़ुदा ने मसीह को वादा दिया कि मैं तुझे सलीब से बचाऊँगा और अपनी ओर तेरा रफ़ा करूँगा जैसा कि इब्राहीम और दूसरे पवित्र नबियों का रफ़ा हु। अत: इस प्रकार उन लोगों के मंसूबों के विरुद्ध ख़ुदा ने मुझे वादा दिया कि मैं तेरी आयु अस्सी वर्ष या दो-तीन वर्ष कम या अधिक करूंगा ताकि लोग आयु की कमी से झूठे होने का परिणाम निकाल सकें। जैसा कि यहूदी सलीब से रफ़ा न होने का परिणाम निकालना चाहते थे, और ख़ुदा ने मुझे वादा दिया कि मैं समस्त भयंकर रोगों से भी तुझे बचाऊंगा। जैसे कि अंधा होना, ताकि इस से भी कोई बुरा परिणाम न निकालें।★ ख़ुदा ने मुझे सूचना दी कि उनमें से कुछ लोग तेरे लिए बद-दुआएं भी करते रहेंगे किन्तु उनकी बद-दुआएं मैं उन पर ही डालूंगा। वास्तव में लोगों ने इस विचार से कि किसी प्रकार मुझे لَـوْ تَقَـوَّلَ के अन्तर्गत ले आएं योजनाएं बनाने में कुछ कमी नहीं की। कुछ

★हाशिया :- आंख के बारे में ख़ुदा का इल्हाम यह है –

تنزل الرحمة عَلٰى ثلٰث اَلْعَيْنُ وَعَلَى الْاٰخِرَيْنِ

अर्थात् तेरे तीन अंगों पर ख़ुदा की रहमत उतरेगी। प्रथम आंख तथा शेष दो और। इसी से।

मौलवियों ने क़त्ल के फ़त्वे दिए, कुछ मौलिवयों ने क़त्ल के झूठे मुक़द्दमें बनाने के लिए मेरे विरुद्ध गवाहियां दीं। कुछ मौलवी मेरी मृत्यु की झूठी भविष्यवाणियां करते रहे। कुछ मस्जिदों में मेरे मरने के लिए नाक रगड़ते रहे, कुछ ने जैसा कि मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी ने अपनी पुस्तक में और मौलवी इस्माईल अलीगढ़ी ने मेरे बारे में अटल आदेश लगाया कि यदि वह झूठा है तो हम से पहले मरेगा और अवश्य ही हम से पहले मरेगा क्योंकि झूठा है। किन्तु जब इन पुस्तकों को संसार में प्रकाशित कर चुके तो फिर अति शीघ्र स्वयं ही मर गए और इस प्रकार उनकी मृत्यु ने फ़ैसला कर दिया कि झूठा कौन था, परन्तु फिर भी यह लोग नसीहत ग्रहण नहीं करते। अत: क्या यह बहुत बड़ा चमत्कार नहीं है कि मुहियुद्दीन लखूके वाले ने मेरे बारे में मृत्यु का इल्हाम प्रकाशित किया वह स्वयं मर गया। मौलवी इस्माईल ने प्रकाशित किया, वह मर गया, मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर ने एक पुस्तक लिख कर अपनी मृत्यु से पहले मेरी मृत्यु हो जाने को बड़ी धूम धाम से प्रकाशित किया वह मर गया, पादरी हमीदुल्लाह पेशावरी ने मेरी मृत्यु के बारे में दस महीने का समय रख कर भविष्यवाणी प्रकाशित की वह मर गया, लेखराम ने मेरी मृत्यु के बारे में तीन साल की अवधि की भविष्यवाणी प्रकाशित की वह मर गया। यह इसलिए हुआ ताकि ख़ुदा तआला हर प्रकार से अपने निशानों को पूर्ण करे।

मेरे बारे में जो कुछ हमदर्दी क़ौम ने की है वह स्पष्ट है तथा ग़ैर क़ौमों का द्वेष एक स्वाभाविक बात है। इन लोगों ने मुझे तबाह करने का कौन सा पहलू प्रयोग नहीं किया, कष्ट पहुंचाने की कौन सी योजना है जो अन्तिम सीमा तक नहीं पहुंचाई। क्या बद-दुआओं में कोई कमी रही या क़त्ल के फ़त्वे अपूर्ण रहे, अथवा कष्ट और अपमान की योजनाएं यथा इच्छा प्रकटन में नहीं आईं। फिर वह कौन सा हाथ है जो मुझे बचाता है। यदि मैं झूठा होता तो होना तो यह चाहिए था कि ख़ुदा स्वयं मुझे मारने के लिए सामान पैदा करता न यह कि समय-समय पर लोग साधन पैदा करे और ख़ुदा उन साधनों को समाप्त करता

रहे।★ क्या झूठे की यही निशानियां हुआ करती हैं कि क़ुर्आन भी उसकी गवाही दे और आकाशीय निशान भी उसके समर्थन में उतरें और बुद्धि भी उसकी समर्थक हो। जो उसकी मृत्यु चाहते हों वे ही मरते जाएं। मैं कदापि विश्वास नहीं करता कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के पश्चात् किसी ख़ुदा रसीदा या सत्यनिष्ठ (अहलुल्लाह और अहले हक़) व्यक्ति के मुकाबले पर किसी विरोधी को ऐसी साफ़ और स्पष्ट पराजय तथा अपमान हुआ हो जैसा कि मेरे शत्रुओं को मेरे मुकाबले पर पहुंचा है। यदि उन्होंने मेरी इज़्ज़त पर प्रहार किया तो अन्ततः स्वयं ही अपामानित हुए और यदि मेरे प्राण पर आक्रमण करके यह कहा कि इस व्यक्ति के सत्य और झूठ की कसौटी यह है कि वह हम से पहले मरेगा और फिर स्वयं ही मर गए। मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर की पुस्तक तो दूर नहीं, पर्याप्त समय से छप कर प्रसारित हो चुकी है। देखो वह किस निर्भीकता से लिखता है कि हम दोनों मे से जो झूठा है वह पहले मरेगा और स्वयं ही मर

★हाशिया :- देखो मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी ने मुझे मिटाने के लिए क्या कुछ हाथ-पैर न मारे और केवल व्यर्थ बातें बना कर ख़ुदा से लड़ा और दावा किया कि मैंने ही ऊंचा किया और मैं ही गिराऊंगा, परन्तु वह स्वयं जानता है कि इन व्यर्थ बातों का अंजाम क्या हुआ। खेद कि उसने अपने उस वाक्य में स्पष्ट झूठ तो भूतकाल के बारे में बोला और एक भविष्य के बारे में झूठी भविष्यवाणी की। वह कौन था और क्या वस्तु था जो मुझे ऊंचा करता। यह मुझ पर ख़ुदा का उपकार है और उसके बाद किसी का भी उपकार नहीं। प्रथम उसने मुझे एक बड़े कुलीन (शरीफ़) खानदान में पैदा किया और माता-पिता की वंशावली के क्रम के प्रत्येक दाग़ से बचाया। तत्पश्चात् मेरे समर्थन में स्वयं खड़ा हुआ। खेद इन लोगों की हालत कहां तक जा पहुंची है कि ऐसी वास्तविकता के विरुद्ध बातें मुख पर लाते हैं जिन की कुछ भी वास्तविकता नहीं। सच तो यह है कि इस दुर्भाग्यशाली ने हर प्रकार से मुझ पर प्रहार किए और असफल एवं निराश रहा। लोगों को बैअत करने से रोका। परिणाम यह हुआ कि हज़ारों लोग मेरी बैअत में सम्मिलित हो गए। मार डालने के लिए अग्रसर होना (इक़्दामे क़त्ल) के झूठे मुकद्दमें में पादरियों का गवाह बन कर मेरे सम्मान पर प्रहार किया,किन्तु उसी समय कुर्सी मांगने से अपनी नीयत का फल पा लिया। मेरे व्यक्तिगत मामले में गन्दे विज्ञापन दिए। उनका उत्तर ख़ुदा ने पहले से दे रखा है, मेरे वर्णन की आवश्यकता नहीं। इसी से

गया इस से स्पष्ट है कि जो लोग मेरी मृत्यु के अभिलाषी थे और उन्होंने ख़ुदा से दुआएं कीं हम दोनों में से जो झूठा है वह पहले मरे। अन्ततः वे मर गए। न एक न दो अपितु पांच व्यक्तियों ने ऐसा ही कहा और इस संसार को छोड़ गए। इसका परिणाम वर्तमान मौलवियों के लिए जो मुहम्मद हुसैन बटालवी और मौलवी अब्दुल जब्बार ग़ज़नवी फिर अमृतसरी और अब्दुल हक़ ग़ज़नवी फिर अमृतसरी और मौलवी पीर महर अली शाह गोलड़वी और रशीद अहमद गंगोही और नज़ीर हुसैन देहलवी, रुसुल बाबा अमृतसरी, मुंशी इलाही बख़्श साहिब एकाउन्टेण्ट, हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ ज़िलेदार नहर इत्यादि के लिए यह तो न हुआ कि इस स्पष्ट चमत्कार से ये लोग फायदा उठाते और ख़ुदा से डरते और तौबः करते। हां इन लोगों की इन कुछ नमूनों के बाद कमरें टूट गईं और इस प्रकार के लिखने से भयभीत हो गए।

فَلَنْ يَّكْتُبُوْا بِمِثْلَ هٰذا بِمَا تَقَدَّمَتِ الْاَمْثَالُ

यह चमत्कार कुछ कम न था कि जिन लोगों ने फ़ैसला का आधार झूठे की मृत्यु रखी था वे मेरे मरने से पहले क़ब्रों में जा सोए। मैंने डिप्टी आथम के मुबाहसे (शास्त्रार्थ) में लगभग साठ लोगों के समक्ष यह कहा था कि हम दोनों मे से जो झूठा है वह पहले मरेगा। अतः आथम भी अपनी मौत से मेरी सच्चाई की गवाही दे गया। मुझे उन लोगों की परिस्थितियों पर दया आती है कि सत्य को छिपाने के कारण इन लोगों की नौबत कहां तक पहुंच गई है। यदि कोई निशान भी मांगे तो कहते हैं कि यह दुआ करो कि हम सात दिन में मर जाएं। जानते नहीं कि ख़ुदा लोगों के स्वयं निर्मित मापदण्डों का अनुकरण नहीं करता। उसने कह दिया है कि

لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ط (बनी इस्राईल-37)

और उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाया कि

وَ لَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا (अल-कहफ़ -24)

अतः जब कि सय्यिदिना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन की अवधि अपनी ओर से प्रस्तुत नहीं कर सकते तो मैं सात दिन का दावा

कैसे करूं। इन मूर्ख अत्याचारियों से मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर अच्छा रहा कि उसन अपनी पुस्तक में कोई समय सीमा नहीं लगाई। यही दुआ की कि हे मेरे ख़ुदा यदि मैं मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी को झूठा कहने में सत्य पर नहीं हूं तो मुझे पहले मौत दे और यदि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अपने दावे में सत्य पर नहीं तो उसे मुझ से पहले मौत दे। तत्पश्चात् ख़ुदा ने उसे बहुत शीघ्र मृत्यु दे दी, देखो कैसा सफाई से फैसला हो गया। यदि किसी को इस फैसले के मानने में संकोच हो तो उसे अधिकार है कि स्वयं ख़ुदा के फैसले को आज़माए। परन्तु ऐसी शरारतें त्याग दे जो आयत -

وَ لَا تَقُوۡلَنَّ لِشَایۡءٍ اِنِّیۡ فَاعِلٌ ذٰلِکَ غَدًا (अलकहफ़ - 24)

के विरुद्ध हैं। शरारत के तौर पर वाद-विवाद करने से बेईमानी की गंध आती है। इसी प्रकार मौलवी मुहम्मद इस्माईल ने सफ़ाई से ख़ुदा तआला के आगे यह विनती की कि हम दोनों सदस्यों में से जो झूठा है वह मर जाए। अत: ख़ुदा ने उसे भी शीघ्र ही इस संसार से रुख़सत कर दिया और इन मृत्यु प्राप्त मौलवियों का ऐसी दुआओं के बाद मर जाना एक ख़ुदा से डरने वाले मुसलमान के लिए तो पर्याप्त है परन्तु एक अपवित्र एवं बेरहम हृदय रखने वाले भौतिकवादी (दुनिया परस्त) व्यक्ति के लिए कदापि पर्याप्त नहीं। भला अलीगढ़ तो बहुत दूर है और शायद पंजाब के कई लोग मौलवी इस्माईल के नाम से भी परिचित होंगे, किन्तु क़सूर ज़िला - लाहौर तो दूर नही तथा हज़ारों लाहौर वाले मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी को जानते होंगे और उसकी यह पुस्तक भी उन्होंने पढ़ी होगी तो क्यों ख़ुदा से नहीं डरते, क्या मरना नहीं? क्या ग़ुलाम दस्तगीर की मौत में भी लेखराम की मौत की भांति षड्यंत्र का इल्ज़ाम लगाएंगे। ख़ुदा के झूठों पर न एक पल लिए लानत है अपितु प्रलय तक लानत है, क्या दुनिया के कीड़े मात्र षडयंत्र एवं योजना से पवित्र मामूरों की भांति कोई ठोस भविष्यवाणी कर सकते हैं। एक चोर चोरी करने के लिए जाता है, उसे क्या पता कि वह चोरी में सफल हो या गिरफ़्तार हो कर जेल में जाए। फिर वह दुनिया और शत्रुओं के सामने अपनी सफलता की बड़ी धूम-धाम से क्या भविष्यवाणी करेगा। उदाहरणतया देखो कि

ऐसी ज़ोरदार भविष्यवाणी जो लेखराम के क़त्ल किए जाने के बारे में थी जिसके साथ दिन, तिथि, समय वर्णन किया गया था, क्या किसी उद्दण्ड, दुराचारी हत्यारे का काम है। अत: इन मौलवियों की समझ पर कुछ ऐसे पत्थर पड़ गए है कि किसी निशान से फ़ायदा नहीं उठाते। बराहीन अहमदिया में लगभग सोलह वर्ष पूर्व वर्णन किया गया था कि ख़ुदा तआला मेरे समर्थन में चन्द्र और सूर्य ग्रहण का निशान प्रकट करेगा, किन्तु जब वह निशान प्रकट हो गया और हदीस की पुस्तकों से भी स्पष्ट हो गया कि यह एक भविष्यवाणी थी कि महदी की साक्ष्य के लिए उसके प्रादुर्भाव के समय में रमज़ान में चन्द्र और सूर्य-ग्रहण होगा तो इन मौलवियों ने इस निशान को भी बरबाद कर दिया और हदीस से मुख फेर लिया। हदीसों में यह भी आया था कि मसीह के समय में ऊंट त्याग दिए जाएंगे और पवित्र क़ुर्आन में भी आया था कि

(अत्तक्वीर - 5) وَ اِذَا الۡعِشَارُ عُطِّلَتۡ

अब ये लोग देखते हैं कि मक्का और मदीना में बड़ी तन्मयता से रेल तैयार हो रही है और ऊंटों को अलविदा कहने का समय आ गया, फिर भी इस निशान से कुछ फ़ायदा नहीं उठाते। यह भी हदीसों में था कि मसीह मौऊद के समय में पुश्छल सितारा निकलेगा। अब अंग्रेज़ों से पूछ लीजिए कि बहुत समय हुआ कि वह सितारा निकल चुका। हदीसों में यह भी था कि मसीह के समय में ताऊन (प्लेग) पड़ेगी, हज रोका जाएगा। अत: ये समस्त निशान प्रकट हो गए। अब यदि उदाहरण के तौर पर मेरे लिए आकाश पर चन्द्र और सूर्य-ग्रहण नहीं हुआ तो किसी और महदी को पैदा करें जो ख़ुदा के इल्हाम से दावा करता हो कि मेरे लिए हुआ है। अफ़सोस इन लोगों की हालतों पर कि इन लोगों ने ख़ुदा और रसूल के कथनों का कुछ भी सम्मान न किया और सदी (शताब्दी) पर भी सत्रह 17 वर्ष गुज़र गए किन्तु उन का मुजद्दिद अब तक किसी गुफ़ा में छिपा बैठा है। ये लोग मुझ से क्यों कंजूसी करते हैं। यदि ख़ुदा न चाहता तो मैं न आता। कभी-कभी मेरे हृदय में यह विचार भी आया कि मैं विनती करूं कि ख़ुदा मुझे इस पद से पृथक करे और मेरे स्थान पर किसी और को इस सेवा से विभूषित

कर, परन्तु साथ ही मेरे हृदय में यह डाला गया कि इस से बढ़ कर औऱ कोई बड़ा पाप नहीं कि मैं सुपुर्द की गई सेवा से कायरता प्रकट करूं। मैं जितने पीछे हटना चाहता हूं ख़ुदा तआला उतना ही खींचकर मुझे आगे ले आता है। मुझ पर ऐसी कोई रात कम गुज़रती है जिस में मुझे यह तसल्ली नहीं दी जाती कि मैं तेरे साथ हूं और मेरी आकाशीय सेनाएं तेरे साथ हैं। यद्दपि जो लोग हृदय के पवित्र हैं मरने के पश्चात् ख़ुदा को देखेंगे। परन्तु मुझे उसी के मुख की क़सम है कि मैं अब भी उसको देख रहा हूं। दुनिया मुझे नहीं पहचानती किन्तु वह मुझे जानता है जिसने मुझे भेजा है। यह उन लोगों की ग़लती है और सर्वथा दुर्भाग्य है कि मेरा विनाश चाहते हैं। मैं वह वृक्ष हूं जिसे सच्चे मालिक ने अपने हाथ से लगाया है। जो व्यक्ति मुझे काटना चाहता है उसका परिणाम इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि वह क़ारून और यहूदा इस्क्रयूती तथा अबू जहल के भाग्य से कुछ हिस्सा लेना चाहता है। इस बात के लिए प्रतिदिन मेरी आंखों में आंसू रहते हैं कि कोई मैदान में निकले और नुबुव्वत के ढंग पर मुझ से फ़ैसला करना चाहे फिर देखे कि ख़ुदा किसके साथ है। किन्तु मैदान में निकलना किसी नपुंसक का काम नहीं। हां ग़ुलाम दस्तगीर हमारे देश पंजाब में कुफ्र की सेना का एक सिपाही था जो काम आया। अब इन लोगों में से उसके समान भी कोई निकलना दुष्कर और असंभव है। हे लोगो! तुम निश्चय समझ लो कि मेरे साथ वह हाथ है जो अन्तिम समय तक मुझ से वफ़ा करेगा। यदि तुम्हारे पुरुष, और तुम्हारी स्त्रियां, तुम्हारे जवान और तुम्हारे बूढ़े, तुम्हारे छोटे और तुम्हारे बड़े सब मिलकर मुझे मारने के लिए दुआएं करें, यहां तक सज्दे करते-करते नाकें गल जाएं और हाथ शिथिल हो जाएं तब भी ख़ुदा तुम्हारी दुआ कदापि नहीं सुनेगा और नहीं रुकेगा जब तक वह अपने काम को पूरा न कर ले और यदि मनुष्यों में से एक मनुष्य भी मेरे साथ न हो तो ख़ुदा के फ़रिश्ते मेरे साथ होंगे और यदि तुम गवाही को छिपाओ तो निकट है कि पत्थर मेरे लिए गवाही दें। अत: अपने प्राणों पर अत्याचार मत करो। झूठों के मुंह और होते हैं तथा सच्चों के और। ख़ुदा किसी बात को निर्णय (फैसला) के बिना नहीं छोड़ता। मैं उस जीवन पर लानत भेजता हूं जो झूठ और झूठ गढ़ने के साथ हो

तथा उस स्थिति पर भी कि प्रजा से भयभीत होकर स्रष्टा के आदेश से पृथकता की जाए। वह सेवा जो यथासमय सामर्थ्यवान ख़ुदा ने मेरे सुपुर्द की है और इसी के लिए मुझे पैदा किया है। कदापि संभव नहीं कि मैं उसमें सुस्ती करूं, यद्यपि सूर्य एक ओर से और पृथ्वी दूसरी ओर परस्पर मिलकर कुचलना चाहें। मनुष्य क्या है मात्र एक कीड़ा और इन्सान क्या है मात्र एक मांस का लोथड़ा। अत: मैं जीवित रहने तथा क़ायम रहने वाले ख़ुदा के आदेश एक कीड़े या माँस के लोथड़े के लिए क्योंकर टाल दूं। जिस प्रकार ख़ुदा ने पहले मामूरों और झुठलाने वालों में अन्तत: एक दिन निर्णय कर दिया इसी प्रकार वह इस समय भी निर्णय करेगा। ख़ुदा के मामूरों के आने के लिए भी एक मौसम होते हैं और फिर जाने के लिए भी एक मौसम। अत: निश्चित समझो कि मैं न बे मौसम आया हूं और न बे मौसम जाऊंगा। ख़ुदा से मत लड़ो! यह तुम्हारा काम नहीं कि मुझे तबाह कर दो।

अब इस विज्ञापन से मेरा उद्देश्य यह है कि जिस प्रकार ख़ुदा तआला ने और निशानों में विरोधियों पर ऐतिराज़ की गुंजायश नहीं छोड़ी है।★इसी प्रकार मैं चाहता हूं कि आयत لَوْ تَقَوَّلَ के बारे में भी ऐतिराज़ की गुंजायश न छोड़ी जाए।

★हाशिया :- इस युग के कुछ मूर्ख कई बार पराजित होकर फिर मुझ से हदीसों की दृष्टि से बहस करना चाहते हैं या बहस कराने के इच्छुक होते हैं किन्तु खेद कि नहीं जानते कि जिस स्थिति में वे अपनी कुछ ऐसी हदीसों को छोड़ना नहीं चाहते जो केवल भ्रमों, अनुमानों का भण्डार तथा मजरूह और संदिग्ध हैं तथा उनके विपरीत अन्य हदीसें भी हैं और क़ुर्आन भी उन हदीसों को झूठी ठहराता है तो फिर मैं ऐसे स्पष्ट सबूत को क्योंकर छोड़ सकता हूं जिस का एक ओर पवित्र क़ुर्आन समर्थन करता है तथा एक ओर उसकी सच्चाई की सही हदीसें साक्षी हैं और एक ओर ख़ुदा का वह कलाम साक्षी (गवाह) है जो मुझ पर उतरता है और एक ओर पहली किताबें गवाह हैं और एक ओर बुद्धि गवाह है और एक ओर वे सैकड़ों निशान गवाह हैं जो मेरे हाथ से प्रकट हो रहे हैं। अत: हदीसों की बहस फैसले का मार्ग नहीं हैं। ख़ुदा ने मुझे सूचना दे दी है कि ये समस्त हदीसें जो प्रस्तुत करते हैं शब्दों तथा अर्थों की दृष्टि से अक्षरांतरण से लिप्त हैं और या सिरे से ही बनावटी हैं। और जो व्यक्ति हकम (निर्णायक) हो कर आया है उसका अधिकार है कि हदीसों के भण्डार में से जिस ढेर को चाहे ख़ुदा से ज्ञान पाकर स्वीकार करे और जिस ढेर को चाहे ख़ुदा से ज्ञान पाकर अस्वीकार करे। इसी से।

इसी पहलू से मैंने इस विज्ञापन को पांच सौ रुपए के इनाम के साथ प्रकाशित किया है और यदि संतुष्टि न हो तो मैं यह रुपया किसी सरकारी बैंक में जमा करा सकता हूं। यदि हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब और उनके अन्य साथी जिन के नाम मैंने इस विज्ञापन में लिखे हैं अपने इस दावे में सच्चे हैं अर्थात् यदि यह बात सही है कि कोई व्यक्ति नबी या रसूल और ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा कर के तथा खुले खुले तौर पर ख़ुदा के नाम पर लोगों को बातें सुना कर फिर झूठा होने के बावजूद निरन्तर तेईस वर्ष तक जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह्यी का युग है जीवित रहा है तो मैं ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करने वाले को इस के पश्चात् कि मुझे मेरे सबूत के अनुसार या क़ुर्आन के सबूत के अनुसार सबूत दे दे पांच सौ रुपया नक़द दूंगा और यदि ऐसे लोग कई हों तो उन का अधिकार होगा कि वे रुपया परस्पर बांट लें। इस विज्ञापन के निकलने की तिथि से पन्द्रह दिन तक उनको छूट है कि दुनिया में तलाश करके ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करें। खेद का स्थान है कि मेरे दावे के बारे में जब मैंने मसीह मौऊद होने का दावा किया, विरोधियों ने न आकाशीय निशानों से फ़ायदा उठाया और न ज़मीनी निशानों से कुछ मार्ग-दर्शन प्राप्त किया। ख़ुदा ने प्रत्येक पहलू से निशान प्रकट किए परन्तु सांसारिक पुत्रों ने उनको स्वीकार न किया। अब ख़ुदा की और उन लोगों की एक कुश्ती है। अर्थात् ख़ुदा चाहता है कि अपने बन्दे की जिसे उसने भेजा है प्रकाशमान तर्कों एवं निशानों के साथ सच्चाई प्रकट करे तथा ये लोग चाहते हैं कि वह तबाह हो, उस का अंजाम बुरा हो और वह उनकी आंखों के सामने तबाह (मरे) हो और उसकी जमाअत बिखरे तथा समाप्त हो। तब ये लोग हंसें और प्रसन्न हों और उन लोगों को उपहासपूर्वक देखें जो इस सिलसिले के समर्थन में थे और अपने दिल को कहें कि तुझे मुबारक हो कि आज तू ने अपने शत्रु को तबाह होते देखा और उसकी जमाअत को अस्त-व्यस्त होते देख लिया। किन्तु क्या उनकी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाएंगी और क्या ऐसा प्रसन्नता का दिन उन पर आएगा? इस का यही उत्तर है कि यदि उन के समान लोगों पर आया था तो उन पर भी आएगा। अबू जहल ने जब बद्र के युद्ध में

यह दुआ की थी कि –

اللّٰھُمَّ مَنْ کَانَ مِنَّا کَاذِباً فَأَحنه فی ھٰذا الموطن

अर्थात् हे ख़ुदा हम दोनों में से (जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मैं हूं) जो व्यक्ति तेरी दृष्टि में झूठा है उसे इसी युद्ध के मैदान में मार दे। तो क्या इस दुआ के समय उसे कल्पना थी कि मैं झूठा हूं? और जब लेखराम ने कहा कि मेरी भी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की मौत के बारे में ऐसी ही भविष्यवाणी है जैसा कि इसकी और मेरी भविष्यवाणी पहले पूरी हो जाएगी और वह मरेगा★ तो क्या उसे उस समय अपने बारे में कल्पना थी कि मैं झूठा हूं? अत: इन्कार करने वाले तो संसार में होते हैं पर बड़ा दुर्भाग्यशाली वह इन्कार करने वाला है जो मरने से पहले मालूम न कर सके कि मैं झूठा हूं। अत: क्या ख़ुदा पहले इन्कार करने वालों के समय में सामर्थ्यवान था और अब नहीं? नऊज़ुबिल्लाह ऐसा कदापि नहीं अपितु प्रत्येक जो जीवित रहेगा और देख लेगा कि अन्तत: ख़ुदा विजयी होगा। **दुनिया में एक नज़ीर (सर्तक करने वाला या डराने वाला) आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया, लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।** वह ख़ुदा का शक्तिशाली हाथ ज़मीनों और आसमानों और उन सब वस्तुओं को जो उन में हैं थामे हुए है वह इन्सान के इरादों से कब पराजित हो सकता है। अन्तत: एक दिन आता है जब वह फैसला करता है। अत: सच्चों की यही निशानी है कि अंजाम उन्हीं का होता है। ख़ुदा अपनी झलकियों के साथ उनके हृदय पर उतरता है। अत: वह इमारत क्योंकर ध्वस्त हो सके जिसमें वह सच्चा बादशाह विराजमान

★**हाशिया :-** इसी प्रकार जब मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी ने पुस्तक लिख कर सम्पूर्ण पंजाब में प्रसिद्ध कर दिया था कि मैंने फैसले का यह उपाय ठहरा दिया है कि हम दोनों में से जो झूठा है वह पहले मर जाएगा। तो क्या उस को ख़बर थी कि यही फ़ैसला उसके लिए लानत का निशान हो जाएगा और वह पहले मर कर दूसरे सहपंथियों का भी मुंह काला करेगा और भविष्य में ऐसे मुक़ाबलों में उन के मुख पर मुहर लगा देगा तथा कायर बना देगा। इसी से।

है। जितना चाहो ठट्ठा करो जितनी चाहो गालियाँ दो तथा जितना चाहा दु:ख एवं कष्ट देने की योजनाएं बनाओ, जितना चाहो मुझे मिटाने के लिए हर प्रकार की युक्तियां और छल-कपट सोचो, फिर स्मरण रखो कि ख़ुदा शीघ्र ही तुम्हें दिखा देगा कि उसका हाथ विजयी है। मूर्ख कहता है कि मैं अपनी योजनाओं से विजयी हो जाऊंगा परन्तु ख़ुदा कहता है कि हे लानती! देख मैं तेरी समस्त योजनाएं मिट्टी में मिला दूंगा। यदि ख़ुदा चाहता तो इन विरोधी मौलवियों तथा उनके अनुयायियों को आंखें प्रदान करता और वे उन समयों और मौसमों को पहचान लेते जिन में ख़ुदा के मसीह का आना आवश्यक था किन्तु अवश्य था कि पवित्र क़ुर्आन तथा हदीसों की वे भविष्यवाणियां पूरी होतीं जिन में लिखा था कि जब मसीह मौऊद प्रकट होगा तो इस्लामी उलेमा के हाथों से कष्ट उठाएगा, वे उसे काफ़िर ठहराएंगे तथा उसके क़त्ल के लिए फ़त्वे दिए जाएंगे और उसका घोर अपमान किया जाएगा, उसे इस्लाम के दायरे से बाहर और धर्म का विनाश करने वाला समझा जाएगा। अत: इन दिनों में वह भविष्यवाणी इन्हीं मौलवियों ने अपने हाथों से पूरी की। खेद ये लोग सोचते नहीं कि यदि यह दावा ख़ुदा के आदेश और इच्छा से नहीं था तो क्यों इस दावेदार में सच्चे और पवित्र नबियों की भांति सच्चाई के बहुत से प्रमाण एकत्र हो गए, क्या वह रात उनके लिए मातम (मृत्यु-शोक) की रात नहीं थी जिसमें मेरे दावे के समय रमज़ान में चन्द्र और सूर्य-ग्रहण बिल्कुल भविष्यवाणी की तिथियों में लगा। क्या वह दिन उन पर संकट का दिन नहीं था जिसमें लेखराम के बारे में भविष्यवाणी पूरी हुई? ख़ुदा ने वर्षा की भांति निशान बरसाए किन्तु इन लोगों ने आंखें बन्द कर लीं ताकि ऐसा न हो कि देखें और ईमान लाएं। क्या यह सच नहीं कि यह दावा अनुचित समय पर नहीं अपितु ठीक सदी के सर पर और बिल्कुल आवश्यकता के दिनों में प्रकट हुआ तथा यह बात अनादिकाल से और जब से आदम की औलाद पैदा हुई ख़ुदा का नियम है कि महान सुधारक सदी के सर पर तथा ठीक आवश्यकता के समय में आया करते हैं, जैसा कि हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बाद सातवीं सदी के सर पर

जबकि समस्त संसार अंधकार में पड़ा था प्रादुर्भाव हुआ और जब सात को दोगुना किया जाए तो चौदह होते हैं अतः चौदहवीं सदी का सर मसीह मौऊद के लिए निश्चित था ताकि इस बात की ओर संकेत हो कि कौमों में जितना अधिक बिगाड़ और खराबी हज़रत मसीह के युग के पश्चात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग तक उत्पन्न हो गयी थी उस बिगाड़ से वह बिगाड़ दोगुना है जो मसीह मौऊद के युग में होगा और जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं ख़ुदा तआला ने एक बड़ा नियम जो पवित्र क़ुर्आन में क़ायम किया था तथा उसी के साथ ईसाइयों और यहूदियों पर हुज्जत कायम की थी यह था कि ख़ुदा तआला उस झूठे को जो नबी, रसूल और ख़ुदा की ओर से मामूर होने का झूठा दावा करे ढील नहीं देता मार डालता है। अतः हमारे विरोधी मौलवियों की यह कैसी ईमानदारी है कि मुख से पवित्र क़ुर्आन पर ईमान लाते हैं परन्तु उसके प्रस्तुत किए हुए तर्कों को अस्वीकार करते हैं। यदि वे पवित्र क़ुर्आन पर ईमान लाकर उसी नियम को मेरे सच्चे या झूठे होने की कसौटी ठहराते तो शीघ्र ही सच्चाई को पा लेते किन्तु मेरे विरोध के लिए अब वे पवित्र क़ुर्आन के उस नियम को भी नहीं मानते और कहते है कि यदि कोई ऐसा दावा करे कि मैं ख़ुदा का नबी या रसूल या ख़ुदा की ओर से मामूर हूं जिस से ख़ुदा वार्तालाप (बातचीत) करके अपने बन्दों के सुधार के लिए समय-समय पर सीधे मार्ग की वास्तविकताएं उस पर प्रकट करता है तथा उस दावे पर तेईस 23 या पच्चीस 25 वर्ष गुज़र जाएं अर्थात् वह समय सीमा गुज़र जाए जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की थी और उस व्यक्ति की उस समय सीमा तक मृत्यु न हो और न क़त्ल किया जाए तो इस से अनिवार्य नहीं होता कि वह व्यक्ति सच्चा नबी या सच्चा रसूल या ख़ुदा की ओर से सच्चा सुधारक और मुजद्दिद है तथा वास्तव में ख़ुदा उस से वार्तालाप करता है परन्तु स्पष्ट है कि यह कुफ़्र की बात है क्यों कि इस से ख़ुदा के कलाम का झूठा होना तथा अपमान अनिवार्य होता है। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्ची रिसालत सिद्ध करने के लिए इसी तर्क को

ग्रहण किया है कि यदि यह व्यक्ति ख़ुदा तआला पर झूठ बांधता तो मैं उसे मार डालता। समस्त उलेमा जानते हैं कि ख़ुदा तआला द्वारा प्रस्तुत तर्क का तिरस्कार करना सर्वसम्मति से कुफ़्र है क्यों कि इस तर्क पर उपहास करना जो ख़ुदा ने क़ुर्आन और रसूल की सच्चाई पर प्रस्तुत किया है ख़ुदा की किताब और उसके रसूल का झूठा होना अनिवार्य करता है और यह व्यापक तौर पर कुफ़्र है किन्तु इन लोगों पर क्या खेद किया जाए। शायद इन लोगों के निकट ख़ुदा तआला पर झूठ बांधना वैध है और एक बदगुमान (कुधारणा रखने वाला) व्यक्ति कह सकता है कि शायद यह समस्त आग्रह हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब का तथा उनके विपरीत बार-बार यह कहना कि एक मनुष्य तेईस वर्ष तक ख़ुदा तआला पर झूठ बांध कर तबाह नहीं होता इस का यही कारण हो कि उन्होंने नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा तआला पर कुछ झूठ बांधे हो और कहा हो कि मुझे यह स्वप्न आया था मुझे यह इल्हाम हुआ और फिर अब तक तबाह न हुए तो दिल में यह समझ लिया कि ख़ुदा तआला का अपने रसूल करीम के बारे में यह कहना कि यदि वह हम पर झूठ बांधता तो हम उसकी प्राण धमनी काट देते यह भी सही नहीं है★ और सोचा कि ख़ुदा ने हमारी प्राणधमनी (रगे जान) क्यों काट दी। इसका उत्तर यह है कि यह आयत रसूलों, नबियों और मामूरों के बारे में है जो करोड़ों लोगों को अपनी ओर बुलाते हैं और जिन के झूठ बांधने से दुनियां तबाह होती है परन्तु एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं को ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा करके क़ौम का सुधारक नहीं ठहराता और न नबी या रसूल होने का दावा करता है और मात्र उपहास (हंसी) के तौर पर लोगों को अपनी पहुंच (पैठ) जताने के लिए दावा करता है कि मुझे यह स्वपन आया या इल्हाम हुआ तथा झूठ बोलता है या उसमें झूठ मिलाता है वह उस गन्दगी के कीड़े के समान है जो गन्दगी में

★हाशिया :- हमें हाफ़िज़ से कदापि यह आशा नहीं कि नऊज़ुबिल्लाह उन्होंने कभी ख़ुदा पर झूठ बांधा हो और फिर कोई दण्ड न पाने के कारण यह आस्था हो गई हो। हमारा ईमान है कि ख़ुदा पर झूठ बांधना अपवित्र स्वभाव रखने वाले लोगों का काम है और अन्तत: वे मारे जाते हैं। इसी से

ही पैदा होता है और गन्दगी में ही मर जाता है। ऐसा गन्दा इस योग्य नहीं कि ख़ुदा उसको यह सम्मान दे कि तूने यदि मुझ पर झूठ बांधा तो मैं तुझे मार दूंगा अपितु वह अपने घोर अपमान के कारण कृपा दृष्टि के योग्य नहीं। कोई व्यक्ति उसका अनुसरण नहीं करता कोई उसे नबी, रसूल या ख़ुदा की ओर से मामूर नहीं समझता। इसके अतिरिक्त यह भी सिद्ध करना चाहिए कि इस झूठ बनाने वाली आदत पर निरन्तर तेईस वर्ष गुज़र गए। हमें हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब का बहुत अधिक परिचय नहीं परन्तु यह भी आशा नहीं। उनके आन्तरिक कर्मों को ख़ुदा भली भांति जानता है। उनके दो कथन तो हमें याद हैं और सुना है कि अब वह उन का इन्कार करते हैं।

(1) एक यह कि कुछ वर्ष का समय गुज़रा है कि उन्होंने बड़े-बड़े जल्सों में वर्णन किया कि मौलवी अब्दुल्लाह ग़ज़नवी ने मुझ से वर्णन किया कि आकाश से एक नूर (प्रकाश) क़ादियान पर गिरा और मेरी सन्तान उस से वंचित रह गई।

(2) दूसरे यह कि ख़ुदा तआला ने मानव रूप धारण करके उनको कहा कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद सच्चाई पर है, क्यों लोग उसका इन्कार करते हैं। अब मुझे विचार आता है कि यदि हाफ़िज़ साहिब इन दो वृत्तान्तों से अब इन्कार करते हैं जिनको बहुत से लोगों के सामने बार-बार वर्णन कर चुके हैं तो नऊज़ुबिल्लाह निस्सन्देह उन्होंने ख़ुदा तआला पर झूठ बोला है★ क्योंकि जो व्यक्ति सच कहता है यदि वह मर भी जाए तब भी इन्कार नहीं कर सकता जैसा कि उनके भाई मुहम्मद याक़ूब ने अब भी स्पष्ट गवाही दे दी है कि एक स्वप्न की ताबीर

★हाशिया :- मैं कदापि स्वीकार नहीं करूंगा कि हाफ़िज़ साहिब इन दो वृत्तान्तों से इन्कार करते हैं। इन वृत्तान्तों का गवाह न केवल मैं हूं अपितु मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत गवाह है और पुस्तक "इज़ाला औहाम" में इन के ही द्वारा मौलवी अब्दुल्लाह साहिब का कश्फ़ लिखा जा चुका है। मैं तो निश्चय ही जानता हूं कि ऐसा स्पष्ट झूठ हाफ़िज़ साहिब कदापि नहीं बोलेंगे यद्दपि क़ौम की ओर से एक बड़े संकट में पड़ जाएं। उनके भाई मुहम्मद याक़ूब ने तो इन्कार नहीं किया तो वह क्योंकर इन्कार करेंगे। झूठ बोलना मुर्तद होने से कम नहीं। (इसी से)

(स्वप्नफल) में मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी ने कहा था कि वह प्रकाश (नूर) जो दुनिया को प्रकाशित करेगा वह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी है। अभी कल की बात है कि हाफ़िज़ साहिब भी बार-बार इन दोनों क़िस्सों को वर्णन करते थे और अभी वह ऐसे बहुत वृद्ध नहीं हुए कि यह सोचा जाए कि बुढ़ापे के कारण स्मरण शक्ति नष्ट हो गई है। आठ वर्ष से अधिक समय हो गया जब मैं हाफ़िज़ साहिब के मुख से मौलवी अब्दुल्लाह साहिब के उपरोक्त कश्फ़ को "इज़ाला औहाम" पुस्तक में प्रकाशित कर चुका हूं। क्या कोई बुद्धिमान स्वीकार कर सकता है कि मैं कोई झूठी बात अपनी ओर से लिख देता और हाफ़िज़ साहिब उस पुस्तक को पढ़कर फिर खामोश रहते। कुछ बुद्धि और विचार में नहीं आता कि हाफ़िज़ साहिब को क्या हो गया। मालूम होता है कि किसी हित को ध्यान में रखते हुए जान बूझ कर गवाही को छुपाते हैं और नेक नीयत से इरादा रखते हैं कि किसी अन्य अवसर पर उस गवाही को प्रकट कर दूंगा, परन्तु जीवन कितने दिन है? अब भी ज़ाहिर करने का समय है। मनुष्य को इस से क्या लाभ कि अपने भौतिक जीवन के लिए अपने रूहानी (अध्यात्मिक) जीवन पर छुरी फेर दे। मैंने यह बात कई बार हाफ़िज़ साहिब से सुनी थी कि वह मेरे सत्यापन करने वालों में से हैं और झुठलाने वाले के साथ मुबाहला करने को तैयार हैं और उनकी उम्र का बहुत सा भाग इसी में गुज़र गया तथा इसके समर्थन में वह अपने स्वप्न सुनाते रहे और कुछ विरोधियों से उन्होंने मुबाहला भी किया, परन्तु फिर क्यों दुनिया की ओर झुक गए। लेकिन हम अब तक इस बात से निराश नहीं हैं कि ख़ुदा उनकी आंखें खोले तथा यह आशा शेष है जब तक कि वह इसी स्थिति में मृत्यु प्राप्त न कर लें।

और याद रहे कि इस विज्ञापन के प्रकाशित करने का विशेष कारण वही हैं क्योंकि इन दिनों में सर्व प्रथम उन्हीं ने इस बात पर बल दिया है कि क़ुर्आन का यह तर्क कि "यदि यह नबी झूठे तौर पर वह्यी का दावा करता तो मैं उसको मार देता" यह कुछ बात नहीं है अपितु संसार में ऐसे बहुत से झूठ बनाने वाले पाए जाते हैं जिन्होंने तेईस वर्ष से भी अधिक समय तक नबी या रसूल या ख़ुदा

की ओर से मामूर होने का झूठा दावा करके ख़ुदा पर झूठ बोला और अब तक जीवित मौजूद हैं। हाफ़िज़ साहिब का यह कथन ऐसा है कि कोई मोमिन इसे सहन नहीं करेगा किन्तु वही जिसके हृदय पर ख़ुदा की लानत हो। क्या ख़ुदा का कलाम झूठा है?

و من اظلم من الذی کذب کتاب اللّٰہ الا انّ قول اللّٰہ حق و الاان لعنۃ اللّٰہ
عَلَی الْمُکَذِّبِیْنَ

यह ख़ुदा की क़ुदरत है कि उसने उन सब निशानों में से यह निशान भी मेरे लिए दिखाया कि मेरे ख़ुदा की वह्यी पाने के दिन सय्यिदिना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिनों के बराबर किए, जब से यह दुनिया आरंभ हुई एक मनुष्य भी बतौर उदाहरण नहीं मिलेगा जिसने हमारे सरदार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भांति तेईस वर्ष पाए हों और फिर ख़ुदा की वह्यी के दावे में झूठा हो। यह ख़ुदा तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक विशेष सम्मान दिया है कि उनके नुबुव्वत के समय को भी सच्चाई का माप दण्ड ठहरा दिया है। अत: हे मोमिनो! यदि तुम एक ऐसे व्यक्ति को पाओ जो ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा करता है और तुम पर सिद्ध हो जाए कि ख़ुदा की वह्यी पाने के दावे पर तेईस वर्ष का समय गुज़र गया और वह निरन्तर इस समय तक ख़ुदा की वह्यी पाने का दावा करता रहा और वह दावा उसके प्रकाशित लेखों से सिद्ध होता रहा तो निस्सन्देह समझ लो कि वह ख़ुदा की ओर से है, क्योंकि संभव नहीं कि हमारे सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की वह्यी पाने की अवधि उस व्यक्ति को प्राप्त हो सके जिस व्यक्ति को ख़ुदा तआला जानता है कि वह झूठा है। हां इस बात का प्रमाण ठोस तौर पर आवश्यक है कि वास्तव में उस व्यक्ति ने ख़ुदा की वह्यी पाने के दावे पर तेईस वर्ष की अवधि प्राप्त कर ली तथा इस अवधि में अन्त तक कभी ख़ामोश नहीं रहा और न उस दावे को छोड़ा। अत: इस उम्मत में से वह एक व्यक्ति मैं ही हूं जिसको अपने नबी करीम के नमूने पर ख़ुदा की वह्यी पाने में तेईस वर्ष की अवधि दी गई और तेईस वर्ष तक वह्यी का यह क्रम निरन्तर

जारी रखा गया। इस के प्रमाण के लिए प्रथम मैं बराहीन अहमदिया के ख़ुदा के उन वार्तालापों का उल्लेख करता हूं जो इक्कीस वर्ष से बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो कर प्रसारित हुए और सात आठ वर्ष पहले मौखिक तौर पर प्रसारित होते रहे जिन की गवाही स्वयं बराहीन अहमदिया से सिद्ध है। तत्पश्चात् ख़ुदा के कुछ वे वार्तालाप लिखूंगा जो बराहीन अहमदिया के बाद समय-समय पर दूसरी पुस्तकों के द्वारा प्रकाशित होते रहे। अत: बराहीन अहमदिया में ख़ुदा के वे वाक्य लिखे हैं जो ख़ुदा की ओर से मुझ पर उतरे और मैं केवल नमूने के तौर पर संक्षेप में लिखता हूं विस्तार से देखने के लिए बराहीन अहमदिया मौजूद है।

ख़ुदा तआला के वे इल्हाम जिन से मुझे सम्मानित किया गया

और बराहीन अहमदिया में लिखे हैं

بشریٰ لک احمدی۔ انت مرادی ومعی۔ غرست لک قدرتی بیدی۔ سرّک سرّی۔ انت وجیہ فی حضرتی۔ اخترتک لنفسی۔ انت منی بمنزلة توحیدی و تفریدی فحان ان تعان و تعرف بین الناس۔ یا احمد فاضت الرحمة علی شفتیک۔ بورکت یا احمد و کان مابارک اللّٰہُ فیک حقًّافیک۔ الرحمٰن علم القراٰن لتنذر قومًا ما انذر آباء ھم ولتستبین سبیل المجرمین۔ قل انی امرت وانا اوّل المؤمنین۔ قل ان کنتم تحبون اللّٰہ فاتبعونی یحببکم اللّٰہ۔ ویمکرون ویمکر اللّٰہ واللّٰہ خیر الماکرین۔ و ما کان اللّٰہ لیترکک حتی یمیز الخبیث من الطیب۔ وان علیک رحمتی فی الدنیا والدین۔ وانک الیوم لدینا مکین امین۔ وانک من المنصورین۔ وانت منی بمنزلة لا یعلمھا الخلق۔ وما ارسلناک الا رحمة للعالمین۔ یا احمد اسکن انت وزوجک الجنة۔ یا آدم اسکن انت وزوجک الجنة۔ ھٰذا من رحمة ربک لیکون اٰیة للمؤمنین۔ اردت ان استخلف فخلقت آدم لیقیم

الشـريعة و يـحى الديـن۔ جـرى الله فى حلـل الانبيـاء۔ وجيـه فى الدنيـا والاٰخـرة ومـن المقربـين۔ كنـت كنـزًا مخفيـا فاحببـت ان اعـرف۔ ولنجعـله آيـة للنـاس ورحمـة منّـا و كان امـرًا مقضيّـا۔ يـا عيسٰـى انى متوفيـك ورافعـك الىّ ومطهـرك مـن الذيـن كفـروا۔ وجاعـل الذيـن اتبعـوك فـوق الذيـن كفـروا الٰى يـوم القيامـة ثـلة مـن الاوّلـين وثـلة مـن الآخريـن۔ يخوفونـك مـن دونـه۔ يعصمـك الله مـن عنـدهٖ وَلولـم يعصمـك النـاس۔ و كان ربـك قديـرا۔ يحمـدك الله مـن عرشهٖ نحمـدك ونصلى۔ و انا كفينـاك المسـتهزئين۔ وقالـوا ان هـو الا افـك انفـترٰى۔ ومـا سـمعنا بهٰـذا فى اٰبائنـا الاولـين۔ ولقـد كرمنـا بـنى اٰدم وفضّلنـا بعضـهم عـلى بعـض كذالـك لتكـون اٰيـة للمؤمنـين۔ وجحـدوا بهـا واسـتيقنتها انفسـهم ظلمـا وعلـوا۔ قـل عنـدى شـهادة مـن الله فهـل انتـم مؤمنـون۔ قـل عنـدى شـهادة مـن الله فهـل انتـم مسـلمون۔ وقالـوا انّٰى لـك هٰـذا۔ ان هٰـذا الاسـحر يؤثر۔ وان يـروا آيـة يعرضـوا ويقولـوا سحر مسـتمر۔ كتـب الله لاغلـبن انـا ورسـلى۔ والله غالـب عـلٰى امـره ولكـن اكثـر النـاس لا يعلمـون۔ هـو الذى ارسـل رسـوله بالهـدٰى وديـن الحـق ليظهـره عـلى الديـن كله۔ لامبـدل لكلمـات الله۔ والذيـن اٰمنـوا ولـم يلبسـوا ايمانـهم بظلـم اولئـك لـهم الامـن وهـم مهتـدون۔ ولا تخاطبـنى فى الذيـن ظلمـوا انـهم مغرقـون۔ وان يتخذونـك الا هـزوا۔ اهٰـذا الذى بعـث الله وينظـرون اليـك وهـم لا يبصـرون۔ واذ يمكربـك الذى كفّـر۔ اوقدلى ياهامـان لعلى اطلـع عـلى الٰه موسٰى وانى لاظنّـه مـن الكاذبـين۔ تبّـت يـدا ابى لهـب وتـبّ۔ مـا كان له ان يدخـل فيهـا الاخائفًـا۔ ومـا اصابـك فمـن الله۔ الفتنـة هٰهنـا فاصـبر كمـا صـبر اولوالعـزم۔ الاانهافتنـة مـن الله ليحـبّ حبّـا جمّـا۔ حبّـا مـن الله

العزیز الاکرم۔ عطاءً غیر مجذوذ۔ وَفِی اللّٰہِ اجرك ویرضی عنك ربك ویتمّ اسمك۔ وعسٰی ان تحبّوا شیئا وھو شرّلکم وعسٰی ان تکرھوا شیئا وھو خیر لکم واللّٰہ یعلم وانتم لا تعلمون۔ ★

अनुवाद- हे मेरे अहमद! तुझे ख़ुश ख़बरी हो, तू मेरी मनोकामना है और मेरे साथ है। मैंने अपने हाथ से तेरा वृक्ष लगाया, तेरा रहस्य मेरा रहस्य है और तू मेरी दरगाह में (दरबार में) शोभायमान है। मैंने अपने लिए तुझे चुना। तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरा एकेश्वरवाद और एकमात्र होना। अत: समय आ गया है कि तू सहायता दिया जाए और लोगों में तेरे नाम की ख्याति (शुहरत) दी जाए। हे अहमद! तेरे होंठों में नेमत अर्थात् वास्तविकताएं और अध्यात्म ज्ञान जारी हैं। हे अहमद! तू बरकत दिया गया और बरकत तेरा ही अधिकार था। ख़ुदा ने तुझे क़ुर्आन सिखलाया अर्थात् क़ुर्आन के उन अर्थों से अवगत किया जिनको लोग भूल गए थे ताकि तू उन लोगों को डराए जिन के बाप-दादे अज्ञान गुज़र गए और ताकि दोषियों पर ख़ुदा का समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाए। उनको कह दे कि मैं अपनी ओर से नहीं अपितु ख़ुदा की वह्यी तथा आदेश से ये सब बातें कहता हूं और मैं इस युग में समस्त मोमिनों में से प्रथम हूं। इनको कह दे कि यदि तुम ख़ुदा तआला से प्रेम करते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि ख़ुदा भी तुम से प्रेम करे।⁕और ये लोग छल करेंगे और ख़ुदा भी इन के छल

★**हाशिया :-** बराहीन अहमदिया में हम ने इतने इल्हाम संक्षिप्त तौर पर लिखे हैं और चूंकि कई बार कई क्रमों के रंग में ये इल्हाम आ चुके हैं इसलिए वाक्यों को जोड़ने में एक विशेष क्रम को दृष्टिगत नहीं रखा। प्रत्येक क्रम साहिबे इल्हाम की समझ के अनुसार इल्हामी है। इसी से।

⁕**हाशिया :-** यह स्थान हमारी जमाअत के लिए विचार करने का स्थान है क्योंकि इसमें सामर्थ्यवान ख़ुदा कहता है कि ख़ुदा का प्रेम इसी से सम्बद्ध है कि तुम पूर्ण रूप से अनुयायी बन जाओ और तुम में लेशमात्र भी विरोध शेष न रहे और यहां जो मेरे बारे में ख़ुदा के कलाम (वाणी) में रसूल और नबी का शब्द अपनाया गया है कि यह रसूल और ख़ुदा का नबी है, यह बोलना लाक्षणिक और रूपक के तौर पर है क्योंकि जो व्यक्ति ख़ुदा से सीधे तौर पर वह्यी पाता है और निश्चित तौर पर ख़ुदा उस से वार्तालाप करता है जैसा कि नबियों

का उत्तर देगा और ख़ुदा छल का उत्तम उत्तर देने वाला है तथा ख़ुदा ऐसा नहीं करेगा कि वह तुझे छोड़ दे जब तक कि पवित्र और अपवित्र में अन्तर न करे और तुझ पर संसार और धर्म में मेरी रहमत (दया) है और तू आज हमारी दृष्टि में प्रतिष्ठवान है और उनमें से है जिनको सहायता दी जाती है और मुझसे तू वह मक़ाम और मर्तबा रखता है जिसे संसार नहीं जानता और हमने संसार पर दया करने के लिए तुझे भेजा है। हे अहमद! अपने जोड़े के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर। हे आदम! अपने जोड़े (पत्नी) के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर अर्थात् प्रत्येक जो तुझ से संबंध रखने वाला है चाहे वह तेरी पत्नी है या तेरा मित्र है मुक्ति पाएगा और उसे स्वर्ग का जीवन मिलेगा और अन्तत: स्वर्ग में प्रवेश करेगा और फिर फ़रमाया कि मैंने इरादा किया कि पृथ्वी पर अपना उत्तराधिकारी पैदा करूं। अत: मैंने इस आदम को पैदा किया। यह आदम शरीअत को क़ायम करेगा और धर्म को जीवित कर देगा और यह ख़ुदा का रसूल है नबियों के लिबास में। दुनिया (इस लोक) और परलोक में प्रतिष्ठावान तथा ख़ुदा के सानिध्यप्राप्त लोगों में से। मैं एक गुप्त ख़ज़ाना था, अत: मैंने चाहा कि पहचाना जाऊं और हम अपने इस बन्दे को अपना एक निशान बनाएंगे और अपनी रहमत का एक नमूना करेंगे

शेष हाशिया- से किया उस पर रसूल या नबी का शब्द बोलना अनुचित नहीं है अपितु यह अत्यन्त सुबोध रूपक है। इसी कारण सही बुख़ारी, सही मुस्लिम, इन्जील, दानियाल तथा अन्य नबियों की किताबों में भी जहाँ मेरा वर्णन किया गया है वहाँ मेरे सम्बन्ध में नबी का शब्द बोला गया है और कुछ नबियों की किताबों में मेरे बारे में रूपक के तौर पर फ़रिश्ता का शब्द आ गया है और दानियाल नबी ने अपनी किताब में मेरा नाम मीकाईल रखा है और इब्रानी भाषा में मीकाईल का शाब्दिक अर्थ है ख़ुदा के समान। यह मानो उस इल्हाम के अनुसार है जो बराहीन अहमदिया में है –

اَنْتَ منّی بمنزلة توحیدی و تفریدی- فَحانَ اَنْ تعَانَ و تعرف بَیْنَ النّاسِ

अर्थात् तू मुझ से ऐसा सानिध्य रखता है और ऐसा ही मैं तुझे चाहता हूं जैसा कि अपने एकत्व को। अत: जैसा कि मैं अपने एकेश्वरवाद की प्रसिद्धि चाहता हूं ऐसा ही तुझे संसार में प्रसिद्धि दूँगा और प्रत्येक स्थान पर जहाँ मेरा नाम जाएगा तेरा नाम भी साथ होगा। (इसी से)

और आरंभ से यही प्रारब्ध था। हे ईसा! मैं तुझे स्वाभाविक मृत्यु दूंगा अर्थात् तेरे विरोधी तेरे क़त्ल पर समर्थ नहीं हो सकेंगे और मैं तुझे अपनी ओर उठाऊंगा अर्थात् स्पष्ट तर्कों तथा खुले-खुले निशानों से सिद्ध कर दूंगा कि तू मेरे सानिध्य प्राप्त लोगों में से है और उन समस्त आरोपों से तुझे पवित्र करूंगा जो तुझ पर इन्कारी लोग लगाते हैं और वे लोग जो मुसलमानों में से तेरे अनुयायी होंगे मैं उनको उन अन्य गिरोहों पर प्रलय तक विजय और श्रेष्ठता दूंगा जो तेरे विरोधी होंगे। तेरे अनुयायियों का एक गिरोह पहलों में से होगा और एक गिरोह पिछलों में से। लोग तुझे अपनी शरारतों से डराएंगे परन्तु ख़ुदा तुझे शत्रुओं की शरारतों से स्वयं बचाएगा यद्यपि लोग न बचाएं और तेरा ख़ुदा सामर्थ्वान है वह अर्श पर से तेरी प्रशंसा करता है। अर्थात लोग जो गालियाँ निकालते हैं उन के मुकाबले पर ख़ुदा अर्श पर तेरी प्रशंसा करता है। हम तेरी प्रशंसा करते हैं और तुझ पर दरूद भेजते हैं और जो ठट्ठा (उपहास) करने वाले हैं उनके लिए हम अकेले पर्याप्त हैं और वे लोग कहते हैं कि यह तो झूठी बनाई हुई बात है जो इस व्यक्ति ने की है। हमने अपने बाप-दादों से ऐसा नहीं सुना। ये मूर्ख नहीं जानते कि किसी को कोई प्रतिष्ठा देना ख़ुदा पर कठिन नहीं। हम ने मनुष्यों में से कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता दी है। अत: इसी प्रकार इस व्यक्ति को यह प्रतिष्ठा (पद) प्रदान की थी ताकि मोमिनों के लिए निशान हो परन्तु लोगों ने ख़ुदा के निशानों से इन्कार किया। हृदयों ने तो स्वीकार किया किन्तु इन्कार अभिमान और अन्याय के कारण था। इनको कह दे कि मेरे पास ख़ुदा की ओर से विशेष तौर पर गवाही है। अत: तुम स्वीकार नहीं करते। पुन: उनको कह दे कि मेरे पास ख़ुदा की ओर से विशेष तौर पर गवाही है। अत: क्या तुम स्वीकार नहीं करते। और जब निशान देखते हैं तो कहते हैं कि यह तो एक साधारण बात है जो अनादि काल से चली आती है (स्पष्ट हो कि अन्तिम वाक्य इस इल्हाम की वह आयत है जिसका अर्थ यह है कि जब काफ़िरों ने चन्द्रमा का फटना देखा ता तो यही आपत्ति की थी कि यह एक चन्द्र ग्रहण का प्रकार है हमेशा हुआ करता है कोई निशान नहीं। अब इस भविष्यवाणी में ख़ुदा तआला ने उस चन्द्र तथा सूर्य-ग्रहण की ओर संकेत किया

है जो इस भविष्यवाणी से कई वर्ष पश्चात् घटित हुआ जिसका महदी मौऊद (वादा दिया गया) के लिए पवित्र क़ुर्आन और दारक़ुत्नी की हदीस में निशान के तौर पर उल्लेख था और यह भी फ़रमाया कि इस चन्द्र तथा सूर्य-ग्रहण को देख कर इन्कारी लोग यही कहेंगे कि यह कुछ निशान नहीं। यह एक साधारण बात है स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन में इस चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण की ओर आयत-

(अल क़यामत – 10) جُمِعَ الشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ

में संकेत है और हदीस में चन्द्र तथा सूर्य-ग्रहण के बारे में इमाम बाक़िर की रिवायत है जिसके शब्द ये है कि اِنَّ لِمَهۡدِیِّنَا اٰیَتَیۡنِ और अद्भुत बात यह है कि बराहीन अहमदिया में कि चन्द्र और सूर्य-ग्रहण की घटना से लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व इस घटना की सूचना दी गई और यह भी बताया गया कि इसके प्रकट होने के समय अन्यायी लोग इस निशान को स्वीकार नहीं करेंगे तथा कहेंगे कि यह हमेशा हुआ करता है हालांकि ऐसी स्थिति जब से कि संसार बना कभी नहीं आई कि कोई महदी का दावा करने वाला हो और उसके समय में चन्द्र और सूर्य-ग्रहण एक ही महीने में अर्थात् रमज़ान में हो। यह वाक्य जो दो बार कहा गया कि-

قُلۡ عِنۡدِی شھادۃٌ من اللّٰہ فھل اَنۡتُمۡ مُؤۡ مِنُوۡن وَقُلۡ عندی شھادۃٌ من اللّٰہ
فَھَلۡ أنتم مُسۡلِمُوۡن ★

★**हाशिया :-** ख़ुदा के इस कलाम से स्पष्ट है कि काफ़िर कहने वाले और झुठलाने का मार्ग अपनाने वाली विनाश हो चुकी क़ौम है इसलिए वे इस योग्य नहीं हैं कि मेरी जमाअत में से कोई व्यक्ति उसके पीछे नमाज़ पढ़े। क्या जीवित एक मुर्दा के पीछे नमाज़ पढ़ सकता है? अत: याद रखो कि जैसा ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है तुम पर हराम (अवैध) है और निश्चित रूप से हराम है कि किसी काफ़िर कहने वाले, झूठा कहने वाले या दुविधा एवं चिन्ता में पड़े हुए व्यक्ति के पीछे नमाज़ पढ़ो अपितु चाहिए कि तुम्हारा इमाम वही हो जो तुम में से हो। इसी की ओर बुख़ारी की हदीस के एक पहलू में संकेत है कि اِمَامُکُمۡ مِنۡکُمۡ अर्थात् जब मसीह आएगा तो तुम्हें दूसरे फ़िर्क़ों को जो इस्लाम का दावा करते हैं पूर्ण रूप से छोड़ना पड़ेगा और तुम्हारा इमाम तुम में से होगा। अत: तुम ऐसा ही करो। क्या तुम चाहते हो कि ख़ुदा का इल्हाम तुम्हारे सर हो और तुम्हारे कर्म नष्ट हो

इसमें एक गवाही से अभिप्राय सूर्य-ग्रहण है और दूसरी गवाही से अभिप्राय चन्द्र-ग्रहण है।) और पुनः फ़रमाया – कि ख़ुदा ने अनादि काल से लिख रखा है अर्थात् निश्चित कर रखा है कि मैं और मेरे रसूल ही विजयी होंगे। अर्थात् यद्यपि कि किसी प्रकार का मुक़ाबला हो जो लोग ख़ुदा की ओर से हैं वे पराजित नहीं होंगे और ख़ुदा अपने इरादों पर प्रभुत्व रखता है किन्तु अधिकतर लोग नहीं समझते। ख़ुदा वही ख़ुदा है जिसने अपना रसूल मार्ग-दर्शन और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि इस धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे। कोई नहीं जो ख़ुदा की बातों को परिवर्तित कर सके और वे लोग जो ईमान लाए और अपने ईमान को किसी अन्याय से लिप्त नहीं किया उनको प्रत्येक विपत्ति से सुरक्षा है और वही हैं जो मार्ग-दर्शन प्राप्त हैं और अन्यायियों के बारे में मुझ से कुछ बात न कर वे तो डूब चुकी क़ौम हैं और तुझे लोगों ने एक हंसी का स्थान बना रखा है और कहते हैं कि क्या यही है जिसे ख़ुदा ने भेजा है और तेरी ओर देखते हैं और तू उन्हें दिखाई नहीं देता। और याद कर वह समय जब तुझ पर एक व्यक्ति सरासर छल करते हुए काफ़िर होने का फ़त्वा देगा (यह एक भविष्यवाणी है जिसमें एक दुर्भाग्यशाली मौलवी के बारे में सूचना दी गई है कि एक समय आता है जबकि वह मसीह मौऊद के बारे में कुफ्र का काग़ज़ तैयार करेगा) और फिर फ़रमाया कि अपने बुज़ुर्ग हामान को कहेगा कि इस काफ़िर ठहराने की बुनियाद तू डाल कि लोगों पर तेरा प्रभाव अधिक है और तू अपने फ़त्वे से सब को उत्तेजित कर सकता है। तू तो सब से पहले इस कुफ्रनामा पर मुहर लगाता कि समस्त उलेमा भड़क उठें और तेरी मुहर को देखकर वे भी मुहरें लगा दें, ताकि मैं देखूं कि

शेष हाशिया- जाएं और तुम्हें कुछ खबर न हो। जो व्यक्ति मुझे दिल से स्वीकार करता है वह दिल से आज्ञापालन भी करता है और मुझे हर हाल में निर्णायक (हकम) ठहराता है तथा प्रत्येक विवाद का मुझ से फैसला चाहता है किन्तु जो व्यक्ति मुझे दिल से स्वीकार नहीं करता उसमें तुम अहंकार, स्वयं को अच्छा समझना तथा निरंकुशता पाओगे अत: ज्ञात रहे कि वह मुझ में से नहीं है क्योंकि वह मेरी बातों को जो मुझे ख़ुदा से मिली हैं सम्मानपूर्वक नहीं देखता इसलिए आकाश पर उसका सम्मान नहीं। (इसी से)

ख़ुदा उस व्यक्ति के साथ है या नहीं, क्योंकि मैं उसे झूठा समझता हूं (तब उसने मुहर लगा दी) अबू लहब तबाह हो गया और उसके दोनों हाथ तबाह हो गए (एक वह हाथ जिसके साथ कुफ्रनामा को पकड़ा और दूसरा वह हाथ जिस के साथ मुहर लगाई या कुफ्रनामा लिखा) उसके लिए उचित न था कि इस कार्य में हस्तक्षेप करता परन्तु डरते-डरते और जो तुझे शोक पहुंचेगा वह तो ख़ुदा की ओर से है। जब वह हामान कुफ्रनामा पर मुहर लगाएगा तो बड़ा उपद्रव फैलेगा। अत: तू सब्र कर जैसा कि दृढ़ प्रतिज्ञ नबियों ने सब्र किया (यह संकेत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में है कि उन पर भी यहूदियों के अपवित्र स्वभाव मौलवियों ने कुफ्र का फ़त्वा लिखा था तथा इस इल्हाम में यह संकेत है कि यह काफ़िर कहना इसलिए होगा ताकि इस बात में भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से समानता पैदा हो जाए तथा इस इल्हाम में ख़ुदा तआला ने इस्तिफ़्ता लिखने वाले का नाम फ़िरऔन रखा और फ़त्वा देने वाले का नाम जिसने सर्वप्रथम फ़त्वा दिया हामान। अत: आश्चर्य नहीं कि यह इस बात की ओर संकेत हो कि हामान अपने कुफ्र पर मरेगा किन्तु फ़िरऔन किसी समय जब ख़ुदा का इरादा हो कहेगा-

اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِیْلَ (यूनुस-91)

और फिर फ़रमाया – कि यह उपद्रव ख़ुदा की ओर से उपद्रव होगा ताकि वह तुझ से बहुत प्रेम करे जो हमेशा रहने वाला प्रेम है जो कभी समाप्त नहीं होगा और ख़ुदा में तेरा प्रतिफल है। ख़ुदा तुझ से प्रसन्न होगा और तेरे नाम को पूरा करेगा। ऐसी बहुत सी बातें हैं तुम चाहते हो, परन्तु वे तुम्हारे लिए अच्छी नहीं और बहुत सी ऐसी बातें हैं जो तुम नहीं चाहते हो और वे तुम्हारे लिए अच्छी हैं और ख़ुदा जानता है तुम नहीं जानते। यह इस बात की ओर संकेत है कि काफ़िर ठहराना आवश्यक था और इसमें ख़ुदा का हित था किन्तु खेद उन पर जिन के द्वारा यह ख़ुदा की नीति एवं हित पूरा हुआ। यदि वे पैदा न होते तो अच्छा था।

इतने इल्हाम तो हमने नमूने के तौर पर बराहीन अहमदिया में लिखे हैं किन्तु इस इक्कीस वर्ष की अवधि में बराहीन अहमदिया से लेकर आज तक मैंने चालीस पुस्तकें लिखी हैं और साठ हज़ार के लगभग अपने दावे के सबूत में

विज्ञापन प्रकाशित किए हैं और वे सब मेरी ओर से बतौर छोटी-छोटी पत्रिकाओं के हैं और उन सब में मेरी निरन्तर यह आदत रही है कि अपने नए इल्हाम साथ-साथ प्रकाशित करता रहा हूं। इस स्थिति में प्रत्येक बुद्धिमान सोच सकता है कि यह एक लम्बा समय ख़ुदा की ओर से मामूर होने के आरंभ से आज तक कैसी रात-दिन की तन्मयता से गुज़रा है और ख़ुदा ने न केवल इस समय तक मुझे जीवन प्रदान किया अपितु इन पुस्तकों के लिखने के लिए स्वास्थ्य प्रदान किया, धन प्रदान किया, समय प्रदान किया तथा इल्हामों में मुझ से ख़ुदा तआला की यह आदत नहीं कि केवल साधारण वार्तालाप हो अपितु अधिकतर मेरे इल्हाम भविष्यवाणियों से भरे हुए हैं तथा शत्रुओं के बुरे इरादों का उन में उत्तर है। उदाहरणतया चूंकि ख़ुदा तआला जानता था कि शत्रु मेरी मृत्यु की इच्छा करेंगे ताकि यह परिणाम निकालें कि झूठा था तभी शीघ्र मर गया। इसलिए पहले ही से उस ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया-

ثمانین حولًا او قریبًا من ذلك او تزید علیه سنینًا وَ تَرٰی نَسْلًا بَعِیْدًا

अर्थात् तेरी आयु अस्सी वर्ष की होगी या दो चार कम या कुछ वर्ष अधिक और तू इतनी आयु पाएगा कि एक दूर की नस्ल को देख लेगा। और यह इल्हाम लगभग पैंतीस वर्ष से हो चुका है और लाखों लोगों में प्रकाशित किया गया। इसी प्रकार चूंकि ख़ुदा तआला जानता था कि शत्रु यह भी चाहेंगे कि यह व्यक्ति झूठों की भांति वियोगी और अपमानित रहे और पृथ्वी पर उसकी मान्यता पैदा न हो ताकि यह परिणाम निकाल सकें कि वह मान्यता जो सच्चों के लिए शर्त है और उनके लिए आकाश से उतरती है इस व्यक्ति को नहीं दी गई। इसलिए उसने पहले से बराहीन अहमदिया में फ़रमा दिया –

ینصُرُكَ رِجَالٌ نُوحِی اِلَیْهِمْ مِنَ السَّماء - یَاتُوْنَ مِنْ کُلِّ فجٍّ عَمِیْق - وَ
الْمُلُوكُ یَتَبَرَّکُون بِثِیَابِكَ - اِذا جَآءَ نَصْرُ اللہِ وَالْفَتْحُ وَانْتَھٰی اَمْرُ الزَّمان
اِلَیْنَا اَلَیْسَ ھٰذا بِالْحَقّ -

अर्थात् तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिन के दिलों पर मैं आकाश से वह्यी

उतारूंगा, वे दूर-दूर के मार्गों से तेरे पास आएंगे और बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेगे। जब हमारी सहायता और विजय आ जाएगी तब विरोधियों को कहा जाएगा कि क्या यह मनुष्य का बनाया हुआ झूठ था या ख़ुदा का कारोबार।★ इसी प्रकार ख़ुदा तआला यह भी जानता था कि शत्रु यह भी इच्छा करेंगे कि यह व्यक्ति बे औलाद (निस्सन्तान) रह कर मिट जाए ताकि मूर्खों की दृष्टि में यह भी एक निशान हो। इसलिए उसने पहले से बराहीन अहमदिया में ख़बर दे दी कि-

يَنْقَطِعُ اٰبَاءُكَ وَ يَبْدَءُ مِنْكَ

अर्थात् तेरे बुज़ुर्गों की पहली नस्लें समाप्त हो जाएंगी और उन की चर्चा का नाम तथा निशान न रहेगा और ख़ुदा तुझ से एक नई बुनियाद डालेगा उसी बुनियाद के समान जो इब्राहीम के द्वारा डाली गई। इसी समानता से ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया में मेरा नाम इब्राहीम रखा जैसा कि फ़रमाया –

سلام علیٰ ابراهیم صافیناهُ ونَجَّیناهُ من الغم وَاتَّخذُوا من مقام ابراهیم مصلّی قُلْ ربِّ لا تذرنی فردًا وَاَنْتَ خیرُ الْوَارِثِیْن -

---

★**हाशिया :-** इसी प्रकार ख़ुदा तआला यह भी जानता था कि यदि कोई बुरा रोग लग जाए जैसा कि कोढ़, पागलपन, अंधा होना और मिर्गी। तो इस से ये लोग परिणान निकालेंगे कि इस पर ख़ुदा का प्रकोप हो गया। इसलिए उसने पहले से मुझे बराहीन अहमदिया में खुशख़बरी दी कि प्रत्येक बुरे रोग से तुझे सुरक्षित रखूंगा और तुझ पर अपनी नेमत पूरी करूंगा। तत्पश्चात् आंखों के बारे में विशेष तौर पर यह भी इल्हाम हुआ –

تنزل الرحمة علیٰ ثلاثٍ العین وعلی الاخریَین

अर्थात् रहमत तीन अंगों पर उतरेगी। एक आंखों पर कि वृद्धावस्था उन को आघात नहीं पहुंचाएगी और मोतियाबिन्द इत्यादि से जिस से दृष्ट का प्राकाश जाता रहे सुरक्षित रहेंगी तथा दो अंग और हैं जिन को ख़ुदा तआला ने स्पष्ट नहीं किया, उन पर भी यही रहमत उतरेगी तथा उनकी शक्तियों में विकार नहीं आएगा। अब बताओ तुम ने संसार में किस झूठे को देखा कि अपनी आयु बताता है, अपनी दृष्टि का स्वस्थ रहना और अन्य दो अंगों के स्वास्थ्य का अन्तिम आयु तक दावा करता है। ऐसा ही चूंकि ख़ुदा तआला जानता था कि लोग क़त्ल की योजनाएं बनाएंगे। उस से पहले से बराहीन अहमदिया में ख़बर दे दी- يعصِمُكَ الله وَلَوْ لَمْ يَعْصِمُكَ النَّاس (इसी से)

अर्थात् सलाम है इब्राहीम पर (अर्थात् इस विनीत पर) हम ने उस से शुद्ध मित्रता की और उसे प्रत्येक शोक से मुक्ति दे दी और तुम जो अनुसरण करते हो तुम अपनी नमाज़ का स्थान इब्राहीम के क़दमों के स्थान पर बनाओ अर्थात् पूर्ण अनुसरण करो ताकि मुक्ति पाओ तथा पुनः फ़रमाया- कह हे मेरे ख़ुदा! मुझे अकेला मत छोड़ और तू उत्तम वारिस है। इस इल्हाम में यह संकेत है कि ख़ुदा अकेला नहीं छोड़ेगा और इब्राहीम के समान नस्ल को बहुत बढ़ाएगा और बहुत से लोग इस नस्ल से बरकत पाएंगे। यह जो फ़रमाया कि-

وَ اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ط (अल बक़रह - 126)

यह पवित्र क़ुर्आन की आयत है और यहां इसके अर्थ ये हैं कि यह इब्राहीम जो भेजा गया तुम अपनी इबादतों (उपासनाओं) और आस्थाओं को उस की पद्धति पर पूरा करो तथा प्रत्येक बात में स्वयं को उसके आदर्श के अनुसार बनाओ और जैसा कि आयत-

وَ مُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ط (अस्सफ़ - 7)

यह संकेत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अन्तिम युग में एक द्योतक (मज़्हर) प्रकट होगा। मानो वह उसका एक हाथ होगा,★ जिसका

★हाशिया :- याद रहे कि जैसा कि ख़ुदा तआला के दो हाथ जमाली और जलाली हैं इसी नमूने पर चूंकि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महा प्रतापी ख़ुदा के सर्वांगपूर्ण द्योतक हैं। इसलिए ख़ुदा तआला ने आप को भी वे दोनों हाथ दया और वैभव के प्रदान किए

जमाली हाथ की ओर इस आयत में संकेत है कि पवित्र क़ुर्आन में है

وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (अलअंबिया - 108)

अर्थात् हमने सम्पूर्ण विश्व पर तुझे दया बना कर भेजा है और जलाली हाथ की ओर इस आयत में संकेत है -

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى (अन्फ़ाल - 18)

और चूंकि ख़ुदा तआला चाहता था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ये दोनों विशेषताएं अपने समयों में प्रकट हों। इसलिए ख़ुदा तआला ने जलाली विशेषता को सहाबा रज़ि के द्वारा प्रकट किया तथा जमाली विशेषता को मसीह मौऊद तथा उसके गिरोह के द्वारा पूर्णता (कमाल) तक पहुंचाया। इसी की ओर इस आयत में संकेत है

وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अलजुम्अः - 4)

नाम आकाश पर अहमद होगा और वह हज़रत मसीह के रंग में जामाली तौर पर धर्म को फैलाएगा। इसी प्रकार यह आयत

وَ اتَّخِذُوۡا مِنۡ مَّقَامِ اِبۡرٰهِمَ مُصَلًّی ؕ (अल बक़रह -126)

इस ओर संकेत करती है कि जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में बहुत से फ़िर्के हो जाएंगे तब अन्तिम युग में एक इब्राहीम पैदा होगा और इन सब फ़िर्कों में वह फ़िर्का मुक्ति पाएगा जो इस इब्राहीम का अनुयायी होगा।

अब हम नमूने के तौर पर कुछ इल्हाम दूसरी किताबों में से लिखते हैं। अत: "इज़ाला औहाम" में पृष्ठ - 634 से अन्त तक तथा दूसरी पुस्तकों में ये इल्हाम हैं-

جَعَلْنٰك المسیح ابن مریم

हमने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया। ये कहेंगे कि हमने पहलों से ऐसा नहीं सुना। अत: तू इन को उत्तर दे कि तुम्हारी जानकारी में विशालता नहीं। तुम ज़ाहिरी शब्द और भ्रमों पर सन्तुष्ट हो और फिर एक और इल्हाम है और वह यह है –

الحمدُلِلّٰهِ الّذِی جعلك المسیح ابن مریم اَنْت الشیخ المسیح الذی لا یضاع وقته کمثلك درّ لا یضاع

अर्थात् सब प्रशंसा ख़ुदा की है जिस ने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया। तू वह शैख मसीह है जिसका समय नष्ट नहीं किया जाएगा। तुझ जैसा मोती नष्ट नहीं किया जाता और पुन: फ़रमाया –

لِنحییَنّك حیوۃ طیّبۃ ثمانین حولًا اَوْ قریبًا من ذلك -وترٰی نسلًا بَعیدًا مظهر الحق والْعَلاء کأنَّ اللّٰہَ نزل مِن السَّماء

अर्थात् हम तुझे एक पवित्र और आराम का जीवन प्रदान करेंगे। अस्सी वर्ष या उसके निकट-निकट अर्थात् दो चार वर्ष कम या अधिक और तू एक दूर की नस्ल देखेगा। बुलन्दी और विजय का द्योतक जैसे ख़ुदा आकाश से उतरा और पुन: फ़रमाया -

يأتی قمر الانبیاء وامرك یتاتّٰی ما أَنتَ ان تترك الشیطان قبل ان تغلبه- الفوق معك والتَّحت مع أعداءك

अर्थात् नबियों का चन्द्रमा चढ़ेगा और तू सफल हो जाएगा। तू ऐसा नहीं कि शैतान को छोड़ दे इस से पूर्व कि उस पर विजयी हो और ऊपर रहना तेरे भाग में है और नीचे रहना तेरे शत्रुओं के भाग में।

पुन: फ़रमाया-

انّی مهین من اراد اهانتك۔ وما كان الله لیتركك حتّٰی یمیز الخبیث من الطیّب۔ سبحان الله انت وقاره۔ فكیف یتركك۔ انّی اناالله فاخترنی۔ قل ربّ انی اخترتك علی كلّ شیٔ

अनुवाद- मैं उसे अपमानित करूंगा जो तुझे अपमानित करना चाहता है और मैं उसे सहायता दूंगा जो तेरी सहायता करता है और ख़ुदा ऐसा नहीं जो तुझे छोड़ दे जब तक वह पवित्र और अपवित्र में अन्तर न करे। ख़ुदा प्रत्येक दोष से पवित्र है और तू उसकी प्रतिष्ठा है। अत: वह तुझे क्योंकर छोड़ दे। मैं ही ख़ुदा हूं। तू सर्वथा मेरे लिए हो जा। तू कह, हे मेरे रब्ब! मैंने तुझे हर वस्तु पर अपनाया और पुन: फ़रमाया

سیقول العدو لست مرسلا سناخذه من مارن او خرطوم- وانّا من الظالمین منتقمون انی مع الافواج اٰتیك بغتةً یوم یعضّ الظالم علٰی یدیه یالیتنی اتخذت مع الرسول سبیلا وقالوا سیقلب الامر وما كانوا علی الغیب مطّلعین انا انزلناك وكان الله قدیرا

अर्थात् शत्रु कहेगा कि तू ख़ुदा की ओर से नहीं है। हम उसे नाक से पकड़ेंगे अर्थात् ठोस तर्कों द्वारा उसका सांस बन्द कर देंगे और हम प्रतिफल के दिन अत्याचारियों से बदला लेंगे। मैं अपनी फौजों के साथ तेरे पास अचानक आऊंगा अर्थात् जिस पल तेरी सहायता की जाएगी उस पल का तुझे ज्ञान नहीं। उस दिन अत्याचारी अपने हाथ काटेगा कि काश मैं उस ख़ुदा के भेजे हुए का विरोध न करता तथा उसके साथ रहता और कहते हैं कि यह जमाअत बिखर जाएगी और बात बिगड़ जाएगी, हालांकि उनको ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान नहीं दिया

गया। तू हमारी ओर से एक प्रमाण है और ख़ुदा समर्थ था कि आवश्यकता के समय अपना प्रमाण प्रकट करता। पुन: फ़रमाया-

انا ارسلنا احمد الی قومہ فاعرضوا وقالوا کذّاب اشر وجعلوا یشھدون علیہ ویسیلون کماء منھمر ان حِبّی قریب مستتر یأتیک نصرتی انی انا الرحمٰن انت قابل یأتیک وابل انّی حاشر کل قوم یأتونک جنبا وانی انرت مکانک تنزیل من اللہ العزیز الرحیم بلجت آیاتی ولن یجعل اللہ للکافرین علی المؤمنین سبیلا انت مدینۃ العلم طیب مقبول الرحمٰن وانت اسمی الاعلیٰ بشریٰ لک فی ھٰذہ الایام انت منّی یا ابراھیم انت القائم علیٰ نفسہ مظھر الحیّ وانت منّی مبدء الامر انت من مائنا وھم من فشل ام یقولون نحن جمیع منتصر سیھزم الجمع ویولّون الدّبر الحمدللہ الذی جعل لکم الصھر والنسب انذر قومک وقل انی نذیر مبین انا اخرجنا لک زروعًا یا ابراھیم قالوا لَنھلکنّک قال لاخوف علیکم لاغلبن انا ورسلی وانّی مع الافواج اٰتیک بغتۃ وانّی اموج موج البحر ان فضل اللہ لاٰت ولیس لاحد ان یرد ما اتیٰ قل ای وربّی انہ لحق لا یتبدّل ولا یخفٰی وینزل ما تعجب منہ وحی من ربّ السماوات العلیٰ لا الٰہ الّا ھو یعلم کل شئ و یریٰ ان اللہ مع الذین اتقوا والذین ھم یحسنون الحسنٰی تُفتّحُ لھم ابواب السّماء ولھم بشریٰ فی الحیٰوۃ الدنیا انت تربی فی حجر النبی★ وانت تسکن قنن

★**हाशिया :-** कुछ मूर्ख कहते हैं कि अरबी में इल्हाम क्यों होता है। इसका उत्तर यही है कि शाखा अपनी जड़ से पृथक नहीं हो सकती। जिस स्थिति में यह विनीत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ममता की गोद में पोषण पाता है, जैसा कि बराहीन अहमदिया का यह इल्हाम भी इस पर गवाह है कि تَبارك مَنْ عَلّم و تَعَلَّم बहुत बरकत वाला वह मनुष्य है जिसने उसको रूहानी लाभ से लाभान्वित किया अर्थात् सय्यिदिना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दूसरा बहुत बरकत वाला यह मनुष्य है जिसने उस से शिक्षा पाई तो फिर शिक्षक की अपनी भाषा अरबी है ऐसा ही शिक्षा प्राप्त करने वाले का इल्हाम भी अरबी में होना चाहिए ताकि अनुकूलता नष्ट न हो। (इसी से)

الجبــال و انّی معــک فی کل حــال

(अनुवाद) – हम ने अहमद को उसकी क़ौम की ओर भेजा, तब लोगों ने कहा कि यह महा झूठा है तथा उन्होंने उस पर गवाहियां दीं और बाढ़ की भांति उस पर गिरे। उसने कहा मेरा मित्र निकट है परन्तु गुप्त। तुझे मेरी सहायता पहुंचेगी। मैं कृपालु हूं, तू योग्यता रखता है इसलिए तू एक महा वृष्टि को पाएगा। मैं प्रत्येक क़ौम में से समूह के समूह तेरी ओर भेजूंगा। मैंने तेरे मकान को प्रकाशित किया। यह उस ख़ुदा का कलाम है जो ज़बरदस्त और दयालु है और यदि कोई कहे कि क्योंकर जानें कि यह ख़ुदा का कलाम है तो उनके लिए यह लक्षण है कि यह कलाम निशानों के साथ उतरा है और ख़ुदा काफ़िरों को यह अवसर कदापि नहीं देगा कि मोमिनों पर कोई ठोस ऐतिराज़ कर सके। तू ज्ञान का शहर है, पावन और ख़ुदा का मान्य तथा तू मेरा सब से बड़ा नाम है। तुझे इन दिनों में ख़ुशख़बरी हो। हे इब्राहीम! तू मुझ से है, तू ख़ुदा के नफ़्स (अस्तित्व) पर क़ायम है, जीवित ख़ुदा का द्योतक और तू मुझ से अभीष्ट बात का स्रोत है और तू हमारे पानी से है और दूसरे लोग फ़शल से। क्या ये कहते हैं कि हम एक बड़ी जमाअत हैं प्रतिशोध (इन्तिक़ाम) लेने वाली। ये सब भाग जाएंगे और पीठ फेर लेंगे। वह ख़ुदा प्रशंसनीय है जिसने तुझे दामादी और बाप-दादों का सम्मान प्रदान किया। अपनी क़ौम को डरा और कह कि ख़ुदा की ओर से मैं डराने वाला हूं। हमने कई खेत तेरे लिए तैयार कर रखे हैं। हे इब्राहीम! लोगों ने कहा कि हम तेरा वध करेंगे परन्तु ख़ुदा ने अपने बन्दे को कहा कि कुछ भय का स्थान नहीं, मैं और मेरे रसूल विजयी होंगे और मैं अपनी सेनाओं के साथ शीघ्र आऊंगा। मैं समुद्र के समान लहरें लाऊंगा, ख़ुदा का फ़ज़्ल (कृपा) आने वाला है और कोई नहीं जो उसे रोक सके। और कह ख़ुदा की क़सम यह बात सच है इसमें परिवर्तन नहीं होगा और न वह गुप्त रहेगी और वह बात आएगी जिस से तू आश्चर्य करेगा। यह ख़ुदा की वह्यी है जो ऊंचे आकाशों का बनाने वाला है उसके अतिरिक्त कोई ख़ुदा नहीं। प्रत्येक वस्तु को जानता और देखता है और वह ख़ुदा उनके साथ है जो उससे डरते हैं और नेकी को सही तौर पर

अदा करते हैं और अपने शुभकर्मों को बड़ी उत्तमता के साथ पूरा करते हैं। वही हैं जिनके लिए आकाश के द्वार खोले जाएंगे और सांसारिक जीवन में भी उन को ख़ुशखबरियाँ हैं। तू नबी की ममता भरी गोद में पोषण पा रहा है और मैं हर हाल में तेरे साथ हूं और पुनः फ़रमाया -

وقالوا ان هٰذا الا اختلاق ان هٰذا الرجل يجوح الدين قل جاء الحق وزهق الباطل قل لو كان الامر من عند غير الله لوجدتم فيه اختلافًا كثيرًا هو الذى ارسل رسوله بالهدٰى و دين الحق وتهذيب الاخلاق قل ان افتريتهٗ فعلىّ اجرامى ومن اظلم ممن افترىٰ على الله كذبًا تنزيل من الله العزيز الرحيم لتنذر قومًا ماانذر اٰباءهم ولتدعو قومًا اٰخرين عسى الله ان يجعل بينكم وبين الذين عاديتم مودة يخرّون على الاذقان سجّدا ربنا اغفر لنا انا كنّا خاطئين لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم وهو ارحم الراحمين انّى انا الله فاعبدنى ولا تنسنى واجتهد ان تصلنى واسئل ربك و كن سئولا الله ولىّ حنّان علّم القران فبِاَىّ حديث بعده تحكمون نزّلنا علٰى هٰذا العبد رحمة وما ينطق عن الهوٰى ان هو الّا وحى يوحٰى دنٰى فتدلّٰى فكان قاب قوسين او ادنٰى ذرنى والمكذبين انّى مع الرسول اقوم ان يومى لفصل عظيم وانك على صراط مستقيم وانّا نرينك بعض الذى نعدهم او نتوفّينك وانى رافعك الىّ ويأتيك نصرتى انى انا الله ذو السلطان.

(अनुवाद) – और कहते हैं कि यह बनावट है तथा यह व्यक्ति धर्म की जड़ें काटता है। कह सच आया और असत्य भाग गया। कह यदि यह बात ख़ुदा की ओर से न होती तो तुम इसमें बहुत सा मतभेद पाते अर्थात् ख़ुदा तआला के कलाम से इसके लिए कोई समर्थन न मिलता और क़ुर्आन जिस मार्ग का वर्णन करता है यह मार्ग उसके विपरीत होता और क़ुर्आन से उसकी पुष्टि प्राप्त न होती और वास्तविक तर्कों में से कोई तर्क उस पर क़ायम न हो सकता तथा उसमें

एक व्यवस्था, क्रम, ज्ञान का सिलसिला तथा तर्कों का भण्डार जो पाया जाता है यह कदापि न होता तथा आकाश और पृथ्वी में से उसके साथ जो कुछ निशान एकत्र हो रहे हैं इन में से कुछ भी न होता। पुनः फ़रमाया- ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने अपने रसूल को अर्थात् इस विनीत को हिदायत और सच्चे धर्म तथा आचार-व्यवहार के नियमों के सुधार के साथ भेजा। उनको कह दे यदि मैंने ख़ुदा पर झूठ बोला है तो उसका दोष मुझ पर है अर्थात् मैं मरूंगा तथा उस व्यक्ति से अधिक अत्याचारी कौन है जो ख़ुदा पर झूठ बांधे। यह कलाम ख़ुदा की ओर से है जो विजयी और दयालु है ताकि तू लोगों को डराए जिन के बाप-दादे नहीं डराए गए और ताकि अन्य क़ौमों को धर्म की ओर बुलाए। निकट है कि ख़ुदा तुम में और तुम्हारे शत्रुओं में मित्रता कर देगा।★ और तेरा ख़ुदा प्रत्येक बात पर समर्थ है। उस दिन वे लोग सज्दे में गिरेंगे यह कहते हुए कि हे हमारे ख़ुदा हमारे पाप क्षमा कर हम ग़लती पर थे। आज तुम पर कोई डांट-डपट नहीं ख़ुदा क्षमा करेगा और वह दया करने वालों में सर्वाधिक दयालु है। मैं ख़ुदा हूं मेरी उपासना कर और मुझ तक पहुंचने के लिए प्रयास करता रह, अपने ख़ुदा से मांगता रह तथा बहुत मांगने वाला हो। ख़ुदा मित्र और मेहरबान है, उसने क़ुर्आन सिखाया। अतः तुम क़ुर्आन को छोड़ कर किस हदीस पर चलोगे। हमने इस बन्दे पर रहमत उतारी है और यह अपनी ओर से नहीं बोलता अपितु जो कुछ तुम सुनते हो यह ख़ुदा की वह्यी है। यह ख़ुदा के निकट हुआ अर्थात् ऊपर की ओर गया और फिर नीचे की ओर सच के प्रचार के लिए झुका। इसलिए यह दो कमानों के मध्य में आ गया। ऊपर ख़ुदा और नीचे सृष्टि (मख़्लूक) झुठलाने वालों के लिए मुझे छोड़

★**हाशिया :-** यह तो असंभव है कि समस्त लोग स्वीकार कर लें क्योंकि आयत

(हूद -120) وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ

और आयत-

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ

(आले इमरान -56)

के अनुसार सब का ईमान लाना स्पष्ट आदेश के विरुद्ध है। अतः इस स्थान पर पवित्र (सौभाग्यशाली) लोग अभिप्राय हैं। इसी से।

दे। मैं अपने रसूल के साथ खड़ा हूंगा। मेरा दिन बड़े फ़ैसले का दिन है और तू सीधे मार्ग पर है और जो कुछ हम उनके लिए वादा करते हैं, संभव है कि उनमें से कुछ तेरे जीवन में तुझ को दिखा दें और या तुझ को मृत्यु दे दें और बाद में वे वादे पूरे करें। मैं तुझे अपनी ओर उठाऊंगा अर्थात् तेरा ख़ुदा की ओर रफ़ा दुनिया पर सिद्ध कर दूंगा और मेरी सहायता तुझे पहुंचेगी। मैं हूं वह ख़ुदा जिस के निशान हृदयों पर अधिकार करते हैं और उनको कब्ज़े में ले आते हैं।

इन इल्हामों के बारे में कुछ उर्दू इल्हाम भी हैं जिन में से कुछ नीचे लिखे जाते हैं और वे ये हैं –

"एक सम्मान की उपाधि, एक सम्मान की उपाधि لَكَ خطاب العزّة एक बड़ा निशान उसके साथ होगा।"

सम्मान की उपाधि से अभिप्राय यह विदित होता है कि ऐसे कारण पैदा हो जाएंगे कि अधिकांश लोग पहचान लेंगे और सम्मान की उपाधि देंगे और यह तब होगा जब एक निशान प्रकट होगा।

और पुनः फ़रमाया- ख़ुदा ने इरादा किया है कि तेरा नाम बढ़ाए और संसार में तेरे नाम की खूब चमक दिखाए। मैं अपनी झलक दिखाऊंगा और शक्ति-प्रदर्शन से तुझे उठाऊंगा। आकाश से कई तख़्त उतरे परन्तु तेरा तख़्त सब से ऊंचा बिछाया गया। शत्रुओं से भेंट करते समय फ़रिश्तों ने तेरी सहायता की। आप के साथ अंग्रेज़ों का नर्मी के साथ हाथ था। उसी ओर ख़ुदा तआला जो आप थे। आकाश पर देखने वालों को एक राई के बराबर भी ग़म नहीं होता। यह तरीका अच्छा नहीं, इससे रोक दिया जाए मुसलमानों के लीडर अब्दुल करीम को★

★**हाशिया :-** इस इल्हाम में सम्पूर्ण जमाअत के लिए शिक्षा है कि अपनी पत्नियों से कोमलता और नम्रता का व्यवहार करें वे उनकी दासियां नहीं हैं। वास्तव में निकाह पुरुष और स्त्री का परस्पर एक अनुबंध (क़रार) है। अतः प्रयास करो कि अपने अनुबंधन में दग़ाबाज़ न ठहरो। अल्लाह तआला का पवित्र क़ुर्आन में कथन है-

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ (अन्निसा - 20)

خذوا الرفق الرفق فانّ الرفق رأس الخیرات

नर्मी करो, नर्मी करो कि समस्त नेकियों काी जड़ नर्मी है (बिरादरम मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने अपनी पत्नी से एक सीमा तक मौखिक कठोरता का व्यवहार किया था। इस पर आदेश हुआ कि इतनी कठोरता नहीं चाहिए यथासंभव मोमिन का प्रथम कर्त्तव्य प्रत्येक के साथ नर्मी और अच्छा शिष्टाचार है और कभी कठोर शब्दों का प्रयोग बतौर कड़वी दवा के वैध है जो कि आवश्यकता के समय तथा आवश्यकतानुसार, न यह कि कठोरता के साथ बात करना स्वभाव पर विजयी हो जाए) ख़ुदा तेरे सब काम ठीक कर देगा। और तेरी सारी मनोकामनाएं तुझे देगा। सेनाओं का मालिक इस ओर ध्यान करेगा। यदि मसीह नासिरी की ओर देखा जाए तो ज्ञात होगा कि यहां बरकतें उस से कम नहीं हैं और मुझे अग्नि से मत डराओ क्योंकि अग्नि हमारी ग़ुलाम (दास) अपितु ग़ुलामों की ग़ुलाम है (यह वाक्य बतौर वृत्तान्त ख़ुदा तआला ने मेरी ओर से वर्णन किया है) और पुनः फ़रमाया - लोग आए और दावा कर बैठे, ख़ुदा के शेर ने उनको पकड़ा, ख़ुदा के शेर ने विजय पाई और पुनः फ़रमाया -

بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید و پائے محمد یان بر منار بلندتر محکم اُفتاد ★

शेष हाशिया - अर्थात् अपनी पत्नियों के साथ सद्व्यवहर के साथ जीवन व्यतीत करो और हदीस में है خَیْرُکُمْ خَیْرُکُمْ لِاَھْلِہٖ अर्थात् तुम में से अच्छा वही है जो अपनी पत्नी से अच्छा है। अत: आध्यात्मिक (रूहानी) और शारीरिक तौर पर अपनी पत्नियों से नेकी करो, उनके लिए दुआ करते रहो और तलाक़ से बचो। क्योंकि अत्यन्त बुरा ख़ुदा के निकट वह व्यक्ति है जो तलाक़ देने में जल्दी करता है। जिसको ख़ुदा ने जोड़ा है उसे एक गन्दे बर्तन की तरह जल्द मत तोड़ो। (इसी से)

★हाशिया :- इस वाक्य से अभिप्राय कि मुहम्मदियों का पैर ऊंचे मीनार पर जा पड़ा यह है कि समस्त नबियों की भविष्यवाणियां जो अन्तिम युग के मसीह मौऊद के लिए थीं जिसके बारे में यहूदियों का विचार था कि हम में से पैदा होगा और ईसाइयों का विचार था कि हम में से पैदा होगा, परन्तु वह मुसलमानों में से पैदा हुआ। इसलिए सम्मान का बुलंद मीनार मुहम्मदियों के हिस्से में आया और यहां मुहम्मदी कहा, यह इस बात की ओर संकेत है

पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों का सरदार

و روشن شد نشانہائے من

बड़ा मुबारक वह दिन होगा। दुनियां में एक नज़ीर (सर्तक करने वाला) आया पर दुनिया ने उसको स्वीकार न किया लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार हम्लों (आक्रमणों) से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा"। आमीन

शेष हाशिया - कि जो लोग अब तक केवल इस्लाम की बाह्य शक्ति और वैभव देख रहे थे जिसका नाम मुहम्मद द्योतक है अब वे लोग बड़ी प्रचुरता के साथ आकाशीय निशान देखेंगे जो अहमद नाम के द्योतक को अनिवार्य है। क्योंकि अहमद नाम, विनय, विनम्रता तथा उच्चतम श्रेणी की तल्लीनता को चाहता है जो अहमदियत की वास्तविकता, प्रशंसा, इश्क और मुहब्बत के लिए अनिवार्य है और प्रशंसा एवं इश्क के लिए समर्थन वाली आयतों का जारी होना अनिवार्य है। इसी से।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

धार्मिक जिहाद के निषेध का फ़त्वा मसीह मौऊद की ओर से

अब छोड़ दो जिहाद का ऐ दोस्तो ख़याल
दीं के लिए हराम है अब जंग और क़िताल

अब आ गया मसीह जो दीं का इमाम★ है
दीं के तमाम जंगों का अब इख़्तिताम है

★**हाशिया :-** नोट - (एक ज़बदस्त इल्हाम और कश्फ़ आज 2 जून 1900 ई० को दिन शनिवार बाद दोपहर 2 बजे के समय मुझे थोड़ी ऊंघ के साथ एक काग़ज़ जो बहुत ही सफेद था दिखाया गया। उसकी अन्तिम पंक्ति में लिखा था इक़्बाल मैं सोचता हूं कि अन्तिम पंक्ति में यह शब्द लिखने से अंजाम की ओर संकेत था अंजाम इक़्बाल के साथ है। फिर साथ ही यह इल्हाम हुआ - क़ादिर के कारोबार नमूदार हो गए, काफ़िर जो कहते थे वह गिरफ़्तार हो गए इसके मुझे ये मायने समझाए गए कि शीघ्र ही कुछ ऐसे ज़बरदस्त निशान प्रकट हो जाएंगे जिस से काफ़िर कहने वाले जो मुझे काफ़िर कहते थे इल्ज़ाम में फंस जाएंगे और खूब पकड़े जाएंगे और उनके लिए विमुख होने का कोई स्थान शेष नहीं रहेगा। यह भविष्यवाणी है। प्रत्येक पाठक इसके स्मरण रखे।

तत्पश्चात् 3, जून 1900 ई० को साढ़े ग्यारह बजे यह इल्हाम हुआ काफ़िर जो कहते थे नगूंसार हो गए + जितने थे सब के सब ही गिरफ़्तार हो गए। अर्थात् काफ़िर कहने वालों पर ख़ुदा की हुज्जत ऐसी पूरी हो गई कि उन के लिए बहाना करने का कोई स्थान न रहा। यह भविष्य की खबर है कि शीघ्र ही ऐसा होगा और कोई ऐसा चमकता हुआ प्रमाण प्रकट हो जाएगा जो फ़ैसला कर देगा। इसी से।

अब आस्मां से नूरे ख़ुदा का नुज़ूल है
अब जंग और जिहाद का फ़त्वा फ़ुज़ूल है

दुश्मन है वह ख़ुदा का जो करता है अब जिहाद
मुन्किर नबी का है जो यह रखता है ऐतिक़ाद

क्यों छोड़ते हो लोगो नबी की हदीस को
जो छोड़ता है छोड़ दो तुम उस ख़बीस को

क्यों भूलते हो तुम यज़उल हर्ब की ख़बर
क्या यह नहीं बुख़ारी में देखो तो खोलकर

फ़रमा चुका है सय्यिदे कौनेन मुस्तफ़ा
ईसा मसीह जंगों का कर देगा इल्तिवा

जब आएगा तो सुल्ह को वह साथ लाएगा
जंगों के सिलसिले को वह यक्सर मिटाएगा

पीवेंगे एक घाट पर शेर और गोसपन्द
खेलेंगे बच्चे सांपों से बे ख़ौफ़ो बे ग़ज़न्द

यानी वह वक्त अम्न का होगा न जंग का
भूलेंगे लोग मश्ग़ल: तीरो तुफंग का

यह हुक्म सुन के भी जो लड़ाई को जाएगा
वह काफ़िरों से सख़्त हज़ीमत उठाएगा

इक मौजिज़े के तौर से यह पेशगोई है
काफ़ी है सोचने को अगर अहल कोई है

अलक़िस्सा यह मसीह के आने का है निशां
कर देगा ख़त्म आ के वह दीं की लड़ाइयां

ज़ाहिर हैं ख़ुद निशां कि ज़मां वह ज़मां नहीं
अब क़ौम में हमारी वह ताबो तवां नहीं

अब तुम में ख़ुद वह कुव्वतो ताक़त नहीं रही
वह सल्तनत वह रोब वह शौकत नहीं रही

वह नाम वह नमूद वह दौलत नहीं रही
वह अज़्मे मुक़बिलाना वह हिम्मत नहीं रही

वह इल्म वह सलाह वह इफ़्फ़त नहीं रही
वह नूर और वह चांद सी तलअत नहीं रही

वह दर्द वह गुदाज़ वह रिक़्क़त नहीं रही
ख़ल्क़े ख़ुदा पै शफ़क़तो रहमत नहीं रही

दिल में तुम्हारे यार की उल्फ़त नहीं रही
हालत तुम्हारी जाज़िबे नुसरत नहीं रही

हुमुक़ आ गया है सर में वह फ़ितनत नहीं रही
कसल आ गया है दिल में जलादत नहीं रही।

वह इल्मो मारिफ़त वह फ़िरासत नहीं रही
वह फ़िक्र वह क़ियास वह हिक्मत नहीं रही

दुनिया व दीं में कुछ भी लियाक़त नहीं रही
अब तुम को ग़ैर क़ौमों पै सब्क़त नहीं रही

वह उन्सो शौक़ो वज्द वह ताअत नहीं रही
ज़ुल्मत की कुछ भी हद्दो निहायत नहीं रही

हर वक़्त झूठ, सच की तो आदत नहीं रही
नूरे ख़ुदा की कुछ भी अलामत नहीं रही

सौ सौ है गन्द दिल में तहारत नहीं रही
नेकी के काम करने की रग़बत नहीं रही

ख़्वाने तही पड़ा है वह नेमत नहीं रही
दीं भी है एक क़िश्र हक़ीक़त नहीं रही

मौला से अपने कुछ भी मुहब्बत नहीं रही
दिल मर गए हैं नेकी की क़ुदरत नहीं रही

सब पर यह इक बला है कि वहदत नहीं रही
इक फूट पड़ रही है मवद्दत नहीं रही

तुम मर गए तुम्हारी वह अज़्मत नहीं रही
सूरत बिगड़ गई है वह सूरत नहीं रही

अब तुम में क्यों वह सैफ़ की ताक़त नहीं रही
भेद इसमें है यही कि वह हाजत नहीं रही

अब कोई तुम पै जब्र नहीं ग़ैर क़ौम से
करती नहीं है मना सलात और सौम से

हां आप तुम ने छोड़ दिया दीं की राह को
आदत में अपनी कर लिया फ़िस्क़ो गुनाह को

अब ज़िन्दगी तुम्हारी तो सब फ़ासिक़ाना है
मोमिन नहीं हो तुम कि क़दम काफ़िराना है

ऐ क़ौम तुम पै यार की अब वह नज़र नहीं
रोते रहो दुआओं में भी वह असर नहीं

क्योंकर हो वह नज़र कि तुम्हारे वह दिल नहीं
शैतां के हैं ख़ुदा के प्यारे वह दिल नहीं

तक़्व: के जामे जितने थे सब चाक हो गए
जितने ख़याल दिल में थे नापाक हो गए

कुछ-कुछ जो नेक मर्द थे वह ख़ाक हो गए
बाक़ी जो थे वह ज़ालिमो सफ़्फ़ाक हो गए

अब तुम तो ख़ुद ही मौरिदे ख़श्मे ख़ुदा हुए
उस यार से बशामते इसियां जुदा हुए

अब ग़ैरों से लड़ाई के माने ही क्या हुए
तुम ख़ुद ही ग़ैर बन के महल्ले सज़ा हुए

सच-सच कहो कि तुम में अमानत है अब कहां
वह सिद्क़ और वह दीनो दियानत है अब कहां

फिर जब कि तुम में ख़ुद ही वह ईमां नहीं रहा
वह नूर मोमिनाना वह इफ़ॉं नहीं रहा

फिर अपने कुफ्र की ख़बर ऐ क़ौम लीजिए
आयत अलैकुम अन्फ़ुसकुम याद कीजिए

ऐसा गुमां कि महदी-ए-ख़ूनी भी आएगा
और काफ़िरों के क़त्ल से दीं को बढ़ाएगा

ऐ ग़ाफ़िलो! ये बातें सरासर दरोग़ हैं
बुहतां है बे सबूत हैं और बे फ़रोग़ हैं

यारो जो मर्द आने को था वह तो आ चुका
यह राज़ तुम को शम्सो क़मर भी बता चुका

अब साल सत्रह भी सदी से गुज़र गए
तुम में से हाए सोचने वाले किधर गए

थोड़े नहीं निशां जो दिखाए गए तुम्हें
क्या पाक राज़ थे जो बताए गए तुम्हें

पर तुम ने उन से कुछ भी उठाया न फ़ायदा
मुंह फेर कर हटा दिया तुम ने यह माइदा

बुख़्लों से यारो बाज़ भी आओगे या नहीं
ख़ू अपनी पाक साफ़ बनाओगे या नहीं

बातिल से मैल दिल की हटाओगे या नहीं
हक़ की तरफ़ रुजू भी लाओगे या नहीं

अब उज़्र क्या है कुछ भी बताओगे या नहीं
मख़्फ़ी जो दिल में है वह सुनाओगे या नहीं

आख़िर ख़ुदा के पास भी जाओगे या नहीं
उस वक्त उसको मुंह भी दिखाओगे या नहीं

तुम में से जिसको दीनो दियानत से है प्यार
अब उस का फ़र्ज़ है कि वह दिल करके उस्तवार

लोगों को यह बताए कि वक़्ते मसीह है
अब जंग और जिहाद हराम और क़बीह है

हम अपना फ़र्ज़ दोस्तो अब कर चुके अदा
अब भी अगर न समझो तो समझाएगा ख़ुदा

★★★

अरबी भाषा में एक पत्र

पंजाब और हिन्दुस्तान के मुसलमानों तथा अरब, फ़ारस इत्यादि देशों की ओर जिहाद के निषेध के बारे में

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

اعلموا ایھا المسلمون رحمکم اللّٰہ ان اللّٰہ الذی تولی الاسلام و کَفَلَ اموره العظام جعل دینه هٰذا وصلة الی حکمه وعلومه ووضع المعارف فی ظاهره ومکتومه فمن الحکم التی اودع هٰذا الدین لیزید هدی المهتدین هو الجهاد الذی امر به فی صدر زمن الاسلام ثم نهٰی عنه فی هٰذه الایام والسرّ فیه انه تعالٰی اذن للذین یقاتلون فی اوّل زمان الملّة دفعًا لصول الکفرة وحفظا للدین ونفوس الصحبة ثم انقلب امر الزمان عند عهد الدولة البرطانیة وحصل الامن★ للمسلمین وما بقی حاجة السیوف والاسنة فعند ذالک اثم المخالفون المجاهدین وسلکوهم مسلک الظالمین السفاکین ولبس اللّٰہ علیهم سرّ الغزاة والغازین فنظروا الٰی محاربات الدین کلها بنظر الزرایة ونسبوا کل من غزا الی

★نوٹ :- لا شک انا نعیش تحت هٰذا السلطنة البرطانیة بالحریة التامة وحفظت اموالنا ونفوسنا وملّتنا واعراضنا من ایدی الظالمین بعنایة هٰذه الدولة۔ فوجب علینا شکر من غمرنا بنواله۔ وسقانا کأس الراحة بمآثر خصاله ووجب ان نری اعداءه صقال العضب ونوقد له لا علیه نار الغضب۔ منه

الجبر و الطغیان و الغوایة فاقتضت مصالح اللّٰہ ان یضع الحرب والجهاد و یرحم العباد و قد مضت سنته هٰذه فی شیع الاولین فان بنی اسرائیل قد طعن فیهم لجهادهم من قبل فبعث اللّٰہ المسیح فی اٰخر زمن موسٰی واریٰ ان الزارین کانوا خاطئین ثم بعثنی ربّی فی اٰخر زمن نبینا المصطفٰی و جعل مقدار هٰذا الزمن کمقدار زمن کان بین موسٰی و عیسٰی و ان فی ذالك لاٰیة لقوم متفکرین و المقصود من بعثی و بعث عیسٰی واحد و هو اصلاح الاخلاق و منع الجهاد واراءة الاٰیات لتقویة ایمان العباد و لا شك ان وجوه الجهاد معدومة فی هٰذا الزمن و هذه البلاد فالیوم حرام علی المسلمین ان یحاربوا للدین و ان یقتلوا من کفر بالشرع المتین فان اللّٰہ صرح حرمة الجهاد عند زمان الامن و العافیة و ندّد الرسول الکریم بانه من المناهی عند نزول المسیح فی الامّة ولا یخفٰی انّ الزمان قد بدّل احواله تبدیلا صریحًا و ترك طورًا قبیحًا ولا یوجد فی هٰذا الزمان ملك یظلم مسلمًا لاسلامه ولا حاکم یجور لدینه فی احکامه فلاجلِ ذالك بدل اللّٰہ حکمه فی هٰذا الاوان و منع ان یحارب للدین او تقتل نفس لاختلاف الادیان و امر ان یتم المسلمون حججهم علی الکفار و یضعوا البراهین موضع السیف البتار و یتورّدوا موارد البراهین البالغة و یعلوا قنن البراهین العالیة حتی تطأ اقدامهم کل اساس یقوم علیه البرهان ولا یفوتهم حجة تسبق الیه الاذهان ولا سلطان یرغب فیه الزمان ولا یبقی شبهة یولّدها الشیطان و ان یکونوا فی اتمام الحجج مستشفّین و ارادان یتصیّد شوارد الطبائع المنتفرة من مسئلة الجهاد و ینزل ماء الاٰی علی القلوب المجدّبة کالعهاد و یغسل وسخ الشبهات و درن الوساوس و سوء الاعتقاد فَقَدّر للاسلام وقتًا کابّان الربیع و هو وقت المسیح النازل من

الرقیع لیجری فیہ ماء الاٰیات کالینابیع و یظھر صدق الاسلام
و یبیّن ان المتزّین کانوا کاذبین و کان ذالک واجبًا فی علم اللّٰہ ربّ
العالمین لیعلم الناس ان تضوّع الاسلام و شیوعتہ کان من اللّٰہ لا
من المحاربین و انّی انا المسیح النازل من السماء و انّ وقتی وقت
ازالۃ الظنون و اراءۃ الاسلام کالشمس فی الضیاء ففکروا ان کنتم
عاقلین و ترون ان الاسلام قد وقعت حذتہ ادیان کاذبۃ یسعٰی
لتصدیقھا واعین کلیلۃ یجاھد لتبریقھا و ان اھلھا اخذوا طریق
الرفق و الحلم فی دعواتھم و أروا التواضع و الذل عند ملاقاتھم
وقالوا ان الاسلام اولغ فی الابدان المدیٰ لیبلغ القوۃ و العلیٰ و انا
ندعوا الخلق متواضعین فرأی اللّٰہ کیدھم من السماء و ما ارید من
البھتان و الازدراء و الافتراء فجلّی مطلع ھٰذا الدین بنور البرھان
واری الخلق انہ ھو القائم و الشایع بنور ربّہ لا بالسیف و السنان
و منع ان یقاتل فی ھذا الحین و ھو حکیم یعلّمنا ارتضاع کأس
الحکمۃ و العرفان و لا یفعل فعلا لیس من مصالح الوقت و الاٰوان
و یرحم عبادہ و یحفظ القلوب من الصداء و الطبائع من الطغیان
فانزل مسیحہ الموعود و المھدی المعھود لیعصم قلوب الناس
من وساوس الشیطان و تجارتھم من الخسران و لیجعل المسلمین
کرجل ھیمن مااصطفاہ و اصاب مااصباہ فثبت ان الاسلام لا
یستعمل السیف و السھام عند الدعوۃ و لا یضرب الصعدۃ و لٰکن
یأتی بدلائل تحکی الصعدۃ فی اعدام الفریۃ و کانت الحاجۃ
قد اشتدت فی زمننا لرفع الالتباس لیعلم الناس حقیقۃ الامر
و یعرفوا السرّ کالاِکیاس و الاسلام مشرب قد احتویٰ کل نوع
حفاوۃ و القراٰن کتاب جمع کل حلاوۃ و طلاوۃ و لٰکن الاعداء لا
یرون من الظلم و الضیم و یتسابون انسیاب الایم مع ان الاسلام

دیـن خصّـہ اللّٰہ بھٰـذہ الاٰثـرۃ و فیـہ بـرکات لا یبلغھـا احـد مـن المـلۃ
و کان الاسـلام فی ھٰـذا الزمـان کمثـل معصـوم اُثّـم وظُلـم بانـواع
البھتـان و طالـت الالسـنۃ علیـہ و صالـوا علٰی حریمـہ وقالـوا مذھـب
کان قتـل النّـاس خلاصـۃ تعلیمـہ فَبُعِثـت لیجـد النـاس مـا فقـدوا مـن
سـعادۃ الجـد و لیخلصـوا مـن الخصـم الالدّ و انی ظھـرت بـرث فی الارض
وحلـل بارقـۃ فی السـماء فقیر فی الغبراء وسـلطان فی الخضـراء فطـوبٰی
لـلذی عرفـنی او عـرف مـن عرفـنی مـن الاصدقـاء وجئـتُ اھـل الدنیـا
ضعیفًـا نحیفًـا کنحافـۃ الصـب و غـرض القـذف والشـتم والسـبّ
ولٰـکنی کمـیّ قـوی فی العالـم الاعـلٰی ولی عضـب مـذرب فی الافـلاک
وملـك لا یبـلٰی وحسـام یضاھـی الـبرق صقـالہ و یمـذّق الکـذب قتالہ
و لی صـورۃ فی السـماء لا یراھـا الانسـان ولا تدرکھـا العینـان و انـی مـن
اعاجیـب الزمـان و انی طُھّـرت وبُدّلـت وبُعّـدت مـن العصیـان و کذالك
یطھّـر و یبـدّل مـن احبّنی وجـاء بصـدق الجنـان وان انفـاسی ھٰـذہ تریاق
سـم الخطیّـات وسـدّ مانـع مـن سـوق الخطـرات الٰی سـوق الشـبھات ولا
یمتنـع مـن الفسـق عبـدٌ ابـدًا الّا الّذی احـبّ حبیـب الرحمـان او ذھـب
منـہ الاطیبـان وعطـف الشـیب شـطاطہ بعـد مـا کان کقضیـب البـان
ومـن عـرف اللّٰہ او عـرف عبـدہ فـلا یبقـی فیـہ شیءٌ مـن الحـدّ والسـنان
وینـکسـر جناحـہ ولا یبقـی بطـش فی الکـف والبنـان ومـن خـواص
اھـل النظـر انـھم یجعلـون الحجر کالعقیـان فانـھم قـوم لا یشـقٰی
جلیسـھم ولا یرجـع رفیقـھم بالحرمـان فالحمـدللّٰہ علٰی مننـہ انـہ ھـو
المنّـان ذو الفضـل والاحسـان واعلمـوا انی انـا المسـیح وفی بـرکات
اسـیح و کل یـوم یزیـد الـبرکات ویـزداد الاٰیـات والنـور یـبرق علٰی
بـابی و یـأتی زمـان یتـبرك الملـوك فیـہ اثـوابی وذالـك الزّمـان زمـان
قریـب ولیـس مـن القـادر بعجیـب.

अनुवाद- हे मुसलमानो! अल्लाह तुम पर रहम करे, जान लो कि अल्लाह ही इस्लाम का रक्षक है और उसके तमाम बड़े मामलों का उसी ने भरण-पोषण किया है। उस (अल्लाह) ने अपने इस धर्म (इस्लाम) को अपने आदेशों और अपने ज्ञान (के प्रकटन) के लिए एक माध्यम बनाया है। धर्म के ज़ाहिर और उसके बातिन (आंतरिक भाग में) उसने मआरिफ (अध्यात्म ज्ञान) रख दिए हैं और उन आदेशों में से जो उस अल्लाह ने इस धर्म में हिदायत पाने वालों के लिए और अधिक हिदायत हेतु रख दिए हैं वह (तलवार का) जिहाद है जिसका इस्लाम के आरंभ में आदेश दिया गया था इन दिनों में उससे मना कर दिया गया है। इसमें भेद यह है कि जिनके साथ जंग की जा रही थी उनको अल्लाह तआला ने इस्लाम के प्रारंभिक दौर में काफिरों के आक्रमण से आत्मरक्षा के तौर पर और धर्म की सुरक्षा और सहाबा के जीवन की रक्षा के लिए इस जिहाद की अनुमति दी थी। अत: अंग्रेज़ी हुकूमत में समय बदल गया है और मुसलमानों को शान्ति एवं सुरक्षा★ प्राप्त हो गई है। इसलिए तलवारों और भालों की आवश्यकता शेष नहीं रही। अत: ऐसे शान्तिपूर्ण ज़माने में तलवारें और भाले उठाकर विरोधियों और (तथाकथित) मुजाहिदों ने गुनाह किया और (मुसलमानों को) अत्याचारियों और खून बहाने वालों के मार्ग पर चलाया। अल्लाह ने उन पर भूतकाल में जंग करने वालों का राज़ भ्रमित कर दिया। उन्होंने धर्म के लिए लड़ी जाने वाली जंगो को बिल्कुल गलत अंदाज़ में देखा है जिसने बग़ावत और गुमराही के कारण जंग लड़ी, अत: अल्लाह तआला की हिकमतों ने यह मांग की कि जंग और जिहाद को रोक दिया जाए और अल्लाह तआला बंदों पर रहम कर रहा है, उसकी यही

★ **नोट-** इसमें कोई संदेह नहीं कि हम अंग्रेज़ी हुकूमत के अधीन देश में आज़ादी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं और हमारे जान, माल इसी प्रकार हमारी क़ौम और सम्मान इस हुकूमत की कृपा से ज़ालिमों के हाथों से सुरक्षित हैं। अत: हम पर उसका धन्यवाद करना अनिवार्य है जिसने हमें अपनी कृपा से आबाद रखा और अपने सद्वयवहार से आराम का जाम पिलाया। इस कारण हम पर अनिवार्य है कि हम उनके शत्रुओं को क्रोध की तलवारें दिखाएं और उनकी खातिर नाराज़गी की आग जलाएं।

सुन्नत पहली क़ौमों में भी गुज़र चुकी है। भूतकाल में अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल पर उन के तलवार के जिहाद के कारण ऐतराज़ किया था और अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम (के सिलसिले के) आखिरी ज़माने में मसीह अलैहिस्सलाम को भेजा। जिसने देखा (या बताया) कि ऐसे हमला करने वाले ग़लती पर थे। फिर मेरे रब ने मुझे हज़रत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आखरी ज़माने में भेजा और अल्लाह ने इस ज़माने में इतनी ही अवधि नियुक्त की जितनी मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम के मध्य थी। इसमें विचार करने वाली क़ौम के लिए निशान है।

मेरे और ईसा के अवतरण का एक ही उद्देश्य है और वह आचरण का सुधार और (तलवार के) जिहाद की मनाही है। साथ ही बंदों के ईमान को मज़बूत करने के लिए निशान दिखाना है। निस्संदेह इस ज़माने में इस देश में जिहाद के कारण समाप्त हो गए हैं। आज मुसलमानों पर धर्म के लिए जंग हराम (अवैध) है और जो शरीयत (अर्थात क़ुरआन मजीद) का इन्कार करे उसका क़त्ल करना हराम (अवैध) है। अल्लाह तआला ने अमन और सुरक्षा के ज़माने में जिहाद के अवैध होने को स्पष्ट कर दिया है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मसीह (मुहम्मदी) की इस उम्मत के बाद (तलवार के) जिहाद से मना किया है। यह किसी से छुपा हुआ नहीं कि इस ज़माने के हालात पूरी तरह बदल गए हैं और अनुचित तरीके छोड़ दिए गए हैं। इस ज़माने में कोई ऐसा बादशाह नहीं जो मुसलमानों पर उनके इस्लाम के कारण अत्याचार करे और न कोई अधिकारी है जो उनके धर्म के कारण उन पर अपने आदेशों के द्वारा अत्याचार करता हो। इसलिए अल्लाह तआला ने भी अपने आदेश को इस ज़माने में बदल दिया है और अल्लाह तआला ने धर्म के नाम पर जंग करने से और धार्मिक मतभेद के आधार पर क़त्ल करने से मना कर दिया है और अल्लाह तआला ने आदेश दिया है कि मुसलमान काफिरों पर (तर्कों के माध्यम से) हुज्जत पूरी करें। काटने वाली तलवार के स्थान पर दलीलों को प्रस्तुत करें और मज़बूत तलवार पेश करने की जगह पर मज़बूत दलीलें प्रस्तुत करें और दलीलों के गुच्छों को इतना बुलंद करें

कि उनके क़दम डगमगा जाएं। हर बुनियाद पर तर्क को स्थापित करें। यहाँ तक कि कोई ऐसी हुज्जत या दलील शेष न रह जाए जिसका विचार किसी मस्तिष्क में पैदा हो सकता हो और उसका उत्तर न दिया गया हो। और ऐसा कोई ठोस तर्क प्रस्तुत करने से रह न जाए जिसकी ज़माने को आवश्यकता है। कोई ऐसा संदेह जो शैतान पैदा कर सकता है उसका निराकरण करने से भी न रह जाए। और पूर्ण एवं संतोषजनक उत्तर चाहने वालों के लिए हर प्रकार से हुज्जत पूरी हो जाए। कुछ गुमराह प्रवृत्ति के लोग जिहाद के द्वारा शिकार करना चाहते हैं और अपने विचार में नेमतों का पानी बंजर दिलों पर देख-रेख करने वालों के समान डालते हैं और संदेह की मैल को और भ्रांतियां एवं बिदअतों की गंदगी को धो रहे हैं। अत: अल्लाह तआला ने इस्लाम के लिए समय निर्धारित कर रखा था मौसम-ए-बहार के समान। वह समय मसीह का समय था जो आसमान से अवतरित होने वाला था ताकि निशानों का पानी चश्मों की तरह जारी करे और इस्लाम की सच्चाई प्रकट करे और बयान करे कि आरोप लगाने वाले झूठे थे।

ख़ुदा जो समस्त संसार का पालनहार है, को यह ज्ञात है कि यह सब होकर रहने वाला था ताकि लोग जान लें कि इस्लाम की सुगंध और उसका प्रचार अल्लाह की तरफ से है न कि जंग करने वालों की ओर से। मैं वह मसीह हूं जो आसमान (अर्थात ख़ुदा) की ओर से भेजा गया हूं। मेरा समय संदेह के निराकरण का समय है, इस्लाम को सूरज की रोशनी में ज़ाहिर करने का समय है। विचार करो यदि तुम बुद्धिमानों में से हो। तुम देख रहे हो कि इस्लाम झूठे धर्मों के नीचे आ पड़ा है और वे इसकी पराजय के लिए प्रयत्न कर रहे हैं, जानते हुए कि (उनके धर्म) रात के समान हैं उसके बाद भी उन्हें रोशन करने की कोशिश कर रहे हैं। इन धर्म वालों ने अपनी तबलीग़ में नरमी और दया का मार्ग अपनाया है और वह मुलाकात के समय विनम्रता का इज़हार करते हैं और कहते हैं कि इस्लाम ने शरीरों में छुरी घोंपी है ताकि वह अपनी शक्ति और अपने प्रभुत्व को प्रकट करे। (लेकिन इस्लाम के विरोधी कहते हैं कि) हम लोगों को अत्यंत विनम्रता के साथ प्रचार करते हैं। अल्लाह तआला ने उनके प्रयत्न

आसमान से देखे, मैं किसी प्रकार का आरोप, इफ्तिरा या इल्ज़ाम लगाना नहीं चाहता। अत: इस धर्म (इस्लाम) के ज़ाहिर करने वाले (ख़ुदा) ने उसे तर्कों के नूर से प्रकाशमान किया है और सृष्टि पर ज़ाहिर किया है कि यह धर्म अपने रब के नूर से क़ायम और फैला हुआ है न कि तलवार या भालों से। इस ज़माने में जंग से मना किया गया है और वह हकीम ख़ुदा हमें बुद्धिमत्ता और विवेक के जाम पीना सिखाता है और कोई ऐसा काम उससे नहीं होता जो कि समय और ज़माने के हित के विरुद्ध हो। वह अपने बंदों पर रहम करता है और दिलों को जंग लगने से सुरक्षित रखता है। अत: उस ख़ुदा ने अपने मसीह मौऊद और महदी माहूद को अवतरित किया ताकि लोगों के दिलों को शैतानी भ्रम और उनके व्यापारों को घाटे से बचाए और मुसलमानों को उस मर्द के समान बनाए जिसने अपनी चुनी हुई वस्तुओं पर पूर्ण प्रभुत्व हासिल कर लिया हो और उसे पा लिया हो जिसे उसने पाना था। अत: सिद्ध हुआ के इस्लाम दावत (धर्म प्रचार) के लिए तलवार और तीरों का प्रयोग नहीं करता और सीनों पर भालों से वार नहीं करता बल्कि झूठ को समाप्त करने में अपने तर्क प्रस्तुत करता है जो कि मज़बूत भालों के समान हैं। हमारे इस ज़माने में संदेहों के निराकरण की अत्यंत आवश्यकता है ताकि लोग मामले की वास्तविकता को जान सकें और भेद को इस प्रकार पहचान लें जैसे थैले (के अंदर रखी चीजों) को पहचानते हैं। इस्लाम एक घाट के समान है जिसमें हर प्रकार के संदेह का हल है और क़ुरआन ऐसी किताब है जिसमें हर प्रकार की मिठास और सुंदरता है परंतु दुश्मन अत्याचार एवं दुश्मनी के कारण यह देख नहीं पाते और सांप के समान भाग जाते हैं हालांकि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसे अल्लाह तआला ने बहुत से ज्ञानों से विशेष कर दिया है और उसमें ऐसी बरकते हैं जिस तक क़ौम में से कोई नहीं पहुंच सकता। इस्लाम इस ज़माने में उस मासूम व्यक्ति के समान है जिस पर विभिन्न प्रकार के आरोप लगाकर अत्याचार किया गया है और उस पर ज़बानें लंबी की गई हैं और उसकी पवित्रता पर आक्रमण किया गया है और (दुश्मनों ने) कहा कि इस्लाम ऐसा धर्म है जिसकी शिक्षा का सारांश लोगों को क़त्ल करना है। अत: मैं इसलिए भेजा

गया हूं कि लोग खोए हुए सौभाग्य को पालें और वह अपने घोर शत्रुओं से मुक्ति प्राप्त कर लें। मैं इस ज़मीन में कमज़ोरी की हालत में ज़ाहिर हुआ हूं परंतु आसमान में एक रोशन हालत में हूं। ज़मीन में मैं फकीर फकीर हूं और हरियाली में सुल्तान हूं। अत: सौभाग्यशाली है उसके लिए जिसने मुझे पहचाना या दोस्तों में से उसे पहचाना। मैं दुनिया वालों में से कमज़ोर और निर्बल हो कर आया हूं उस कमज़ोर की तरह जो अपने महबूब की मोहब्बत के कारण कमज़ोर हुआ मुझे गालियों और आरोपों का निशाना बनाया गया परंतु मुझे परलोक से शक्ति दी गई है और आसमानों में मेरे लिए तलवार है जो अपनी धार की वजह से बिजली की तरह चमकदार है जो झूठ को अपने शिकार की तरह टुकड़े-टुकड़े कर देती है। आसमान में मेरी तस्वीर है जिसे इंसान नहीं देखता और न ही दो आंखें उस तक पहुंच सकती हैं। मैं इस ज़माने के विलक्षण निशानों में से हूं और मैं पवित्र किया गया हूं और बदल दिया गया हूं, अवज्ञाओं से दूर किया गया हूँ, और इस प्रकार उसे भी पवित्र और परिवर्तित किया गया है जो मुझ से मुहब्बत करता है और सच्चे दिल से मेरे पास आया है। मेरी सांसे (अर्थात बातें) गुनाहों के ज़हर के लिए विषनाशक हैं और भय एवं संदेहों के बाज़ार के रास्ते में एक मजबूत रोक हैं। कोई बंदा अवज्ञा से रुक नहीं सकता जब तक रहमान ख़ुदा के महबूब से मोहब्बत नहीं करता या उससे दो चीजों (विवाह एवं भोजन) की मोहब्बत दूर नहीं होती या जब बुढ़ापा पूरी तरह से आ जाए बाद उसके कि वह (एक नौजवान) बांस की तरह सीधा था और जिसने अल्लाह तआला को पहचान लिया और उसके बंदे को पहचान लिया उसमें कोई क्रोध और उत्तेजना बाकी नहीं रहेगी। उसके पर टूट जाएंगे और उसके हाथ और उंगलियों में पकड़ बाकी नहीं रहेगी। ख़ुदाई नज़र वालों की विशेषताओं में से है कि वह पत्थर को सोना बना देते हैं। वह ऐसी क़ौम है कि उनके पास बैठने वाला भी दुर्भाग्यशाली नहीं रहता और उनका दोस्त भी वंचित नहीं लौटता। सब तारीफ उसके एहसानों के कारण अल्लाह के लिए है जो बहुत फज़ल और एहसान करने वाला है। जान लो कि मैं मसीह हूं और बरकतों (की छाया) में चलता फिरता हूँ हर रोज़

बरकतें बढ़ती चली जा रही हैं और निशानात अधिक होते चले जा रहे हैं। नूर मेरे द्वार पर चमक रहा है। एक ज़माना आने वाला है जब बादशाह मेरे कपड़ों से बरकत प्राप्त करेंगे और वह ज़माना करीब है।

सामर्थ्यवान ख़ुदा के लिए यह अजीब नहीं है।

الاختبار اللطیف لمن کان یعدل او یحیف

ایّھاالناس ان کنتم فی شک من امری. و ممّا اوحی الیّ من ربّی فناضلونی فی انباء الغیب من حضرۃ الکبریاء. و ان لم تقبلوا ففی استجابۃ الدعاء و ان لم تقبلوا ففی تفسیر القراٰن فی اللسان العربیۃ مع کمال الفصاحۃ ورعایۃ الملح الادبیۃ. فمن غلب منکم بعد ماساق ھٰذا المساق فھو خیر منّی ولا مِراء ولا شقاق ثم ان کنتم تُعرضون عن الامرین الاوّلین و تعتذرون وتقولون انا مااعطینا عین رؤیۃ الغیب ولا من قدرۃ علیٰ اجراء تلک العین فصارعونی فی فصاحۃ البیان مع التزام بیان معارف القراٰن واختاروا مسحب نظم الکلام ولتسحبوا ولا ترھبوا ان کنتم من الادباء الکرام وبعد ذالک ینظر الناظرون فی تفاضل الانشاء ویحمدون من یستحق الاحماد والابراد و یلعنون من لعن من السماء فھل فیکم فارس ھٰذا المیدان و مالک ذالک البستان وان کنتم لا تقدرون علی البیان ولا تکفون حصائد اللسان فلستم علی شیءٍ من الصدق والسداد ولیس فیکم الامادۃ الفساد اتحمون وطیس الجدال مع ھٰذہ البرودۃ والجمود والجھل والکلال موتوا فی غدیر او بارزونی کقدیر و ارونی عینکم ولا تمشوا کضریر واتقوا عذاب ملک خبیر واذکروا اخذ علیم

وبصیر وان لم تنتھوا فیاتی زمان تحضرون عند جلیل کبیر ثم تذوقون ما یذوق المجرمون فی حصیر وان کنتم تدّعون المھارۃ فی طرق الاشرار ومکائد الکفار فکیدوا کلّ کیدٍ الیٰ قوۃ الاظفار و قَلّبوا امری ان کان عندکم ذرّۃ من الاقتدار واحکموا تدبیرکم وعاقبوا دبیرکم واجمعوا کبیرکم وصغیرکم واستعملوا دقاریرکم وادعوا لھذاالامر مشاھیرکم و کل من کان من المحتالین واسجدوا علیٰ عتبۃ کل قریع زمن وجابر زمن لیمدّکم بالمال والعقیان ثم انھضوا بذالک المال وھدّمونی من البنیان ان کنتم علیٰ ھدّ ھیکل اللّٰہ قادرین واعلموا ان اللّٰہ یخزیکم عند قصد الشرّ ویحفظنی من الضرّ ویتم امرہ وینصر عبدہ ولا تضرونہ شیئًا ولا تموتون حتی یریکم ما اریٰ من قبلکم کل من عادا اولیاءہ من النبیین والمرسلین والمامورین وٰاخر امرنا نصر من اللّٰہ وفتح مبین وٰاخر دعوانا ان الحمدللّٰہ ربّ العالمین.

एक सरल परीक्षा उस व्यक्ति के लिए जो न्याय करे या अत्याचार करे

अनुवाद- हे लोगो! अगर तुम मेरे मामले में किसी संदेह में ग्रस्त हो जो मेरे रब ने मेरी और वह्यी की है तो अल्लाह तआला की ओर से मिलने वाली परोक्ष की ख़बरों में मेरा मुक़ाबला कर लो अगर यह मामला तुम स्वीकार नहीं करते तो दुआ की स्वीकारिता में मुझ से मुक़ाबला कर लो। अगर यह भी तुम स्वीकार नहीं करते तो अरबी भाषा में क़ुरआन की तफ़सीर (व्याख्या) लिखने में मुझ से मुक़ाबला कर लो। ऐसी व्याख्या जिसमें कमाल की फसाहत और अरबी साहित्य के उस्लूब को भी दृष्टिगत रखा जाए। इस मैदान में मुक़ाबला के बाद जो तुम में से विजयी होगा तो वह बिना किसी संदेह के मुझ से श्रेष्ठ होगा।

अगर पहले दो मामलों से मुंह फेरते हो और पीछे हटना चाहते हो कि हमें

परोक्ष के देखने की शक्ति नहीं दी गई और न ही हमें वर्णित विषयों में सामर्थ्य दिया गया है तो मुझसे भाषा शैली में मुक़ाबला कर लो। इस शर्त के साथ कि उसमें क़ुरआन मजीद के मआरिफ (आध्यात्मज्ञान) वर्णन किए जाएं और कविता शैली का मार्ग अपना लो। अगर तुम्हारी गणना सम्माननीय साहित्यकारों में होती है तो तुम यह मार्ग अपनाओ, डरो नहीं। उसके बाद देखने वाले देख लेंगे। वाक्यों का गठन करने में कौन बेहतर है और उसकी प्रशंसा करेंगे जो प्रशंसनीय है और जो संदेहयुक्त या हौसला तोड़ने का पात्र होगा और उस पर लानत करेंगे जो आसमान से लानत किया गया। क्या तुम में से कोई इस मैदान का शाह सवार है और उस बाग का मालिक है। अगर तुम भाषा शैली पर सामर्थ्य नहीं रखते तो तुम झूठी बातों से रुक नहीं जाते और ज़बान के काटने से भी बाज़ नहीं आते तो तुम सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर नहीं हो। और तुम्हारे अन्दर फसाद के अतिरिक्त और कोई माद्दा (तत्व) नहीं है। क्या तुम जंग के मैदान को भड़काते हो बावजूद इस ठंडेपन और जहालत और सुस्ती के। किसी तालाब में डूब मरो या फिर शक्तिशाली की तरह मुझसे मुक़ाबला करो। मुझे अपनी आंखें दिखाओ और अंधे की तरह न चलो। मालिक और ख़बर रखने वाले ख़ुदा से डरो, और अलीम (सर्वज्ञानी) और बसीर (सर्वदृष्टा) की गिरफ्त से डरो। अगर तुम बाज़ नहीं आओगे तो वह ज़माना आएगा कि जलील (श्रेष्ठ) और कबीर ख़ुदा के सम्मुख प्रस्तुत किए जाओगे। तुम वह चखोगे जो मुजरिम क़ैद में चखते हैं। अगर तुम उपद्रव के मार्गों और काफिरों की तदवीरों में महारत का दावा करते हो तो हर तदवीर में नाख़ूनों तक ज़ोर लगाओ। अगर तनिक भी तुम में शक्ति है तो मेरे मामला को उलट दो। अपनी तदवीर और चाल को फैलाओ अपने बड़ों और छोटों को एकत्र करो, अपने धोखा को प्रयोग करो इस मामले के लिए अपने परामर्श दाताओं को बुलाओ और हर उसको बुलाओ जो चालें चलने वालों में से हो और ज़माने के हर सरदार और अत्याचारी की चौखट पर सजदा करो ताकि वे तुम्हारी माल और सोना से मदद करें। फिर उस माल को लेकर उठो और मुझे बुनियादों से गिरा दो, अगर तुम अल्लाह के निशान को गिराने का सामर्थ्य रखते

हो। जान लो कि उपद्रव का इरादा करने पर अल्लाह तुम्हें अपमानित करेगा और मुझे नुकसान से सुरक्षित रखेगा और अपने आदेश को पूरा करेगा और अपने बन्दे की सहायता करेगा और उसको तुम कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकोगे। और तुम उस समय तक नहीं मरोगे जब तक कि तुमको वह न दिखा दे जो तुम से पहले औलिया, नबियों, रसूलों और मा'मूरों (अल्लाह द्वारा आदेशित) के दुश्मनों को दिखाया गया। हमारे मामले का अन्त, अल्लाह की सहायता और स्पष्ट विजय है और हमारी आखरी दुआ यह है कि समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह के लिए हैं जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का पालनहार है ।

विज्ञापन दाता
मिर्ज़ा गुलाम अहमद मसीह मौऊद
क़ादियान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली

पीर मेहर अली शाह साहिब गोलड़वी के उत्तर में

اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِاللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ
(हा मीम अस्सज्दह - 53)

وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ط
(अलअन्आम - 22)

दर्शकों को याद होगा कि मैंने अपने 20 जुलाई 1900 ई० के विज्ञापन में पीर मेहर अली साहिब गाोलड़वी को इस आधार पर एक चमत्कारी मुकाबले का निमंत्रण दिया था कि यदि वह पंजाब और हिन्दुस्तान के अन्य उलेमा की भांति मेरे दावे को झुठलाने वाले हैं और मेरी वे तीस से अधिक पुस्तकें जो मैंने अपने दावे के सबूत में लिखकर प्रकाशित की हैं वह सबूत उनके लिए पर्याप्त नहीं है तथा वे समस्त शास्त्रार्थ (मुनाज़रात) और मुबाहसे जो आज तक उन के सहपंथी उलेमा से होते रहे हैं वे भी उनके निकट काल्पनिक हैं। अत: अब अन्तिम फ़ैसला यह है कि वह इस्लाम के महान बुज़ुर्गों के सदा से चले आ रहे नियमानुसार इस तौर पर एक मुबाहले के रंग★ में मुझ से मुक़ाबला कर लें कि पवित्र क़ुर्आन की चालीस आयतें पर्ची द्वारा निकाल कर और यह दुआ करके कि जो सदस्य सच पर है उसको इस मुकाबले में त्वरित सम्मान प्राप्त हो तथा जो असत्य पर है उसे त्वरित अपमान प्राप्त हो और फिर आमीन कहकर दोनों सदस्य अर्थात् मैं

★**हाशिया :-** इस प्रकार का मुक़ाबला यद्यपि वास्तविक तौर पर मुबाहला नहीं क्यों कि इसमें लानत नहीं तथा किसी के लिए अज़ाब का अनुरोध नहीं। इसीलिए हमने इस का नाम चम्तकारिक मुक़ाबला रखा तथापि इसमें मुबाहले के उद्देश्य नर्म तौर पर मौजूद है जो ख़ुदा के फ़ैसले के लिए पर्याप्त हैं। (इसी से)

और पीर मेहर अली शाह साहिब सरस एवं सुबोध अरबी भाषा में उन चालीस आयतों की तफ़्सीर (व्याख्या) लिखें जो बीस पृष्ठों से कम न हो तथा हम दोनों में से जो सदस्य सरस सुबोध अरबी भाषा तथा क़ुर्आन के मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानों) की दृष्टि से विजयी रहे वही सच पर समझा जाए और यदि आदरणीय पीर साहिब इस मुकाबले से पृथक हो जाएं तो अन्य मौलवी लोग मुक़ाबला करें परन्तु इस शर्त पर कि चालीस से कम न हों ताकि सामान्य जनता पर उनके पराजित होने का कुछ प्रभाव पड़ सके और उनके महत्त्व को घटाने की गुंजायश कम हो जाए। परन्तु खेद अपितु हज़ार खेद कि पीर मेहर अली शाह साहिब ने मेरे इस निमंत्रण को जिस से सुन्नत के अनुसार सत्य खुलता था तथा ख़ुदा तआला के हाथ से फ़ैसला हो जाता था ऐसे स्पष्ट ज़ुल्म से टाल दिया जिसे हठधर्मी के अतिरिक्त कोई नाम नहीं दिया जा सकता तथा एक विज्ञापन प्रकाशित किया कि हम प्रथम पवित्र क़ुर्आन के और हदीसों के स्पष्ट आदेशों के अनुसार बहस करने के लिए उपस्थित है। इसमें यदि तुम पराजित हो तो हमारी बैअत कर लो। तत्पश्चात् हमें वह चमत्कारिक मुक़ाबला भी स्वीकार है। अत: दर्शकगण सोच लें कि यहां कितने झूठ और छल से काम लिया गया है क्योंकि जब क़ुर्आन और हदीसों के स्पष्ट आदेशों की दृष्टि से पराजित होने की अवस्था में मेरे लिए बैअत करने को आदेश की शर्त लगाई गई है तो फिर मुझे चमत्कारिक मुक़ाबले के लिए कौन सा अवसर दिया गया तथा स्पष्ट है कि विजयी होने की स्थिति में तो स्वयं मुझे चमत्कारिक मुक़ाबले की आवश्यकता शेष नहीं रहेगी तथा पराजित होने की स्थिति में मेरे लिए बैअत करने का आदेश जारी किया गया। अब दर्शकगण बताएं कि जिस चमत्कारी मुकाबले के लिए मैंने बुलाया था उसका कौन सा अवसर रहा। अत: यह कितना बड़ा धोखा है कि पीर जी साहिब ने पीर कहला कर अपनी जान बचाने के लिए इस को प्रयोग किया है। फिर इस पर एक अतिरिक्त झूठ यह है कि आप अपने विज्ञापन में लिखते हैं कि हम ने आप के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया है। दर्शक गण फ़ैसला करें कि स्वीकृति का यही तरीका है जो उन्होंने प्रस्तुत किया है? स्वीकृति तो इस स्थिति में होती कि

वह बिना किसी बहाने के मेरी विनती को स्वीकार कर लेते, परन्तु जबकि आप ने एक और दरख़्वास्त प्रस्तुत कर दी और लिख दिया कि हम यह चाहते हैं कि पवित्र क़ुर्आन और हदीस की दृष्टि से मुबाहसा हो और यदि इन्साफ़ करने वाले लोग उन्हीं की जमाअत में से होंगे, यह राय प्रकट करें कि पीर साहिब इस मुबाहसा में विजयी रहे तो फिर बैअत कर लो। अब बताओ कि जब पुस्तकीय मुबाहसे पर ही बैअत तक नौबत पहुंच गई तो मेरी दरख़्वास्त के मंज़ूर करने के क्या अर्थ हुए वह तो बात ही स्थगन की स्थिति में रही। क्या इसी को मंज़ूर कहते हैं? क्या मैं पीर साहिब का मुरीद (शिष्य) बन कर फिर तफ़्सीर लिखने में उनका मुक़ाबला भी करूंगा या विजयी होने की स्थिति में मेरा अधिकार नहीं होगा कि मैं उन से बैअत लूं और फिर मेरे लिए चमत्कारिक मुकाबले की आवश्यकता रहेगी परन्तु उनके लिए नहीं और फिर लज्जाजनक धोखा जो उस विज्ञापन में दिया गया है वह यह है जो वर्णन नहीं किया गया कि इस विज्ञापन का मूल उद्देश्य क्या था अभी मैं वर्णन कर चुका हूँ कि असल उद्देश्य इस विज्ञापन से यह था कि जब पुस्तकीय मुबाहसों से विरोधी उलेमा सद्मार्ग पर नहीं आए तथा उन मुबाहसों के होते हुए भी दस वर्ष से भी कुछ अधिक समय व्यतीत हो गया तथा इस अवधि का समय व्यतीत हो गया तथा इस अवधि में मैंने छत्तीस 36 पुस्तकें प्रकाशित कर के लोगों में प्रसारित कीं तथा एक सौ से अधिक विज्ञापन प्रकाशित किए और इन समस्त लेखों की पचास हज़ार से अधिक प्रतियां देश में प्रसारित की गईं तथा पवित्र क़ुर्आन और हदीसों के स्पष्ट आदेशों से उत्तम श्रेणी का प्रमाण दिया गया परन्तु उन समस्त तर्कों एवं मुबाहसों से उन्होंने कुछ भी लाभ प्राप्त न किया तो अन्ततः ख़ुदा तआला से आदेश पाकर नबियों की सुन्नत पर इस का उपचार देखा कि एक तुरन्त मुबाहले के रंग में चमत्कारिक मुक़ाबला किया जाए, परन्तु अब पीर साहिब मुझे उसी पहले स्थान की ओर खींचते हैं और उसी छेद में पुनः मेरा हाथ डालना चाहते हैं जिसमें सांपों के अतिरिक्त मैंने कुछ नहीं पाया, जिसके बारे में मैं अपनी पुस्तक "अंजामे-आथम" में मौलवियों की निर्दयता देखकर लिखित वादा कर चुका हूं कि भविष्य में हम उनके साथ

कथित मुबाहसे नहीं करेंगे। पीर साहिब ने किसी स्थान पर हाथ पड़ता न देख कर उस डूबने वाले की भांति जो घास-पात पर हाथ मारता है मुबाहसे का बहाना प्रस्तुत कर दिया। मेरे बारे में यह सोचकर कि यदि वह मुबाहसा नहीं करेंगे तो हम लोगों में विजय का नगाड़ा बजाएंगे और यदि मुबाहसा करेंगे तो कह देंगे कि इस व्यक्ति ने ख़ुदा तआला के साथ प्रतिज्ञा (अहद) करके फिर प्रतिज्ञा भंग (तोड़) कर दी। हम पीर साहिब से फ़त्वा पूछते हैं कि क्या आप अपने स्वयं के लिए यह वैध रखते हैं कि ख़ुदा तआला के साथ अहद (प्रतिज्ञा) करके फिर तोड़ दें? फिर हम से आपने क्योंकर आशा रखी? और अब पुस्तकीय मुबाहसों की आवश्यकता ही क्या थी? ख़ुदा तआला के कलाम से हज़रत मसीह की मृत्यु प्राप्त हो जाना सिद्ध हो गया। ईमानदार के लिए केवल एक आयत

(अलमाइदह: - 118) فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ

इस बात पर पर्याप्त तर्क है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए, क्योंकि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन के तेईस स्थानों में शब्द تَـو فِّى को रूह निकालने के अवसर पर प्रयोग किया। प्रथम से अन्त तक पवित्र क़ुर्आन में किसी स्थान पर تـوَفى का शब्द ऐसा नहीं जिसके अर्थ रूह क़ब्ज़ करने या मारने के अतिरिक्त और अर्थ हों और फिर सबूत पर सबूत यह कि सही बुख़ारी में इब्ने अब्बास से مُتَـوَ فِّيْـكَ के अर्थ مُمِيْتُـكَ लिखे हैं। इसी प्रकार तफ़्सीर फ़ौज़ुल कबीर में भी यही अर्थ लिखे हैं। और किताब ऐनी तफ़्सीर बुख़ारी में इस कथन की सनद वर्णन की है। अत: इस ठोस और स्पष्ट आदेश से प्रकट है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ईसाइयों के बिगड़ने से पहले अवश्य मर चुके हैं और हदीसों में जहाँ भी तवफ़्फ़ी تَـو فِّى का शब्द किसी रूट में भी आया है उसका अर्थ मारना ही आया है। जैसा कि हदीसविदों (मुहद्दिसों) पर गुप्त नहीं तथा शब्द-विद्या में यह मान्य, स्वीकृत और सर्वसम्मत बात है कि जहां ख़ुदा फ़ाइल (कर्त्ता) और इन्सान (मनुष्य) करण (मफ़ऊलबिह) हो वहां मारने के अतिरिक्त تَـو فِّى के अर्थ मारने के अतिरिक्त और कोई अर्थ नहीं आते। अरब के समस्त

दीवान इस पर गवाह हैं। अब इस से अधिक न्याय को छोड़ना और क्या होगा कि क़ुर्आन उच्च स्वर में कह रहा है कोई नहीं सनुता। हदीस गवाही दे रही है, कोई परवाह नहीं करता। अरब का शब्द-विज्ञान गवाही दे रहा है परन्तु कोई उसकी ओर दृष्टि उठा कर नहीं देखता। अरब के दीवान इस शब्द के मुहावरे बता रहे हैं, परन्तु किसी के कान खड़े नहीं होते फिर पवित्र क़ुर्आन में केवल यही आयत तो नहीं जो मसीह की मृत्यु को सिद्ध करती है तीस आयतें जिन की चर्चा 'इज़ाला औहाम' में मौजूद है यही गवाही देती हैं जैसा कि आयत

(अलआराफ़ - 26) وَفِيْهَا تَحْيَوْنَ

अर्थात् तुम पृथ्वी पर ही जीवन व्यतीत करोगे। अब देखो यदि कोई आकाश पर जा कर भी जीवन का कुछ भाग व्यतीत कर सकता है तो इस से इस आयत का झूठा होना अनिवार्य हो जाता है। इसी की समर्थक है यह दूसरी आयत कि

(अलबक़रह - 37) وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ

अर्थात् तुम्हारे ठहरने का स्थान पृथ्वी ही रहेगी अब इस से बढ़कर ख़ुदा तआला क्या वर्णन करता? फिर एक और आयत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु को सिद्ध करती है और वह यह है कि

(अलमाइदह: - 76) كَانَا يَأْكُلٰنِ الطَّعَامَ ط

अर्थात् हज़रत मसीह और हज़रत मरयम जब जीवित थे तो रोटी खाया करते थे। अत: स्पष्ट है कि यदि रोटी (खाना) छोड़ने के दो कारण होते तो अल्लाह तआला उस का वर्णन पृथक-पृथक कर देता कि मरयम तो मृत्यु हो जाने के कारण खाने से अलग हो गईं और ईसा किसी अन्य कारण से खाना छोड़ बैठा अपितु दोनों को एक ही आयत में सम्मिलित करना निश्चित बात में एकता पर तर्क है ताकि ज्ञात हो कि दोनों की मृत्यु हो गई। फिर एक और आयत है हज़रत ईसा की मृत्यु सिद्ध करती है और वह यह है कि

(मरयम - 32) اَوْصَانِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا

अर्थात् ख़ुदा ने मुझे आदेश दे रखा है कि जब तक मैं जीवित हूं नमाज़

पढ़ता रहूं और ज़कात दूं। अब बताओ आकाश पर वह ज़कात किसको देते हैं? और फिर एक और आयत है जो बड़ी स्पष्टता के साथ हज़रत ईसा की मृत्यु को सिद्ध कर रही है और वह है कि

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ (अन्नहल - 22)

अर्थात् वर्तमान युग में लोग जितनी झूठे उपास्यों की उपासना कर रहे हैं वे सब मर चुके हैं, उनमें से कोई जीवित शेष नहीं। बताओ क्या अब भी ख़ुदा का कुछ भय पैदा हुआ या नहीं? या नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा ने ग़लती की सब उपास्यों को मुर्दा ठहरा दिया। तत्पश्चात् वह महावैभवशाली आयत है जिस पर समस्त सहाबा रज़ि का इज्मा (सर्वसम्मति) हुआ तथा एक लाख से अधिक सहाबा ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तथा पहले समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं और वह आयत यह है-

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ (आले इमरान - 145)

यहां خَلَتْ का अर्थ ख़ुदा तआला ने स्वयं बता दिया कि मृत्यु या क़त्ल। तत्पश्चात् हज़रत अबू बक्र रज़ि ने सिद्ध करने के अवसर पर पहले समस्त नबियों की मृत्यु इस आयत को प्रस्तुत करके तथा सहाबा ने मुक़ाबला छोड़ स्वीकारिता का मार्ग अपना कर सिद्ध कर दिया कि यह आयत मसीह की मृत्यु एवं पहले समस्त नबियों की मृत्यु पर ठोस प्रामाण है। और इस पर समस्त सहाबा रज़ि की सर्वसम्मति (इज्माअ) हो गई, एक व्यक्ति भी बाहर न रहा। जैसा कि मैंने इस बात को विस्तारपूर्वक तोहफ़ा ग़ज़नविया पुस्तक में उल्लेख कर दिया है। फिर इसके बाद तेरह सौ वर्ष तक कभी किसी विवेकपूर्ण निर्णय करने वाले या लोगों के मान्य इमाम ने यह दावा नहीं किया कि हज़रत मसीह जीवित हैं। हां इमाम मालिक ने स्पष्ट गवाही दी कि मृत्यु पा चुके हैं तथा इमाम इब्ने हज़्म ने साफ़ तौर पर साक्ष्य (गवाही) दी कि मृत्यु पा चुके हैं तथा पूर्ण और कामिल मुल्हमों (जिन को इल्हाम होता है) में से कभी किसी ने यह इल्हाम न सुनाया कि ख़ुदा का यह कलाम मुझ पर उतरा है कि ईसा इब्ने मरयम समस्त नबियों के विपरीत

आकाश पर मौजूद हैं। अत: जबकि मैंने पवित्र क़ुर्आन और हदीसों के स्पष्ट आदेशों, चारों इमामों के कथनों, उम्मते मुहम्मदिया के वलियों की वह्यी तथा सहाबा की सर्वसम्मति (इज्माअ) में मसीह की मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ न पाया तो तक़्व: (संयम) की अनिवार्य बातों को पूर्ण करने की दृष्टि से पहले नबियों के क़िस्सों की ओर देखा कि क्या पहली शताब्दियों में इसका कोई उदाहरण भी मौजूद है कि कोई आकाश पर चला गया हो और दोबारा वापस आया हो, तो ज्ञात हुआ कि हज़रत आदम से लेकर इस समय तक कोई उदाहरण नहीं। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन की आय़त-

(बनी इस्राईल-94) قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ کُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا

में इस की ओर संकेत करता है अर्थात् जब सब दुर्भाग्यशाली काफ़िरों ने आंहज़रत सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम से यह इक़्तिराही चमत्कार मांगा कि हम तुझे तब स्वीकार करेंगे कि हमारे देखते-देखते आकाश पर चढ़ जाए और देखते-देखते उतर आए तो आप को आदेश आया कि-

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ کُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا

अर्थात् उन को कह दे कि मेरा ख़ुदा इस बात से पवित्र है कि अपने अनादि नियम तथा अनादि प्रकृति के नियम के विपरीत कोई बात करे। मैं तो केवल रसूल और इन्सान हूं तथा संसार में जितने भी रसूल आए हैं उनमें से किसी के साथ ख़ुदा तआला की यह आदत नहीं हुई कि उसे पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर ले गया हो और फ़िर आकाश से उतारा हो और यदि आदत है तो तुम स्वयं ही इसका सबूत दो कि अमुक नबी पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया था और फिर उतारा गया। तब मैं भी आकाश पर जाऊंगा और तुम्हारे सामने उतरूंगा और यदि तुम्हारे पास कोई उदाहरण नहीं तो फिर क्यों ऐसी बात के लिए मुझ से मांग करते हो जो रसूलों के साथ ख़ुदा की सुन्नत (नियम) नहीं। अत: स्पष्ट है कि यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा को यह सिखाया हुआ होता कि हज़रत मसीह जीवित पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चले गए हैं तो अवश्य वे उस समय

ऐतिराज़ करते और कहते कि हे हज़रत! आप क्यों किसी रसूल का पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जाना अल्लाह की सुन्नत के विरुद्ध वर्णन करते हैं हालाँकि आप ही ने तो हमें बताया था कि हज़रत मसीह आसमान पर सशरीर चले गए हैं। इसी प्रकार हज़रत अबू बक्र[रज़ि॰], पर किसी ने ऐतिराज़ न किया कि क़ुर्आन में क्यों अक्षरांतरण (तहरीफ़ अक्षरों में परिवर्तन करना) करते हो। पहले समस्त अंबिया कहां मृत्यु पा चुके हैं और यदि हज़रत अबू बक्र[रज़ि॰] उस समय बहाना बनाते कि नहीं साहिब कि मेरा उद्देश्य समस्त नबियों की मृत्यु पा जाना तो नहीं है मैं तो हार्दिक तौर पर इस पर ईमान रखता हूं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चढ़ गए हैं तथा किसी समय उतरेंगे तो सहाबा उत्तर देते कि यदि आप की यही आस्था है तो फिर आप ने इस आयत को पढ़ कर हज़रत उमर[रज़ि॰] के विचारों का खण्डन क्या किया? क्या आप के कान बहरे हैं, क्या आप सुनते नहीं कि उमर बुलन्द स्वर में क्या कह रहा है? हज़रत वह तो यह कह रहा है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु नहीं हुई जीवित हैं और पुनः संसार में आएंगे और मुनाफ़िकों (दोग़ली बातें करने वाले) को क़त्ल करेंगे और वह आकाश की ओर उसी प्रकार जीवित उठाए गए हैं जैसे कि ईसा इब्ने मरयम उठाया गया था। आपने आयत तो पढ़ ली परन्तु इस आयत में इस विचार का खण्डन कहां है। किन्तु सहाबा जो बुद्धिमान और दक्ष तथा पवित्र नबी के हाथ से शुद्ध किए गए थे और अरबी तो उन की मातृभाषा थी तथा मध्य में कोई द्वेष न था। इसलिए उन्होंने उपर्युक्त आयत के सुनते ही समझ लिया कि خَلَتْ के अर्थ मृत्यु हैं जैसा कि स्वयं ख़ुदा तआला ने

اَفَاۡئِنۡ مَّاتَ اَوۡ قُتِلَ (आले इमरान - 145)

वाक्य में व्याख्या कर दी है। इसलिए वे अविलम्ब अपने विचारों से वापस लौट आए तथा आत्म-विस्मृति में आकर तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वियोग की पीड़ा से भरकर कुछ लोगों ने इस विषय को अदा करने के लिए शेरों की भी रचना की। जैसे कि हस्सान बिन साबित ने बतौर शोक गीत

(मर्सियः) यो दो चरण कहे

كُنْتَ السَّوَادَلِنَاظِرِیْ فَعَمِیَ عَلَیْکَ النَّاظِرُ
مَنْ شَاءَ بَعْدَکَ فَلْیَمُتْ فَعَلَیْکَ کُنْتُ اُحَاذِرُ

अर्थात् हे मेरे प्यारे नबी! तू तो मेरी आंखों की पुतली था और मेरी आंखों का प्रकाश था। अत: मैं तो तेरे मरने से अंधा हो गया। अब तेरे बाद दूसरों की मृत्यु का क्या शोक करूं। ईसा मरे या मूसा मरे, कोई मरे, मुझे तो तेरा ही ग़म था। देखो इश्क और प्रेम इसे कहते हैं। जब सहाबा को ज्ञात हो गया कि वह समस्त नबियों से श्रेष्ठ नबी जिनके जीवन की नितान्त आवश्यकता थी स्वाभाविक आयु से पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त हो गए तो वे इस वाक्य से अत्यन्त दुखी हो गए कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो मृत्यु पा जाएं परन्तु किसी दूसरे को जीवित रसूल कहा जाए। खेद है आजकल के मुसलमानों पर कि पादरियों के हाथ से इस बहस में अत्यन्त अपमानित भी होते हैं तथा निरुत्तर और खिसियाने हो कर बहस को त्याग भी देते हैं परन्तु इस आस्था को नहीं छोड़ते कि जीवित रसूल मात्र ईसा अलैहिस्सलाम है जो आकाश के सिंहासन पर बैठा हुआ दोबारा आने से मुहम्मदी ख़त्मे नुबुव्वत का दाग़ लगाना चाहता है। खेद कि ये उलेमा इस बात को भली भांति समझते हैं कि हज़रत समस्त रसूलों एवं नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक मुर्दा रसूल ठहराना और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को एक जीवित रसूल मानना इसमें हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घोर अपमान है और यही वह झूठी आस्था है जिसके प्रचार के कारण इस युग में कई लाख मुसलमान मुर्तद✶ हो चुके हैं और वपतस्मा लिए हुए गिरजों में बैठे हुए हैं परन्तु फिर भी ये लोग इस मिथ्या (झूठी) आस्था का त्याग नहीं करते अपितु मेरे विरोध के कारण इसमें और अधिक आग्रह करते और सीमा से बढ़ते जाते हैं अपितु कुछ मूर्ख मौलवी यह भी कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ईसा मसीह से तुलना

✶ **मुर्तद-** इस्लाम से विमुख होने वाला (अनुवादक)

ही क्या है वह तो फरिश्तों के प्रकार में से था न कि मनुष्य तथा शुद्ध, स्पष्ट तथा प्रकाशमान तर्क हज़रत मसीह की मृत्यु पर प्रस्तुत किए गए, उनको मुझ से द्वेष रखने के कारण स्वीकार नहीं करते तथा इन का उदाहरण उस हिन्दू का है कि एक ऐसे अवसर पर जहां केवल मुसलमान रहते थे नितान्त भूखा और मृत्यु के निकट हो गया किन्तु मुसलमानों के खाने जो अत्यन्त उत्तम और स्वादिष्ट मौजूद थे जिन को उस हिन्दू के बाप-दादों ने भी नहीं देखा था उनमें से कुछ न खाया यहां तक कि भूख से मर गया। तथा इसलिए नहीं खाया कि उन खानों से मुसलमानों के हाथ छू गए थे। इसी प्रकार इन लोगों की स्थिति है कि जिन अकाट्य तर्कों को उनके विचार में मेरे हाथों ने छुआ उन से लाभ उठाना नहीं चाहते, परन्तु मैं बार-बार कहता हूं कि हिन्दू मत बनो। ये तर्क मेरे नहीं हैं और न मेरे हाथों ने उन्हें छुआ (स्पर्श किया) है अपितु ये तो सब ख़ुदा तआला की ओर से हैं। उन्हें शौक़ से प्रयोग करो। देखो कितने क़ुर्आनी स्पष्ट आदेश हज़रत मसीह की मृत्यु पर गवाही दे रहे है, हदीसों के स्पष्ट आदेश साक्ष्य दे रहे हैं, सहाबा का इज्माअ गवाही दे रहा है, चारों इमामों की साक्ष्य गवाही दे रही है, अनादि सुन्नत जो आयत

لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا (अलफ़त्ह - 24)

की समर्थक है गवाही दे रही है। फिर भी यदि न मानो तो बहुत बड़ा दुर्भाग्य है। क़ुर्आन, हदीस, सहाबा का इज्माअ तथा अनादि सुन्नत के उदाहरण के पश्चात् कौन सा सन्देह शेष है। खेद यह भी नहीं सोचते कि दोबारा उतरने का मुक़द्दमा हज़रत मसीह की अदालत से पहले फैसला पा चुका है और डिग्री हमारे समर्थन में हुई है और हज़रत मसीह ने यहूदियों के इस विचार को कि ईलिया नबी दोबारा संसार में आएगा का खण्डन कर दिया है तथा इस भविष्यवाणी को अवास्तविक एवं रूपक के तौर पर ठहरा दिया है। तथा एलिया का चरितार्थ (मिस्दाक़) यूहन्ना अर्थात् यह्या को ठहराया है। देखो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का यह फ़ैसला तुम्हारी विवादित समस्या को कितना अधिक स्पष्ट कर रहा है। सच की यही निशानी है कि उसका कोई उदाहरण भी होता है तथा झूठ की यह

निशानी है कि उसका उदाहरण कोई नहीं होता भला बताओ कि उदाहरणतया दो सदस्यों में से एक बात विवादित है और उन सब में से एक सदस्य ने अपने समर्थन में एक निष्पाप (मासूम) नबी का उदाहरण प्रस्तुत कर दिया और दूसरा उदाहरण प्रस्तुत करने से असमर्थ है। अब इन दोनों में से अमन का अधिक अधिकारी कौन है? बताओ और प्रतिफल प्राप्त करो। यह बात मान्य है कि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त समस्त नबियों के कार्य एवं विशेषताएं उदाहरण रखती हैं ताकि किसी नबी की कोई विशेषता शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की ओर न खिंच जाए। अत: बताओ कि एक ओर तो ईसाई हज़रत मसीह की इतने लम्बे जीवन को उनकी ख़ुदाई पर तर्क ठहराते हैं और कहते हैं कि अब संसार में उनके अतिरिक्त जीवित नबी मौजूद नहीं और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक मुर्दा समझते हैं किन्तु मसीह को ऐसा जीवित कि ख़ुदा तआला के पास बैठा हुआ समझते हैं तथा दूसरी ओर आप लोग भी हज़रत ईसा को जीवित कह कर तथा क़ुर्आन, हदीस और सहाबा की सर्वसम्मति को मिट्टी में फेंक कर ईसाइयों की हां में हां मिला रहे हो। अत: विचार कर लो कि इस स्थिति में उम्मते मुहम्मदिया पर क्या प्रभाव पड़ेगा? तुम ने तो अपने मुख से स्वयं को ही निरुत्तर कर दिया और कच्चे बहाने तो विरोधी की बात को और भी अधिक शक्ति देते हैं। अतएव तुम्हारे निरुत्तर हो जाने से हज़ारों लोग मर गए और मस्जिदें ख़ाली हो गईं और ईसाइयों के गिरजाघर भर गए। हे दया-योग्य मौलवियो! कभी तो मस्जिदों के कमरों से निकलकर उस क्रान्ति पर दृष्टि डालो जो इस्लाम पर आ गई। स्वार्थ को दूर कीजिए ख़ुदा के लिए एक दृष्टि डालिए कि इस्लाम की क्या दशा हो गई है। ख़ुदा ने जो मुझे भेजा और ये बातें मुझे सिखाईं यही आकाशीय आक्रमण है जिसके बिना मिथ्या को दूर करना संभव ही नहीं। अब प्रत्येक मुर्तद का पाप आप लोगों की गर्दन पर है। जब आप लोग ही स्वीकार करें कि हज़रत मसीह जीवित रसूल तथा हज़रत ख़ातमुल अंबिया मुर्दा रसूल हैं तो फिर लोग मुर्तद हों या न हों? फिर यदि कल्पना के तौर पर यदि दोबारा संसार में आने का यह वादा सही था तो क्या कारण है कि आप लोग इसका कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं

कर सकते। बिना उदाहरण के तो ऐसी विशेषता से शिर्क को बल प्राप्त होता है तथा ख़ुदा तआला की यह आदत कदापि नहीं है। स्पष्ट है कि ईसाइयों को दोषी ठहराने के लिए केवल एलिया नबी के आकाश पर जाने और दोबारा आने का उदाहरण हो सकता था तथा इस उदाहरण से निस्सन्देह कुछ काम बन सकता था। किन्तु इन अर्थों का तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने स्वयं ही खण्डन कर दिया और कहा कि एलिया से अभिप्राय यूहन्ना नबी है जो उसके रंग और स्वभाव पर आया है। यहूदी अब तक शोर मचा रहे हैं कि मलाकी नबी की किताब में एलिया के दोबारा आने की साफ़ और स्पष्ट शब्दों में सूचना दी गई थी कि वह मसीह से पहले आएगा किन्तु हज़रत मसीह ने अकारण स्वयं को सच्चा मसीह बनाने के लिए इस ख़ुले-खुले स्पष्ट आदेश को अस्वीकार कर दिया तथा इस तावील (मूल अर्थ से पृथक व्याख्या) में वह अनूठे हैं। किसी अन्य नबी, वली, या फ़कीह ने यह तावील कदापि नहीं की और एलिया से यह्या नबी अभिप्राय नहीं अपितु बाह्य आयत को मानते चले आए और हज़रत एलिया के दोबारा आकाश से उतरने की प्रतीक्षा करते रहे। अत: यह एक झूठ है जो ईसा ने मात्र स्वार्थ सिद्धि के लिए बोला। अब बताओ यहूदी इस आरोप में सच्चे हैं या झूठे? वे तो स्वयं को सच्चा कहते हैं। उनका यह तर्क है कि ख़ुदा की किताब में किसी एलिया के मसील (समरूप) के आने की हमें सूचना नहीं दी गई। सूचना यही दी गई कि स्वयं एलिया ही संसार में दोबारा आ जाएगा। किन्तु हज़रत मसीह का यह बहाना है कि मैं हकम (निर्णायक) हो कर आया हूं और ख़ुदा से ज्ञान रखता हूं न कि अपनी ओर से। इसलिए मेरे अर्थ सही हैं तथा वास्तविकता यह है कि यदि यह स्वीकार न किया जाए कि हज़रत मसीह ख़ुदा से ज्ञान पाकर कहते हैं तो आयत का विषय निस्सन्देह यहूदियों के साथ है।★ इसी कारण वे लोग अब तक रोते और विलाप करते

★**हाशिया :-** वाक्य وَرَافِعُكَ اِلَیَّ (आले इमरान - 56) और بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَیْهِ (अन्निसा - 159) के ये अर्थ क्यों किए जाते हैं कि हज़रत मसीह आकाश की ओर उठाए गए इन शब्दों के तो ये अर्थ नहीं और यदि किसी हदीस ने यह व्याख्या की है तो वह हदीस तो प्रस्तुत करनी चाहिए अन्यथा यहूदियों की भांति एक अक्षरांतरण है। (इसी से)

तथा हज़रत मसीह को अत्यन्त बुरी गालियां देते है कि स्वयं को मसीह मौऊद ठहराने के लिए अक्षरांतरण (तहरीफ़) से काम लिया। अत: एक यहूदी विद्वान की एक पुस्तक इसी भविष्यवाणी के बारे में मेरे पास मौजूद है जिसका सार इस स्थान पर लिखा गया, जो चाहे देख ले मैं दिखा सकता हूं। इस पुस्तक का लेखक नितान्त स्तर के दावे से समस्त लोगों के सामने अपील करता है कि देखो ईसा कैसा जान बूझ कर स्वयं को मसीह मौऊद ठहराने के लिए झूठ और बनावट से काम ले रहा है और फिर यह लेखक कहता है कि ख़ुदा के सामने हमारे लिए यह बहाना पर्याप्त है कि मलाकी की किताब में यह स्पष्ट लिखा है कि मसीह मौऊद से पहले एलिया नबी दोबारा संसार में आएगा परन्तु यह व्यक्ति जो ईसा बिन मरयम है यह ख़ुदा की किताब के स्पष्ट आदेश के वाह्य शब्दों से हट कर एलिया से मसीले एलिया (एलिया का समरूप) अभिप्राय लेता है। इसिलए झूठा है और चूंकि एलिया अब तक आकाश से नहीं उतरा तो यह क्योंकर मसीह बन कर आ गया तथा संभव नहीं कि इल्हामी किताबें झूठ हों। अब बताओ कि आप लोग हज़रत ईसा से तो इतना प्रेम रखते हैं कि आप लोगों की दृष्टि में नऊज़ुबिल्लाह सय्यिदुल अस्फ़िया और असफ़ुल अस्फ़िया हज़रत ख़ातमुल अंबिया तो मुर्दा रसूल है किन्तु मसीह जीवित रसूल तथा हज़रत मसीह की इतनी बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा करने के कारण यहूदियों का पहलू आप लोगों ने अपना रखा है। भला बताओ कि आप लोगों के बयान में जो अन्तिम मसीह मौऊद के बारे में है और यहूदियों के बयान में जो उनके उस समय के मसीह मौऊद के बारे में है अन्तर क्या है। क्या ये दोनों आस्थाएं एक ही प्रकार की नहीं हैं? और क्या मेरा उत्तर और हज़रत ईसा का उत्तर एक ही प्रकार का नहीं है? फिर यदि तक़्वा (संयम) है तो इतना प्रलय का हंगामा क्यों मचा रखा है और यहूदियों की वकालत क्यों धारण कर ली? क्या यह भी आवश्यक था जब मैंने स्वयं को मसीह के रंग में प्रकट किया तो उस ओर से आप लोगों ने उत्तर देने के समय तुरन्त यहूदियों का रंग धारण कर लिया। भला यदि हज़रत मसीह के कथनानुसार एलिया के दोबारा उतरने के ये अर्थ हुए कि एक अन्य व्यक्ति बुरूज़ी तौर पर उसके आचरण और स्वभाव

पर आएगा तो फिर आप का क्या अधिकार है कि उस नबवी फैसले को अनदेखा करके आप यह दावा करते हैं कि अब स्वयं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही आ जाएगा। जैसे ख़ुदा तआला को एलिया नबी के दोबारा भेजने में तो कोई कमज़ोरी सामने आ गई थी परन्तु मसीह के भेजने में उसमें पुनः ख़ुदाई शक्ति लौट आई। क्या इसका कोई उदाहरण भी मौजूद है कि कुछ लोग आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ जाकर फिर संसार में आते रहे हैं क्योंकि वास्तविकताएं उदाहरणों के साथ ही खुलती हैं। अतः जब लोगं को हज़रत ईसा के बिना बाप होने पर सन्देह हुआ था तो अल्लाह तआला ने हृदयों को सन्तुष्ट करने के लिए हज़रत आदम का उदाहरण प्रस्तुत कर दिया, किन्तु हज़रत ईसा के दोबारा आने के लिए कोई उदाहरण प्रस्तुत न किया।★ न हदीस में न क़ुर्आन में। जबकि उदाहरण का प्रस्तुत करना दो कारणों से अवश्यक था। एक इस कारण से ताकि हज़रत ईसा का जीवित आकाश की ओर उठाए जाना उनकी एक विशेषता बन कर शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की ओर न चली जाए और दूसरे इसलिए ताकि इस बारे में ख़ुदा की सुन्नत ज्ञात होकर इस बात का सबूत पूर्णता को पहुंच जाए। अतः जहां तक हमें ज्ञान है ख़ुदा और रसूल ने इसका उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया। यदि गोलड़वी साहिब को कश्फ़ के द्वारा इसका उदाहरण ज्ञात हो गया हो तो फिर उसे प्रस्तुत करना चाहिए। अतः हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु क़ुर्आन,

---

★**हाशिया :-** कुछ मूर्ख कहते हैं कि यह आस्था भी तो मुसलमानों की है कि इल्यास और ख़िज्र पृथ्वी पर जीवित मौजूद हैं और इदरीस आकाश पर किन्तु उनको ज्ञात नहीं कि उनको अन्वेषक विद्वान जीवित नहीं समझते क्यों कि बुख़ारी और मुस्लिम की एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़सम खा कर कहते हैं कि मुझे क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि आज से एक सौ वर्ष गुज़रने के पश्चात पृथ्वी पर कोई जीवित नहीं रहेगा। अतः जो व्यक्ति ख़िज्र और इल्यास को जीवित मानता है वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़सम को झुठलाता है और यदि इदरीस को आकाश पर जीवित मानें तो फिर मानना पड़ेगा कि वह आकाश पर ही मरेंगे। क्यों कि उनका दोबारा पृथ्वी पर आना स्पष्ट आदेशों से सिद्ध नहीं तथा आकाश पर मरना आयत فيها تموتون के विपरीत है। (इसी से)

हदीस, सहाबा के इज्माअ (सर्वसम्मति), चार महान इमामों और अहले कश्फ़ के कश्फ़ों से सिद्ध है तथा इसके अतिरिक्त अन्य भी प्रमाण हैं जैसा कि मरहम-ए-ईसा जो हज़ार वैद्यों से अधिक उसको अपनी पुस्तकों में लिखते चले आए हैं, जिन के वर्णन का सारांश यह है कि यह मरहम जो घावों और रक्त-स्राव (खून बहना) के लिए अत्यन्त लाभप्रद है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए तैयार किया गया था तथा घटनाओं से सिद्ध है कि नुबुव्वत के समय में सलीब की केवल एक ही घटना उनके सामने आई थी, किसी अन्य के गिरने या चोट लगने की घटना नहीं हुई। अतः निस्सन्देह वह मरहम उन्हीं घावों के लिए था। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सलीब से जीवित बच गए और मरहम के प्रयोग से स्वस्थ हुए, और फिर यहां वह हदीस जो कन्ज़ुल उम्माल में लिखी है वास्तविकता को और भी प्रकट करती है अर्थात् यह कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह को उस कष्ट के समय में जो सलीब का कष्ट था आदेश हुआ कि किसी अन्य देश की ओर चला जा कि ये दुष्ट यहूदी तेरे बारे में बुरा इरादा रखते हैं तथा फ़रमाया कि ऐसा कर कि इन देशों से दूर निकल जा ताकि तुझे पहचान कर ये लोग दुःख न दें। अब देखिए इस हदीस और मरहम-ए-ईसा का नुस्ख़ा तथा कश्मीर की क़ब्र की घटना को परस्पर मिला कर उस कथन की वास्तविकता कितनी अधिक साफ़ और स्पष्ट हो जाती है। पुस्तक "यूज़ आसफ़ की जीवनी" जिसकी रचना पर हज़ार वर्ष से अधिक हो चुके हैं उसमें स्पष्ट लिखा है कि एक नबी यूज़ आसफ़ के नाम से प्रसिद्ध था और उसकी किताब का नाम इंजील था और फिर उसी किताब में उस नबी की शिक्षा लिखी है और वह शिक्षा तस्लीस (तीन ख़ुदा मानना) की समस्या को अलग रख कर बिल्कुल इंजील ही की शिक्षा है। इंजील के उदाहरण तथा बहुत सी इबारतें उसमें जस की तस लिखी हैं। अतः अध्ययन कर्ता को उसमें कुछ भी सन्देह नहीं रह सकता कि इंजील और उस किताब का लेखक एक ही है और आश्चर्य यह कि उस किताब का नाम भी इंजील ही है तथा रूपक के रंग में यहूदियों को एक अत्याचारी बाप ठहरा कर एक उत्तम

क़िस्सा वर्णन किया है जो उत्तम नसीहतों से भरपूर है और बहुत समय हुआ कि यह किताब यूरोप की समस्त भाषाओं में अनुवाद हो चुकी है तथा यूरोप के एक भाग में यूज़ आसफ़ के नाम पर एक गिरजा भी तैयार किया गया है। जब मैंने इस क़िस्से की पुष्टि के लिए अपना एक विश्वसनीय शिष्य जो ख़लीफ़ा नूरुद्दीन के नाम से प्रसिद्ध हैं श्रीनगर कश्मीर में भेजा तो उन्होंने कई महीने रह कर बहुत आहिस्ता और दूरदर्शिता से अनुसंधान किया। अन्ततः सिद्ध हो गया कि वास्तव में वह कब्र हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ही है जो यूज़ आसफ़ के नाम से प्रसिद्ध हुए। यूज़ का शब्द यसू का बिगड़ा हुआ या उसके अक्षरों में कुछ कमी कर दी गई हो और आसफ़ हज़रत मसीह का नाम था जैसा कि इंजील से स्पष्ट है। जिसके अर्थ हैं यहूदियों के विभिन्न फ़िर्कों को तलाश करने वाला या एकत्र करने वाला। यह भी ज्ञात हुआ कि कश्मीर के कुछ निवासी उस क़ब्र का नाम ईसा साहिब की क़ब्र भी कहते हैं और उनके प्राचीन इतिहासों में लिखा है कि यह एक नबी शहज़ादा है जो शाम देश की ओर से आया था, जिसको आए हुए लगभग उन्नीस सौ वर्ष गुज़र गए तथा उसके साथ उसके कुछ शिष्य भी थे और वह सुलेमान पर्वत पर इबादत करता रहा तथा उसकी इबादतगाह पर एक शिला लेख था जिस पर ये शब्द थे कि यह एक शहज़ादा नबी है जो शाम देश की ओर से आया था, उसका नाम यूज़ है। फिर वह शिलालेख सिखों के युग में मात्र द्वेष और शत्रुता से मिटाया गया। अब वे शब्द भली भांति पढ़े नहीं जाते और वह क़ब्र बनी इस्राईल की क़ब्रों की भांति है और बैतुलमक़्दस की ओर मुंह है और श्रीनगर के लगभग पांच सौ लोगों ने इस सत्यापित दस्तावेज़ पर इस लेख के साथ हस्ताक्षर किए और मुहरें लगाईं कि कश्मीर के प्राचीन इतिहास से सिद्ध है कि साहिबे क़ब्र एक इस्राईली नबी था और शहज़ादा कहलाता था। किसी बादशाह के अत्याचार के कारण कश्मीर में आ गया था और बहुत वृद्ध होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ और ईसा साहिब भी कहते हैं और शहज़ादा नबी भी और यूज़ आसफ़ भी। अब बताओ कि इतने अधिक अनुसंधान के पश्चात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मरने में कमी क्या रह गई और यदि इस बात के बावजूद इतनी

साक्ष्यें क़ुर्आन, हदीस, सर्वसम्मति, इतिहास, मरहम-ए-ईसा का नुस्खा, श्रीनगर की क़ब्र में उनका अस्तित्व तथा मेराज में मुर्दों के वर्ग में देखा जाना और एक सौ बीस वर्ष की आयु का निश्चित होना और हदीस से सिद्ध होना कि सलीब की घटना के पश्चात् वह किसी अन्य देश की ओर चले गए थे और उसी यात्रा के कारण उन का नाम पर्यटक (सय्याह) नबी प्रसिद्ध था। ये समस्त साक्ष्यें यदि उसके मरने को सिद्ध नहीं करतीं तो फिर हम कह सकते हैं कि कोई नबी भी नहीं मरा, सब नबी पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जा बैठे हैं। क्योंकि उनकी मृत्यु पर हमारे पास इतनी साक्ष्यें मौजूद नहीं अपितु हज़रत मूसा की मृत्यु स्वयं संदिग्ध विदित होती है क्योंकि उनके जीवन पर यह क़ुर्आनी आयत गवाह है अर्थात् यह कि

(अस्सज्दह - 24) فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ

तथा एक हदीस भी गवाह है कि मूसा प्रति वर्ष दस हज़ार क़ुद्दूसियों के साथ खाना काबा का हज करने के लिए आता है। हे बुज़ुर्गो! अब इस मातम (मृत्यु शोक) से कोई लाभ नहीं अब तो हज़रत मसीह पर इन्ना लिल्लाह पढ़ो। वह तो निस्सन्देह मृत्यु पा गए। वह हदीस सही निकली कि मसीह की आयु एक सौ बीस वर्ष होगी न कि हज़ारों वर्ष। अब ख़ुदा से डरने का समय है, उलटे-सीधे वाद-विवाद का समय नहीं क्योंकि सबूत अपनी चरम सीमा तक पहुंच गया है और यह विचार कि पवित्र क़ुर्आन में उन के बारे में

(अन्निसा - 159) بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ

आया है और بَـلْ (बल) सिद्ध करता है कि वह शरीर के साथ आकाश पर उठाए गए। यह विचार नितान्त अधम और बच्चों वाला विचार है। इस प्रकार का रफ़ा तो बल्अम के बारे में भी है। अर्थात् लिखा है कि हमने इरादा किया था कि बल्अम का रफ़ा करें किन्तु वह पृथ्वी की ओर झुक गया। स्पष्ट है कि मसीह के लिए जो शब्द रफ़ा में प्रयोग किए गए वही शब्द बल्अम के लिए प्रयोग किए गए परन्तु क्या ख़ुदा का इरादा यह था कि बल्अम को शरीर के साथ आकाश पर पहंचा दे अपित्र केवल उसकी रूह का रफ़ा अभिप्राय था।

हे सज्जनो! ख़ुदा से डरो। शारीरिक रफ़ा तो यहूदियों के आरोप में बहस मे ही नहीं सारा विवाद तो रूहानी रफ़ा (आध्यात्मिक तौर पर उठाया जाना) के बारे में है। क्योंकि यहूदियों ने हज़रत मसीह को सलीब पर खींच कर तौरात के स्पष्ट आदेशानुसार यह समझ लिया था कि अब उसका रूहानी रफ़ा नहीं होगा और वह नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा की ओर नहीं जाएगा अपितु लानती होकर शैतान की ओर जाएगा। यह एक पारिभाषिक शब्द है कि जो व्यक्ति ख़ुदा की ओर बुलाया जाता है उसे मर्फ़ूअ (उठाया गया) कहते हैं और जो शैतान की ओर ढकेल दिया जाता है उसे मलऊन कहते हैं। यहूदियों की यही ग़लती थी जिसका पवित्र क़ुर्आन ने निर्णायक होने की हैसियत से फैसला किया और फ़रमाया कि मसीह सलीब पर क़त्ल नहीं किया गया और सलीब का कार्य अपनी पूर्णता को नहीं पहुंचा। इसलिए मसीह रूहानी रफ़ा से वंचित नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त बिल्कुल स्पष्ट है कि प्रकृति विज्ञान की दृष्टि से जिसकी बातें देखी एवं अनुभव में आई हुई हैं सदैव शरीर परिवर्तन और क्षणिता में है। प्रतिक्षण और प्रतिपल शरीर के अणु परिवर्तित होते रहते हैं जो इस समय हैं वे एक मिनट के बाद नहीं फिर क्योंकर संभव है कि जिस शरीर के रफ़ा का आयत رَافِعُكَ اِلَيَّ में वादा हुआ था वही शरीर فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ के समय तक मौजूद था अत: अनिवार्य हुआ कि जो वादा رَافِعُكَ اِلَيَّ में एक विशेष शरीर के बारे में दिया गया था वह पूरा नहीं हुआ, क्योंकि वादा पूरा करने के समय तो और शरीर था और पहला शरीर विलय हो चुका था तथा यह विचार स्वयं ग़लत है कि जब किसी को सम्बोधित किया जाए और यह कहा जाए कि हे इब्राहीम और हे ईसा या हे मूसा और हे मुहम्मद (अलैहिमुस्सलाम) तो इसके साथ शरीर का साथ होना शर्त होता है तथा सम्बोधन का कुछ भाग शरीर के साथ भी संबंधित होता है क्योंकि यदि यह उचित है तो इस से अनिवार्य आता है कि यदि उदाहरणतया एक नबी का हाथ कट जाए या पैर कट जाए तो फिर इस योग्य न रहे कि उसको हे ईसा या हे मूसा कहा जाए क्योंकि शरीर का एक भाग जिसे सम्बोधित किया गया है उसके साथ नहीं है। ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में मुर्दा नबियों का वर्णन इसी प्रकार

किया है जैसे उस अवस्था में वर्णन किया था जबकि वे शरीर के साथ जीवित थे। अत: यदि ऐसे सम्बोधन के लिए शरीर की शर्त है तो उदाहरणतया यह कहना क्योंकर वैध है कि

(अत्तौब: - 114) اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ

अत: हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु का भली भांति फ़ैसला हो चुका है और अब इस प्रकार के व्यर्थ बहाने करना उस डूबने वाले के समान है जो मृत्यु से बचने के लिए घास-पात को हाथ मारता है। खेद कि ये लोग नेक नीयत के साथ सद्मार्ग का विचार नहीं करते। इस बहस में सब से पहला प्रश्न तो यह है कि हज़रत मसीह कुछ अनोखे रसूल नहीं थे उनके क़त्ल के बारे में इतना अधिक विवाद क्यों खड़ा किया गया तथा क्यों बार-बार इस बात पर बल दिया गया कि वह सलीब पर नहीं मरे अपितु ख़ुदा ने उनको अपनी ओर उठा लिया न कि शैतान की ओर। यदि इस विवाद से केवल इतना उद्देश्य था कि यहूदियों पर प्रकट किया जाए कि वह क़त्ल नहीं हुए तो यह तो एक निरर्थक और सर्वथा व्यर्थ उद्देश्य है। इस उद्देश्य को उस ऐतराज़ को दूर करने से क्या संबंध कि ख़ुदा ने मसीह को अपनी ओर जो सम्मान का स्थान है उठा लिया शैतान की ओर का खण्डन नहीं किया जो अपमान का स्थान है। स्पष्ट है कि मात्र क़त्ल होने से नबी की शान में कुछ अन्तर नहीं आता तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ में यह बात सम्मिलित है कि मैं मित्र रखता हूं कि ख़ुदा के मार्ग में क़त्ल किया जाऊं और फिर जीवित किया जाऊं और पुन: क़त्ल किया जाऊं तो फिर यह बात स्वीकार करने योग्य है कि क़त्ल होने में कोई अपमान नहीं अन्यथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने लिए यह दुआ न करते। तो फिर मसीह के क़त्ल के आरोप का इतना अधिक खण्डन करना तथा यह कहना कि वह क़त्ल नहीं हुआ और सलीब पर कदापि क़त्ल नहीं हुआ अपितु हमने अपनी ओर उठा लिया इस का तात्पर्य क्या हुआ। यदि मसीह क़त्ल नहीं हुआ और कदापि क़त्ल नहीं हुआ। उसे ख़ुदा ने क्यों अपनी ओर पार्थिव शरीर के साथ न उठाया। क्या कारण कि यहां ख़ुदा के स्वाभिमान (ग़ैरत) ने जोश न मारा तथा वहां जोश मारा

और यदि ख़ुदा ने किसी को शरीर के साथ आकाश पर उठाना है तो उसके लिए तो ये शब्द चाहिए कि शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया न यह कि ख़ुदा की ओर उठाया गया। स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन अपितु समस्त आकाशीय किताबों ने दो तरफें निर्धारित की हैं। एक ख़ुदा की ओर और उसके लिए यह मुहावरा है कि अमुक व्यक्ति ख़ुदा की और उठाया गया तथा दूसरी ओर ख़ुदा की ओर उठाए जाने के मुकाबले पर शैतान की ओर है। उसके लिए क़ुर्आन में

اَخۡلَدَ اِلَى الۡاَرۡضِ (अलआराफ़ - 177)

का मुहावरा है। यह कितना अन्याय है कि رَفَعَ اِلَى اللّٰه जो एक रूहानी बात اِخۡلَاد اِلَى الشَّيۡطان के मुकाबले पर था उस से आकाश पर शरीर के साथ जाना समझा गया कि ख़ुदा ने मसीह को शरीर के साथ आकाश पर उठा लिया। भला इस कार्यवाही से प्राप्त क्या हुआ तथा इस से यहूदियों पर कौन सा आरोप आया तथा शरीर के साथ आकाश पर क्यों पहुंचाया गया। किस आवश्यकता ने स्वच्छन्द दूरदर्शी ख़ुदा से यह कार्य कराया? यदि क़त्ल से बचाना था तो ख़ुदा तआला पृथ्वी पर भी बचा सकता था।★ जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को "गारे सौर" में काफ़िरों के क़त्ल करने से बचा लिया।

★**हाशिया :-** यदि आकाश पर पहुंचाने से उद्देश्य यह था कि वह स्वर्ग में पहुंच जाएं और परलोक के आनन्दों से आनन्द उठाएं तो यह उद्देश्य भी तो पूरा नहीं हुआ क्योंकि परलोक के आनन्दों से आनन्द उठाने के लिए पहले मरना आवश्यक है तो जैसे इस संसार के उद्देश्यों से भी जिसके लिए भेजे गए थे असफल रहे तथा वह सुधार जो मूल उद्देश्य था वह न कर सके और क़ौम गुमराही से भर गई तथा आकाश पर जाकर भी कुछ आनन्द और आराम न उठाया। आप आकाश पर व्यर्थ बैठे हैं। न उस स्थान पर डेरा लगाने से स्वयं को कुछ लाभ न उम्मत को कुछ लाभ। क्या नबियों की ओर जो संसार का सुधार करके फिर खुदा से जा मिलते हैं ऐसी बातें सम्बद्ध हो सकती हैं? प्रथम यह तो सोचना चाहिए कि ख़ुदा की ओर रफ़ा जो परलोक के आनंदों का संग्रहीता है बिना मृत्यु के संभव नहीं। यह वादे का उल्लंघन कैसा हुआ? कि ख़ुदा की ओर रफ़ा का वादा किया गया और फिर बिठाया गया दूसरे आकाश पर। क्या ख़ुदा दूसरे आकाश पर है? और क्या हज़रत इब्राहीम और मूसा ख़ुदा से ऊपर रहते हैं। (इसी से)

अब यदि धैर्य और सहनशीलता से सुनो तो हम बताते हैं कि इस सम्पूर्ण विवाद की वास्तविकता क्या है? बुज़ुर्गो! ख़ुदा तुम पर दया करे। यहूदियों और ईसाइयों की पुस्तकों को ध्यानपूर्वक देखने से तथा उनकी ऐतिहासिक घटनाओं पर दृष्टि डालने से निरन्तरता के उच्च स्तर पर पहुंचे हुए हैं जिन से किसी प्रकार इन्कार नहीं हो सकता। यह हाल ज्ञात होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समय में प्राथमिक अवस्था में तो निस्सन्देह यहूदी एक मसीह की प्रतीक्षा में थे ताकि वे उनको ग़ैर क़ौमों के शासन से मुक्ति प्रदान करे तथा जैसा कि उनकी पुस्तकों की भविष्यवाणियों के बाह्य शब्दों से समझा जाता है दाऊद के शासन को अपनी बादशाही से पुन: स्थापित करे। अत: उस प्रतीक्षा के युग में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने दावा किया कि वह मसीह मैं हूं और मैं दाऊद के शासन को दोबारा स्थापित करूंगा। अत: यहूदी इस बात से प्राथमिक अवस्था में बहुत प्रसन्न हुए तथा सैकड़ों लोग बादशाहत की आशा से आप के श्रृद्धालु हो गए तथा बड़े-बड़े व्यापारी और धनवान लोग बैअत में सम्मिलित हुए, किन्तु कुछ थोड़े समय के पश्चात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने प्रकट कर दिया कि मेरी बादशाहत इस संसार की नहीं है, मेरी बादशाहत आकाश की है। तब उनकी वे समस्त आशाएं मिट्टी में मिल गईं तथा उन्हें विश्वास हो गया कि यह व्यक्ति दाऊद के शासन को दोबारा क़ायम नहीं करेगा अपितु वह कोई और होगा। अत: उसी दिन से द्वेष और शत्रुता में वृद्धि होना आरंभ हुआ और अधिकतर लोग मुर्तद हो गए। इसलिए एक तो यहूदियों के हाथ में यही कारण था कि यह व्यक्ति नबियों की भविष्यवाणी के अनुसार बादशाह होकर नहीं आया। फिर किताबों पर विचार करने से एक अन्य कारण यह भी पैदा हुआ कि मलाकी नबी की किताबें में लिखा था कि मसीह बादशाह जिसकी यहूदियों को प्रतीक्षा (इंतज़ार) थी वह नहीं आएगा जब तक एलिया नबी दोबारा संसार में न आए। अत: उन्होंने यह बहाना हज़रत मसीह के सामने प्रस्तुत भी किया, किन्तु आप ने उसके उत्तर में कहा कि यहां एलिया से अभिप्राय एलिया का मसील (समरूप) है अर्थात् यह्या। खेद कि यदि जैसा कि उनके बारे में मुर्दे जीवित करने का मिथ्या गुमान किया जाता है वह

हज़रत एलिया को जीवित करके दिखा देते तो इतना विवाद न उठता तथा स्पष्ट आदेश के बाह्य शब्दों के अनुसार समझने का प्रयास पूर्ण हो जाता। अत: यहूदी उनके बादशाह न होने के कारण उनके बारे में सन्देह में पड़ गए थे और मलाकी नबी की किताब की दृष्टि से यह दूसरा सन्देह उत्पन्न हुआ। फिर क्या था सब के सब काफ़िर कहने और गालियों पर उतर आए और यहूदियों के उलेमा ने उनके लिए एक कुफ्र का फ़त्वा तैयार किया और देश के समस्त उलेमा और महान सूफ़ियों ने उस फ़त्वे पर सहमति जताई तथा मुहरें लगा दीं। किन्तु फिर भी जन साधारण में से कुछ थोड़े लोग मसीह के साथ रह गए। उनमें से भी यहूदियों ने एक को कुछ रिश्वत देकर अपनी ओर फेर लिया तथा दिन-रात यह मशवरे होने लगे कि तौरात के स्पष्ट आदेशों से इस व्यक्ति को काफ़िर ठहराना चाहिए ताकि जन साधारण भी सहसा अलग हो जाएं तथा इस के कुछ निशानों को देख कर धोखा न खाएं। अत: यह बात निश्चित हुई कि इसे किस प्रकार सलीब दी जाए फिर काम बन जाएगा, क्योंकि तौरात में लिखा है कि जो लकड़ी पर लटकाया जाए वह लानती है अर्थात् वह शैतान की ओर जाता है न कि ख़ुदा की ओर। अत: यहूदी लोग इस युक्ति में लगे रहे तथा क़ैसर-ए-रोम की ओर से जो इस देश का शासक था तथा बादशाह की भांति कैसर का प्रतिनिधि था उसके सामने झूठी खबरें देते रहे कि यह व्यक्ति गुप्त तौर पर सरकार का अशुभ चिन्तक है। अन्तत: सरकार ने धार्मिक उपद्रव फैलाने के बहाने से पकड़ ही लिया, किन्तु चाहा कि कुछ चेतावनी देकर छोड़ दें। परन्तु यहूदी केवल इतने पर कब प्रसन्न हो सकते थे। उन्होंने शोर मचाया कि इस ने बहुत कुफ्र वाली बातें की हैं क़ौम में उपद्रव फैल जाएगा तथा ग़दर की आशंका है। इसे अवश्य सलीब दी जानी चाहिए। अत: रोम की सरकार ने यहूदियों के उपद्रव की आशंका को देखते हुए तथा कुछ देश-हित को ध्यान में रखकर हज़रत मसीह को यहूदियों के सुपुर्द कर दिया कि अपने धर्मानुसार जो चाहो करो। पैलातूस जो क़ैसर का गर्वनर था जिसके अधिकार में यह समस्त कार्यवाही थी उसकी पत्नी ने स्वप्न में देखा कि यदि यह व्यक्ति मर गया तो फिर इसमें तुम्हारी तबाही है। इसलिए उसने अन्दर

ही अन्दर गुप्त तौर पर प्रयास करके मसीह को सलीबी मौत से बचा लिया परन्तु यहूदी अपनी मूर्खता से यही समझते रहे कि मसीह सलीब पर मर गया। हालांकि हज़रत मसीह ख़ुदा तआला का आदेश पा कर जैसा कि कन्ज़ुल उम्माल की हदीस में है उस देश से निकल गए और वे ऐतिहासिक प्रमाण जो हमें मिले हैं उन से ज्ञात होता है कि नसीबैन से होते हुए पेशावर के मार्ग से पंजाब में पहुंचे और चूंकि ठण्डे देश में रहने वाले थे इसलिए इस देश की गर्मी को सहन न कर सके। इसलिए कश्मीर में पहुंच गए। श्रीनगर को अपने से सम्मानित किया और क्या आश्चर्य कि उन्हीं के युग में यह शहर आबाद भी हुआ हो। बहरहाल श्रीनगर की पृथ्वी मसीह के कदम रखने का स्थान है। अतः हज़रत मसीह तो यात्रा करते करते कश्मीर पहुंच गए।★ परन्तु यहूदी लोग इस झूठे भ्रम में गिरफ़्तार हैं कि जैसे हज़रत मसीह सलीब द्वारा क़त्ल किए गए, क्योंकि जिस प्रकार से हज़रत मसीह सलीब से बचाए गए थे और फिर मरहम-ए-ईसा से घाव अच्छे किए गए थे और फिर गुप्त तौर पर यात्रा की गई थी। ये समस्त बातें यहूदियों की दृष्टि से छिपी हुई थीं। हां हवारियों को इस रहस्य की सूचना थी और गलेल के मार्ग में हवारी हज़रत मसीह के साथ एक गांव में इकट्ठे ही रात भर रहे

★हाशिया :- प्रत्येक नबी के लिए हिजरत करना (प्रवास करना) सुन्नत है और मसीह ने भी अपने प्रवास (हिजरत) की ओर इंजील में संकेत किया है तथा कहा कि नबी अपमानित नहीं परन्तु अपने देश में। किन्तु हमारे विरोधी इस बात पर भी विचार नहीं करते कि हज़रत मसीह वे कब और किस देश की ओर प्रवास किया, अपितु अधिक आश्चर्य इस बात पर है कि ने इस बात को तो स्वीकार करते हैं कि सही हदीसों से सिद्ध है कि मसीह ने विभिन्न देशों की बहुत यात्रा की है अपितु मसीह नाम होने का एक कारण यह भी लिखते हैं, किन्तु जब कहा जाए कि वह कश्मीर में भी गए थे तो इस से इन्कार करते हैं। हालांकि जिस स्थिति में उन्होंने स्वीकार कर लिया कि हज़रत मसीह ने अपने नबी होने के ही युग में बहुत से देशों की यात्रा भी की तो क्या कारण कि उन पर कश्मीर जाना हराम (अवैध) था? क्या संभव नहीं कि कश्मीर में भी गए हों और वहीं निधन हुआ हो और फिर जब सलीबी घटना के पश्चात् हमेशा पृथ्वी पर भ्रमण करते रहे तो आकाश पर कब गए? इसका कुछ भी उत्तर नहीं देते। (इसी से)

थे और मछली भी खाई थी। इसके बावजूद जैसा कि इंजील से स्पष्ट तौर पर प्रकट होता है हवारियों को हज़रत मसीह ने सख़्ती से मना कर दिया था कि मेरी इस यात्रा का वृतान्त किसी के पास मत कहो। अत: हज़रत मसीह की यही वसीयत थी कि इस रहस्य को गुप्त रखना और क्या मजाल थी कि वे इस खबर को फैला कर नबी के रहस्य (राज़) और अमानत में ख़यानत (बेईमानी) करते। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मसीह का नाम यात्रा करने वाला नबी रखा जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस से स्पष्ट समझा जाता है कि हज़रत मसीह ने अधिकांश विश्व के भू भागों का भ्रमण किया है और हदीस कन्ज़ुल उम्माल में मौजूद है तथा इसी आधार पर अरब के शब्द कोशों में मसीह के नाम का कारण बहुत भ्रमण करने वाला भी लिखा है।✶ अत: यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन कि मसीह पर्यटक (भ्रमण करने वाला) नबी है समस्त गुप्त रहस्यों की कुंजी थी तथा इसी एक शब्द से आकाश पर जाना और अब तक जीवित होना सब झूठा होता था परन्तु इस पर विचार नहीं किया गया तथा इस बात पर विचार करने से स्पष्ट होगा कि जबकि ईसा मसीह ने अपनी नुबुव्वत के समय में यहूदियों के देश से प्रवास (हिजरत) करके अपनी आयु का एक लम्बा समय भ्रमण में गुज़ारा तो आकाश पर किस युग में उठाए गए और फिर इतने लम्बे समय के पश्चात् क्या आवश्यकता सामने आई थी? अद्भुत बात है ये लोग कैसे पेच में फंस गए। एक ओर यह आस्था है कि सलीबी उपद्रव के समय कोई और व्यक्ति सूली पर चढ़ाया गया और हज़रत मसीह अविलम्ब दूसरे आकाश पर जा बैठे तथा दूसरी ओर यह आस्था भी रखते हैं कि सलीबी घटना के पश्चात् वह इसी संसार में भ्रमण करते रहे तथा आयु का बहुत सा भाग भ्रमण में गुज़ारा। अजीब मूर्खता है कोई सोचता नहीं कि पैलातूस के देश में रहने का युग तो सर्वसहमति से साढ़े तीन वर्ष था। दूर से दूर देशों में रहने वाले यहूदियों को भी ख़ुदा का सन्देश पहुंचाना मसीह का एक कर्त्तव्य था। फिर वे इस कर्त्तव्य को छोड़कर

✶ देखो 'लिसानुल अरब' में मसीह का शब्द। (इसी से)

आकाश पर क्यों चले गए, क्यों हिजरत करके बतौर भ्रमण इस कर्त्तव्य को पूर्ण न किया? आश्चर्यजनक बात यह है कि कन्ज़ुल उम्माल की हदीसों में इसी बात का स्पष्टीकरण मौजूद है कि हज़रत मसीह ने यह अधिकांश देशों का भ्रमण सलीब की घटना के बाद ही किया है और यही उचित भी है क्योंकि नबियों की हिजरत के बारे में ख़ुदा का नियम (सुन्नत) यही है कि वे जब तक निकाले न जाएं कदापि नहीं निकलते तथा सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया है कि निकालने या क़त्ल करने का समय केवल सलीब के फ़ित्ने का समय था। अत: यहूदियों ने सलीबी मृत्यु के कारण हज़रत मसीह के संबंध में यह परिणाम निकाला कि वह नऊज़ुबिल्लाह लानती होकर शैतान की ओर गए न कि ख़ुदा की ओर तथा उनका ख़ुदा की ओर रफ़ा नहीं हुआ अपितु शैतान की ओर जाना हुआ, क्योंकि शरीअत ने दो ओर को माना है। एक ख़ुदा की ओर वह ऊंची है जिसका अन्तिम स्थान अर्श है और दूसरी शैतान की ओर वह बहुत नीची है और उसका अन्त पृथ्वी का पाताल है। अत: यह तीनों शरीअतों का सर्वसम्मत विषय है कि मोमिन मृत्यु पाकर ख़ुदा की ओर जाता है और उस के लिए आकाश के द्वार खोले जाते हैं जैसा कि आयत

(अलफ़ज्र – 29) اِرْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ

इसकी साक्षी है और काफ़िर नीचे की ओर जो शैतान की ओर है जाता है जैसा कि आयत

(अलआराफ़ – 41) لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ

इसकी गवाह है। ख़ुदा की ओर जाने का नाम रफ़ा है तथा शैतान की ओर जाने का नाम लानत है। इन दोनों शब्दों में दो विलोमों की तुलना है। मूर्ख लोग इस वास्तविकता को नहीं समझते। यह भी नहीं सोचा कि यदि रफ़ा के अर्थ शरीर के साथ उठाना है तो इस के मुक़ाबले का शब्द क्या हुआ जैसा कि रफ़ा रूहानी के मुकाबले पर लानत है। यहूदियों ने भली भांति समझा था किन्तु सलीब के कारण हज़रत मसीह के लानती होने को मान गए तथा ईसाइयों ने भी लानत को मानो परन्तु यह व्याख्या की कि हमारे पापों के लिए मसीह पर लानत पड़ी

और ज्ञात होता है कि ईसाइयों ने लानत के अर्थ पर ध्यान नहीं दिया कि कैसा अपवित्र अर्थ है जो रफ़ा के मुक़ाबले पर है, जिस से मनुष्य की रूह (आत्मा) अपवित्र हो कर शैतान की ओर जाती है तथा ख़ुदा की ओर नहीं जा सकती। इसी ग़लती के कारण उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया कि हज़रत मसीह सलीब पर मृत्यु पा गए हैं तथा कफ़्फ़ार: के पहलू को अपनी ओर से बना कर यह पहलू उन की दृष्टि से छिप गया कि यह बात बिल्कुल असंभव है कि नबी का हृदय लानती होकर ख़ुदा को अस्वीकार कर दे और शैतान को स्वीकार कर ले, परन्तु हवारियों के समय में यह ग़लती नहीं हुई अपितु उनके बाद ईसाइयत के बिगड़ने की यह पहली ईंट थी और चूंकि हवारियों को आग्रह पूर्वक यह वसीयत की गई थी कि मेरी यात्रा का वृत्तान्त कदापि वर्णन न करो। इसलिए वे मूल वास्तविकता को प्रकट न कर सके और संभव है कि तौरिय: के तौर पर उन्होंने यह भी कह दिया हो कि वह तो आकाश पर चले गए ताकि यहूदियो का विचार दूसरी ओर फेर दें। इसलिए इन्हीं कारणों से हवारियों के बाद ईसाई सलीबी आस्था से बहुत बड़ी ग़लती में ग्रस्त हो गए किन्तु उनमें से एक गिरोह इस बात का विरोधी भी रहा और लक्षणों से उन्होंने ज्ञात कर लिया कि मसीह किसी अन्य देश में चला गया, सलीब पर नहीं और न आकाश पर गया। ✶ बहर हाल जब यह विषय ईसाइयों पर संदिग्ध हो गया और यहूदियों ने सलीबी मृत्यु की जन सामान्य में प्रसिद्धि कर दी तो ईसाई चूंकि मूल वास्तविकता से अपरिचित थे वे भी इस आस्था में यहूदियों के साथ हो गए परन्तु बहुत थोड़े। इसलिए उनकी भी यही आस्था हो गई कि हज़रत मसीह सलीब पर मृत्यु पा गए थे। इस आस्था के समर्थन में कुछ वाक्य इंजील में बढ़ाए गए जिन के कारण इंजीलों के वर्णनों में परस्पर टकराव पैदा हो गया। अत: इंजीलों के कुछ वाक्यों से तो स्पष्ट समझा जाता है कि मसीह की सलीब पर मृत्यु नहीं हुई। तथा कुछ में लिखा है कि मृत्यु हो गई। इस से सिद्ध होता है कि मरने के ये वाक्य बाद में मिला दिए गए हैं।

✶ इस गिरोह का एक भाग अब तक ईसाइयों में पाया जाता है जो हज़रत मसीह के आकाश पर जाने का इन्कारी है। (इसी से)

अत: संक्षेप में यह कि यहूदियों ने सलीब के कारण इस बात पर आग्रह आरंभ किया कि ईसा इब्ने मरयम ईमानदार और सच्चा मनुष्य नहीं था और न नबी था और न ईमानदारों की भांति उसका ख़ुदा की ओर रफ़ा हुआ अपितु शैतान की ओर गया और इस पर यह तर्क प्रस्तुत किया कि वह सलीबी मृत्यु से मरा है। इसलिए लानती है। अर्थात् उसका रफ़ा नहीं हुआ। तत्पश्चात् शनै: शनै: आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का युग आ गया और इस क़िस्से पर छ: सौ वर्ष व्यतीत हो गए। चूंकि ईसाइयों में ज्ञान नहीं था तथा कफ़्फ़ार: की एक योजना बसाने की रुचि भी उनकी प्रेरक हुई। इसलिए वे भी लानत और रफ़ा न होने को मानने लगे तथा विचार न किया कि लानत के अर्थ को यह बात अनिवार्य है कि मनुष्य ख़ुदा के दरबार से बिल्कुल फटकार दिया जाए और मलिन हृदय अपवित्र, काला और ख़ुदा का शत्रु हो जाए जैसा कि शैतान का दिल हो कर शैतान की ओर चला जाए तथा प्रेम और वफ़ा के समस्त संबंध टूट जाएं तथा हृदय है। इसीलिए शैतान का नाम लईन (लानती) है। फिर क्योंकर संभव है कि ख़ुदा का ऐसा मान्य व्यक्ति जैसा कि मसीह है उसका हृदय लानत की अवस्था के नीचे आ सके और नऊज़ुबिल्लाह शैतानी अनुकूलता से शैतान की ओर खींचा जाए। इसलिए दोनों जातियां यह भूल गईं। यहूदियों ने एक पवित्र नबी को लानती कहकर ख़ुदा के प्रकोप का मार्ग धारण किया★ और ईसाइयों ने अपने पवित्र

★**हाशिया :-** यहां यह बात स्मरण रखने योग्य है कि सूरह फातिहा में जो غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ आया है वह इसी प्रमुख बात की ओर संकेत है अर्थात् यहूदियों ने ख़ुदा के पवित्र और मुक़द्दस नबी को जान बूझकर केवल शरारत से लानती ठहरा कर ख़ुदा तआला का प्रकोप अपने ऊपर उतारा और مَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ ठहरे। हालांकि उनको पता लग गया था कि हज़रत मसीह क़ब्र में नहीं रहे और उनकी वह भविष्यवाणी पूरी हुई कि मेरा हाल यूनुस की तरह होगा अर्थात् जीवित ही क़ब्र में जाऊंगा और जीवित ही निकलूंगा। और ईसाई यद्यपि हज़रत मसीह से प्रेम करते थे परन्तु केवल अपनी मूर्खता से उन्होंने भी लानत का दाग़ हज़रत मसीह के दिल के बारे में स्वीकार कर लिया और यह न समझा कि लानत का अर्थ दिल की अपवित्रता से संबंध रखता है और नबी का दिल किसी हालत में अपवित्र और ख़ुदा का दुश्मन तथा उस से

नबी तथा मार्ग-दर्शक के हृदय को लानत के अर्थ के कारण अपवित्र और ख़ुदा से विमुख (फिरा हुआ) ठहरा कर पथभ्रष्टता (गुमराही) का मार्ग धारण किया। इसलिए अवश्यक हुआ कि क़ुर्आन निर्णायक (हकम)✶होने की हैसियत से इस बात का फ़ैसला करे। अत: ये आयतें बतौर फैसला हैं कि

(अन्निसा - 158) وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ

(अन्निसा - 159) بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ

अर्थात् यह बात सिरे से ग़लत है कि यहूदियों ने सलीब द्वारा हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर दिया है। इसलिए इसका परिणाम भी ग़लत है कि हज़रत मसीह का रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर नहीं हुआ और नऊज़ुबिल्लाह शैतान की ओर गया है। बल्कि ख़ुदा ने उसका रफ़ा अपनी ओर किया है। स्पष्ट है कि यहूदियों और ईसाइयों में शारीरिक रफ़ा का कोई विवाद न था और न यहूदियों की यह आस्था थी कि जिस का रफ़ा शारीरिक न हो वह मोमिन नहीं होता बल्कि मल्ऊन होता है और ख़ुदा की ओर नहीं जाता बल्कि शैतान की ओर जाता है। स्वयं यहूदी मानते हैं कि हज़रत मूसा का शारीरिक रफ़ा नहीं

शेष हाशिया - विमुख नहीं हो सकता अत: इस सूरह में बतौर संकेत मुसलमानों को यह सिखाया गया है कि यहूदियों की भांति आने वाले मसीह मौऊद को झुठलाने में जल्दी न करें। और बहाने बाज़ी के फत्वे तैयार न करें और उस का नाम लानती न रखें, अन्यथा वही लानत उलट कर उन पर पड़ेगी। ऐसा ही ईसाइयों की भांति मूर्ख दोस्त न बनें और अपने पेशवा की ओर अवैध विशेषताएं सम्बद्ध न करें। अत: निस्सन्देह इस सूरह में गुप्त तौर पर मेरी चर्चा है और एक सूक्ष्म रंग में मेरे बारे में यह एक भविष्यवाणी है और दुआ के रंग में मुसलमानों को समझाया गया है कि तुम पर ऐसा युग भी आएगा और तुम भी बहाने बाज़ी से मसीह मौऊद को लानती ठहराओगे, क्योंकि यह भी हदीस है कि यदि यहूदी गोह के छेद में दाखिल हुए हैं तो मुसलमान भी दाखिल होंगे। यह ख़ुदा तआला की विचित्र दया है कि पवित्र क़ुर्आन को पहली सूरह में ही जिसे मुसलमान पांच समय पढ़ते हैं मेरे आने के बारे में भविष्यवाणी कर दी। इस पर सब प्रशंसाएं ख़ुदा के लिए हैं। (इसी से)

✶ हकम और हाकिम में यह अन्तर है कि हकम (निर्णायक) का फैसला अन्तिम होता है उसके बाद कोई अपील नहीं, परन्तु अकेला शब्द हाकिम इस विषय पर छाए हुए नहीं। (इसी से)

हुआ। हालांकि वे हज़रत मूसा को समस्त इस्राईली नबियों से श्रेष्ठ और शरीअत वाला समझते हैं। अब तक यहूदी जीवित मौजूद हैं उन से पूछ कर देख लो कि उन्होंने हज़रत मसीह के सलीब पर मरने से क्या परिणाम निकाला था? क्या यह कि उनका शारीरिक रफ़ा नहीं हुआ या यह कि उनका रूहानी रफ़ा नहीं हुआ और वह नऊज़ुबिल्लाह ऊपर ख़ुदा की ओर नहीं गए बल्कि नीचे शैतान की ओर गए। मनुष्य की बड़ी मूर्खता यह है कि वह ऐसी बहस आरंभ कर दे जिस का असल विवाद से कोई भी संबंध नहीं। बम्बई, कलकत्ता में सैंकड़ों यहूदी रहते हैं। कुछ ज्ञानवान और अपने धर्म के विद्वान हैं, उन से पत्र द्वारा पूछ लो कि उन्होंने हज़रत मसीह पर क्या आरोप लगाया था और सलीबी मौत का क्या परिणाम निकाला था। क्या शारीरिक रफ़ा का न होना या रूहानी (आध्यात्मिक) रफ़ा का न होना। निष्कर्ष यह कि हज़रत मसीह के रफ़ा का मामला भी पवित्र क़ुर्आन में लाभ के बिना तथा बिना किसी प्रेरक के वर्णन नहीं किया गया, बल्कि इसमें यहूदियों के उन विचारों का निवारण करना और दूर करना अभीष्ट है जिनमें वे हज़रत मसीह के रूहानी रफ़ा के इन्कारी हैं। भला यदि हम नीचे होकर मान भी लें कि यह व्यर्थ हरकत नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा तआला ने अपने लिए पसन्द की कि मसीह को शरीर के साथ अपनी ओर खींच लिया अपने ऊपर शरीर और शारीरिक होने का ऐतराज़ भी डाल लिया। क्योंकि शरीर शरीर की ओर खींचा जाता है। फिर भी स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होता है कि चूंकि पवित्र क़ुर्आन यहूदियों तथा ईसाइयों की ग़लतियों का सुधार करने के लिए आया है। यहूदियों ने एक बड़ी ग़लती अपनाई थी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को नऊज़ुबिल्लाह लानती ठहराया और उनके रूहानी रफ़ा से इन्कार किया और यह प्रकट किया कि वह मर कर ख़ुदा की ओर नहीं गया बल्कि शैतान की ओर गया तो इस आरोप का निवारण और दूर करना क़ुर्आन में कहां है जो क़ुर्आन का मूल कार्य था, क्योंकि जिस हालत में आयत رَافِعُكَ اِلَىَّ और आयत بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ शारीरिक रफ़ा के लिए विशेष हो गईं तो रूहानी रफ़ा का वर्णन किसी और आयत में होना चाहिए।

तथा यहूदियों एवं ईसाइयों की ग़लती दूर करने के लिए कि जो आस्था लानत के संबंध में है ऐसी आयत की आवश्यकता है, क्योंकि शारीरिक रफ़ा लानत के मुकाबले पर नहीं बल्कि जैसा लानत भी एक रूहानी बात है ऐसा ही रफ़ा भी एक रूहानी बात होनी चाहिए। अत: वही स्वयं भी अभीष्ट बात थी, और यह विचित्र बात है कि जो बात फैसले के संबंध में थी वह ऐतराज़ तो यथावत गले पड़ा रहा और ख़ुदा ने अकारण एक असंबंधित बात जो यहूदियों की आस्था और झूठा परिणाम निकालने से कुछ भी संबंध नहीं रखती अर्थात् शारीरिक रफ़ा। इस का क़िस्सा बार-बार पवित्र क़ुर्आन में लिख मारा- जैसे प्रश्न कुछ उत्तर कुछ। स्पष्ट है कि शारीरिक रफ़ा यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों तीनो समुदायों की आस्थानुसार मुक्ति का आधार नहीं।★ बल्कि इस पर मुक्ति बिल्कुल निर्भर नहीं, तो फिर क्यों ख़ुदा ने इसको बार-बार वर्णन करना आरंभ कर दिया। यहूदियों का यह मत कब है कि शारीरिक रफ़ा के बिना मुक्ति नहीं हो सकती और न सच्चा नबी ठहर सकता है। फिर इस व्यर्थ वर्णन से लाभ क्या हुआ? क्या यह विचित्र बात नहीं है कि जो बात फैसले के योग्य थी जिस के फैसला न होने से एक सच्चा नबी झूठा ठहरता है बल्कि नऊज़ुबिल्लाह काफ़िर बनता है और लानती कहलाता है। इसका तो क़ुर्आन ने कुछ वर्णन नहीं किया और एक व्यर्थ किस्सा रूहानी रफ़ा का जिस से कुछ भी लाभ नहीं आरंभ कर दिया।⁕ निष्कर्ष यह कि हज़रत मसीह की मौत रूहानी रफ़ा पर ये तर्क हैं जो

★**हाशिया :-** यहूदी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के उस रफ़ा से इन्कारी थे जो प्रत्येक मोमिन के लिए मुक्ति का आधार है क्योंकि मुसलमानों की तरह उन की भी यही आस्था थी कि प्राण निकलने के बाद प्रत्येक मोमिन की रूह को आसमान की ओर ले जाते हैं और उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोले जाते हैं परन्तु काफ़िर पर आसमान के दरवाज़े बन्द होते हैं। इसलिए उसकी रूह नीचे शैतान की ओर फेंक दी जाती है जैसा कि वह अपने जीवन में भी शैतान की ओर ही जाता था, परन्तु मोमिन अपने जीवन में ऊपर की ओर जाता है। इसलिए मरने के बाद भी ख़ुदा की ओर उसका रफ़ा होता है और اِرْجِعِیْٓ اِلٰی رَبِّکِ की आवाज़ आती है। (इसी से)

⁕नसारा के दिल में रूहानी रफ़ा का विचार उस समय पैदा हुआ जबकि उनका इरादा हुआ कि हज़रत मसीह को ख़ुदा बनाएं औरर दुनिया का मुक्तिदाता ठहराएं अन्यथा नसारा

हम ने बड़े विस्तार से अपनी पुस्तकों में वर्णन किए हैं। और अब तक हमारे विरोधी उत्तर न देने के कारण हमारे कर्ज़दार हैं। फिर इसमें अब हम पीर मेहर अली शाह या किसी और पीर साहिब या मौलवी साहिब से क्या बहस करें? हम तो झूठ को ज़िब्ह कर चुके। अब ज़िब्ह के बाद क्यों अपने ज़िब्ह किए हुए पर बेफ़ाइदा छुरी फेरें। हे सज्जनो! इन बातों में अब बहसों का समय नहीं। अब तो हमारे विरोधियों के लिए डरने और तौबा करने का समय है। क्योंकि जहां तक इस संसार में सबूत संभव है और जहां तक वास्तविकताओं और दावों को सिद्ध किया जाता है उसी प्रकार हमने हज़रत मसीह की मौत और उनके रूहानी रफ़ा को सिद्ध कर दिया है।

(यूनुस – 33) فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ

अब मसीह की मृत्यु के बाद दूसरा बड़ा काम (गंतव्य) यह है कि मसीह मौऊद का इसी उम्मत में से आना किन कुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों और अन्य क्रमों से सिद्ध है। अत: वे तर्क नीचे वर्णन किए जाते हैं। ध्यान से सुनो, शायद दयालु ख़ुदा मार्ग दर्शन करे।

उन सब तर्कों में से जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि आने वाला मसीह जिस का इस उम्मत के लिए वादा दिया गया है वह इसी उम्मत में से एक व्यक्ति होगा। बुख़ारी और मुस्लिम की वह हदीस है जिसमें اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ और

शेष हाशिया - भी स्वयं इस बात को मानते हैं कि मुक्ति के लिए तो केवल रूहानी रफ़ा पर्याप्त है। अत: अफ़सोस कि जिस बात को नसारा हज़रत मसीह की ख़ुदाई के लिए इस्तेमाल करते हैं और उनकी एक विशेषता ठहराते हैं, वही बात मुसलमानों ने भी अपनी आस्था में शामिल कर ली है। यदि मुसलमान यह उत्तर दें कि हम तो इदरीस को भी मसीह की भांति आसमान पर रहने की आस्था रखते हैं। यह दूसरा झूठ है। क्योंकि जैसा कि तफ़्सीर फ़त्हुलबयान में लिखा है कि अहले सुन्नत की यही आस्था है कि इदरीस आसमान पर जीवित पार्थिव शरीर के साथ नहीं अन्यथा मानना पड़ेगा कि वह भी किसी दिन पृथ्वी पर मरने के लिए आएगा। तो अब अकारण शारीरिक रफ़ा में मसीह की विशिष्टता स्वीकार करनी पड़ी और मानना पड़ा कि उसका शरीर अनश्वर है और ख़ुदा के पास बैठा हुआ है और यह सर्वथा ग़लत है। (इसी से)

اَمَّكُمْ مِنْكُمْ लिखा है जिसके मायने ये हैं वह तुम्हारा इमाम होगा और तुम ही में से होगा। चूंकि यह हदीस आने वाले ईसा के बारे में है और उसी की प्रशंसा में उस हदीस में हकम और अदल का शब्द बतौर विशेषता (सिफ़त) मौजूद है जो इस वाक्य से पहले है। इसलिए इमाम का शब्द भी उसके हक़ में है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि इस स्थान पर مِنْكُمْ के शब्द से सहाबा को सम्बोधित किया गया है और वही सम्बोधन किया गया है और वही सम्बोधित थे। परन्तु स्पष्ट है कि उनमें से तो किसी ने मसीह मौऊद होने का दावा नहीं किया। इसके مِنْكُمْ के शब्द से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्राय है जो ख़ुदा तआला के ज्ञान में सहाबा का स्थानापन्न (क़ायम मक़ाम) है और वह वही है जिसको इस नीचे वर्णन की गई आयत में सहाबा का क़ायम मुक़ाम कहा गया है। अर्थात् यह कि

وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ　　(अल जुमुआ - 4)

क्योंकि इस आयत ने स्पष्ट किया है कि वह रसूल करीम की रूहानियत से प्रशिक्षण प्राप्त है और इसी अर्थ की दृष्टि से सहाबा में शामिल है। और इस आयत की व्याख्या में यह हदीस है –

لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مُعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَنَالَهُ رَجُلٌ مِنْ فَارَس

और चूंकि इस फ़रसी व्यक्ति की ओर विशेषता सम्बद्ध की गई है जो मसीह मौऊद और महदी से विशिष्ट है अर्थात् पृथ्वी जो ईमान और तौहीद (एकेश्वरवाद) से खाली होकर ज़ुल्म से भर गई है फिर उस अद्ल (न्याय) से भरना। इसलिए यही व्यक्ति महदी और मसीह मौऊद है और वह मैं हूं, और जिस प्रकार किसी दूसरे महदी होने के दावेदार के समय में चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण आकाश में रमज़ान माह में नहीं हुआ। इसी प्रकार तेरह सौ वर्ष की अवधि में किसी ने ख़ुदा तआला के इल्हाम से मालूम करके यह दावा नहीं किया कि इस भविष्यवाणी لَنَالَهُ رَجُلٌ مِنْ فَارَس का चरितार्थ मैं हूं। और भविष्यवाणी अपने शब्दों से बता रही है कि यह व्यक्ति अन्तिम युग में होगा, जबकि लोगों के ईमानों में बहुत कमज़ोरी आ जाएगी और फ़ारसी नस्ल से होगा और उसके द्वारा पृथ्वी पर दोबारा ईमान क़ायम किया जाएगा। स्पष्ट है कि सलीबी युग

से अधिक ईमान को आघात पहुंचाने वाला और कोई युग नहीं। यही युग है जिसमें कह सकते हैं कि जैसे ईमान पृथ्वी से उठ गया जैसा कि इस समय लोगों की व्यावहारिक हालतें और महान इन्क़िलाब जो बुराई की ओर हुआ है और क़यामत के छोटे लक्षण जो लम्बे समय से प्रकट हो चुके हैं स्पष्ट तौर पर बता रहे हैं और आयत وَّ اٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ में संकेत पाया जाता है कि जैसे सहाबा के युग में पृथ्वी पर शिर्क फैला हुआ था ऐसा ही इस युग में भी होगा और इसमें कुछ सन्देह नहीं कि हदीस और आयत को परस्पर मिलाने से निश्चित तौर पर यह समझा जाता है कि यह भविष्यवाणी अन्तिम युग के महदी और मसीह आख़िरुज़्ज़मान के बारे में है। क्योंकि महदी की प्रशंसा में यह लिखा है कि वह पृथ्वी को न्याय से भर देगा जैसा कि वह अन्याय और अत्याचार से भरी हुई थी और अन्तिम युग के मसीह के बारे में लिखा है कि वह दोबारा ईमान और अमन को संसार में क़ायम कर देगा तथा शिर्क को मिटा देगा और अपनी आस्थाओं से भटक चुकी उम्मतों को तबाह कर देगा। अतः इन हदीसों का निष्कर्ष भी यही है कि महदी और मसीह के युग में वह ईमान जो पृथ्वी पर से उठ गया तथा सुरैया सितारे तक पहुंच गया था पुनः क़ायम किया जाएगा। अवश्य है कि पहले पृथ्वी अन्याय से भर जाए और ईमान उठ जाए, क्योंकि जब लिखा है कि सम्पूर्ण पृथ्वी अन्याय से भर जाएगी तो स्पष्ट है कि अन्याय एवं ईमान एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। विवश होकर ईमान अपने असली लौटने के स्थान की ओर जो आसमान है चला जाएगा। अतः सम्पूर्ण पृथ्वी का अन्याय से भर जाना और ईमान का पृथ्वी पर से उठ जाना। इस प्रकार के संकटों का युग हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के बाद एक ही युग है जिसे मसीह का युग या महदी का युग कहते हैं और हदीसों ने इस युग को तीन प्रकारों में वर्णन किया है। (1) फारसी आदमी का युग (2) महदी का युग (3) मसीह का युग। अधिकतर लोगों ने विचार करने की कमी से इन तीन नामों के कारण तीन अलग-अलग व्यक्ति समझ लिए हैं और उनके लिए तीन क़ौमें निर्धारित की हैं। एक फ़ारसियों की क़ौम, दूसरी बनी इस्राईल

की क़ौम, तीसरी बनी फ़ातिमा की क़ौम। परन्तु ये सब ग़लतियां हैं। वास्तव में ये तीनों एक ही व्यक्ति है जो थोड़े-थोड़े संबंध के कारण किसी क़ौम की ओर सम्बद्ध कर दिया गया है। उदाहरणतया एक हदीस है जो कन्ज़ुल उम्माल में मौजूद है। समझा जाता है कि फ़ारस वाले अर्थात् बनी फ़ारस बनी इस्हाक़ में से हैं। अत: बनी फ़ारस बनी इस्हाक़ में से हैं। अत: इस प्रकार से वह आने वाला मसीह इस्राईली हुआ और बनी फ़ातिमा के साथ मां वाला संबंध रखने के कारण जैसा कि मुझे प्राप्त है फ़ातिमी भी हुआ। जैसे वह आधा इस्राईली हुआ और आधा फ़ातिमी हुआ। जैसा हदीसों में आया है। हां मेरे पास फ़ारसी होने के लिए ख़ुदा के इल्हाम के अतिरिक्त और कुछ सबूत नहीं, परन्तु यह इल्हाम उस समय का है जब इस दावे का नाम-व-निशान भी न था। अर्थात् आज से बीस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में लिखा गया है और वह यह है-

خذو اا التوحید التوحید یا ابناء الفارس

अर्थात् तौहीद (एकेश्वरवाद) को पकड़ो, तौहीद को पकड़ो हे फारस के बेटो! और फिर दूसरे स्थान पर यह इल्हाम है-

ان الذین صدوا عن سبیل اللّٰہ ردّ علیھم رجل من فارس شکر اللّٰہ سعیہ

अर्थात् जो लोग ख़ुदा के मार्ग से रोकते थे एक फारसी नस्ल के व्यक्ति ने उन का रद्द लिखा। ख़ुदा ने उसकी कोशिश का शुकरिया (ध्नयवाद) किया। इसी प्रकार एक और स्थान पर बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम है★

لو کان الایمان معلّقا بالثریا لنا لہ رجلٌ من فارس

अर्थात् यदि ईमान सुरैया पर उठाया जाता और पृथ्वी सर्वथा बेईमानी से भर जाती तब भी यह आदमी जो फारसी नस्ल से है उसको आसमान पर से ले आता। और बनी फ़ातिमा होने में यह इल्हाम है

★हाशिया :- चूंकि तेरह सौ वर्ष तक ख़ुदा के इल्हाम के आदेश से इस भविष्यवाणी के चरितार्थ होने का किसी ने दावा नहीं किया और संभव नहीं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी झूठी हो। इसलिए जिस व्यक्ति ने यह दावा किया और दावा भी ऐतराज़ आने से पूर्व। इस का अस्वीकार करना मानो भविष्यवाणी को झुठलाना है। (इसी से)

الحمدللہ الذی جعل لکم الصھر ★ والنسب اشکر نعمتی رئیت خدیجتی

अर्थात् तुम्हें सादात की दामादी का गर्व और ऊंचे वंश का गर्व जो दोनों परस्पर समरूप और समान हैं प्रदान किया अर्थात् तुम्हें सादात का दामाद होने की श्रेष्ठता प्रदान की, और इसके अतिरिक्त बनी फ़ातिमा मांओं में से पैदा करके तुम्हारे वंश (खानदान) को सम्मान प्रदान किया और मेरी नेमत का धन्यवाद कर कि तूने मेरी ख़दीजा को पाया ❊ अर्थात् बनी इस्हाक़ के कारण एक तो बाप-दादों से संबंधित सम्मान था और दूसरा बनी फ़ातिमा होने का सम्मान उसके साथ संलग्न हुआ और सादात की दामादी इस ख़ाकसार की पत्नी की ओर संकेत है

★**हाशिया :-** इल्हाम الحمدللہ الذی جعل لکم والنسب से एक सूक्ष्म तर्क मेरे बनी फ़ातिमा होने पर पैदा होता है क्योंकि दामादी और वंश इस इल्हाम में एक ही جعل के नीचे रखे गए हैं। इन दोनों को लगभग एक ही श्रेणी की बात प्रशंसनीय ठहराई गई है और यह व्यापक सबूत इस बात पर है कि जिस प्रकार दामादी को बनी फ़ातिमा से संबंध है उसी प्रकार वंश में भी फ़ातिमियत की मिलावट मांओं की तरफ से है और सिहर صھر को नसब نسب पर प्राथमिक रखना इसी अन्तर को दिखाने के लिए है कि सिहर में शुद्ध रूप से फ़ातिमियत है और नसब (वंश) में उसकी मिलावट। (इसी से)

❊ यह इल्हाम बराहीन अहमदिया में लिखा है। इसमें बतौर भविष्यवाणी संकेत के तौर पर यह बताया गया है कि वह तुम्हारी शादी जो सादात में निश्चित है अनिवार्य तौर पर होने वाली है और खदीजा[रज़ि०] की सन्तान को ख़दीजा के नाम से याद किया। यह इस बात की तरफ संकेत है कि वह एक बड़े ख़ानदान की मां हो जाएगी। यहां यह विचित्र चुटकुला है कि ख़ुदा ने सादात के सिलसिले के प्रारंभ में सादात की मां एक फ़ारसी औरत नियुक्त की जिस का नाम शहरबानो था और दूसरी बार एक फारसी खानदान की बुनियाद डालने के लिए एक सय्यिदा औरत नियुक्त की जिसका नाम नुसरत जहां बेगम है। मानो फ़ारसियों के साथ यह बदले का बदला किया कि पहले एक पत्नी फारसी नस्ल की सय्यद के घर में आई और फिर अन्तिम युग में एक पत्नी सय्यदा फारसी पुरुष के साथ ब्याही गई और अद्भुत यह कि दोनों के नाम भी परस्पर मिलते हैं। और जिस प्रकार सादात का खानदान फैलाने के लिए ख़ुदा का वादा था यहां भी बराहीन अहमदिया के इल्हाम में इस खानदान के फैलाने का वादा है और वह यह है-

سبحان اللہ تبارک وتعالیٰ زاد مجدک ینقطع اٰباءک इस पर ख़ुदा की प्रशंसा। (इसी से)

जो सय्यिद सनदी सादात देहली में से हैं। मीर दर्द के खानदान से संबंध रखने वाले उसी फ़ातिमी संबंध की ओर इस कश्फ़ में संकेत है जो आज से तीस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में छापा गया जिसमें देखा था कि हज़रात पंजतन सय्यिदुल कौनेन हसनैन फातिमतुज़्ज़ुहरा और अली रज़ियल्लाहु अन्हु बिल्कुल जागने की अवस्था में आए और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अत्यन्त प्रेम और मांओं जैसी मेहरबानी के रंग में इस ख़ाकसार का सर अपनी रान पर रख लिया और खामोशी की अवस्था में एक शोकग्रस्त स्थिति बना कर बैठे रहे। उसी दिन से मुझ को इस खूनी मिलावट के संबंध पर पूर्ण विश्वास हुआ।

निष्कर्ष यह कि मेरे अस्तित्व (वजूद) में एक भाग इस्राईली है और एक भाग फ़ातिमी। और मैं दोनों मुबारक पैबंदों से बना हुआ हूं तथा हदीसों एवं आसार को देखने वाले भली भांति जानते हैं कि अन्तिम युग में आने वाले महदी के बारे में यही लिखा है कि वह मिश्रित अस्तित्व होगा शरीर का एक भाग इस्राईली और एक भाग मुहम्मदी। क्यों कि ख़ुदा तआला ने चाहा कि जैसा कि आने वाले मसीह के पद से सम्बद्ध कार्यों में बाह्य एवं आन्तरिक सुधार की तरकीब है अर्थात् यह कि वह कुछ मसीही रंग में है और कुछ मुहम्मदी रंग में कार्य करेगा। ऐसा ही उसकी प्रकृति में भी तरकीब है। फलतः इस हदीस امامکم منکم। से सिद्ध है कि आने वाला मसीह इस्राईली नबी हरगिज़ नहीं है बल्कि इसी उम्मत में से हैं जैसा कि प्रत्यक्ष स्पष्ट आदेश अर्थात् امامکم منکم। इसी को सिद्ध करता है और इस बनावट और तावील के लिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आकर उम्मती बन जाएंगे और नबी नहीं रहेंगे, कोई अनुकूलता मौजूद नहीं है, और इबारत का हक़ है कि अनुकूलता के होने से पहले उसको प्रत्यक्ष पर चरितार्थ किया जाए। अन्यथा यहूदियों की भांति एक अक्षरांतरण✶ होगा। अतः यह कहना कि हज़रत ईसा बनी इस्राईली दुनिया में आकर मुसलमानों का लिबास पहन लेगा और उम्मती कहलाएगा यह एक अनुचित तावील है जो पुख़्ता सबूत चाहती है। क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों का यह हक़ (अधिकार) है कि उन के मायने प्रत्यक्ष

✶ अक्षरांतरण- शब्दों में परिवर्तन कर देना। (अनुवादक)

इबारत के अनुसार किए जाएं और प्रत्यक्ष पर आदेश किया जाए, जब तक कि कोई इस्तेमाल की अनुकूलता पैदा न हो। और इस्तेमाल की शक्तिशाली अनुकूलता के बिना प्रत्यक्ष से हटकर अर्थ हरगिज़ न किए जाएं और إِمَامُكُمْ مِنْكُمْ के प्रत्यक्ष अर्थ यही हैं कि वह इमाम इसी उम्मत मुहम्मदिया में पैदा होगा। अत: इसके विपरीत यदि यह दावा किया जाए कि हज़रत ईसा बनी इस्राईली जिस पर इंजील उतरी थी वही संसार में दोबारा आकर उम्मती बन जाएंगे, तो यह एक नया दावा है जो प्रत्यक्ष स्पष्ट आदेश के विरुद्ध है। इसलिए दृढ़ सबूत को चाहता है। क्योंकि बिना सबूत के दावा स्वीकार्य नहीं। एक दूसरी अनुकूलता उस पर यह है कि सही बुख़ारी में जो क़ुर्आन के बाद समस्त किताबों में सबसे अधिक सही किताब कहलाती है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का हुलिया लाल रंग का लिखा है। जैसा कि आम तौर पर सीरिया (शाम) के लोगों का होता है। ऐसा ही उनके बाल भी घुंघराले लिखे हैं, किन्तु आने वाले मसीह का रंग हर एक हदीस में गेहुआं लिखा है और बाल सीधे लिखे हैं और समस्त पुस्तकों में यह अनिवार्य किया है कि जहाँ कहीं हज़रत ईसा नबी अलैहिस्सलाम के हुलिया लिखने का संयोग हुआ है तो अनिवार्यत: उसको अहमर अर्थात् लाल रंग लिखा है और उस अहमर (लाल) के शब्द को किसी जगह छोड़ा नहीं, और जहां कहीं आने वाले मसीह का हुलिया लिखना पड़ा है तो हर एक जगह अनिवार्य रूप से उसको आदम अर्थात् गेहुआं लिखा है अर्थात् इमाम बुख़ारी ने जो शब्द आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिखे हैं जिन में उन दोनों मसीहों का वर्णन है वह हमेशा इस नियम पर क़ायम रहे हैं कि बनी इस्राईली ईसा के लिए अहमर (लाल) का शब्द ग्रहण किया है और आने वाले मसीह के बारे में आदम अर्थात् गेहुआं होने का शब्द अपनाया है। अत: इस अनिवार्यता से जिसको किसी जगह सही बुख़ारी की हदीसों में छोड़ा नहीं गया सिवाए इसके क्या नतीजा निकल सकता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नज़दीक ईसा इब्ने मरयम बनी इस्राईली और था और आने वाला मसीह जो इसी उम्मत में से होगा और है अन्यथा इस बात का क्या उत्तर है कि दोनों हुलियों में भिन्नता की पूर्ण अनिवार्यता क्यों की

गई। हम इस बात के उत्तरदायी नहीं हैं यदि किसी और हदीसविद (मुहद्दिस) ने अपनी अनभिज्ञता के कारण अहमर के स्थान पर आदम और आदम के स्थान पर अहमर लिख दिया हो, परन्तु इमाम बुख़ारी जो हदीस के हाफ़िज़ (कठस्थ कर्ता) और प्रथम श्रेणी के समालोचक (नक़्क़ाद) हैं। उसने इस बारे में ऐसी कोई हदीस नहीं ली जिसमें बनी इस्राईली मसीह को आदम लिखा गया हो या आने वाले मसीह को अहमर लिखा गया हो अपितु इमाम बुख़ारी ने हदीस को नक़ल करते समय इस शर्त को जानबूझ कर लिया है और इसे निरन्तर आरंभ से अन्त तक दृष्टिगत रखा है। अत: जो हदीस इमाम बुख़ारी की शर्त के विपरीत हो वह स्वीकार करने योग्य नहीं।

उन समस्त तर्कों में से जिन से सिद्ध होता है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा पवित्र क़ुर्आन की यह आयत है

(आले इमरान – 111) كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ

इसका अनुवाद यह है कि तुम सर्वोत्तम उम्मत हो जो इसलिए निकाली गई हो ताकि समस्त दज्जालों और वादा दिए हुए दज्जाल का फ़ित्ना (उपद्रव) दूर करके तथा उन के उपद्रव का निवारण करके ख़ुदा की सृष्टि को लाभ पहुंचाओं। स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन में 'अन्नास' का शब्द 'दज्जाल मौऊद' के मायने में भी आया है और जिस स्थान पर इन मायनों को दृढ़ अनुकूलता निश्चित करे तो फिर अन्य मायने करना गुनाह है। अत: पवित्र क़ुर्आन के एक और स्थान में 'अन्नास' का दज्जाल ही लिखा है और वह यह है

(अलमोमिन- 58) لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ

अर्थात् जो कुछ आसमानों और पृथ्वी की बनावट में रहस्य और चमत्कार भरे हैं मौऊद दज्जाल के स्वभावों की बनावट उसके बराबर नहीं। अर्थात् यद्यपि वे लोग पृथ्वी एवं आसमान के रहस्यों को मालूम करने में कितना भी कठोर परिश्रम करें और कैसी ही प्रकृति लाएं फिर भी उनकी तबियतें उन रहस्यों की चरम सीमा तक नहीं पहुंच सकतीं। याद रहे इस स्थान पर भी व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) ने 'अन्नास' से अभिप्राय मौऊद दज्जाल ही लिया है। देखो तफ़्सीर

मआलिम इत्यादि। और इस पर दृढ़ अनुकूलता यह है कि लिखा है कि मौऊद दज्जाल अपने आविष्कारों एवं उद्योगों से ख़ुदा तआला के कामों पर हाथ डालेगा और इस प्रकार से ख़ुदाई का दावा करेगा तथा इस बात का बहुत लालची होगा कि ख़ुदाई बातें जैसे वर्षा करना, फल लगाना और इन्सान आदि प्राणियों की नस्ल जारी रखना तथा सफर और एक स्थान पर ठहरने तथा स्वास्थ्य के सामान विलक्षण तौर पर मनुष्य के लिए उपलब्ध करना, इन समस्त बातों में सर्वशक्तिमान की भांति कार्रवाइयां करे और सब कुछ उस की शक्ति के क़ब्ज़े में हो जाए और उसके आगे कोई बात अनहोनी न रहे। इसी की ओर इस आयत में संकेत है। आयत के आशय का ख़ुलासा यह है कि पृथ्वी और आसमान में जितने रहस्य रखे गए हैं जिनको दज्जाल भौतिक विज्ञान द्वारा अपने वश में करना चाहता है। वे रहस्य उसके स्वभाव की तीव्रता और ज्ञान की सीमा से बढ़कर हैं और जैसा कि कथित आयत में अन्नास के शब्द से अभिप्राय दज्जाल है ऐसा ही आयत أُخْرِجَتْ لِلنَّاس में भी 'अन्नास' के शब्द से दज्जाल ही अभिप्राय है, क्योंकि एक-दूसरे के आमने-सामने होने की अनुकूलता से इस आयत के ये मायने मालूम होते हैं कि كنتم خير الناس اخرجت لشرّ الناس और شر النّاس से निस्सन्देह दज्जाल का गिरोह अभिप्राय है। क्योंकि हदीस-ए-नबवी से सिद्ध है कि आदम से लेकर क़यामत तक आपस में फूट डालने में दज्जाल के समान न कोई हुआ और न होगा। और यह ऐसा सुदृढ़ एवं ठोस तर्क है कि जिसके दोनों भाग निश्चित और अटल तथा मान्य आस्थाओं में से हैं। अर्थात् जैसा कि किसी मुसलमान को इस बात से इन्कार नहीं कि यह उम्मत सर्वश्रेष्ठ उम्मत है, इसी प्रकार इस बात से भी इन्कार नहीं कि दज्जाल का गिरोह बुरे लोगों में से है। इस विभाजन का ये दो आयतें भी पता देती हैं जो सूरह (अलबय्यिन: में हैं और वे ये हैं) -

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ (सूरह अलबय्यिन: 7,8)

देखो इस आयत की दृष्टि से एक ऐसे गिरोह को शर्रुलबरिय्य: कहा गया है जिसमें से दज्जाल का गिरोह है, और ऐसे गिरोह को ख़ैरुलबरिय्य: कहा गया है जो उम्मत-ए-मुहम्मदिया है। बहरहाल आयत خَيْرَ اُمَّةٍ का शब्द अन्नास (النّاس) के साथ मुक़ाबला होकर ठोस तौर पर सिद्ध हो गया कि النّاس से अभिप्राय दज्जाल है और यही सिद्ध करना था और इस उद्देश्य पर एक यह भी बड़ी अनुकूलता है कि ख़ुदा की दूरदर्शी आदत यही चाहती है कि जिस नबी के नुबुव्वत के युग में दज्जाल पैदा हो उसी नबी की उम्मत के कुछ लोग इस फ़ित्ने को दूर करने वाले हों, न यह कि फ़ित्न: (उपद्रव) तो पैदा हो मुहम्मदी नुबुव्वत के युग में और इस (उपद्रव) को दूर करने के लिए पहले नबियों में से कोई नबी उतरे। यही सदैव से और जब से कि शरीअतों की नींव पड़ी अल्लाह की सुन्नत है कि जिस किसी नबी के नुबुव्वत के युग में कोई फ़साद फैलाने वाला गिरोह (फ़िर्क:) पैदा हुआ, उसी नबी के कुछ महान वारिसों को इस फ़साद को दूर करने के लिए आदेश दिया गया। हां यदि यह दज्जाल का फ़ित्न: हज़रत मसीह की नबुव्वत के युग में होता तो उन का हक़ था कि वह स्वयं या उन के हवारियों और खलीफ़ों में से इस फ़ित्ने को दूर करता परन्तु या क्या अन्याय की बात है कि यह उम्मत कहलाए तो ख़ैरुल उमम (श्रेष्ठ उम्मत) किन्तु ख़ुदा तआला की दृष्टि में इतनी अयोग्य और निकम्मी हो कि जब किसी फ़ित्ने को दूर करने का अवसर आए तो उसे दूर करने के लिए कोई व्यक्ति बाहर से नियुक्त हो और इस उम्मत में कोई ऐसा योग्य न हो कि इस फ़ित्ने को दूर कर सके। मानो इस उम्मत का इस स्थिति में वह उदाहरण होगा जैसे कोई सरकार एक नया देश विजय करे जिसके निवासी अनपढ़ और आधे वहशी हों तो अन्तत: उस सरकार को विवश हो कर यह करना पड़े कि उस देश की आर्थिक, दीवानी (रुपए के लेन-देन और सम्पत्ति के मामले) और फ़ौजदारी की व्यवस्था के लिए बाहर से योग्य आदमी की मांग करके प्रतिष्ठित पदों पर विभूषित करे। सद्बुद्धि हरगिज़ स्वीकार नहीं कर सकती कि जिस उम्मत के रब्बानी उलेमा के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया है कि –

عُلَماء اُمَّتِی کَاَنْبِیَآءِ بَنِی اِسْرَاِئِیْل

अर्थात् मेरी उम्मत के उलेमा इस्राईली नबियों की तरह हैं अन्त में उन का यह अपमान प्रकट करे कि दज्जाल जो महाशक्तिशाली ख़ुदा की दृष्टि में कुछ भी चीज़ नहीं उसके फ़ित्ने को दूर करने के लिए उनमें योग्यता का तत्त्व न पाया जाए। इसलिए हम इसी प्रकार से जैसा कि सूर्य को देखकर पहचान लेते हैं कि यह यूर्य है। इस आयत

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ (आले इमरान - 111)

को पहचानते हैं और उसके यही अर्थ करते हैं कि -

كنتم خير امة اخرجت لشرّ الناس الذی هوا لدّجّال المعهود

याद रहे कि प्रत्येक उम्मत से एक धार्मिक सेवा ली जाती है और एक प्रकार के दुश्मन के साथ उसका सामना होता है। अत: निश्चित था कि इस उम्मत का दज्जाल के साथ सामना होगा, जैसा कि नाफ़िअ बिन उत्बा की हदीस से मुस्लिम में स्पष्ट लिखा है कि तुम दज्जाल के साथ लड़ोगे और विजय प्राप्त करोगे। यद्यपि सहाबा दज्जाल के साथ नहीं लड़े। परन्तु **اٰخرین منهم** के विषयानुसार मसीह मौऊद और उसके गिरोह को सहाबा ठहराया।★ अब देखो इस हदीस में भी आंहज़रत सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लड़ने वाले अपने सहाबा को (जो उम्मत हैं) ठहरा दिया। और यह न कहा कि बनी इस्राईली मसीह लड़ेगा। और नुज़ूल का शब्द केवल प्रतिष्ठा एवं सम्मान के लिए है तथा इस बात की ओर संकेत है कि चूंकि इस उपद्रवपूर्ण युग में ईमान सुरैया (सितारे) पर चला जाएगा। और समस्त पीरी-मुरादी और शागिर्दी-उस्तादी तथा लाभ पहुंचाना और किसी से लाभ प्राप्त करना पतन में आ जाएगा। इसलिए

★عن نافع بن عتبة قال قال رسول الله صلعم تغزون جزیرة العرب فیفتحها الله ثم فارس فیفتحها الله ثمّ تغزون الروم فیفتحها الله ثم تغزون الدَّجّال فیفتحها الله رواه مسلم۔ مشکوۃ شریف باب الملاحم ۴۶۲ مطبع مجتبائی دهلی (इसी से)

आसमान का ख़ुदा एक व्यक्ति को अपने हाथ से प्रशिक्षण देकर पार्थिव सिलसिलों के माध्यम के बिना पृथ्वी पर भेजेगा जैसे कि वर्षा आसमान से मानवीय हाथों के माध्यम के बिना उतरती है।

और सब शक्तिशाली और ठोस तर्कों में से जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि मसीह मौऊद इसी उम्मत-ए-मुहम्मदिया में से होगा, पवित्र क़ुर्आन की यह आयत है –

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ الخ (सूरह अन्नूर - 56)

अर्थात् ख़ुदा तआला ने उन लोगों के लिए जो ईमानदार हैं और नेक काम करते हैं वादा किया है कि उनको पृथ्वी पर उन्हीं ख़लीफ़ों के समान जो उन से पहले गुज़र चुके हैं ख़लीफ़े नियुक्त करेगा। इस आयत में पहले ख़लीफ़ों से अभिप्राय हज़रत मूसा की उम्मत में से ख़लीफ़े हैं जिनको ख़ुदा तआला ने हज़रत मूसा की शरीअत को क़ायम करने के लिए निरन्तर भेजा था और विशेष तौर पर किसी सदी को ऐसे ख़लीफ़ों से जो मूसा के धर्म के मुजद्दित थे खाली नहीं जाने दिया था। पवित्र क़ुर्आन ने ऐसे ख़लीफ़ों की गणना करके व्यक्त किया है कि वे बारह हैं और तेरहवां हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम है जो मूसा की शरीअत का मसीह मौऊद है। इस समरूपता की दृष्टि से जो कथित आयत में كَمَا के शब्द से ली जाती है आवश्यक था कि मुहम्मदी ख़लीफ़ों को मूस्वी ख़लीफों से समानता और समरूपता हो। अत: इसी समानता को सिद्ध करने तथा निश्चित करने के लिए ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में बारह मूस्वी ख़लीफ़ों की चर्चा की जिनमें से हर एक हज़रत मूसा की क़ौम में से था और तेरहवां हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का वर्णन किया जो मूसा की क़ौम का ख़ातमुलअंबिया था। परन्तु वास्तव में मूसा की क़ौम में से नहीं था। फिर ख़ुदा ने मुहम्मदी सिलसिले के खलीफ़ों को मूस्वी सिलसिले के ख़लीफ़ों से समरूपता देकर स्पष्ट तौर पर समझा दिया कि इस सिलसिले के अन्त में भी एक मसीह है और मध्य में बारह

खलीफ़े हैं ताकि मूस्वी सिलसिले के मुकाबले पर यहां भी चौदह की संख्या पूरी हो। ऐसा ही मुहम्मदी सिलसिले की ख़िलाफ़त के मसीह मौऊद को चौदहवी सदी के सर पर पैदा किया। क्योंकि मूस्वी सिलसिले का मसीह मौऊद भी प्रकट नहीं हुआ था जब तक कि मूस्वी सन के हिसाब से चौदहवीं सदी अभी आरम्भ नहीं हुई थी ऐसा किया गया ताकि दोनों प्रकट मसीहों के सिलसिले के उद्गम से दूरी परस्पर समान दूरी हो और सिलसिले के अन्तिम ख़लीफ़ा मुजद्दिद को चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट करना प्रकाश को पूर्ण करने की ओर संकेत है क्योंकि मसीह मौऊद इस्लाम के चाँद का पूर्ण और व्यापक नूर है इसलिए उसके द्वारा इस्लाम का पुनरुद्धार चाँद की चौदहवीं रात के सदृश है इस आयत में इसी की ओर संकेत है कि

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ़्फ़ - 10)

क्योंकि पूर्ण अभिव्यक्ति और प्रकाश को पूर्ण करना एक ही बात है और यह कथन कि لیظهر علَى الا دیان کل الا ظهار इस कथन से समान है कि لیتم نور ہ کل الا تمام और फिर दूसरी आयत में उसकी और भी व्याख्या है और वह यह है –

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ اللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ
(अस्सफ़्फ़ - 9)

इस आयत में व्याख्या से समझाया गया है कि मसीह मौऊद चौदहवी सदी में पैदा होगा, क्योंकि प्रकाश (नूर) को पूर्ण करने के लिए चौदहवीं रात निर्धारित है। अत: अब जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मूसा और हज़रत ईसा बिन मरयम के बीच बारह ख़लीफ़ों का वर्णन किया गया और उस की संख्या का वर्णन किया गया और उस की संख्या बारह प्रकट की गई और यह भी बताया गया कि वे सब बारह के बारह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम में से थे, परन्तु तेरहवां ख़लीफ़ा जो अन्तिम ख़लीफ़ा है अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने पिता की दृष्टि से उस क़ौम में से नहीं था, क्योंकि

उसका कोई पिता नहीं था, जिसके कारण वह हज़रत मूसा से अपनी शाख मिला सकता। यही समस्त बातें मुहम्मदी सिलसिले की ख़िलाफ़त में पाई जाती हैं अर्थात् सर्व सहमति वाली हदीस से सिद्ध है कि इस सिलसिले में भी मध्य में बारह ख़लीफ़े हैं और तेरहवां जो मुहम्मदी विलायत का ख़ातम है (ख़ातम-ए-विलायत-ए-मुहम्मदिया) वह मुहम्मदी क़ौम में से नहीं है अर्थात् क़ुरैश में से नहीं और यही चाहिए था कि बारह खलीफ़े तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ौम में से होते और अन्तिम ख़लीफ़ा अपने बाप-दादों की दृष्टि से उस क़ौम में से न होता ताकि समानता निश्चित सर्वांगपूर्ण हो जाती। अत: अलहम्दुलिल्लाह वलमन्न: कि ऐसा ही प्रकट हुआ, क्योंकि बुख़ारी और मुस्लिम में यह हदीस मुत्तफ़क़ अलैहि है जो जाबिर बिन समरा से है और वह यह है

لا یزال الاسلام عزیزًا الیٰ اثنا عشر خلیفة کلّھم من قریش

अर्थात् बारह ख़लीफ़ों के होने तक इस्लाम बड़ी शक्ति और ज़ोर में रहेगा, किन्तु तेरहवां ख़लीफ़ा जो मसीह मौऊद है उस समय आएगा जबकि इस्लाम सलीब और दज्जालियत के प्रभुत्व से कमज़ोर हो जाएगा, और वे बारह ख़लीफ़े जो इस्लाम के प्रभुत्व के समय आते रहेंगे, वे सब के सब क़ुरैश में से होंगे अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ौम में से होंगे।★ परन्तु

★**हाशिया :-** हदीस के शब्द ये हैं –

عن جابر بن سمرة قال سمعتُ رسول اللہ صلّی اللہ علیہ وسلّم یقول لا یزال الاسلام عزیزاً الیٰ اثنیٰ عشر خلیفة کلّھم من قریش متفق علیہ مشکوة شریف باب منا قب قریش

अर्थात् इस्लाम बारह ख़लीफ़ों के प्रकटन तक विजयी रहेगा और वे समस्त ख़लीफ़े क़ुरैश में से होंगे। यहां यह दावा नहीं हो सकता कि मसीह मौऊद भी इन्हीं बारह में सम्मिलित है क्योंकि متفق علیہ यह बात है कि मसीह मौऊद इस्लाम की शक्ति के समय नहीं आएगा, अपितु उस समय आएगा जबकि पृथ्वी पर ईसाइयत का ग़ल्ब: होगा। जैसा कि یکسر الصَّلیب के वाक्य से लिया जाता है। अत: अवश्य है कि मसीह के प्रकटन से पहले इस्लाम की शक्ति जाती रहे और मुसलमानों की हालत पर कमज़ोरी आ जाए

मसीह मौऊद जो इस्लाम की कमज़ोरी के समय आएगा। वह क़ुरैश की क़ौम में से नहीं होगा। क्योंकि अवश्य था कि जैसा कि मूस्वी सिलसिले का आख़िरी नबी अपने बाप की दृष्टि से हज़रत मूसा की क़ौम में से नहीं है, ऐसा ही मुहम्मदी सिलसिले का ख़ातमुल औलिया क़ुरैश में से न हो और इसी स्थान से निश्चित तौर पर इस बात का फ़ैसला हो गया कि इस्लाम का मसीह मौऊद इसी उम्मत में से आना चाहिए क्योंकि जब कुर्आन का अटल एवं स्पष्ट आदेश अर्थात् کَمَا के शब्द से सिद्ध हो गया कि मुहम्मदी ख़िलाफ़त का सिलसिला मूस्वी ख़िलाफ़त के सिलसिले से समानता रखता है जैसा कि उसी کَمَا के शब्द से उन दो नबियों अर्थात् हज़रत मूसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की समरूपता सिद्ध है जो आयत

(अलमुज़्ज़म्मिल - 16) کَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰی فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا

से समझी जाती है। तो यह समरूपता उसी हालत में क़ायम रह सकती है जबकि मुहम्मदी सिलसिले के आने वाले ख़लीफ़े के पहले ख़लीफ़ों का हू बहू न हो अपितु ग़ैर हो।★ कारण यह कि समानता और समरूपता में एक प्रकार से

शेष हाशिया- और उनके अधिकतर अन्य शक्तियों के अधीन उसी प्रकार दास हों जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के प्रकटन के समय यहूदियों की हालत हो रही थी। चूंकि हदीसों में मसीह
मौऊद की विशेष तौर पर चर्चा थी इसलिए बारह ख़लीफ़ों से उसे अलग रखा गया, क्योंकि निश्चित है कि वह कष्टों एवं संकटों के बाद आए और उस समय आए जबकि इस्लाम की हालत में एक स्पष्ट क्रान्ति पैदा हो जाए तथा इसी प्रकार से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आए थे, अर्थात् ऐसे समय में जबकि यहूदियों में एक स्पष्ट पतन का लक्षण पैदा हो गया था। अत: इस तरीके से हज़रत मूसा के ख़लीफ़े भी तेरह हुए और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवस्सलम के ख़लीफ़े भी तेरह। और जैसा कि हज़रत मूसा से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम चौदहवें स्थान पर थे, ऐसा ही अवश्य था कि इस्लाम का मसीह मौऊद भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से चौदहवें स्थान पर हो। इसी समानता से मसीह मौऊद का चौदहवीं सदी में प्रकट होना आवश्यक था। इसी से

★**हाशिया :-** जबकि کَمَا के शब्द के कारण जो आयत (अन्नूर - 56) كما استخلف الذين में मौजूद है। मुहम्मदी सिलसिले के ख़लीफ़ों के बारे में अनिवार्य और अटल तौर पर

परायापन (मुग़ायरत) आवश्यक है तथा कोई चीज़ अपने नफ़्स के समान नहीं कहला सकती। अत: यदि मान लें कि मुहम्मदी सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा जो मुकाबले की दृष्टि से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मुकाबले पर आया है जिसके बारे में यह मानना आवश्यक है कि वह इस उम्मत का ख़ातमुल औलिया हो।* जैसा कि मूस्वी सिलसिले के खलीफ़ों में हज़रत ईसा ख़ातमुलअंबिया है। यदि वास्तव में वही ईसा अलैहिस्सलाम है जो दोबारा आने वाला है तो इस से पवित्र क़ुर्आन का झूठा होना अनिवार्य आता है, क्योंकि क़ुर्आन जैसा कि كَمَا के शब्द से (अर्थ) लिया जाता है दोनों सिलसिले के सभी ख़लीफ़ों को एक पहलू से पराया ठहराता है और यह एक निश्चित स्पष्ट आदेश है कि यदि उसके

शेष हाशिया- मान लिया गया है कि वे वही ख़लीफ़े नहीं है जो मूस्वी सिलसिले के ख़लीफ़े थे। हां उन ख़लीफ़ों के समान हैं, इसके साथ ही घटनाओं ने भी प्रकट कर दिया है कि वे लोग पहले खलीफ़ों के हू बहू नहीं हैं अपितु ग़ैर है तो फिर मुहम्मदी सिलसिले में उस अन्तिम ख़लीफ़ा के बारे में जो मसीह मौऊद है क्यों यह गुमान किया जाता है कि वह पहले मसीह का हू बहू है! क्या यह सच नहीं है कि كَمَا शब्द के आशय के अनुसार मुहम्मदी सिलसिले का मसीह इस्राईली मसीह का ग़ैर होना चाहिए न कि हू बहू। हू बहू समझना तो क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश के विषय पर खुल्लम खुल्ला आक्रमण है, अपितु पवित्र क़ुर्आन को खुल्लम खुल्ला झुठलाना है और एक अनुचित धमकी कि बारह ख़लीफ़ों को तो كَمَا शब्द के आशय के अनुसार इस्राईली ख़लीफ़ों का ग़ैर समझना और फिर मसीह मौऊद को जो मूस्वी सिलसिले के मुकाबले पर मुहम्मदी सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा है पहले मसीह का हूबहू ठहरा देना।

وهذه نكتة مبتكرة وحجة احرة ودُرَّة من دُرَرٍتفردت بها فخذوهابقوةواشكروااللہ بانابة ولا تكونوا من المحرومين (इसी से)

*हाशिया :- शैख मुहियुद्दीन इब्ने अरबी अपनी पुस्तक 'फ़ुसूस' में महदी ख़ातमुल औलिया का एक लक्षण लिखते हैं कि उसका खानदान चीनी सीमाओं में से होगा और उसकी पैदायश में यह विचित्रता होगी कि उसके साथ एक लड़की जुड़वां पैदा होगी। अर्थात् इस प्रकार से ख़ुदा उस से स्त्रियों का तत्व अलग कर देगा। अत: इसी कश्फ़ के अनुसार इस खाकसार का जन्म हुआ है और इसी कश्फ़ के अनुसार मेरे पूर्वज चीनी सीमाओं से पंजाब में पहुंचे हैं। इसी से

विरोध में एक संसार एकत्र हो जाए तब भी वह इस स्पष्ट आदेश को अस्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि जब पहले सिलसिले का ऐन (हू बहू) ही उतर कर आ गया तो वह परायापन समाप्त हो गया और كَمَا शब्द का अर्थ ग़लत हो गया। अत: इस स्थिति में पवित्र क़ुर्आन का झुठलाना अनिवार्य हुआ।

وهذا باطل و کلما یستلزم الباطل فهو باطلٌ

याद रहे कि पवित्र क़ुर्आन ने आयत

كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ (अन्नूर - 56)

में वही كَمَا प्रयोग किया है जो आयत

كَمَا اَرْسَلْنَا اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا (अलमुज़्ज़म्मिल - 16)

में है। अत: स्पष्ट है कि यदि कोई व्यक्ति यह दावा करे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मसील-ए-मूसा हो कर नहीं आए बल्कि यह स्वयं मूसा बतौर आवागमन आ गया है या यह दावा करे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह दावा सही नहीं है कि तौरात की इस भविष्यवाणी का मैं चरितार्थ हूं बल्कि उस भविष्यवाणी के मायने ये हैं कि स्वयं मूसा ही आ जाएगा जो बनी इस्राईल के भाइयों में से है, तो क्या इस बेकार दावे का यह उत्तर नहीं दिया जाएगा कि पवित्र क़ुर्आन में हरगिज़ वर्णन नहीं किया गया कि स्वयं मूसा आएगा, बल्कि كَمَا के शब्द से मूसा के मसील (समरूप) की ओर संकेत किया है। अत: यही उत्तर हमारी ओर से है कि इस स्थान पर भी मुहम्मदी सिलसिले के खलीफ़ों के लिए كَمَا का शब्द मौजूद है। और ख़ुदा के कलाम का यह अटल स्पष्ट आदेश सूर्य के समान चमक कर हमें बता रहा है कि मुहम्मदी सिलसिले की ख़िलाफ़त के समस्त ख़लीफ़े मूसा के ख़लीफ़ों के मसील (समरूप) हैं। इसी प्रकार अन्तिम ख़लीफ़ा जो ख़ातम-ए-विलायत-ए-मुहम्मदिया है जो मसीह मौऊद के नाम से पुकारा जाता है, वह हज़रत ईसा से जो मूस्वी नुबुव्वत के सिलसिले का ख़ातम है समरूपता और समानता रखता है। उदाहरणतया देखो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत यूशा बिन नून

से कैसी समानता है कि उन्होंने एक ऐसा अपूर्ण कार्य उसामा की सेना और झूठे नबियों के मुकाबले का पूर्ण किया, जैसा कि हज़रत यूशा बिन नून ने पूर्ण किया और मूस्वी सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा अर्थात् हज़रत ईसा जैसा कि उस समय आया जबकि गलील और पैलातूस के क्षेत्र से यहूदियों का शासन जाता रहा था। ऐसा ही मुहम्मदी सिलसिले का मसीह ऐसे समय में आया कि जब हिन्दुस्तान का शासन (सत्ता) मुसलमानों के हाथ से निकल चुकी।

तीसरा मर्हल: यह है कि क्या यह बात सिद्ध है या नहीं कि आने वाला मसीह मौऊद इसी युग में आना चाहिए जिसमें हम है। अत: निम्नलिखित तर्कों से स्पष्ट तौर पर खुल गया है कि अवश्य है कि इसी युग में आए-

(1) प्रथम तर्क यह है कि ख़ुदा की किताब (क़ुर्आन) के बाद सर्वाधिक सही किताब सही बुख़ारी में लिखा है कि मसीह मौऊद सलीब तोड़ने के लिए आएगा और ऐसे समय में आएगा कि जब देश में प्रत्येक पहलू से कथन और कर्म में असुंतलन फैले हुए होंगे। अत: अब इस परिणाम तक पहुंचने के लिए ध्यानपूर्वक देखने की भी आवश्यकता नहीं। क्योंकि स्पष्ट है कि ईसाइयत का प्रभाव लाखों इन्सानों के दिलों पर पड़ गया है और देश इबाहत ✶ की शिक्षाओं से प्रभावित होता जाता है। सैकड़ों लोग प्रत्येक खानदान में से न केवल इस्लाम धर्म से ही मुर्तद (विधर्मी) हो गए है बल्कि जनाब सय्यिदिना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुश्मन भी हो गए हैं, और अब तक सैकड़ों पुस्तकें अपमान और गालियों से भरी हुई हैं। इस संकट के समय जब हम गुज़रे युग की ओर देखते हैं तो हमें एक अटल फैसले के तौर पर यह राय व्यक्त करनी पड़ती है कि तेरह सौ वर्ष की बारह सदियों में से कोई भी ऐसी सदी इस्लाम के लिए हानिप्रद नहीं गुज़री कि जैसी तेरहवीं सदी गुज़री है और जो अब गुज़र रही है। इसलिए सद्बुद्धि इस बात की आवश्यकता को मानती है कि ऐसे ख़तरों से भरे युग के लिए जिसमें सामान्य तौर पर पृथ्वी

✶ **इबाहत** – शरीअत में किसी काम के करने या न करने पर पाबन्दी न हो अर्थात् अवैध कार्य को वैध समझना। (अनुवादक)

पर विरोध का बहुत जोश फूट पड़ा है और मुसलमानों का आन्तरिक जीवन भी न कहने योग्य हालत तक पहुंच गया है। कोई सुधारक सलीबी उपद्रवों को दूर करने वाला और आन्तरिक हालत को पवित्र करने वाला पैदा हो तथा तेरहवीं सदी के पूरे सौ वर्ष के अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि ये ज़हरीली हवाएं बड़ी तीव्रगति से चल रही हैं और सामान्य महामारी की भांति प्रत्येक शहर और गांव में से कुछ-कुछ अपने क़ब्ज़े में ला रही हैं का सुधार हर एक मामूली शक्ति का कार्य नहीं, क्योंकि ये विरोधी प्रभाव और आरोपों का भण्डार स्वयं एक मामूली शक्ति नहीं बल्कि पृथ्वी ने अपने समय पर एक जोश मारा है और अपने समस्त ज़हरों को बड़ी शक्ति के साथ उगला है। इसलिए इस ज़हर के बचाव के लिए आसमानी शक्ति की आवश्यकता है। क्योंकि लोहे को लोहा ही काटता है। अतः इस तर्क से स्पष्ट हो गया कि यही युग मसीह मौऊद के प्रकट होने का युग है। यह बात बहुत जल्द समझ में आने वाली है जिसे एक बच्चा भी समझ सकता है कि जिस हालत में मसीह के आने का मुख्य कारण सलीब का तोड़ना है। आजकल सलीबी धर्म उस जवानी के जोशों में है जिस से बढ़कर उसकी शक्तियों का पोषण एवं विकास और उसके प्रहारों की पद्धति का भयावह होना संभव नहीं।★ तो फिर यदि इस समय में ख़ुदा तआला की ओर से उसकी प्रतिरक्षा (दिफ़ाअ) न होती तो फिर उसके बाद किस समय की प्रतीक्षा थी? और इसके अतिरिक्त मसीह मौऊद का सदी के सर पर ही आना आवश्यक है और चौदहवीं सदी में से सत्रह वर्ष गुज़र गए तो इस स्थिति में यदि अब तक मसीह नहीं आया तो मानना पड़ेगा कि ख़ुदा

★**हाशिया :-** इस कारण से इस से अधिक कठोरता संभव नहीं कि इस्लाम पर जितनी विपत्ति आना थी आ गई। अब इस से अधिक इस दयनीय उम्मत पर विपत्ति नहीं आ सकती। क्योंकि यदि इस से अधिक विरोध की सफलता हो जाए तो सुदृढ़ क़रीने स्पष्ट तौर पर गवाही दे रहे हैं कि इस्लाम का पूर्णतया विनाश हो जाए। इसलिए आवश्यक था कि इस स्तर की विपत्ति पर सलीब का तोड़ने वाला मसीह आ जाता और इस से अधिक शर्मिन्दगी इस्लाम को सहन न करनी पड़ती। (इसी से)

तआला की इच्छा है कि इस्लाम को और सौ वर्ष तक या इस से भी अधिक अपमान और तिरस्कार का निशाना रखे। किन्तु इस सलीब के तोड़ने से मेरा अभिप्राय जिहाद का मार्ग और रक्तपात करना नहीं जो आजकल के उलेमा के दृष्टिगत है। क्योंकि वे लोग सारी खूबियों को जिहाद और लड़ाइयों पर ही समाप्त कर बैठे हैं और मैं इस बात का अत्यन्त विरोधी हूं कि मसीह अथवा अन्य कोई धर्म के लिए लड़ाइयां करे।★

(2) दूसरा तर्क वे कुछ हदीसें आदरणीय वलियों और महान उलेमा के कश्फ़ हैं जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि मसीह मौऊद और महदी माहूद चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट होगा। अतः हदीस اَلْاٰیَاتُ بَعْدَ الْمِأَتَیْنِ की व्याख्या बहुत से पहले (पुराने) लोगों ने और फिर उनके बाद आने वालों ने यही की है कि مِأَتَیْنِ (दो सौ) के शब्द से वे مائتين अभिप्राय हैं जो अलिफ़ अर्थात् हज़ार के बाद हैं। इस प्रकार से इस हदीस के मायने ये हुए कि महदी और मसीह की पैदायश जो बहुत बड़े निशानों (आयाते कुब्रा) में से है तेरहवीं सदी में होगी और चौदहवीं सदी में उसका प्रादुर्भाव होगा। यही मायने अन्वेषक उलेमा ने किए हैं और इन्हीं संकेतों से उन्होंने आदेश किया है कि महदी माहूद का तेरहवीं सदी में पैदा हो जाना आवश्यक है ताकि चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट हो सके। अतः इसी आधार पर और इसके अतिरिक्त कई अन्य संकेतों की दृष्टि से भी नवाब सिद्दीक़ हसन खां सतहि (स्वर्गीय) अपनी पुस्तक हुजजुल किरामः में लिखते हैं कि

मैं सुदृढ़ संकेतों की दृष्टि से गुमान करता हूं कि चौदहवीं सदी के सर पर महदी माहूद का प्रादुर्भाव होगा और उन संकेतों में से एक यह है कि तेरहवीं सदी

★हाशिया :- यदि किसी निर्बल या अंधे के कपड़े पर कोई गन्दगी लग जाए या वह व्यक्ति स्वयं कीचड़ में फंस जाए तो हमारी मानवीय सहानुभूति की यह मांग नहीं हो सकती कि उन घृणित सामानों के कारण उस निर्बल या अंधे को क़त्ल कर दें बल्कि हमारी दया (रहम) की यह मांग होनी चाहिए कि हम स्वयं उठकर प्रेमपूर्वक उस कीचड़ से उस असहाय के पैर बाहर निकालें और कपड़े को धो दें। (इसी से)

में बहुत से दज्जाली फ़ित्ने प्रकटन में आ गए हैं। अब देखो कि इस प्रसिद्ध मौलवी ने जो बहुत सी पुस्तकों का लेखक भी है कैसी साफ गवाही दे दी कि चौदहवीं सदी ही महदी और मसीह के प्रकट होने का समय है और केवल इसी पर बस नहीं की बल्कि अपनी पुस्तक में अपनी सन्तान को वसीयत भी करता है कि यदि मैं मसीह मौऊद का युग न पाऊं तो तुम मेरी ओर से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अस्सलाम अलैकुम मसीह मौऊद को पहुंचा दो।★ परन्तु अफ़सोस कि ये सारी बातें केवल ज़बान से थी और दिल इन्कार से ख़ाली न था। यदि वह मेरे मसीह मौऊद होने के दावे का युग पाते तो प्रत्यक्ष संकेतों से यही मालूम होता है कि वह भी अपने अन्य उलेमा भाइयों के लानत, कटाक्ष, झुठलाना और दुराचारों में भागीदार हो जाते। क्या इन मौलवियों ने चौदहवीं सदी के आने पर कुछ विचार भी किया? कुछ ख़ुदा का भय और संयम से भी काम लिया? कौन सा प्रहार है जो नहीं किया और कौन सा झुठलाना तथा अपमान है जो उन से प्रकटन में नहीं आया और कौन सी गाली है जिस से ज़बान को रोक रखा। असल बात यह है कि जब तक किसी दिल को ख़ुदा न खोले खुल नहीं सकता और जब तक वह कृपालु सर्वशक्तिमान स्वयं अपने फ़ज़्ल (कृपा) से अंतः दृष्टि प्रदान न करे तब तक कोई आंख देख नहीं सकती, और फिर चौदहवीं सदी के संबंध में यह है कि एक बुज़ुर्ग ने लम्बे समय से एक शेर अपने कश्फ़ के संबंध में प्रकाशित किया हुआ है जिसको लाखों लोग जानते हैं। उस कश्फ़ में भी यही लिखा है कि महदी माहूद अर्थात् मसीह मौऊद चौदहवीं

★**हाशिया :-** आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो मसीह मौऊद को अस्सलाम अलैकुम पहुंचाया यह वास्तव में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से एक भविष्यवाणी यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे ख़ुशख़बरी देते हैं कि विरोधियों की ओर से जितने फ़ित्ने उठेंगे और काफ़िर एवं दज्जाल कहेंगे तथा सम्मान और प्राण लेने का इरादा करेंगे और क़त्ल के लिए फ़त्वे लिखेंगे, ख़ुदा इन सब बातों में उनको असफल रखेगा और तुम्हारे साथ सलामती रहेगी तथा हमेशा के लिए सम्मान और प्रतिष्ठा और मान्यता तथा प्रत्येक असफलता से सलामती (सुरक्षा) सम्पूर्ण संसार में सुरक्षित रहेगी, जैसा कि अस्सलाम अलैकुम का अर्थ है। इसी से

सदी के सर पर प्रकट होगा। और वह शेर यह है-

दर सन् ग़ाशी हिज्री दो क़िरां ख्वाहिद बुवद
अज़ पए महदी-व-दज्जाल निशां ख़्वाहिद बुवद

इस शेर का अनुवाद यह है कि जब चौदहवीं सदी में से ग्यारह वर्ष गुज़रेंगे तो आसमान पर ख़ुसूफ-कुसूफ चन्द्रमा और सूर्य का ग्रहण होगा और वह महदी और दज्जाल के प्रकट होने का निशान होगा। लेखक ने इस शेर में दज्जाल के मुकाबले पर मसीह नहीं लिखा बल्कि महदी लिखा। इस में यह संकेत है कि महदी और मसीह दोनों एक ही हैं। अब देखो कि यह भविष्यवाणी कितनी सफाई से पूरी हो गयी और मेरे दावे के समय रमज़ान के महीने में इसी से अर्थात् चौदहवीं सदी 1311 में चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण हो गया فالحمد لِلّٰہِ علٰی ذلک ऐसा ही दार-ए-क़ुत्नी की एक हदीस भी इस बात को सिद्ध करती है कि महदी माहूद चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट होगा। वह हदीस यह है- اِنَّ لِمَهْدِيِّنَا اٰيَتَيْنِ الخ अनुवाद पूरी हदीस का यह है कि हमारे महदी के लिए दो निशान हैं जब से पृथ्वी-व-आसमान की नींव डाली गई वे निशान किसी मामूर, रसूल और नबी के लिए प्रकटन में नहीं आए और वे निशान ये हैं कि चन्द्रमा का अपनी निर्धारित रातों में से पहली रात में और सूर्य का अपने निर्धारित दिनों में से बीच के दिन में रमज़ान के महीने में ग्रहण होगा अर्थात् उन्हीं दिनों में जबकि महदी अपना दावा संसार के सामने प्रस्तुत करेगा और संसार उसे स्वीकार नहीं करेगा। आसमान पर उसके सत्यापन के लिए एक निशान प्रकट होगा। और वह यह कि निर्धारित तिथियों में जैसा कि कथित हदीस में दर्ज है सूर्य एवं चन्द्रमा का रमज़ान के महीने में जो ख़ुदा के कलाम के उतरने का महीना है ग्रहण होगा और अंधकार दिखलाने से ख़ुदा तआला की ओर से यह संकेत होगा कि पृथ्वी पर अन्याय किया गया और जो ख़ुदा की ओर से था उसे झूठ गढ़ने वाला समझा गया। अब इस हदीस से स्पष्ट तौर पर चौदहवीं सदी निर्धारित होती है क्योंकि चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण जो महदी का युग बताता है और झुठलाने वालों के सामने निशान प्रस्तुत करता है वह चौदहवीं सदी में ही हुआ है। अब इस से साफ़ और स्पष्ट तर्क कौन सा होगा कि चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण के

युग को महदी-ए-माहूद का युग हदीस ने निर्धारित किया है, और यह बात देखी हुई और महसूस की हुई है कि ये चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण चौदहवीं सदी हिज्री में ही हुआ और इसी सदी में महदी होने के दावेदार को बहुत झुठलाया गया। अत: इन अटल और निश्चित भूमिकाओं से यह अटल और निश्चित परिणाम निकला कि महदी माहूद का युग चौदहवीं सदी है और इस से इन्कार करना देखी, महसूस की हुई व्यापक बातों का इन्कार है। हमारे विरोधी इस बात को तो मानते हैं कि चन्द्रमा और सूर्य का ग्रहण रमज़ान में हो गया और चौदहवीं सदी में हुआ, किन्तु अत्यन्त अन्याय और सत्य को छिपाने के लिए तीन बहाने प्रस्तुत करते हैं। दर्शक स्वयं सोच लें कि क्या ये बहाने सही हैं?

(1) प्रथम यह बहाना है कि इस हदीस के कुछ रिवायत करने वाले विश्वस्त लोगों में से नहीं हैं। इसका उत्तर यह है कि यदि वास्तव में कुछ रिवायत करने वाले विश्वसनीयता को दृष्टि से गिरे हुए हैं तो यह ऐतराज़ 'दारे क़ुत्नी' पर होगा कि उसने ऐसी हदीस को लिख कर मुसलमानों को क्यों धोखा दिया? अर्थात् यदि यह हदीस विश्वसनीय नहीं थी तो दारे क़ुत्नी ने अपनी सही में उसे क्यों लिखा? हालांकि वह इस श्रेणी का व्यक्ति है कि सही बुख़ारी का भी पीछा करता है और उसकी समीक्षा में किसी को आपत्ति नहीं और उसकी किताब को हज़ार वर्ष से अधिक गुज़र गया परन्तु अब तक किसी विद्वान ने उस हदीस को बहस के अन्तर्गत ला कर उसे बनावटी नहीं ठहराया, न यह कहा कि इसके सबूत के समर्थन में किसी दूसरे ढंग से सहायता नहीं मिली, बल्कि उस समय से कि यह किताब इस्लामी देशों में प्रकाशित हुई समस्त पहले लोगों और उनके बाद के लोगों के उलेमा, विद्वजनों में से इस हदीस को अपनी पुस्तकों में लिखते चले आए हैं। यदि किसी ने सबसे बड़े मुहद्दिसों (हदीसविदों) में से इस हदीस को बनावटी ठहराया है तो उनमें से किसी मुहद्दिस का कार्य या कथन प्रस्तुत तो करो जिसमें लिखा है कि यह हदीस बनावटी है। यदि किसी अत्यन्त सम्माननीय मुहद्दिस की किताब से इस हदीस को बनावटी होना सिद्ध कर सके तो हम तुरन्त एक सौ रुपया बतौर इनाम तुम्हें भेंट करेंगे। जिस स्थान पर चाहो अमानत के तौर पर पहले जमा करा लो।

अन्यथा ख़ुदा से डरो जो मुझ से बैर के लिए सही हदीसों को जो रब्बानी उलेमा ने लिखी हैं बनावटी ठहराते हो। हालांकि इमाम बुख़ारी ने तो कुछ राफ़िज़ियों✷ और ख़वारिज✷ से भी रिवायत ली है। उन समस्त हदीसों को क्यों सही जानते हो? अत: दर्शकों के लिए यह फैसला खुला-खुला है कि यदि कोई व्यक्ति इस हदीस को बनावटी ठहरा देता है तो वह बड़े मुहद्दिसों की गवाही से सबूत प्रस्तुत करे। हम निश्चित तौर पर वादा करते हैं कि हम उसको एक सौ रुपया बतौर इनाम दे देंगे। चाहे यह रुपया भी मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब के पास अपनी सन्तुष्टि के लिए उपरोक्त शर्तों के साथ जमा करा लो। और यदि यह हदीस बनावटी नहीं और झूठ गढ़ने के इल्ज़ाम से उसका दामन पवित्र है तो संयम और ईमानदारी की मांग यही होनी चाहिए कि उसको स्वीकार कर लो। मुहद्दिसों का हरगिज़ यह नियम नहीं है कि किसी रिवायत करने वाले के संबंध में छोटी जिरह से भी हदीस को तुरन्त बनावटी ठहरा दिया जाए। भला जिन हदीसों की दृष्टि से ख़ूनी महदी को माना जाता है वि किस स्तर की हैं? क्या उनके समस्त रिवायत करने वाले जिरह से ख़ाली हैं? अपितु जैसा कि इब्ने ख़ल्दून ने लिखी हैं समस्त अहले हदीस जानते हैं कि महदी की हदीसों में से एक हदीस भी जिरह से ख़ाली नहीं फिर उन महदी की हदीसों को ऐसा स्वीकार कर लेना कि जैसे उनका इन्कार कुफ्र है। हालांकि वे सब की सब जिरह से भरी हुई हैं, और एक ऐसी हदीस से इन्कार करना जो अन्य तरीकों से भी सिद्ध है और जो स्वयं क़ुर्आन आयत-جُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ (अलक़ियामत - 10) में उस के विषय का सत्यापनकर्ता है, क्या यही ईमानदारी है? हदीसों को एकत्र करने वाले हर एक जिरह से हदीस को फेंक नहीं देते थे, अन्यथा उनके लिए कठिन हो जाता कि इस अनिवार्यता से समस्त खबरों और आसार को

✷**राफ़िज़ी-** छोड़ने वाला, वह गिरोह जो अपने सरदार को छोड़ दे। ज़ैदबिन अली बिन हुसैन, जिन्होंने आप का साथ छोड़ दिया था। (अनुवादक)

✷**ख़वारिज-** मुसलमानों का वह फ़िर्क़ा (समुदाय) जो सफ़्फ़ैन के युद्ध के अवसर पर हज़रत अली[रज़ि॰] का इस कारण विरोधी हो गया था कि उन्होंने अमीर मुआविया से युद्ध करने की बजाए मध्यस्था (सालिसी) स्वीकार कर ली थी। (अनुवादक)

एकत्र कर सकते। ये बातें सब को मालूम हैं परन्तु अब कंजूसी जोश मार रही है, इसके अतिरिक्त जबकि उस हदीस का विषय ग़ैब (परोक्ष) की सूचना पर आधारित है पूरा हो गया तो इस पवित्र आयत के अनुसार

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (अलजिन्न - 27,28)

अटल और निश्चित तौर पर मानना पड़ा कि यह हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की है और इसका रिवायत करने वाला भी महान इमामों में से है अर्थात् इमाम मुहम्मद बाक़िर रज़ियल्लाहु अन्हु। अत: अब पवित्र क़ुर्आन की गवाही के बाद जो आयत

(अलजिन्न - 27,28) فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا

से इस हदीस के रसूल की ओर से होने पर मिल गई है। फिर भी इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस न समझना क्या यह ईमानदारी का ढंग है? और क्या आप लोगों के नज़दीक इस उच्च श्रेणी की भविष्यवाणी पर ख़ुदा के रसूलों के अतिरिक्त कोई और भी सामर्थ्वान हो सकता है? और यदि नहीं हो सकता तो क्यों इस बात का इक़रार नहीं करते कि क़ुर्आनी गवाही की दृष्टि से यह हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है★। और यदि आप लोगों के नज़दीक ऐसी भविष्यवाणी पर कोई अन्य भी सामर्थ्यवान हो सकता है, तो फिर आप उसका उदाहरण प्रस्तुत करें जिस से सिद्ध हो कि किसी

★हाशिया :-याद रखना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन की गवाही चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण की हदीस के सही होने के बारे में केवल एक गवाही नहीं है बल्कि दो गवाहियां हैं। एक तो यह आयत कि جُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ (अलक़ियामत - 10) जो भविष्यवाणी के तौर पर बता रही है कि क़यामत (प्रलय) के निकट जो अन्तिम युग के महदी के प्रकटन का समय है चन्द्र एवं सूर्य का एक ही महीने में ग्रहण होगा और दूसरी गवाही इस हदीस के सही और मर्फ़ूअ, मुत्तसिल होने पर आयत-

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (अलजिन्न - 27,28)

में हैं, क्योंकि यह आयत "सही और साफ ग़ैब के ज्ञान का रसूलों पर अवलम्बन (निर्भरता) करती है जिससे आवश्यक तौर पर निर्धारित होता है कि اِنَّ لِمَهْدِيِّنَا की हदीस असंदिग्ध तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है। इसी से

झूठ गढ़ने वाले या रसूल के अतिरिक्त किसी अन्य ने कभी यह भविष्यवाणी की हो कि एक युग आता है जिसमें अमुक महीने में चन्द्रमा और सूर्य का ग्रहण होगा और अमुक-अमुक तिथियों में होगा और यह निशान ख़ुदा के किसी मामूर के सत्यपान के लिए होगा, जिसको झुठलाया गया होगा। और इस प्रकार का निशान आरंभ से अन्त तक कभी संसार में प्रकट नहीं हुआ होगा। मैं दावे के साथ कहता हूं कि आप इसका उदाहरण हरगिज़ प्रस्तुत नहीं कर सकेंगे। वास्तव में आदम से लेकर इस समय तक कभी इस प्रकार की भविष्यवाणी किसी ने नहीं की। और यह भविष्यवाणी चार पहलू रखती है-

(1) अर्थात् चन्द्र ग्रहण उसकी निर्धारित रातों में से पहली रात में होना।

(2) सूर्य-ग्रहण उसके निर्धारित दिनों में बीच के दिन में होना।

(3) रमज़ान का महीना होना।

(4) दावेदार का मौजूद होना, जिसको झुठलाया गया हो। अतः यदि इस भविष्यवाणी की श्रेष्ठता का इन्कार है तो संसार के इतिहास में से इसका उदाहरण प्रस्तुत करो और जब तक उदाहरण न मिल सके तब तक यह भविष्यवाणी उन समस्त भविष्यवाणियों से प्रथम श्रेणी पर है जिन के संबंध में आयत-

فَلَا يُظۡهِرُ عَلٰی غَیۡبِہٖۤ اَحَدًا (अल जिन्न - 27)

का विषय चरितार्थ हो सकता है, क्योंकि इसमें वर्णन किया गया है कि आदम से अन्त तक इस का उदाहरण नहीं। फिर जबकि एक हदीस दूसरी हदीस से शक्ति पाकर विश्वास की सीमा तक पहुंच जाती है तो जिस हदीस ने ख़ुदा तआला के कलाम से शक्ति पाई है उसके संबंध में यह जीभ पर लाना कि वह बनावटी और बहिष्कृत है, उन्हीं लोगों का कार्य है जिन को ख़ुदा तआला का भय नहीं है। यद्यपि प्रचुरता और अत्यधिक प्रसिद्धि के कारण इस हदीस का आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक रफ़ा नहीं किया गया और न इसकी आवश्यकता समझी गई। परन्तु ख़ुदा ने अपनी दो गवाहियों से अर्थात् आयत لا يظهر الخ और आयत جُمِعَ الشَّمۡسُ وَ الۡقَمَرُ (अलक़यामः - 10) से स्वयं इस हदीस को मर्फ़ूअ मुत्तसिल बना दिया। अतः निस्सन्देह क़ुर्आन

की गवाही से अब यह हदीस मर्फ़ूअ मुत्तसिल है। क्योंकि क़ुर्आन ऐसी समस्त भविष्यवाणियों का जो बड़ी सफाई से पूरी हो जाएं इस इल्ज़ाम से बरी करता है कि ख़ुदा के रसूल के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति उनका वर्णन करने वाला है। नऊज़ुबिल्लाह यह ख़ुदा के कलाम को झुठलाना है कि वह तो स्पष्ट शब्दों में वर्णन करे परन्तु उसके विरुद्ध कोई अन्य यह दावा करे कि ऐसी भविष्यवाणियां कोई अन्य भी कर सकता है जिस पर ख़ुदा की ओर से वह्यी नहीं उतरी और इस प्रकार से आयत لَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا को झुठला दे। अतएव जब कि इन समस्त तरीकों से इस हदीस का सही होना सिद्ध हो गया और इसके अतिरिक्त भविष्यवाणी अपने पूरे ढंग से घटित हो गई। अत: हे ख़ुदा से डरने वालो! अब मुझे कहने दो कि ऐसी हदीस से इन्कार करना जो ग्यारह सौ वर्ष से उलेमा और विशिष्ट एवं सामान्य जन में प्रकाशित हो रही है और इमाम मुहम्मद बाक़िर उस के रावी (रिवायत करने वाला) हैं और तेरह सौ वर्ष से अर्थात् आरंभ से आज तक किसी ने उस को बनावटी नहीं ठहराया और न दार-ए-क़ुत्नी ने उसके कमज़ोर होने की ओर संकेत किया तथा क़ुर्आन आयत

جُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ (अलक़यामः - 10)

में इस का सत्यापन करने वाला है अर्थात् उसी सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण की ओर यह आयत भी संकेत करती है और क़ुर्आन साफ और स्पष्ट शब्दों में कहता है कि किसी भविष्यवाणी पर जो साफ और स्पष्ट और विलक्षण तौर पर पूरी हो गयी हो ख़ुदा के रसूल के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति समर्थ नहीं हो सकता। ऐसा इन्कार जो शत्रुता से किया जाए हरगिज़ किसी ईमानदार का काम नहीं।

विरोधियों का दूसरा आरोप यह है कि यह भविष्यवाणी अपने शब्दों के अर्थ के अनुसार पूरी नहीं हुई क्योंकि चन्द्र-ग्रहण रमज़ान की पहली रात में नहीं हुआ बल्कि 28 तारीख़ को हुआ। इसका उत्तर यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस ग्रहण के लिए कोई नया नियम अपनी ओर से नहीं बनाया बल्कि उसी प्रकृति के नियम के अन्दर-अन्दर ग्रहण की तारीख़ों की सूचना दी है जो ख़ुदा ने आरंभ से सूर्य एवं चन्द्रमा के लिए निर्धारित कर रखा है और स्पष्ट

शब्दों में बता दिया है कि सूर्य-ग्रहण उसके (निर्धारित) दिनों में से बीच के दिन में होगा, और चन्द्र-ग्रहण उसकी पहली रात में होगा। अर्थात् उन तीन रातों में से जो ख़ुदा ने चन्द्र ग्रहण के लिए निर्धारित की हैं। पहली रात में चन्द्र ग्रहण होगा अत: ऐसा ही घटित हुआ, क्योंकि चन्द्रमा की तेरहवीं रात में जो चन्द्रमा के ग्रहण की रातों में से पहली रात है ग्रहण लग गया और हदीस के अनुसार लगा, अन्यथा महीने की पहली रात में चन्द्र-ग्रहण होना ऐसा ही व्यापक तौर पर असंभव है जिस में किसी को आपत्ति नहीं। कारण यह कि अरबी भाषा में चन्द्रमा को इसी स्थिति में क़मर कह सकते हैं जबकि चन्द्रमा तीन दिन से अधिक का हो और तीन दिन तक उसका नाम हिलाल है न कि क़मर। और कुछ के नज़दीक सात दिन तक हिलाल ही कहते हैं। अत: क़मर के शब्द में 'लिसानुल अरब' (शब्द कोश का नाम है) इत्यादि में यह इबारत है

هو بعد ثلاث ليالٍ إلىٰ اخر الشهر

अर्थात् चन्द्रमा पर क़मर के शब्द का बोला जाना तीन रात के बाद होता है। फिर जबकि पहली रात में जो चन्द्रमा निकलता है वह क़मर नहीं है और न क़मर नाम रखने का कारण अर्थात् उसमें अधिक सफेदी और प्रकाश मौजूद है तो फिर ये मायने क्योंकर सही होंगे कि पहली रात में क़मर को ग्रहण लगेगा। यह तो ऐसा ही उदाहरण है जैसे कोई कहे कि अमुक जवान औरत पहली रात में ही गर्भवती हो जाएगी और इस पर कोई मौलवी साहिब हठ करके ये मायने बता दें कि पहली रात से अभिप्राय वह रात है जिस रात वह लड़की पैदा हुई थी, तो क्या ये मायने सही होंगे? और क्या उनकी सेवा में कोई नहीं कहेगा कि हज़रत पहली रात में तो वह जवान औरत नहीं कहलाती बल्कि उसे सबिय्य: या बच्चा कहेंगे फिर उसकी ओर गर्भ सम्बद्ध करना क्या मायने रखता है? और इस स्थान पर एक बुद्धिमान यही समझेगा कि पहली रात से अभिप्राय सुहाग रात है जबकि पहली बार ही कोई औरत अपने पति के पास जाए। अब बताओ कि इस वाक्य में यदि कोई इस प्रकार के अर्थ करे तो क्या वे अर्थ आप के नज़दीक सही हैं? इस आधार पर कि ख़ुदा प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान है और क्या आप

ऐसा सोचेंगे कि वह जवान औरत पैदा होते ही अपने जन्म की पहली रात में ही गर्भवती हो जाएगी। हे सज्जनो! ख़ुदा से डरो जब कि हदीस में क़मर का शब्द मौजूद है और सर्वसहमति से से क़मर उसको कहते हैं जो तीन दिन के बाद या सात दिन के बाद का चन्द्रमा होता है तो अब 'हिलाल' को क़मर कैसे कहा जाए। अन्याय की भी तो कोई सीमा होती है। फिर स्पष्ट है कि जब क़मर के ग्रहण के लिए तीन रातें ख़ुदा के प्रकृति के नियम में मौजूद हैं और पहली रात चन्द्र-ग्रहण के लिए ख़ुदा के प्रकृति के नियम में तीन दिन हैं और बीच का दिन सूर्य-ग्रहण के दिनों में से महीने की अट्ठाईसवीं तारीख है। तो ये मायने कैसे स्पष्ट और सीधे, शीघ्र समझ आने वाले, और प्रकृति के नियम पर आधारित हैं कि महदी के प्रकट होने की यह निशानी होगी कि चन्द्रमा को अपने ग्रहण की निर्धारित रातों में से जो उसके लिए ख़ुदा ने आरंभ से निर्धारित कर रखी हैं पहली रात में ग्रहण लग जाएगा अर्थात् महीने की तेरहवीं रात जो ग्रहण की निर्धारित रातों में से पहली रात है। इसी प्रकार सूर्य को अपने ग्रहण के निर्धारित दिनों में से बीच के दिन में ग्रहण लगेगा। अर्थात् महीने की अट्ठाईसवीं तारीख को जो सूर्य-ग्रहण का हमेशा बीच का दिन है। क्योंकि ख़ुदा के प्रकृति के नियम की दृष्टि से हमेशा चन्द्र-ग्रहण तीन रातों में से किसी रात में होता है। अर्थात् 13,14,15 इसी प्रकार सूर्य-ग्रहण उसके तीन निर्धारित दिनों में से कभी बाहर नहीं जाता अर्थात् महीने का 27, 28, 29। अत: चन्द्र-ग्रहण का पहला दिन हमेशा तेरहवीं तारीख समझा जाता है और सूर्य-ग्रहण का बीच का दिन हमेशा महीने की 28 तारीख। बुद्धिमान जानता है। अब ऐसी स्पष्ट भविष्यवाणी में बहस करना और यह कहना कि क़मर का ग्रहण महीने की पहली रात में होना चाहिए था। अर्थात् जब आसमान के किनारे पर हिलाल प्रकट होता है यह कितना अन्याय है। कहां हैं रोने वाले जो इस प्रकार की अक्लों पर रोवें। यह भी नहीं सोचते कि पहली तारीख का चन्द्रमा जिसको हिलाल कहते हैं वह तो स्वयं ही कठिनाई से दिखाई देता है। इसी कारण से ईदों पर सदैव झगड़े होते हैं। अत: उस ग़रीब, बेचारे का ग्रहण क्या होगा। क्या पिद्दी और क्या

पिद्दी का शोरबा।★

तीसरा आरोप इस निशान को मिटाने के लिए यह प्रस्तुत किया गया है कि क्या संभव नहीं कि चन्द्र और सूर्य-ग्रहण तो अब रमज़ान में हो गया हो परन्तु जिसकी सहायता और पहचान के लिए चन्द्र और सूर्य-ग्रहण हुआ है वह पन्द्रहवीं सदी में पैदा हो। या सोलहवीं सदी में या उसके बाद किसी अन्य सदी में। इसका उत्तर यह है कि हे बुज़ुर्गो! ख़ुदा ही तुम पर दया करे जबकि आप लोगों की समझ की नौबत यहां तक पहुंच गयी है तो मेरे अधिकार में नहीं कि मैं कुछ समझा सकूं। स्पष्ट है कि ख़ुदा के निशान उसके रसूलों और मामूरों की तस्दीक़ (सत्यापन) और पहचान के लिए होते हैं और ऐसे समय में होते हैं जबकि उनको अत्यधिक झुठलाया जाता है तथा उनको झूठ गढ़ने वाला, काफ़िर और पापी ठहराया जाता है। तब ख़ुदा का स्वाभिमान (ग़ैरत) उनके लिए जोश मारता है और वह चाहता है कि अपने निशानों से सच्चे को सच्चा करके दिखा दे। अतएव हमेशा आसमानी निशानों के लिए एक प्रेरक (मुहर्रिक) की आवश्यकता होती है। और जो लोग बार-बार झुठलाते हैं वही प्रेरक होते हैं। निशानों की यही

★हाशिया :- याद रहे कि किसी हदीस की सच्चाई पर इस से अधिक कोई निश्चित और अटल गवाही नहीं हो सकती कि यदि वह हदीस किसी भविष्यवाणी पर आधारित है तो वह भविष्यवाणी बड़ी सफाई से पूरी हो जाए। क्योंकि अन्य सब तरीके हदीस के सही होने को सिद्ध करने के लिए काल्पनिक हैं परन्तु यह हदीस का एक चमकता हुआ आभूषण है कि उसकी सच्चाई का प्रकाश भविष्यवाणी के पूरा होने से प्रकट हो जाए। क्योंकि किसी हदीस की भविष्यवाणी का पूरा हो जाना उस हदीस को कल्पना की श्रेणी से विश्वास की उच्च श्रेणी तक निश्चित मर्तबे में एक समान कोई हदीस नहीं हो सकती चाहे बुख़ारी की हो या मुस्लिम की। और ऐसी हदीस के अस्नाद (प्रमाणों) में यद्यपि कष्ट कल्पना के तौर पर हज़ार झूठा और झूठ गढ़ने वाला हो उसके सही होने की शक्ति और विश्वास की श्रेणी को कुछ भी हानि नहीं पहुंचा सकता, क्योंकि महसूस किए, देखे हुए, व्यापक माध्यमों से उसका सही होना स्पष्ट हो जाता है और ऐसी पुस्तक की यह बात गर्व हो जाती है और उसके सही होने पर एक तर्क स्थापित हो जाता है जिसमें ऐसी हदीस हो। अत: दार-ए-क़ुत्नी का गर्व है जिसकी हदीस ऐसी सफाई से पूरी हो गयी। (इसी से)

फिलास्फ़ी (दार्शनिकता) है। यह कभी नहीं होता कि निशान तो आज प्रकट हो और जिसकी तस्दीक (सत्यापन) और उसके विरोधियों की रोक थाम और हटाने के लिए वह निशान है। वह कहीं सौ, दो सौ, या तीन सौ अथवा हज़ार वर्ष के बाद पैदा हो और स्वयं स्पष्ट है कि ऐसे निशानों से उसके दावे को क्या सहायता पहुंचेगी बल्कि संभव है कि उस समय तक उस निशान पर दृष्टि रख कर कई दावेदार पैदा हो जाएं। अत: अब कौन फैसला करेगा कि किस दावेदार के समर्थन में यह निशान प्रकट हुआ था। आश्चर्य है कि दावेदार का तो अभी अस्तित्व भी नहीं और न उसके दावे का अस्तित्व है और न ख़ुदा की दृष्टि में झुठलाने वाला कोई प्रेरक मौजूद है बल्कि सौ या दो सौ या हज़ार वर्ष के बाद प्रतीक्षा है तो समय से पहले निशान क्या लाभ देगा और किस क़ौम के लिए होगा। क्योंकि वर्तमान युग के लोग ऐसे निशान से कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं कर सकते जिनके साथ दावेदार नहीं है और जबकि निशान को देखने वाले भी सब मिट्टी में मिल जाएंगे और पृथ्वी पर कोई जीवित नहीं होगा जो यह कह सके कि मैंने चन्द्रमा और सूर्य को अपनी आखों से ग्रहण लगते देखा तो ऐसे निशान से क्या लाभ होगा। जो जीवित दावेदार के युग के समय केवल एक मुर्दा क़िस्से के तौर पर प्रस्तुत किया जाएगा और ख़ुदा को ऐसी क्या जल्दी पड़ी थी कि कई सौ वर्ष पहले निशान प्रकट कर दिया और अभी दावेदार का नाम-व-निशान नहीं, न उसके बाप-दादे का कुछ नाम-व-निशान। यह भी याद रखो कि यह आस्था अहले सुन्नत और शिया की मान्यता प्राप्त है। कि महदी जब प्रकट होगा तो सदी के सर पर ही प्रकट होगा। अत: जब कि महदी के प्रादुर्भाव के लिए सदी के सर (आरंभ) की शर्त है। तो इस सदी में तो महदी के पैदा होने से हाथ धो रखना चाहिए। क्योंकि सदी का सर तो गुज़र गया और बात अब दूसरी सदी पर जा पड़ी और उसके बारे में कोई अटल फ़ैसला नहीं, क्योंकि जब चौदहवीं सदी जो हदीस-ए-नब्वी का चरितार्थ थी तथा अहले कश्फ़ के कश्फ़ों से लदी हुई थी ख़ाली गुज़र गयी तो पन्द्रहवीं सदी पर क्या विश्वास रहा। फिर जबकि आने वाले महदी के प्रकट होने के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते और कम से कम बात सौ

वर्ष पर जा पड़ी तो इस व्यर्थ निशान चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण से लाभ क्या हुआ? जब इस सदी के सब लोग मर जाएंगे और कोई चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण का देखने वाला जीवित न रहेगा तो उस समय तो यह चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण का निशान केवल एक क़िस्से के रूप में हो जाएगा और संभव है कि उस समय आदरणीय उलेमा उसको एक बनावटी हदीस के तौर पर समझ कर दफ्तर में दाख़िल कर दें। अतएव यदि महदी और उसके निशान में पृथकता डाल दी जाए तो यह एक घृणित अपशकुन है, जिस से यह समझा जाता है कि ख़ुदा तआला का हरगिज़ इरादा ही नहीं है कि उसकी महदवियत (महदी होने) को आसमानी निशानों द्वारा सिद्ध करे फिर जबकि सदैव से ख़ुदा की सुन्नत यही है कि निशान उस समय प्रकट होते हैं जब ख़ुदा के लोगों को झुठलाया जाता है और उनको झूठ गढ़ने वाला समझा जाता है। अत: यह विचित्र बात है कि मुद्दई तो अभी प्रकट नहीं हुआ और न उसे झुठलाया गया, परन्तु निशान पहले से ही प्रकट हो गया, और जब दो-तीन सौ वर्ष के बाद कोई पैदा होगा और झुठलाया जाएगा तब यह बासी क़िस्सा किस काम आ सकता है, क्योंकि ख़बर निरीक्षण के बराबर नहीं हो सकती और न ऐसे दावेदार के बारे में निश्चित कर सकते हैं कि वास्तव में अमुक सदी में चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण उसी के सत्यापन के लिए हुआ था। ख़ुदा की हरगिज़ यह आदत नहीं कि दावेदार और उसके समर्थन वाले निशानों में इतनी लम्बी दूरी डाल दे जिस से बात संदिग्ध हो जाए। क्या ये कुछ शब्द सबूत का काम दे सकते हैं कि अमुक सदी में जो चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण हुआ था वह उस मुद्दई के समर्थन में हुआ था। यह अच्छा सबूत है जो स्वयं एक अन्य सबूत को चाहता है। अत: यह दार-ए-क़ुत्नी की हदीस मुसलमानों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। इसने एक तो निश्चित तौर पर महदी-ए-माहूद के लिए चौदहवीं सदी का युग निर्धारित कर दिया है और दूसरे उस महदी के समर्थन में उसने ऐसा आसमानी निशान प्रस्तुत किया है जिसके तेरह सौ वर्ष से समस्त अहले इस्लाम (मुसलमान) प्रतीक्षक थे। सच कहो कि आप लोगों की तबियतें चाहती थीं कि मेरे महदी होने के दावे के समय में आसमान पर रमज़ान के महीने में चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण हो जाए। इन

तेरह सौ वर्षों में बहुत लोगों ने महदी होने का दावा किया परन्तु किसी के लिए यह आसमानी निशान प्रकट न हुआ। बादशाहों को भी जिनको महदी बनने का शौक़ था यह शक्ति न हुई कि किसी बहाने से अपने लिए रमज़ान के महीने में चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण करा लेते। निस्सन्देह वे लोग करोड़ों रुपया देने को तैयार थे। यदि किसी की ख़ुदा तआला के अतिरिक्त शक्ति होती कि उनके दावे के दिनों में रमज़ान में चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण कर देता, मुझे उस ख़ुदा की कसम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि उसने मेरे सत्यापन के लिए आसमान पर यह निशान प्रकट किया है और उस समय प्रकट किया है जबकि मौलवियों ने मेरा नाम दज्जाल और कज़्ज़ाब (महा झूठा) तथा काफ़िर बल्कि सबसे बड़ा काफ़िर रखा था। यह वही निशान है जिस के बारे में आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में बतौर भविष्यवाणी वादा दिया गया था। और वह यह है-

قل عندی شھادۃ من اللہ فھل انتم مؤ منو ن

قل عندی شھادہ من اللہ فھل انتم مُسلِمُون

अर्थात् उन को कह दे कि मेरे पास ख़ुदा की एक गवाही है क्या तुम उसको मानोगे या नहीं फिर उनको कह दे कि मेरे पास ख़ुदा की एक गवाही है क्या तुम उसको स्वीकार करोगे या नहीं।

स्मरण रहे कि यद्यपि मेरे सत्यापन के लिए ख़ुदा तआला की ओर से बहुत गवाहियां हैं और एक सौ से अधिक वे भविष्यवाणियां है जो पूरी हो चुकीं, जिनके लाखों लोग गवाह हैं। परन्तु इस इल्हाम में उस भविष्यवाणी का वर्णन केवल विशिष्ट करने के लिए है, अर्थात् मुझे ऐसा निशान दिया गया है जो आदम से लेकर उस समय तक किसी को नहीं दिया गया। अत: मैं ख़ाना काबा में खड़े हो कर क़सम खा सकता हूं कि यह निशान मेरे सत्यापन के लिए है न किसी ऐसे व्यक्ति के सत्यापन के लिए जिस को अभी झुठलाया नहीं गया और जिस पर ये क़ाफिर ठहराने, झुठलाने और दूराचार का शोर नहीं पड़ा। इसी प्रकार मैं ख़ाना काबा में खड़े होकर शपथ उठा कर कह सकता हूं कि इस निशान से सदी का निर्धारण हो गया है। क्योंकि जब यह निशान चौदहवीं सदी में एक व्यक्ति

की तस्दीक (सत्यापन) के लिए प्रकट हुआ तो निर्धारण हो गया कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महदी के प्रादुर्भाव के लिए चौदहवीं सदी ही ठहरा दी थी। क्योंकि जिस सदी के सर पर यह भविष्यवाणी पूरी हुई, वही सदी महदी के प्रादुर्भाव के लिए माननी पड़ी ताकि दावे और सबूत में अलगाव और दूरी पैदा न हो। फिर इस बात पर एक और सबूत है जिस से स्पष्ट तौर पर समझा जाता है कि इस्लाम के उलेमा की निश्चित तौर पर यही आस्था थी कि मसीह मौऊद चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट होगा और वह यह है कि हाफ़िज़ बरख़ुरदार निवासी ग्राम चीटी शेखां, ज़िला सियालकोट में जिसकी पंजाब में बड़ी मान्यता है एक हिन्दी शेर है जिसमें साफ और स्पष्ट तौर पर इस बात का वर्णन है कि मसीह मौऊद चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट होगा और वह यह है-

पिच्छे इक हज़ार दे गुज़रे तिरे से साल
ईसा ज़ाहिर हो सिया करसी अदल कमाल।

इसका अनुवाद यह है कि जब सन् हिज्री से तेरह सौ वर्ष गुज़र जाएंगे तो चौदहवीं सदी के सर पर ईसा प्रकट हो जाएगा जो पूर्ण अदालत करेगा। अर्थात् दिखलाएगा कि सीधा रास्ता यह है। अब देखो कि हाफ़िज़ साहिब (स्वर्गीय) ने जो हदीस और फ़िक: के विद्वान हैं और सम्पूर्ण पंजाब में बड़ी ख्याति रखते हैं तथा पंजाब में अपने समय में प्रथम श्रेणी के धर्मशास्त्र के विद्वान (फ़क़ीह) माने गए हैं और लोग उनकी गणना वलियों में करते हैं तथा संयमी और सत्यवादी समझते हैं बल्कि उलेमा में वह एक विशेष सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। उन्होंने कितने स्पष्ट तौर पर कह दिया कि ईसा चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट होगा और इन्साफ़ करने वालों के लिए इस बात का पर्याप्त सबूत दे दिया है कि हदीस और उलेमा के कथनों से यही सिद्ध होता है कि मसीह मौऊद के प्रकटन होने का समय चौदहवीं सदी का सर है। देखो यह कैसी स्पष्ट गवाहियां हैं जिनको आप लोग स्वीकार नहीं करते। क्या संभव था कि हाफ़िज़ बरख़ुरदार साहिब अपनी इतनी प्रतिष्ठा और शान के बावजूद झूठ बोलते? और यदि झूठ बोलते और उस कथन का माख़ज़ हदीस सिद्ध न करते तो उम्मत के उलेमा क्यों उसका

पीछा करना छोड़ देते। फिर एक और प्रसिद्ध बुज़ुर्ग जो उसी युग में गुज़रे हैं जो कोठे वाले करके प्रसिद्ध हैं, उनके कुछ मुरीद (शिष्य) अब तक जीवित मौजूद हैं उन्होंने आम तौर पर वर्णन किया है कि कोठे वाले मियां साहिब ने एक बार कहा था कि महदी पैदा हो गया है और अब उसका युग है और हमारा युग जाता रहा और यह भी कहा कि उसकी भाषा पंजाबी है तब कहा गया कि आप नाम बता दें जिस नाम से वह व्यक्ति प्रसिद्ध है और स्थान से सूचित करें। उत्तर दिया कि मैं नाम नहीं बताऊंगा।★ अब जितना मैंने इस बात का सबूत दिया है वह व्यापक तौर पर इस बात का अटल सबूत है कि मसीह मौऊद का प्रादुर्भाव चौदहवीं सदी के सर पर होना आवश्यक था। चौथा मामला इस बात का सिद्ध करना है कि वह मसीह मौऊद जिसका आना चौदहवीं सदी के सर पर प्रारब्ध था वह मैं हूँ। अत: इस बात का सुबूत यह है कि मेरे ही दावे के समय में आसमान पर चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण हुआ है और मेरे ही दावे के समय में सलीबी फ़ित्ने (उपद्रव) पैदा हुए और मेरे ही हाथ पर ख़ुदा ने इस बात का सुबूत दिया है कि मसीह मौऊद इस उम्मत में से होना चाहिए और मुझे ख़ुदा ने अपनी ओर से शक्ति दी है कि मेरे मुकाबले पर मुबाहसे के समय कोई पादरी ठहर नहीं सकता और ईसाई उलेमा पर ख़ुदा ने मेरा ऐसा रोब डाल दिया है कि उनमें शक्ति नहीं रही कि मेरे मुकाबले पर आ सकें। चूँकि ख़ुदा ने मुझे रूहुल क़ुदुस से

★हाशिया :- इन रिवायत करने वालों में से एक साहिब मिर्ज़ा साहिब करके प्रसिद्ध हैं जिन का नाम मुहम्मद इस्माईल है और पेशावर मुहल्ला गुल बादशाह के रहने वाले हैं। भूतपूर्व इन्सपैक्टर मदरसों के थे। एक प्रतिष्ठित और विश्वसनीय आदमी हैं। मुझ से कोई बैअत का सबंध नहीं है। एक लम्बे समय तक मियां साहिब कोठे वाले की संगत में रहे हैं। उन्होंने मौलबी सय्यद सरवर शाह साहिब के पास वर्णन किया कि मैंने हज़रत कोठे वाले साहिब से सुना है कि वह कहते थे कि अन्तिम युग का महदी पैदा हो गया है। अभी उस का प्रकटन नहीं हुआ और जब पूछा गया कि नाम क्या है तो कहा कि नाम नहीं बताऊंगा, किन्तु इतना बताता हूं कि उसकी भाषा पंजाबी है।

दूसरे साहिब जो अपना बिना माध्यम के सीधे तौर पर सुनना वर्णन करते हैं, वह एक बुज़ुर्ग वृद्ध हज़रत कोठे वाले साहिब के बैअत करने वालों में से और उनके विशेष मित्रों

समर्थन प्रदान किया है और अपना फ़रिश्ता मेरे साथ किया है। इसलिए कोई पादरी मेरे मुकाबले पर आ ही नहीं सकता। ये वही लोग हैं जो कहते थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई चमत्कार नहीं हुआ, कोई

शेष हाशिया - में से हैं जिन का नाम हाफ़िज़ नूर मुहम्मद है, वह गढ़ी अमाज़ई गांव के रहने वाले हैं और इन दिनों में कोठे में रहा करते हैं।

और तीसरे साहिब जो बिना माध्यम के अपना सुनना वर्णन करते हैं। एक और बुज़ुर्ग वृद्ध सफेद बालों वाले हैं जिन का नाम गुलज़ार खां है। यह भी हज़रत कोठे वाले साहिब से बैअत करने वाले संयमी, ख़ुदा से डरने वाले, नर्म दिल और मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी के पीर भाई हैं और दोनों बुज़ुर्गों की आंखों देखी रिवायत मौलवी हकीम मुहम्मद यह्या साहिब दीपगिरानी के द्वारा मुझे पहुंची है। आदरणीय मौलवी साहिब एक विश्वस्त और संयमी आदमी हैं और हज़रत कोठे वाले साहिब के ख़लीफ़ा के सुपुत्र हैं। उन्होंने 23, मार्च 1900 ई० को मुझे एक पत्र लिखा था, जिसमें इन दोनों बुज़ुर्गों के बयान अपने कानों से सुन कर मुझे इस से अवगत किया है, ख़ुदा तआला उनको अच्छा प्रतिफल दे। आमीन और वह पत्र यह है-

"बख़िदमत शरीफ़ हज़रत इमामुज़्ज़मान अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू के बाद निवेदन है कि मैं मौज़ा काठा, इलाक़ा यूसुफ़ज़ई को गया था और चूंकि सुना हुआ था कि स्वर्गीय हज़रत साहिब कोठे वाले कहा करते थे कि अन्तिम युग का महदी पैदा हो गया है परन्तु प्रकटन अभी नहीं हुआ। अत: इस बात का मुझे बहुत ध्यान था कि इस मामले में छानबीन करूं कि वास्तविकता क्या है। मैं जब इस बार कोठा गया तो उनके मुरीदों में से कुछ शेष हैं। मैंने हर एक से पूछा। हर एक यही कहता था कि यह बात प्रसिद्ध है हम ने अमुक से सुना, अमुक आदमी ने यों कहा कि हज़रत साहिब यों कहते थे, दो विश्वस्त एवं धार्मिक लोगों ने इस प्रकार कहा कि हमने स्वयं अपने कानों से हज़रत की मुबारक ज़ुबान से सुना है और हम को अच्छी तरह याद है एक अक्षर भी नहीं भूला। अब मैं हर एक का बयान यथावत सेवा में वर्णन करता हूँ –

(1) – एक साहिब हाफ़िज़-ए-क़ुर्आन नूर मुहम्मद निवासी गढ़ी आमाज़ई हाल अस्थाई निवासी कोठा वर्णन करते हैं कि हज़रत (कोठे वाले) एक दिन वुज़ू कर रहे थे और मैं सामने बैठा था – कहने लगे कि **"हम अब किसी और के युग में हैं।"** मैं इस बात को न समझा और कहा कि क्यों हज़रत इतने वृद्ध हो गए हैं कि आपका युग चला गया। अभी आपके समान आयु वाले लोग बहुत स्वस्थ हैं, अपने सांसारिक कार्य करते हैं। कहने लगे कि तू मेरी बात को नहीं समझा मेरा मतलब तो कुछ और है। फिर कहने लगे कि जो बन्दा ख़ुदा

भविष्यवाणी प्रकटन में नहीं आई और अब बुलाये जाते हैं परन्तु नहीं आते। इसका यही कारण है कि उनके दिलों में ख़ुदा ने डाल दिया है कि इस व्यक्ति के मुकाबले पर हमें पराजय के अतिरिक्त और कुछ नहीं। देखो ऐसे समय कि जब

शेष हाशिया - की ओर से धर्म की तजदीद (नवीनीकरण) के लिए अवतरित होता है वह पैदा हो गया है। हमारी बारी चली गई। मैं इसलिए कहता हूं कि हम किसी अन्य के युग में हैं। फिर कहने लगे कि वह ऐसा होगा कि मुझे तो कुछ संबंध सृष्टि (मख़्लूक़) से भी है, उसका किसी के साथ संबंध न होगा और उस पर इतनी कठिनाइयाँ और संकट आएँगे जिनका पिछले युगों में उदाहरण न होगा, परन्तु उसे कुछ परवाह न होगी और हर प्रकार की खराबियां एवं कष्ट उस समय होंगे उसको परवाह न होगी। पृथ्वी और आकाश मिल जाएंगे और अस्त-व्यस्त हो जायंगे उसको परवाह न होगी। फिर मैंने कहा कि नाम-व-निशान या स्थान बताओ कहने लगे कि नहीं बताऊंगा। इति।

यह उसका बयान है। इसमें मैंने एक अक्षर नीचे ऊपर नहीं किया हाँ उसका बयान अफगानी है। यह उसका अनुवाद है। दूसरे साहिब जिनका नाम गुलज़ार खान है जो निवासी गाँव बड़ाबीर इलाका पेशावर हैं और वर्तमान में एक गाँव कोठा शरीफ़ के निकट रहते हैं और उस गाँव का नाम टोपी है। यह बुज़ुर्ग बहुत समय तक हज़रत साहिब की सेवा में रहे हैं। इन्होने क़सम खा कर कहा कि एक दिन हज़रत साहिब सार्वजनिक मज्लिस में बैठे हुए थे और उस समय तबियत बहुत प्रसन्न थी, कहने लगे कि मेरे कुछ परिचित अंतिम युग के महदी को अपनी आँखों से देखंगे (संकेत यह था कि इसी देश के निकट महदी होगा जिसे देख सकेंगे) और कहा कि उसकी बातें अपने कानों से सुनेंगे। इति।

उस बुज़ुर्ग को जब मैंने इस रहस्य से सूचित किया कि आपके हज़रत की यह भविष्यवाणी सच्ची निकली और ऐसा ही घटित हो गया है (अर्थात भविष्यवाणी के आशय के अनुसार महदी पंजाब में पैदा हो गया है) तो वह बुज़ुर्ग बहुत रोया और कहने लगा कि कहाँ है मुझे उसके क़दमों तक पहुँचाओ। मैं नज़र की कमज़ोरी के कारण जा नहीं सकता, क्या करूँ। फिर कहने लगा कि उनको मेरा सलाम पहुंचाना और दुआ कराना। फिर मैंने उस से वादा किया कि तुम्हारा सलाम अवश्य पहुंचा दूंगा और दुआ के लिए भी कहूँगा। मैं आशा करता हूँ कि उसके लिए अवश्य दुआ की जाएगी। वसल्लम खैरुलखातिम ख़ुदा की क़सम, ख़ुदा की क़सम कि इन दोनों व्यक्तियों ने इसी प्रकार गवाही दी है। मुहम्मद यह्या दीपगरां

ऐसा ही एक अन्य पत्र मौलवी हमीदुल्लाह साहिब मुल्ला स्वात की ओर से मुझे पहुंचा है जिसमें यही गवाही फ़ारसी भाषा में है जिसका अनुवाद नीचे लिखता हूँ :-

बख़िदमत शरीफ़ काशिफ़ रूमुज़े निहानी वाक़िफ़ उलूम-ए-रब्बानी जनाब मिर्ज़ा साहिब!

हज़रत मसीह को ख़ुदा बनाने पर बहुत अतिश्योक्ति की जाती थी और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रूहुल क़ुदुस के समर्थन से खाली समझते थे और चमत्कारों एवं भविष्यवाणियों से इनकार था। ऐसे समय में पादरियों के सामने

शेष हाशिया - निवेदन यह है कि मुहम्मद यह्या साहिब इख्वान ज़ादा (भतीजा) जो आप के पास आये हैं, उन से कई बार आप की चर्चा सुनी। अन्ततः एक दिन बातें करते-करते महदी और ईसा तथा मुजद्दिद की चर्चा बीच में आ गई तब मैंने उसी मामले पर चर्चा की कि एक दिन हमारे पीर हज़रत कोठे वाले कहते थे कि महदी मा'हूद पैदा हो गया है, परन्तु अभी प्रकट नहीं हुआ। इस बात को सुनकर फज़ीलत पनाह मौलवी मुहम्मद यह्या (भतीजा) इस बात पर आग्रह करने लगे कि इस बयान को ख़ुदा तआला की क़सम खा कर लिख दें। अतः मैं आयत के आदेशानुसार -

وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَإِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ (अल बक़रह - 284)

ख़ुदा तआला की क़सम खा कर लिखता हूँ कि हज़रत साहिब कोठे वाले अपने निधन से एक दो वर्ष पहले अर्थात् 1292 या 1293 हिजरी में अपने कुछ विशेष लोगों में बैठे हुए थे और हर एक अध्याय से मआरिफ और रहस्यों के बारे में वार्तालाप आरंभ था। अचानक महदी मा'हूद की चर्चा बीच में आ गई कहने लगे कि महदी मा'हूद पैदा हो गया है परन्तु अभी प्रकट नहीं हुआ है और क़सम ख़ुदा की कि यही उनके वाक्य थे। मैंने सच-सच वर्णन किया है न कि नफ़्स की इच्छा से और सच को व्यक्त करने के अतिरिक्त अन्य कोई उद्देश्य मध्य में नहीं। उनके ये शब्द अफग़ानी भाषा में निकले थे – "चे महदी पैदा शव्वे वै ऊ वक़्त व ज़हूर नद्दे" अर्थात महदी मौऊद पैदा हो गया है, किन्तु अभी प्रकट नहीं हुआ। इसके बाद कथित हज़रत साहिब ने सलख ज़िलहज्ज 1294 हिज्री में मृत्यु प्राप्त की।

ऐसा ही एक अन्य बुज़ुर्ग गुलाब शाह नमक गाँव जमालपुर – लुधियाना में हुए हैं जिन के विलक्षण निशान यहाँ बहुत प्रसिद्ध हैं उन्होंने कुछ लोगों के पास अपना एक कश्फ़ वर्णन किया, जिनमें से एक बुज़ुर्ग करीम बख्श नामक (ख़ुदा उन को अपनी रहमत में निमग्न करे) संयमी एक ख़ुदा को मानने वाले वयोवृद्ध सफ़ेद बालों वाले को मैंने देखा है।★और

★हाशिए का हाशिया - मियां करीम बख्श निवासी जमालपुर, ज़िला लुधियाना ने मिंया गुलाब शाह मज्जूब की इस भविष्यवाणी को बड़े-बड़े मुसलमानों के जल्से में वर्णन किया था। अतः एक बार लगभग सत सौ लोगों के जल्से में कादियान में वर्णन किया और मेरे विचार में उन्होंने ने लुधियाना में कम से कम हज़ार लोगों को इसकी सूचना दी होगी। मुझे कई माह तक लुधियाना में रहने का संयोग हुआ। मिंया करीम बख्श गाँव जमालपुर से कुछ दिन के बाद अवश्य आते थे और

कौन खड़ा हुआ? किस के समर्थन में ख़ुदा ने बड़े-बड़े चमत्कार दिखाए। किताब तिरयाक़ुलक़ुलूब को पढो और फिर इन्साफ से कहो कि यद्यपि सैकड़ों बातें किस्सों के रंग में वर्णन की जाती हैं परन्तु यह निशान और भविष्यवाणियाँ जो देखने की गवाही से सिद्ध है जिनके अपनी आँखों से देखने वाले अब तक लाखों लोग दुनिया में मौजूद हैं ये किस से प्रकटन में आए? कौन है जो प्रत्येक नई सुब्ह को विरोधियों को दोषी कर रहा है कि आओ यदि तुम में रूहुलक़ुदुस से कुछ शक्ति है तो मेरा मुक़ाबला करो? ईसाइयों और हिन्दुओं तथा आर्यों में से कौन है जो इस समय में मेरे सामने कहे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई निशान प्रकट नहीं हुआ? अत: यह ख़ुदा का समझाने का प्रयास है जो पूरा हुआ। सच्चाई से इन्कार करना ईमानदारी और ईमान का मार्ग नहीं है। निस्सन्देह हर एक क़ौम पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हो गई है। आसमान के नीचे अब कोई नहीं कि जो रूहुलक़ुदुस के समर्थन में मेरा मुक़ाबला कर सके। मैं इन्कार करने वालों को किस से समानता दूँ। वे उस मूर्ख से समानता रखते हैं

शेष हाशिया - उन्होंने बहुत अद्रिता (रिक्कत) के साथ आँखों में आंसू भरते हुए जलसों में मेरे सामने उस युग में जबकि चौदहवीं सदी में से अभी आठ वर्ष गुज़रे थे यह गवाही दी कि ख़ुदा में लीन (मज्ज़ूब) गुलाब शाह साहिब ने आज से तीस वर्ष पहले अर्थात उस युग में जबकि यह खाकसार लगभाग बीस वर्ष की आयु का था खबर दी थी कि ईसा जो आने वाला था वह पैदा हो गया है और वह कादियान में है। मियां करीम बख़्श साहिब का बयान है कि मैंने कहा कि हज़रत ईसा तो आसमान से उतरेंगे वह कहाँ पैदा हो गया? तब उसने उत्तर दिया कि जो आसमान पर बुलाये जाते हैं वे वापस नहीं आया करते उनको आसमानी बादशाहत मिल जाती है वे उसे छोड़कर वापस नहीं आते, बल्कि आने वाला ईसा क़ादियान में पैदा हुआ है, जब वह प्रकट होगा तब वह क़ुर्आन की गलतियाँ निकालेगा। मैं

शेष हाशिये का हाशिया - कभी पचास-पचास लोगों के सामने रो-रोकर यह भविष्यवाणी वर्णन करते थे और यह अनिवार्य बात थी कि वर्णन करने के समय बात के किसी न किसी स्थान पर उनके आंसू जारी हो जाते थे। मौलवी मुहम्मद अहसान साहिब रईस लुधियाना ने भी यह भविष्य-वाणी उनके मुंह से सुनी थी। लुधियाना में यह भविष्यवाणी बहुत ख्याति प्राप्त है और हज़ारों लोग गवाह हैं। (इसी से)

जिसके सामने जवाहरात का एक डिब्बा प्रस्तुत किया गया, जिसमें कुछ बड़े दाने और कुछ छोटे दाने थे और बहुत से उनमें से शुद्ध किए गए थे, परन्तु एक-दो दाने उत्तम प्रकार के तो थे किन्तु कभी जौहरी ने मूर्खों की परीक्षा के लिए उनको चमक नहीं दी थी। तब यह मूर्ख क्रोध में आया और सम्पूर्ण शुद्ध और चमकीले जवाहरात (रत्न) दामन से फेंक दिए इस विचार से कि एक- दो दाने उन रत्नों में से उसके नज़दीक बहुत चमकदार नहीं हैं। यही हाल उन लोगों का है कि ख़ुदा तआला की अधिकतर भविष्यवाणियां पूर्ण सफ़ाई से पूरी होने के बावजूद उन से कुछ लाभ नहीं उठाते जो सौ से भी कुछ अधिक हैं। परन्तु एक दो ऐसी भविष्यवाणियाँ जिन की वास्तविकता विवेक की कमी के कारण उनकी समझ में नहीं आई उनकी बार-बार चर्चा कर रहे हैं। प्रत्येक मज्लिस में उनको प्रस्तुत करते हैं। हे मुसलमानों की सन्तान! तुम्हें सच्चाई से बैर करना किसने सिखाया, जबकि तुम्हारी आँखों के सामने ख़ुदा ने वह अद्‌भुत काम प्रचुरता से दिखाए जिनका दिखाना मनुष्य की शक्ति में नहीं और जो तुम्हारे बाप-दादों ने नहीं देखे थे, तो क्या उन निशानों को भुला देना और दो-तीन भविष्यवाणियों के बारे में व्यर्थ नुक्त: चीनियां करना वैध था? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मेरी तस्दीक

शेष हाशिया - दिल में नाराज़ हुआ और कहा कि क्या क़ुर्आन में गलतियाँ हैं। तब उसने कहा कि तू मेरी बात नहीं समझा। क़ुर्आन के साथ झूठे हाशिये मिलाये गए हैं वह दूर कर देगा अर्थात जब वह प्रकट होगा झूठी तफ़्सीरें जो क़ुर्आन की की गई हैं उनका झूठ सिद्ध कर देगा। तब उस ईसा पर बड़ा शोर होगा और तू देखेगा कि मौलवी कैसा शोर मचाएंगे। याद रख कि तू देखेगा कि मौलवी कैसा शोर मचाएंगे तब मैंने कहा कि क़ादियान तो हमारे गाँव के निकट दो-तीन मील की दूरी पर है उसमें ईसा कहाँ है। इसका उसने उत्तर न दिया (कारण यह मालूम होता है कि उस को इस से अधिक ज्ञान नहीं दिया गया था कि ईसा क़ादियान में पैदा होगा और उसकी खबर नहीं थी कि एक क़ादियान ज़िला गुरदासपुर में है। इसलिए उसने इस ऐतराज़ में हस्तक्षेप न किया या भिक्षुओं वाली महत्ता से उसकी ओर ध्यान न दिया) फिर स्वर्गीय करीम बख़्श साहिब कहते हैं कि एक अन्य समय में उसने पुन: यह चर्चा की और कहा कि उस ईसा का नाम ग़ुलाम अहमद है और वह क़ादियान में है। अब देखो कि अहले कश्फ़ किस प्रकार एक होकर चौदहवीं सदी में ईसा के प्रकट होने की गवाही दे रहे हैं। (इसी से)

(सत्यापन) के लिए कैसा महान निशान आसमान पर प्रकट हुआ, और तेरह सौ वर्ष की प्रतीक्षा के बाद मेरे ही युग में मेरे ही दावे के युग में, मेरे ही झुठलाने के समय में ख़ुदा ने अपने दो प्रकाशमान सूर्य अर्थात चन्द्र और सूर्य को रमज़ान के महीने में प्रकाशरहित कर दिया। यह वर्तमान उलेमा के प्रकाश छीनने और अन्याय पर एक शोक (मातम) का निशान था और निश्चित था कि वह महदी को झुठलाने के समय प्रकट होगा। ख़ुदा के पवित्र नबी प्रारंभ से सूचना देते आए थे कि महदी के इन्कार के कारण यह शोक का निशान आसमान पर प्रकट होग और रमज़ान में इसलिए कि धर्म में अंधकार एवं अन्याय उचित रखा गया, जैसा कि आसार में भी आ चुका है कि महदी पर कुफ्र का फ़त्वा लिखा जाएगा और उसका नाम समय के उलेमा दज्जाल, क़ज़्ज़ाब, मुफ़्तरी (झूठ गढ़ने वाला) और बेईमान रखेंगे तथा उसके क़त्ल के षड्यंत्र होंगे। तब ख़ुदा जो आसमान का ख़ुदा है जिसका शक्तिशाली हाथ उस के गिरोह को सदैव बचाता है, आसमान पर महदी के समर्थन के लिए यह निशान प्रकट करेगा और क़ुर्आन उनकी गवाही देगा।★ परन्तु चूंकि निशानों के अन्तर्गत हमेशा एक संकेत होता है जैसे उनके अन्दर एक चित्रित रूप में समझना अंकित होता है। इसलिए ख़ुदा ने इस चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण के निशान में इस बात की ओर संकेत किया कि उलेमा-ए-मुहम्मदी जो चन्द्रमा और सूर्य के समान होने चाहिए थे उस समय प्रतिभा का प्रकाश जाता रहेगा और महदी को नहीं पहचानेंगे। और द्वेष के ग्रहण ने उनके दिल को काला कर दिया होगा। इसलिए इस बात को व्यक्त करने के लिए शोक का निशान

★हाशिया :- हुजजुल किरामः में लिखा है कि मसीह अपने दावों और मआरिफ़ को क़ुर्आन से निकालेगा। अर्थात् क़ुर्आन उसकी सच्चाई की गवाही देगा और समय के उलेमा कुछ हदीसों को दृष्टिगत रख कर उसको झुठलाएंगे। 'मक्तूबात इमाम रब्बानी' में लिखा है कि जब मसीह मौऊद जब दुनिया में आएगा तो समय के उलेमा उसके मुकाबले पर विरोध पर तत्पर हो जाएंगे, क्योंकि जो बातें अपने निष्कर्ष निकालने तथा विवेचन के द्वारा वह वर्णन करेगा वे प्रायः बारीक और गहरी होंगी तथा कठिनाई और सन्दर्भ की गहराई के कारण उन सब मौलवियों की दृष्टि में किताब और सुन्नत के विपरीत दिखाई देंगी, हालांकि वास्तव में विपरीत नहीं होंगी। देखो मक्तूबात रब्बानी पृष्ठ 107 अहमदी प्रेस देहली। (इसी से)

आसमान पर प्रकट होगा। फिर उसी निशान पर ख़ुदा ने बस नहीं की। बड़ी-बड़ी ख़ारिक आदत (विलक्षण) भविष्यवाणियां प्रकटन में आईं। जैसा कि लेखराम वाली भविष्यवाणी जिसका सम्पूर्ण ब्रिटिश भारत गवाह है। कैसी प्रतिष्ठा एवं वैभव से प्रकटन में आ गई तथा हज़ारों प्रकार की सुरक्षा और सतर्कताओं के बावजूद ख़ुदा के इरादे ने किस प्रकार प्रकाशमान दिन में अपना कार्य कर दिया। इसी प्रकार पुस्तक अंजाम-ए-आथम की यह भविष्यवाणी कि अब्दुलहक़ ग़ज़नवी नहीं मरेगा जब तक कर इस ख़ाकसार का चौथा पुत्र पैदा न हो ले। किस सफाई और स्पष्टता से अब्दुलहक़ के जीवन में पूरी हो गई तथा इसी प्रकार यह भविष्यवाणी कि बिरादरम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब के घर में एक लड़का पैदा होगा उन सब लड़कों के बाद जो मृत्यु पा गए और उस लड़के का सम्पूर्ण शरीर फोड़ों से भरा हुआ होगा। अत: इन भविष्यवाणियों में ऐसा ही प्रकटन में आया। जिस प्रकार से और जिस तारीख में लेखराम का क़त्ल होना वर्णन किया गया था उसी प्रकार से लेखराम का क़त्ल हुआ और कई सौ लोगों ने गवाही दी कि वह भविष्यवाणी बड़ी सफाई से पूरी हो गयी। अत: अब तक वह हस्ताक्षरों से युक्त दस्तावेज़ मेरे पास मौजूद है, जिस पर हिन्दुओं की गवाहियां भी अंकित हैं। ऐसा हो भविष्यवाणी के अनुसार मेरे घर में चार पुत्र पैदा हुए और चौथे पुत्र के जन्म तक भविष्यवाणी के अनुसार अब्दुलहक़ ग़ज़नवी जीवित रहा। इस में ख़ुदा की कैसी क़ुदरत पाई जाती है। ऐसा ही लोगों ने अपनी आंखों से देख लिया कि आदरणीय बिरादरम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब के घर में एक लड़का पैदा हुआ जिसका शरीर फोड़ों से भरा हुआ था और वे फ़ोड़े एक वर्ष से भी कुछ अधिक दिनों तक उस लड़के के शरीर पर रहे जो बड़े-बड़े, ख़तरनाक़, कुरूप, मोटे और उपचार योग्य मालूम नहीं होते थे, जिनके दाग़ अब तक मौजूद हैं। क्या ये शक्तियां ख़ुदा के अतिरिक्त किसी और में भी पाई जाती हैं? फिर ये भविष्यवाणियां कुछ एक-दो भविष्यवाणियां नहीं बल्कि इसी प्रकार की सौ से अधिक भविष्यवाणियां हैं जो तिरयाक़ुल-क़ुलूब पुस्तक में लिखी हैं। फिर इन सबका वर्णन न करना और बार-बार अहमद बेग के दामाद या आथम की चर्चा

करते रहना लोगों को कितना धोखा देना है। इसका ऐसा ही उदाहरण है कि जैसे कोई स्वभाव से उपद्रवी मनुष्य उन तीन हज़ार चमत्कारों की कभी चर्चा न करे जो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रकटन में आए और हुदैविया की भविष्यवाणी की बार-बार चर्चा करे कि वह अनुमानित समय पर पूरी नहीं हुई या उदाहरणतया हज़रत मसीह की साफ और स्पष्ट भविष्यवाणियों का कभी किसी के पास नाम तक न ले और बार-बार हंसी-ठट्ठे के तौर पर लोगों से यह कहे कि क्यों साहि क्या वह वादा पूरा हो गया जो हज़रत मसीह ने किया था कि अभी तुम में से कई लोग जीवित होंगे कि मैं फिर वापस आऊंगा या जैसे शरारत के तौर पर दाऊद का तख़्त दोबारा स्थापित करने की भविष्यवाणी को वर्णन करके फिर उपहास से कहे कि क्यों साहिब क्या यह सच है कि हज़रत मसीह बादशाह भी हो गए थे और दाऊद का तख़्त उन को मिल गया था। शैख़ सादी बख़ील (कंजूस) के बारे में सच फ़रमाते हैं-

नदारद बसद नुक्तए नग़्ज़गोश
चू ज़हफे ब बीनद बर आरद ख़रोश।

ये मूर्ख नहीं जानते कि भविष्यवाणी एक विद्या है और ख़ुदा की वह्यी है इसमें किसी समय अस्पष्टताएं भी होती हैं और किसी समय मुल्हम ताबीर (व्याख्या) करने में ग़लती करता है जैसा कि हदीस ذَهَبَ وَهْلِيْ इस पर गवाह है। फिर अहमद बेग के दामाद का ऐतराज़ करना और अहमद बेग की मृत्यु को भूल जाना क्या यही ईमानदारी है। यहां तो भविष्यवाणी की दो टांगों में से एक टांग टूट गई और भविष्यवाणी का एक भाग अर्थात् अहमद बेग का निर्धारित समय सीमा के अन्दर मृत्यु पा जाना भविष्यवाणी के मंतव्य के अनुसार सफाई से पूरा हो गया और दूसरे की प्रतीक्षा है। परन्तु यूनुस नबी की अटल भविष्यवाणी में कौन सा भाग पूरा हो गया? यदि शर्म है तो इसका कुछ उत्तर दो। आप लोग यदि बहुत ही कम फुर्सत हों और उन समस्त निशानों को जो सौ से अधिक हैं ध्यानपूर्वक न देख सकें तो नमूने के तौर पर एक निशान आसमान का ले लें अर्थात् महीना रमज़ान पृथ्वी का अर्थात् लेखराम का भविष्यवाणी के अनुसार मारा जाना और फिर विचार कर

लें कि निशान दिखाने में वास्तव में दो गवाहियां सत्याभिलाषी के लिए पर्याप्त हैं। हां यदि सच्चाई का अभिलाषी नहीं तो उसके लिए तो हज़ार चमत्कार भी पर्याप्त नहीं होगा। देखना चाहिए कि चन्द्र एवं सूर्य का रमज़ान मुबारक में ग्रहण होना कैसी प्रसिद्ध भविष्यवाणी थी, यहां तक कि जब हिन्दुस्तान में यह निशान प्रकट हुआ तो श्रेष्ठ मक्का की प्रत्येक गली और कूचे में इसकी चर्चा थी कि महदी मौऊद पैदा हो गया। एक दोस्त ने जो उन दिनों मक्का में था पत्र में लिखा कि जब मक्का वालों को सूर्य एवं चन्द्र-ग्रहण की ख़बर हुई कि रमज़ान में हदीस के शब्दों के अनुसार ग्रहण हो गया तो वे सब खुशी से उछलने लगे कि अब इस्लाम की उन्नति का समय आ गया और महदी पैदा हो गया तथा कुछ लोगों ने पुरानी विवेचना (इज्तिहादी) की ग़लतियों के कारण अपने हथियार साफ करने आरंभ कर दिए कि अब काफ़िरों से लड़ाइयां होंगी। अतएव निरन्तर सुना गया है कि न केवल मक्का में बल्कि सभी इस्लामी देशों में उस चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण की खबर पाकर बड़ा शोर उठा था और बड़ी खुशियां हुई थीं और ज्योतिषियों ने यह भी गवाही दी है कि इस चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण में एक विशेष नवीनता थी, अर्थात् एक अद्वितीय चमत्कार जिसका उदाहरण नहीं देखा गया और इसी नवीनता को देखने के लिए हमारे इस देश के एक भाग में अंग्रेज़ दार्शनिकों की ओर से एक वेधशाला* बनाई गई थी तथा अमरीका और यूरोप के दूर-दूर के देशों से अंग्रेज़ ज्योतिषी चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण के इस अद्‌भुत रूप को देखने के लिए आए थे, जैसा कि इस चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण का नवीनता की स्थितियां उन दिनों में अख़बार सिविल मिलट्री गज़ट और ऐसा ही अन्य कई अंग्रेज़ी अखबारों में तथा इसके अतिरिक्त उर्दू अख़बारों में भी विस्तार से प्रकाशित हुई थीं और लेखराम के मारे जाने का निशान भी एक भयावह निशान था, जिसमें पांच वर्ष पूर्व इस घटना की ख़बर दी गई थी और भविष्यवाणी में प्रकट किया गया था कि वह ईद के दूसरे दिन मारा जाएगा और इस प्रकार से क़त्ल का दिन भी निश्चित हो गया था और इसके साथ किसी प्रकार

* **वेधशाला** - वह स्थान जहां से ग्रहों और नक्षत्रों की गति आदि का निरीक्षण किया जाता है। (अनुवादक)

की शर्त न थी और हज़ार से अधिक लोग बोल उठे थे कि यह भविष्यवाणी बड़ी सफ़ाई से पूरी हो गई। अत: इन दोनों निशानों की श्रेष्ठता ने दिलों को हिला दिया था। न मालूम इन्कार करने वाले ख़ुदा तआला को क्या उत्तर देंगे, जिन्होंने इन चमकते हुए निशानों को अपनी आंखों से देखा और अकारण अन्याय से अपने पैरों के नीचे कुचल दिया।

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ (अश्शुअरा - 228)

अफ़सोस! ये लोग क्यों नहीं देखते कि कैसे निरन्तर निशान प्रकट होते जाते हैं और ख़ुदा तआला के समर्थन कैसे उतर रहे हैं और पृथ्वी पर एक ख़ुदाई शक्ति काम कर रही है। अफ़सोस! ये क्यों नहीं सोचते कि यदि यह कारोबार ख़ुदा की ओर से न होता तो पुस्तकीय, बौद्धिक और कश्फ़ी तौर पर उसमें इतनी सामग्री हरगिज़ एकत्र न हो सकती।

1. आसमाँ वारिद निशां अलवक्त मेगोयद ज़मीं
बाज़ बुग़्ज़ व कीन ओ इन्कार ईनां रा ब बीं
2. ऐ मलामतगर ख़ुदा रा बरज़मान कुन यक नज़र
चूं ख़ुदा ख़ामोश मांदे दर चुनीं वक़्ते ख़तर
3.ख़स्तगाने दीं मिरा अज़ आस्मां तलवीद: अन्द
आमदम वक़्ते कि दिल्हा खूं ज़ ग़म गरदीद: अन्द
4. दावए मारा फरोग़ अज़ सद निशांग़महा दाद: अन्द
महरो मह हम अज़ पए तस्दीक़ मा उस्ताद: अन्द ✴

✴ **हिन्दी अनुवाद** (1) आसमान निशान बरसाता है और पृथ्वी कहती है कि यही वह वक़्त है। इस पर भी तो उन लोगों की शत्रुताओं, बैरों और इन्कार को देख।

(2) हे भर्त्सना करने वाले ख़ुदा के लिए युग की हालतों पर एक दृष्टि डाल अत: ख़ुदा ऐसे ख़तरे के समय क्योंकर खामोश रहता।

(3) धर्म के आपदाग्रस्त लोगों ने मुझे आसमान से बुलाया है और मैं ऐसे समय पर आया हूं कि दिल ग़म के कारण ख़ून हो चुके थे।

(4) हमारे दावे को सैकड़ों निशानों से मज़बूती दी गई है और चन्द्रमा तथा सूर्य भी हमारी तस्दीक़ के लिए खड़े हो गए। (अनुवादक)

बुद्धि पर कुछ ऐसे पर्दे पड़ गए हैं कि बार-बार यही बहाना प्रस्तुत करते हैं कि हदीसों के अनुसार इस व्यक्ति का दावा नहीं। हे दयनीय क़ौम! मैं कब तक तुम्हें समझाऊंगा। ख़ुदा तुम्हें नष्ट होने से बचाए। आप लोग क्यों नहीं समझते और मैं दिलों को क्योंकर फाड़ कर उनमें सच्चाई का प्रकश डाल दूं। क्या अवश्य न था कि मसीह हकम हो कर आता और क्या मसीह पर यह अनिवार्य न था कि इसके बावजूद कि ख़ुदा ने उसको सही ज्ञान दिया। फिर भी वह तुम्हारी सारी हदीसों को मान लेता। क्या उसको छोटे से छोटे मुहद्दिस का दर्जा भी नहीं दिया गया और उसकी आलोचना जो ख़ुदा के दिए हुए ज्ञानों पर आधारित है उसका कुछ भी विश्वास नहीं और क्या उस पर अनिवार्य है कि पहले हदीस के आलोचकों की गवाही को प्रत्येक स्थान और हर अवसर और हर व्याख्या में स्वीकार कर ले तथा उनके पद चिन्हों से लेशमात्र भी न फिरे। यदि ऐसा ही होना चाहिए था तो फिर उसका नाम हकम क्यों रखा गया? वह तो मुहद्दिसों का शागिर्द हुआ और उनके द्वारा मार्ग-दर्शन का मुहताज। और जबकि बहरहाल मुहद्दिसों की लकीर पर ही उसने चलना है तो यह एक बड़ा धोखा है कि उसका यह नाम रखा गया कि क़ौमी झगड़े का फैसला करने वाला, बल्कि इस स्थिति में वह न अदल रहा न हकम रहा। केवल बुख़ारी और मुस्लिम, इब्ने माजा और अबू दाऊद इत्यादि का एक अनुयायी हुआ। जैसे मुहम्मद हुसैन बटालवी और नज़ीर हुसैन देहलवी तथा रशीद अहमद गंगोही इत्यादि का एक छोटा भाई हुआ। अत: यही एक ग़लती है जिसने आसमानी दौलत से इन लोगों को वंचित रखा है। क्या यह अन्याय की बात नहीं कि मुहद्दिसों की आलोचना, सुदृढ़ करना और सुधार करने को श्रेष्ठता की दृष्टि से देखा जाए। मानो उन का कारण लिखित प्रारब्ध है, परन्तु वह जिसका ख़ुदा ने फ़ैसला करने वाला नाम रखा और उम्मत के आन्तरिक झगड़ों के निर्णायक करने के लिए हकम ठहराया, वह ऐसा निराश्रय आया कि उसे किसी हदीस के अस्वीकार या स्वीकार करने का अधिकार नहीं। इस से वे लोग भी अच्छे ठहरे जिनके बारे में अहले सुन्नत स्वीकार करते हैं कि वह हदीस का सही

करना बतौर कश्फ़ सीधे तौर पर रसूललुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करते थे और इस माध्यम से कभी सही हदीस को बनावटी कह देते थे और कभी बनावटी का नाम सही रखते थे। अत: विचार करो और समझो कि जिस व्यक्ति के ज़िम्मे इस्लाम के 73 फ़िर्क़ों के झगड़ों का फैसला करना है। क्या वह केवल अनुयायी के तौर पर संसार में आ सकता है। अत: निश्चित समझो कि यह आवश्यक था कि वह ऐसे तौर पर आता कि कुछ मूर्ख उनको यह समझते कि जैसे वह उनकी कुछ हदीसों को उथल-पुथल कर रहा है या कुछ को नहीं मानते। इसी लिए तो आसार में पहले से आ चुका है कि वह काफ़िर ठहराया जाएगा और इस्लाम के उलेमा उसे इस्लाम के दायरे से बहिष्कृत करेंगे और उसके बारे में क़त्ल के फ़त्वे जारी होंगे। क्या तुम्हारा मसीह भी मेरी तरह काफ़िर और दज्जाल ही कहलाएगा? और क्या उलेमा में उस का वही सम्मान होगा? ख़ुदा से डर कर बताओ कि अभी यह भविष्यवाणी पूरी हो गई या नहीं? स्पष्ट है कि जबकि मसीह और महदी को झुठलाने तक नौबत पहुंचेगी और आदरणीय उलेमा और महान सूफ़ी लोग उन का नाम काफ़िर, दज्जाल, बेईमान और दायरा-ए-इस्लाम से बहिष्कृत रखेंगे। अत: किसी छोटे से छोटे मतभेद पर यह क़यामत का शोर मचेगा यहां तक कि कुछ लोगों के अतिरिक्त समस्त उलेमा-ए-इस्लाम जो पृथ्वी पर रहते हैं सब सहमत हो जाएंगे कि यह व्यक्ति काफ़िर है। यह भविष्यवाणी बहुत विचार करने योग्य है। क्योंकि बड़े ज़ोर से आप लोगों ने अपने हाथों से उसे पूरा कर दिया है। स्मरण रहे कि ये शंकाएं कि क्यों सिहाह सित्त: की वे समस्त हदीसें जो महदी और मसीह मौऊद के बारे में लिखी हैं। इस स्थान पर चरितार्थ नहीं होतीं। इस प्रश्न से हल हो जाती हैं कि अखबार-व-आसार में यहां तक कि मक्तूबात मुजद्दिद साहिब सरहिन्दी और फ़ुतूहाते मक्किया तथा हुजजुल किराम: में लिखा है कि महदी और मसीह का समय के उलेमा बहुत विरोध करेंगे और उनका नाम गुमराह, नास्तिक, काफ़िर और दज्जाल रखेंगे तथा कहेंगे कि उन्होंने धर्म को बिगाड़ दिया और हदीसों को छोड़ दिया। इसलिए उनका क़त्ल अनिवार्य

है। क्योंकि इस से स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि अवश्य है कि आने वाले मसीह और महदी कुछ हदीसों को जो उलेमा के नज़दीक सही हैं छोड़ देंगे अपितु अधिकतर को छोड़ देंगे। तभी तो यह शोर-ए-क़यामत मचेगा और काफ़िर कहलाएंगे। अतः इन हदीसों से साफ मालूम होता है कि वह महदी और मसीह समय के उलेमा की आशाओं के विपरीत प्रकट होंगे और जिस प्रकार से उन्होंने हदीसों में पटरी जमा रखी है उस पटरी के विपरीत उनका कथन और कार्य होगा✷। इसी कारण उन्हें काफ़िर कहा जाएगा। यह बात याद रखने योग्य है कि विरोधी उलेमा का मेरे बारे में वास्तव में अन्य कोई भी बहाना नहीं सिवाए उस व्यर्थ बहाने के कि जो एक भण्डार उचित और अनुचित हदीसों का उन्होंने एकत्र कर रखा है उनके साथ मुझे नापना चाहते हैं। हालांकि उन हदीसों को मेरे साथ नापना चाहिए था। यह एक परीक्षा है जो अल्प बुद्धि और दुर्भाग्यशाली लोगों के लिए निश्चित थी और इस परीक्षा में मूर्ख लोग फंस जाते हैं। क्योंकि वे लोग अपने दिलों में पहले ही ठहरा लेते हैं कि महदी और मसीह के बारे में जो कुछ हदीसें लिखी हैं और जिस प्रकार उनके अर्थ किए गए हैं वे सब सही और विश्वास करने योग्य हैं। इसलिए जब वे लोग इस काल्पनिक नक्शे से जो पवित्र क़ुर्आन का भी विरोधी है मुझे (उसके) अनुकूल नहीं पाते तो वे समझ लेते हैं कि यह झूठा है। उदाहरणतया वे समझते हैं कि मसीह मौऊद एक ऐसी क़ौम याजूज-माजूज के समय आना चाहिए जिनके क़द लम्बे वृक्षों के समान होंगे और कान इतने लम्बे होंगे कि उनको बिस्तर की भांति बिछाकर उन पर सो रहेंगे। इसके अतिरिक्त मसीह आसमान से फ़रिश्तों के साथ उतरना चाहिए। बैतुल मक़दस के मीनार के पास पूरब की ओर और अद्‌भुत सृष्टि दज्जाल इस से पहले मौजूद होना चाहिए, जिस की शक्ति के क़ब्ज़े में सब ख़ुदाई की बातें हैं। मेंह बरसाने, खेतियां उगाने और मुर्दों के जीवित करने पर समर्थन हो। एक आंख से काना हो और उसके गधे का सर इतना

✷ महदी को काफ़िर और गुमराह, दज्जाल और नास्तिक ठहराने के बारे में देखो हुजजुल किरामः नवाब मौलवी सिद्‌दीक़ हसन खां और दिरासातुल्लबीब और फ़ुतूहाते मक्किया। (इसी से)

बड़ा-मोटा हो कि दोनों कानों का फासला तीन सौ हाथ के लगभग हो और दज्जाल के मस्तक पर काफ़िर लिखा हुआ हो, तथा महदी ऐसा चाहिए जिसकी तस्दीक के लिए आसमान से ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ आए कि यह अल्लाह का ख़लीफ़ा महदी और वह आवाज सम्पूर्ण पूरब और पश्चिम तक पहुंच जाए और मक्का से उसके लिए एक ख़ज़ाना निकले और वह ईसाइयों से लड़े और ईसाई बादशाह उस के पास पकड़े हुएं आए और सम्पूर्ण पृथ्वी को काफ़िरों के ख़ून से भर दे और उनकी सारी दौलत लूट ले और इतना कातिल एवं ख़ून बहाने वाला हो कि जब से दुनिया की नींव पड़ी है ऐसा ख़ूनी आदमी कोई न हुआ हो और अपने अनुयायियों में इतना धन-वितरण करे कि लोगों के पास फिर इतने रक्तपात के बाद चालीस वर्ष तक संसार पर से मौत का आदेश बिल्कुल स्थगित कर दिया जाए और सम्पूर्ण एशिया, यूरोप और अमरीका में बजाए इसके कि पलक झपकते में लाख आदमी मरता था चालीस वर्ष तक कोई कीड़ा भी न मरे और न वह बच्चा जो पेट में है और न वह बूढ़ा जो एक सौ वर्ष का है तथा शेर और भेड़िए शिक्रा और बाज़ मांस खाना छोड़ दें। यहां तक कि वे जुएं जो बालों में पड़ते हैं और वे कीटाणु जो पानी में होते हैं किसी को मौत न आए तथा लोग यद्यपि रुपया बहुत पाएं परन्तु चालीस वर्ष तक केवल दाल पर ही ग़ुज़ारा करें और जैन धर्म की भांति कोई व्यक्ति कोई जीव हत्या न करे। ईद की क़ुर्बानियां और हज के ज़बीहे (ज़िब्हे किए जाने वाले जानवर) सब बन्द हो जाएं✶ लोग सांपों को न मारें और न सांप लोगों को डसें।

✶ये समस्त बातें उन भविष्यवाणियों से अनिवार्य होती हैं जिनके प्रत्यक्ष शब्दों पर वर्तमान उलेमा बल दे रहे हैं क्योंक जब यह आदेश जारी हो गया कि चालीस वर्ष तक कोई जीवित नहीं मरेगा और इसी आधार पर शेर ने बकरी के साथ एक घाट में पानी पिया और अपना शिकार पाकर फिर भी उसको न मारा और भेड़िए ने भी मांस खाने से तौबा की और बाज़ भी पक्षियों के मारने से रुक गया और सब ने भूख से कष्ट उठाना स्वीकार किया परन्तु किसी प्राणी पर आक्रमण न किया। यहां तक कि बिल्ली ने भी चूहे की जान क्षमा कर दी और सब दरिन्दों ने प्राणों की सुरक्षा के लिए अपनी मौत को स्वीकार कर लिया तो फिर क्या मनुष्य ही मूर्ख और अवज्ञाकारी रहेगा कि ऐसे अमन के युग में अपने पेट के लिए ख़ून करके दरिन्दों से भी अधिक बुरा हो जाएगा? (इसी से)

अत: यदि किसी महदी होने के दावेदार के समय ये सब बातें हों तब उसको सच्चा महदी माना जाए अन्यथा नहीं। तो अब बताओ कि इन लक्षणों और निशानों के साथ जो लोग सच्चे मसीह को परखना चाहते हैं वे मुझे कैसे स्वीकार कर लें। परन्तु यहां आश्चर्य यह है कि आसार में लिखा है कि वह मसीह मौऊद जो उनके विचार में आसमान से उतरेगा और वह महदी जिस के लिए आसमान से आवाज़ आएगी उसको भी मेरी तरह काफ़िर और दज्जाल कहा जाएगा। अब यहां स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होता है कि यदि वह मसीह हदीसों के अनुसार आसमान से उतरेगा और उस महदी के लिए वास्तव में आसमान से आवाज़ आएगी कि यह ख़ुदा का ख़लीफ़ा है। तो इतने बड़े चमत्कारों को देखने के बाद, यहां तक कि आसमानी फ़रिश्ते उतरते देख कर फिर क्या कारण कि उनको काफ़िर ठहराएंगे। विशेष तौर पर जबकि वह आसमान से उतर कर उन लोगों की सारी हदीसें स्वीकार कर लेंगे तो फिर तो काफ़िर कहने का कोई कारण मालूम नहीं होता। इस से आवश्यक तौर पर यह परिणाम निकलता है कि वे मेरे बारे में उन लोगों की हदीसों का अत्यधिक इन्कार करेंगे, अन्याथा क्या कारण कि इतने चमत्कार देखने के बावजूद फिर भी उनको काफ़िर कहा जाएगा। इसलिए मानना पड़ा कि सच्चे मसीह और महदी की निशानी ही यह है कि वह उन लोगों की बहुत सी हदीसों से इन्कारी हो अन्यथा यों तो उलेमा का सर फिरा हुआ न होगा कि अकारण काफ़िर कह देंगे और उनके सम्बन्ध में कुफ्र का फ़त्वा देंगे। अब इस प्रश्न का उत्तर देना इन मौलवियों का अधिकार है कि जबकि महदी और मसीह उनके प्रस्तावित निशानों के अनुसार आएंगे अर्थात् एक तो देखते-देखते आसमान से फ़रिश्तों के साथ उतरेगा और दूसरे के लिए आसमान से आवाज़ आएगी कि यह ख़ुदा का ख़लीफ़ा महदी है और एक क्षण में पूरब और पश्चिम में वह आवाज़ फिर जाएगी जैसे दोनों आसमान ही से उतरे। तो फिर इतना बड़ा चमत्कार देखने के बाद कि जैसे सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी प्रकटन में नहीं आया। इन दोनों चमत्कार दिखाने वाले बुज़ुर्गों को काफ़िर कहेंगे। हालांकि वे आते ही उलेमा के

सामने आज्ञापालन के साथ झुक जाएंगे और चूं भी नहीं करेंगे। बुख़ारी और मुस्लिम, इब्ने माजा, अबू दाऊद, निसाई और मुअत्ता निष्कर्ष यह कि हदीसों के सम्पूर्ण भण्डार को जिस प्रकार से एक ख़ुदा को मानने वाले लोग मानते हैं सर झुका कर सब को मान लेंगे और यदि कोई कहेगा कि हज़रत आप तो हकम होकर आए हैं इन उलेमा से कुछ तो मतभेद कीजिए तो अत्यन्त विनय एवं विनम्रतापूर्वक कहेंगे कि हकम कैसे। हमारी क्या मजाल कि हम सिहाह सित्त: का कुछ विरोध करें। अथवा हज़रत मौलाना शैख़ुलकुल नज़ीर हुसैन, हज़रत मौलाना मौलवी अबू सईद, मुहम्मद हुसैन बटालवी और या हज़रत मौलाना इमामुल मुक़ल्लिदीन रशीद अहमद गंगोही के विवेचन और उनके बुज़ुर्गों की व्याख्याओं का विरोध करें। ये लोग जो कुछ कह चुके सब उचित और ठीक है। हम क्या और हमारा अस्तित्व क्या। स्पष्ट है कि जब महदी इस प्रकार स्वीकार मात्र होकर आएंगे तो कोई कारण नहीं कि उलेमा उनको काफ़िर कहें या उनका नाम दज्जाल रखें। अधिकतर लोग जो मौलवी कहलाते हैं चौपायों के समान जन सामान्य के आगे केवल धोखा देने के लिए यह वर्णन किया करते हैं कि देखो मुस्लिम में यह कैसी स्पष्ट हदीस है कि मसीह मौऊद दमिश्क के पूर्वी मीनार के निकट आसमान से उतरेगा और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ेगा। इस भविष्यवाणी के प्रत्यक्ष शब्दों में दमश्कि और उसके पूर्वी ओर एक मीनार का वर्णन है जिसके निकट मसीह मौऊद का आसमान से उतरना आवश्यक है। अत: यदि इन समस्त शब्दों की तावील की जाएगी तो फिर भविष्यवाणी कुछ भी न रहेगी अपितु विरोधी के नज़दीक एक उपहास का कारण होगा। क्योंकि भविष्यवाणी की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा तथा उसका प्रभाव अपने प्रत्यक्ष शब्दों के साथ होता है और भविष्यवाणी करने वाले का उद्देश्य यह होता है कि लोग इन निशानियों को याद रखें और उन्हीं को सच्चे दावेदार का मापदण्ड ठहराएं। परन्तु तावील में तो वे समस्त निर्धारित निशान गुम हो जाते हैं और यह बात स्वीकार की हुई तथा मान्य है कि स्पष्ट आदेशों को हमेशा उनके प्रत्यक्ष अर्थों पर चरितार्थ करना चाहिए और प्रत्येक शब्द की तावील विरोधी को सांत्वना नहीं दे सकती। क्योंकि इस प्रकार तो कोई

मुकद्दमा फैसला ही नहीं हो सकता बल्कि यदि एक व्यक्ति तावील के तौर पर अपने मतलब के अनुसार किसी हदीस के अर्थ कर लेता है और शब्दों के अर्थों को तावील के तौर पर अपने मतलब की ओर फेर लेता है तो इस प्रकार से तो विरोधी का भी अधिकार है कि वह भी तावील से काम ले तो फिर फ़ैसला क़यामत तक असंभव। यह आरोप है जो हमारे विरोधी करते हैं और अपने अनाड़ी शिष्यों को सिखाते हैं परन्तु उन्हें मालूम नहीं कि वे स्वयं इस आरोप के नीचे हैं। हम तो किसी हदीस के प्रत्यक्ष शब्द को नहीं छोड़ते जब तक क़ुर्आन अपने स्पष्ट आदेशों से दूसरी हदीसों सहित उस को न छुड़ाए और तावील के लिए विवश न करें। अत: यहां भी ऐसा ही है। यदि ये लोग ख़ुदा तआला से डर कर कुछ सोचते तो इन्हें मालूम होता कि वास्तव में यह आरोप तो उन्हीं पर होता है क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मसीह के बारे में स्पष्ट शब्दों में यह भविष्यवाणी मौजूद थी कि

يٰعِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ (आले इमरान-56)

अर्थात् हे ईसा मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूं और मृत्यु के पश्चात् अपनी ओर उठाने वाला। परन्तु हमारे विरोधियों ने इस स्पष्ट आदेश के प्रत्यक्ष शब्दों पर अमल नहीं किया और अत्यन्त घृणित और कष्टप्रद तावील से काम लिया। अर्थात् رَافِعُكَ (राफ़िउका) के वाक्य को مُتَوَفِّيْكَ (मुतवफ्फीका) के वाक्य पर प्राथमिक किया और एक स्पष्ट अक्षरांतरण को ग्रहण कर लिया और कुछ ने توفّی (तवफ़्फ़ी) के शब्द के अर्थ भर लेना किया जो न क़ुर्आन से, न हदीस से, न शब्दकोश से सिद्ध होता है और शरीर के साथ उठाए जाना अपनी ओर से मिला लिया और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु से متو فيك (मुतवफ्फीका) के मायने स्पष्ट ممتيك (मुमीतुक) बुख़ारी में मौजूद हैं उन से मुंह फेर लिया और नहव विद्या (व्याकरण) में स्पष्ट तौर पर यह नियम माना गया है कि توفّی के शब्द में जहां ख़ुदा कर्त्ता और इन्सान करण हो वहां हमेशा توفّی के अर्थ मारने और रूह क़ब्ज़ करने के होते हैं। परन्तु इन लोगों ने इस नियम की कुछ भी परवाह नहीं की और ख़ुदा की समस्त किताबों में

किसी स्थान पर رفع الی اللہ के मायने यह नहीं किए गए कि कोई शरीर के साथ ख़ुदा तआला की ओर उठाया जाए परन्तु इन लोगों ने رفع الی اللہ के किसी उदाहरण के मौजूद होने के बिना ज़बरदस्ती यहां यह मायने किए कि शरीर के साथ उठाया गया। इसी प्रकार توفّی के उल्टे अर्थ करने के समय कोई उदाहरण प्रस्तुत न किया और भर लेना मायने ले लिए। अब बताओ कि किसी ने स्पष्ट आदेशों के ज़ाहिर पर अमल करना छोड़ दिया? या यों समझ लो कि यहां दो भविष्यवाणियां एक दूसरे की विपरीत हैं इस प्रकार से कि मसीह मौऊद के अवतरण की भविष्यवाणी जो सही मुस्लिम में मौजूद है उसके यह मायने केवल अपनी ओर से हमारे विरोधी कर रहे हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित आकाश पर बैठा हुआ है अभी तक मृत्यु प्राप्त नहीं हुआ और अन्तिम युग में दमिश्क के मीनार के पूरब की ओर उतरेगा और ऐसे-ऐसे कार्य करेगा। अत: यह भविष्यवाणी तो सही मुस्लिम की पुस्तक में से है जो बिगाड़ कर वर्णन की जाती है और इस के मुकाबले पर और उस के विपरीत एक भविष्यवाणी पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है जो पहली सदी में ही करोड़ों मुसलमानों में प्रसिद्धि पा चुकी थी और यह प्रसिद्धि क़ुर्आनी भविष्यवाणी की मुस्लिम वाली भविष्यवाणी के मौजूद होने से पहले थी अर्थात् उस समय से पहले जबकि मुस्लिम ने किसी रिवायत कर्ता से सुन कर इस विरोधी भविष्यवाणी को लगभग पौने दो सौ वर्ष के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपनी पुस्तक में लिखा था और मुस्लिम की भविष्यवाणी में केवल यही दोष नहीं कि वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लगभग पौने दो सौ वर्ष के बाद की गई बल्कि एक यह भी दोष है कि मुस्लिम मे उस असल रावी (रिवायत कर्ता) को भी नहीं देखा जिसने यह हदीस वर्णन की थी और न उस व्यक्ति को देखा जिसके पास यह रिवायत वर्णन की बल्कि बहुत सी ज़ुबानों में घूमती हुई और ऐसे लोगों को छूती हुई जिन को हम मासूम नहीं कह सकते मुस्लिम तक पहुंची और हमारे पास इस बात के बारे में जो ग़ैर मासूम ज़ुबानों से कई माध्यमों से सुनी गई यह आदेश जारी करें कि वह क़ुर्आन की भविष्यवाणी के स्तर पर है। तो ऐसी भविष्यवाणी जिसका

सारा ताना-बाना ही काल्पनिक है जब क़ुर्आन की भविष्यवाणी के विपरीत और उलट हो तो उसको उसके ज़ाहिर शब्दों की दृष्टि से मानना जैसे पवित्र क़ुर्आन से अलग होना है। हां यदि किसी तावील से अनुकूल आ जाए और विरोधाभास जाता रहे तो फिर सर्वथा स्वीकार। स्मरण रहे कि कोई फ़ौलादी क़िला भी ऐसा सुदृढ़ नहीं हो सकता जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मसीह की मृत्यु की आयत है। फिर आकाश से शरीर के साथ जीवित उतरने की भविष्यवाणी मृत्यु की भविष्यवाणी के कितनी विपरीत है। तनिक विचार कर लो। और क़ुर्आन ने تـوفّى और رفـع के शब्द को कई जगह एक ही अर्थ मृत्यु और रफ़ा रूहानी के स्थान पर वर्णन करके स्पष्ट समझा दिया है कि تـوفّى के अर्थ मारना और رفـع الى الله के अर्थ रूह को ख़ुदा की ओर उठाना है और फिर تـوفّى के शब्द के अर्थ हदीस की दृष्टि से भी बहुत स्पष्ट हो गए हैं। क्योंकि बुख़ारी में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु से रिवायत है कि मुतवफ्फीका - मुमीतुक अर्थात् हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु ने متوفيـك (मुतवफ्फीका) शब्द के यही अर्थ किए हैं कि मैं तुझे मारने वाला हूं। और इस बात पर सहाबा का इज्मा (सर्वसम्मति) भी हो चुका कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए। और पहली रूहों में जा मिले। अब बताओ और स्वयं ही इन्साफ़ करो कि दो विरोधाभासी भविष्यवाणियां एक ही विषय में झगड़ा कर रही हैं। एक क़ुर्आनी भविष्यवाणी है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए मृत्यु का वादा होना और फिर आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ के इस मृत्यु के वादे का पूरा होना स्पष्ट तौर पर इस भविष्यवाणी से मालूम हो रहा है और सम्पूर्ण क़ुर्आन इस भविष्यवाणी के यही अर्थ कर रहा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए और उनकी रूह ख़ुदा तआला की ओर उठाई गई। और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु समस्त सहाबा की सहमति के साथ जो लाख से भी कुछ अधिक थे इस बात पर इज्मा प्रकट कर रहे हैं कि हज़रत ईसा अवश्य मृत्यु पा गए और इमाम आज़म, इमाम अहमद और इमाम शाफ़िई उन के कथन को सुनकर और खामोश रह कर इसी कथन की पुष्टि कर रहे हैं और इमाम इब्ने हज़म भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु की गवाही दे रहे हैं और मुसलमानों में से मौतज़िल: भी उनकी मृत्यु का क़ाइल तथा

एक सूफ़ियों का फ़िर्क़ा इसी बात का क़ाइल कि मसीह मृत्यु पा गया है और आने वाला मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा और एक हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी जो हुजजुलकिरामा में भी लिखी गई है हज़रत ईसा की आयु एक सौ बीस वर्ष निर्धारित कर रही है और कन्ज़ुल उम्माल की एक हदीस सलीब के फ़ित्न: के बाद के युग के बारे में वर्णन कर रही है कि हज़रत मसीह आकाश पर नहीं गए अपितु ख़ुदा तआला से आदेश पा कर अपने देश से समस्त नबियों की पद्धति के अनुसार हिजरत कर गए और उन देशों की ओर चले गए जिन में दूसरे यहूदी रहते थे और मेराज की रात में मृत्यु प्राप्त नबियों की रूहों में उनकी रूह देखी गई। यह तो क़ुर्आनी भविष्यवाणी है जो हज़रत मसीह की मृत्यु वर्णन कर रही है जिस के साथ तर्कों की एक सेना है और क़ुर्आन एवं हदीस के स्पष्ट आदेशों के अतिरिक्त मरहम-ए-ईसा का नुस्खा और श्रीनगर में क़ब्र जिसमें हज़रत ईसा दफ़्न हैं इस पर गवाह हैं और इसके मुकाबले पर वही मुस्लिम की काल्पनिक हदीस प्रस्तुत की जाती है जिस पर सैकड़ों सन्देह चींटियों की भांति चिमटे हुए हैं और जो ज़ाहिरी शब्दों की दृष्टि से स्पष्ट तौर पर पवित्र क़ुर्आन की विरोधाभासी तथा उसके विपरीत पड़ी हुई है और अद्‌भुत बात यह कि मुस्लिम में आसमान का कोई शब्द मौजूद नहीं। परन्तु फिर भी अकारण उस हदीस के यही अर्थ किए जाते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आकाश से उतरेंगे★। हालांकि पवित्र क़ुर्आन बुलन्द स्वर में कह

★हाशिया :-मुस्लिम की हदीस का यह शब्द कि मसीह दमिश्क के पूर्वी मीनार की ओर उतरेगा इस बात को नहीं बताता कि वह मसीह मौऊद का निवास स्थान होगा बल्कि अन्तत: यह ज्ञात होता है कि किसी समय उस की कार्रवाई दमिश्क तक पहुंचेगी और यह भी इस स्थिति में कि दमिश्क के शब्द से वास्तव में दमिश्क ही अभिप्राय हो और यदि ऐसा समझा भी जाए तो इस में क्या हानि है? अब तो दमिश्क से श्रेष्ठ मक्का तक रेल भी तैयार हो रही है और प्रत्येक इन्सान बीस दिन तक दमिश्क में पहुंच सकता है। और अरबी में नज़ील मुसाफ़िर को कहते हैं परन्तु यह निर्णय किया हुआ मामला है कि इस हदीस के यही अर्थ हैं कि आने वाला मसीह मौऊद दमिश्क के पूरब की ओर प्रकट होगा। और क़ादियान दमिश्क से पूरब की ओर है। हदीस का आशय यह है कि जैसे दज्जाल पूरब में प्रकट होगा ऐसा ही मसीह मौऊद भी पूरब में ही प्रकट होगा। (इसी से)

रहा है कि ईसा इब्ने मरयम रसूलुल्लाह पृथ्वी में दफ़्न किया गया है। आकाश पर उसके शरीर का नामोनिशान नहीं। अब बताओ कि हम इन दोनों विरोधाभासी भविष्यवाणियों में से किस को स्वीकार करें? क्या मुस्लिम की रिवायत के लिए क़ुर्आन को छोड़ दें और तर्कों के एक भण्डार को अपने हाथ से फेंक दें, क्या करें? यह भी हमारा मुस्लिम पर उपकार है कि हमने तावील से काम लेकर हदीस को मान लिया अन्यथा विरोधाभास के निवारण के लिए हमारा अधिकार तो यह था कि उस हदीस को काल्पनिक ठहराते। परन्तु बहुत ध्यानपूर्वक सोचने के बाद ज्ञात होता है कि वास्तव में हदीस काल्पनिक नहीं है। हां रूपकों से भरी हुई है और भविष्यवाणी में जहां कोई परीक्षा अभीष्ट होती है रूपक हुआ करते हैं। प्रत्येक भविष्यवाणी के ज़ाहिरी शब्द के अनुसार अर्थ करना शर्त नहीं। इसके हदीसों और अल्लाह की किताब में सैकड़ों उदाहरण हैं। यूसुफ अलैहिस्सलाम के स्वप्न की भविष्यवाणी देखो कब वह ज़ाहिरी तौर पर पूरी हुई और कब सूर्य और चन्द्रमा और सितारों ने उनको सज्दा किया। दमिश्क के पूरबी मीनार से आवश्यक नहीं कि वह भाग दमिश्क के पूरबी मीनार का भाग हो। अत: इस बात को तो समस्त उलेमा मानते आए हैं। और स्मरण रहे कि क़ादियान दमिश्क के बिल्कुल पूरब में स्थापित है और दमिश्क के वर्णन का कारण हम वर्णन कर चुके हैं। एक और नुक्त: स्मरण रखने योग्य है अर्थात् यह कि जो मुस्लिम की हदीस में ये शब्द हैं कि मसीह मौऊद दमिश्क के पूरबी मीनार के क़रीब उतरेगा। इस शब्द की व्याख्या मुस्लिम की एक अन्य हदीस से सिद्ध होती है कि इस पूरबी ओर से अभिप्राय दमिश्क का कोई भाग नहीं है। हदीस यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दज्जाल का पता देने के लिए पूरब की ओर संकेत किया था। हदीस के शब्द ये हैं – اوماالی المشرق तो इस से निश्चित तौर पर यह सिद्ध होता है कि दमिश्क किसी प्रकार से मसीह के प्रकट होने का स्थान नहीं क्योंकि वह मक्का और मदीना से पूरब की ओर नहीं है अपितु उत्तर की ओर है और मसीह के प्रकट होने का स्थान हदीस اوماالی المشرق के आशय के अनुसार है। अर्थात् हदीस से सिद्ध है कि दज्जाल का प्रकटन पूरब से होगा। और

नवाब मौलवी सिद्दीक हसन खां साहिब हुजजुलकिरामा में स्वीकार कर चुके हैं कि दज्जाल के फ़ित्ने के लिए जो पूरब निर्धारित किया गया है वह हिन्दुस्तान है। इसलिए मानना पड़ा कि मसीही प्रकाशों के प्रकटन का पूरब भी हिन्दुस्तान ही है क्योंकि जहां रोगी हो उपचारक भी वहीं आना चाहिए और हदीस

لو کان الا یمان عند الثریا لنا لہ رجال اور جل من ھؤلاءِ
(ای من فارس)

देखो बुख़ारी पृष्ठ – 727 (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर सूर: जुमा- प्रकाशक) फारसी आदमी का प्रकटन स्थल भी यही पूरब है।★ और हम सिद्ध कर चुके हैं कि वही फ़ारसी रजुल (आदमी) महदी है। इसलिए मानना पड़ा कि मसीह मौऊद और महदी तथा दज्जाल तीनों पूरब में ही प्रकट होंगे और वह देश हिन्दुस्तान है।

अब इस प्रश्न का मैं उत्तर देता हूं कि प्राय: विरोधी जोश में आकर मुझ से पूछा करते हैं कि तुम्हारे मसीह मौऊद होने का क्या सबूत है। क्या पवित्र क़ुर्आन की किसी आयत से तुम्हारा मसीह मौऊद होना सिद्ध होता है? और फिर स्वयं ही यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि यदि केवल किसी सच्चे स्वप्न या किसी सच्चे कश्फ़ से कोई मसीह मौऊद या महदी बन सकता है तो दुनिया में ऐसे हज़ारों लोग मौजूद हैं जिन को सच्चे स्वप्न आते हैं और कश्फ़ भी होते हैं और हम भी उन्हीं में से हैं तो क्या कारण कि हम मसीह मौऊद न कहलाएं?

उत्तर – स्पष्ट हो कि यह आरोप केवल मुझ पर नहीं बल्कि समस्त नबियों पर है और मैं इस से इन्कार नहीं कर सकता कि सच्चे स्वप्न अधिकतर लोगों को आ जाते हैं और कश्फ़ भी हो जाते हैं अपितु कभी कुछ व्याभिचारी, पापी और नमाज़ को छोड़ने वाले बल्कि दुष्कर्म करने वाले और हरामकार अपितु काफ़िर तथा अल्लाह और उसके रसूल से अत्यधिक वैर रखने वाले और अत्यन्त

★**हाशिया :-** ऐसा ही एक हदीस में लिखा है कि अस्फ़हान से एक सेना आएगी जिसकी झण्डियां काली होंगी और एक फ़रिश्ता आवाज़ देगा कि इन में अल्लाह का ख़लीफ़ा महदी है और अस्फ़हान भी हिजाज़ से पूरब की ओर है। इसलिए सिद्ध हुआ कि महदी पूरब में ही पैदा होगा या यह कि फ़ारसी मूल का होगा। (इसी से)

अपमान करने वाले और सचमुच शैतानों के भाई यदा-कदा सच्चे स्वप्न देख लेते हैं और कुछ कश्फ़ी दृश्य भी एक विद्युत की तीव्रता की भांति सम्पूर्ण आयु में कभी उनको दिखाए जाते हैं★। तो वास्तव में एक सरसरी नज़र से इस प्रकार के अवलोकनों से एक नादान के हृदय में समस्त नबियों के बारे में आरोप जन्म लेगा कि जब उनके समान अन्य लोगों पर भी कुछ ग़ैब के मामले खोले जाते हैं तो नबियों की इसमें कौन सी श्रेष्ठता हुई?✳ ऐसा भी होता है कि कभी एक सौ भाग्यशाली नेक चलन व्यक्ति किसी मामले में कोई जटिल स्वप्न देखता है या नहीं देखता परन्तु उसी रात एक पापी बदमाश, गन्दगी खाने वाले को साफ और खुला-खुला स्वप्न दिखाई देता है और वह सच्चा भी निकलता है और इस गुप्त राज़ का हल करना सामान्य लोगों की तबियतों पर कठिन हो जाता है और बहुत से लोग इस से ठोकर खाते हैं इसलिए ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए कि विशेष लोगों के ज्ञान और कश्फ़ी दृश्यों में अन्तर यह है कि विशेष लोगों का दिल तो

★हाशिया :- यह अद्भुत आश्चर्यजनक बात है कि कुछ वैश्याएं भी जो दुनिया में बहुत अपवित्र फ़िर्क़ा हैं सच्चे स्वप्न देखा करती हैं तथा कुछ अपवित्र पापी, व्यभिचारी और कंजरों से अधिक निकृष्ट, धर्महीन, नास्तिक जो खान-पान में धर्मानुसार वैध होने के रंग में जीवन व्यतीत करते हैं अपने स्वप्न वर्णन किया करते हैं और एक दूसरे को कहा करते हैं कि भाई मेरी तबियत तो कुछ ऐसी बनी है कि मेरा स्वप्न कभी ग़लत नहीं होता और इस लेखक को इस बात का अनुभव है कि प्राय: अपवित्र स्वभाव और बहुत गन्दे एवं अपवित्र, बेशर्म, ख़ुदा से न डरने वाले और हराम खाने वाले पापी भी सच्चे स्वप्न देख लेते हैं और यह बात अदूरदर्शियों को बहुत आश्चर्य और परेशानी में डालती है और इस का वही उत्तर है जो मैंने मूल इबारत और हाशिए में लिखा है। (इसी से)

✳हाशिया :- चूंकि प्रत्येक इन्सान के अन्दर हदीस كل مولود يولد على فطرة الاسلام के अनुसार एक कश्फ़ी प्रकाश भी छुपा है ताकि यदि ईमान या ईमान का श्रेष्ठपद मुक़द्दर है तो उस समय वह प्रकाश चमत्कार के तौर पर ईमान के लक्षण दिखाए। इसलिए कभी संयोग हो जाता है कि कुफ्र और पाप के युग में भी बिजली की चमक की तरह उस प्रकाश का कोई कण प्रकट हो जाता है क्योंकि वह स्वभाव में पोषण के कारण इन्सानियत की अमानत है और मूर्ख सोचता है कि जैसे मुझे अब्दाल और अक़्ताब का पद प्राप्त है। इसलिए तबाह हो जाता है। (इसी से)

ख़ुदा तआला की चमकारों का द्योतक हो जाता है और जैसा कि सूर्य प्रकाश से भरा हुआ है ज्ञानों एवं परोक्ष के रहस्यों से भर जाते हैं। और जिस प्रकार समुद्र अपने पानियों की अधिकता के कारण अपार है इसी प्रकार वे भी अपार होते हैं। और जिस प्रकार वैध नहीं कि एक गन्दे सड़े हुए तालाब को केवल थोड़े से पानी के जमा होने के कारण समुद्र का नाम दे दें इसी प्रकार वे लोग जो यदा-कदा कभी सच्चा स्वप्न देख लेते हैं तो उनके बारे में नहीं कह सकते कि वे नऊज़ुबिल्लाह उन ख़ुदाई ज्ञानों के समुद्र से कुछ तुलना रखते हैं और ऐसा विचार करना इसी प्रकार का व्यर्थ एवं निरर्थक है कि जैसे कोई व्यक्ति केवल मुंह, आंख और दांत देख कर सुअर को इन्सान समझ ले या बन्दर को मनुष्य की तरह समझे। समस्त दारोमदार परोक्ष के ज्ञानों की प्रचुरता, दुआ की स्वीकारिता, परस्पर प्रेम और वफ़ादारी, मान्यता और प्रिय होने पर है अन्यथा मध्य से अधिकता और कमी का अन्तर हटा कर एक जुगनू को भी कह सकते हैं कि वह भी सूर्य के बराबर है, क्योंकि प्रकाश उसमें भी है। दुनिया की जितनी चीज़ें हैं वे आपस में कुछ समानता अवश्य रखती हैं। कुछ सफेद पत्थर तिब्बत के पर्वतों की ओर से मिलते है और ग़ज़नी की सरहदों की ओर से भी लाते हैं। अतएव मैंने भी ऐसे पत्थर देखे हैं वे हीरे से अत्यधिक समानता रखते और उसी प्रकार चमकते हैं। मुझे याद है कि बहुत कम समय गुज़रा है कि एक व्यक्ति काबुल की ओर का रहने वाला पत्थर के कुछ टुकड़े क़ादियान में लाया और प्रकट किया कि वे हीरे के टुकड़े हैं क्योंकि वे पत्थर बहुत चमकीले और उज्जवल थे और उन दिनों मद्रास से एक निष्कपट दोस्त जो अत्यन्त निष्कपटता रखते हैं अर्थात् बिरादरम सेठ अब्दुर्रहमान साहिब ताजिर मद्रास क़ादियान में मेरे पास थे उनको वे पसन्द आ गए और उनकी क़ीमत में पांच सौ रुपए देने को तैयार हो गए और पच्चीस रुपए या कुछ कम या अधिक दे भी दिए और फिर संयोग से मुझ से मशवरा मांगा कि मैंने यह सौदा किया है आप की क्या राय है? मैं यद्यपि उन हीरों की वास्तविकता और पहचान से अपरिचित था परन्तु रूहानी हीरे जो दुनिया में दुर्लभ होते हैं अर्थात् पवित्र हालत के वली जिन के नाम पर कई झूठे

पत्थर अर्थात् झूठ बोलने वाले लोग अपनी चमक दमक दिखा कर लोगों को बरबाद करते हैं इस जौहर को पहचानने में मुझे महारत थी। इसलिए मैंने इस कला को यहां प्रयोग किया और इस दोस्त को कहा कि जो कुछ आप ने दिया वह तो वापस लेना कठिन है परन्तु मेरी राय यह है कि पांच सौ रुपए देने से पूर्व ये पत्थर किसी अच्छे जौहरी को दिखा लें। यदि वास्तव में हीरे हुए तो यह रुपया दे दें। अत: वे पत्थर मद्रास में एक जौहरी के पास पहचान करने के लिए भेजे गए और मालूम किया गया कि इनका मूल्य क्या है। फिर शायद दो सप्ताह के अन्दर ही वहां से उत्तर आ गया कि इनका मूल्य कुछ पैसे है अर्थात् ये पत्थर हैं हीरे नहीं हैं। तो जिस प्रकार इस भौतिक संसार में एक निम्न स्तर की वस्तु को किसी आंशिक बात में उच्च स्तर की वस्तु से समानता होती है इसी प्रकार रूहानी मामलों में भी हो जाया करता है। रूहानी जौहरी हों या भौतिक जौहरी वे झूठे पत्थरों को इस प्रकार से पहचान कर लेते हैं कि जो सच्चे जवाहरात की बहुत सी विशेषताएं हैं उनकी दृष्टि से इन पत्थरों को परखते हैं अन्तत: झूठ खुल जाता है और सच प्रकट हो जाता है। स्पष्ट है कि सच्चे हीरों में केवल एक चमक ही तो विशेषता नहीं है और भी तो बहुत सी विशेषताएं होती हैं। तो जब एक जौहरी वे समस्त विशेषताएं दृष्टिगत रख कर झूठे पत्थरों की परीक्षा करता है तो उनको तुरन्त हाथ से फेंक देता है। इसी प्रकार ख़ुदा के वली जो ख़ुदा तआला से प्रेम, मुब्बत का संबंध रखते हैं वे केवल भविष्यवाणियों तक अपनी खूबियों को सीमित नहीं रखते उन पर वास्तविकताएं और अध्यात्म ज्ञान खुलते हैं और शरीअत की सूक्ष्म बातें और रहस्य तथा मिल्लत की सच्चाई के उत्तम तर्क उनको प्रदान किए जाते हैं और रहस्य तथा मिल्लत की सच्चाई के उत्तम तर्क उनको प्रदान किए जाते हैं और चमत्कार के तौर पर उन के हृदय पर क़ुर्आन के सूक्ष्म ज्ञान और ख़ुदा की किताब की अच्छी बातें उतारी जाती हैं और वे विलक्षण रहस्यों और सूक्ष्म क़ुर्आनी ज्ञानों तथा आकाशीय विद्याओं के वारिस किए जाते हैं जो बिना माध्यम बख़्शिश के तौर पर प्रियजनों को मिलते हैं और उन्हें विशेष प्रेम प्रदान किया जाता है और उनको इब्राहीमी श्रद्धा एवं निष्ठा दी

जाती है और रूहुल क़ुदुस की छाया उनके हृदयों पर होती है, वे ख़ुदा के हो जाते हैं और ख़ुदा उनका हो जाता है, उनकी दुआएं विलक्षण तौर पर निशान दिखाती हैं, उनके लिए ख़ुदा स्वाभिमान रखता है और हर मैदान में अपने विरोधियों पर विजय पाते हैं। उनके चेहरों पर ख़ुदा के प्रेम का प्रकाश चमकता है। उनके दरवाज़े और दीवार पर ख़ुदा की रहमत (दया) बरसती हुई मालूम होती है, वे प्यारे बच्चे की तरह ख़ुदा की गोद में होते हैं, ख़ुदा उनके लिए उस शेरनी से अधिक क्रोध करता है जिस के बच्चे को कोई लेने का इरादा करे, वे गुनाह से मासूम, वे शत्रुओं के आक्रमणों से मासूम, वे शिक्षा की ग़लतियों से भी मासूम होते हैं। ख़ुदा अद्भुत तौर पर उनकी दुआएं सुनता है और अद्भुत तौर पर उनकी स्वीकारिता प्रकट करता है, यहां तक कि समय के बादशाह उनके दरवाज़ों पर आते हैं, प्रतापी ख़ुदा का तंबू उनके दिलों में होता है और उनको एक ख़ुदाई रोब प्रदान किया जाता है और बादशाही निःस्पृहता उन के चेहरों से प्रकट होती है वे दुनिया तथा दुनिया वालों को एक मरे हुए कीड़े से भी बहुत कम समझते हैं। केवल एक को जानते हैं और उस एक के भय के नीचे हरदम पिघलते रहते हैं। दुनिया उन के पैरों पर गिरी जाती है जैसे ख़ुदा इन्सान का लिबास पहन कर प्रकट होता है और दुनिया का प्रकाश और इस अस्थायी संसार का स्तंभ होते हैं, वही सच्चा अमन स्थापित करने के शहज़ादे और अंधकारों को दूर करने के सूर्य होते हैं, वे गुप्त से गुप्त और परोक्ष से परोक्ष होते हैं, कोई उनको पहचानता नहीं परन्तु ख़ुदा, और कोई ख़ुदा को पहचानता नहीं परन्तु वे। वे ख़ुदा नहीं है परन्तु नहीं कह सकते कि ख़ुदा से अलग हैं, वे अनश्वर नहीं है परन्तु नहीं कह सकते कि कभी मरते हैं। तो क्या एक अपवित्र और दुष्ट आदमी जिस का दिल गन्दा, विचार गन्दे, जीवन गन्दा है उन से समानता पैदा कर सकता है? कदापि नहीं। किन्तु वही समानता जो कभी एक चमकीले पत्थर को हीरे के साथ हो जाती है ख़ुदा के वली जब दुनिया में प्रकट होते हैं तो उन की सामान्य बरकतों के कारण आकाश से एक प्रकार का रूहानियत का प्रसार होता है और स्वभावों में तेज़ी पैदा हो जाती है और जिन के दिल और दिमाग़ सच्चे स्वप्नों से कुछ

अनुकूलता रखते हैं उनको सच्चे स्वप्न आने आरंभ हो जाते हैं परन्तु पर्दे के पीछे यह सब उन्हीं के मुबारक अस्तित्व का प्रभाव होता है। जैसा कि उदाहरणतया जब वर्षा के दिनों में पानी बरसता है तो कुओं का पानी भी बढ़ जाता है और हर प्रकार की हरियाली निकलती है। परन्तु यदि आकाश का पानी कुछ वर्षों तक न बरसे तो कुओं का पानी भी सूख जाता है। तो वे लोग वास्तव में आकाश का पानी होते हैं और उन के आने से पृथ्वी के पानी भी अपनी बाढ़ दिखाते हैं और यदि ख़ुदा तआला चाहता तो इन पृथ्वी के पानियों को समाप्त कर देता परन्तु इस मामले में कि क्यों दूसरे लोगों को भी उनके समय में सच्चे स्वप्न आते हैं या कभी कश्फ़ी दृश्य होते हैं। भेद यह है कि यदि सामान्य लोगों को आन्तरिक कश्फ़ों से कुछ भी भाग न मिलता और फिर जब अल्लाह तआला अपने रसूलों, नबियों तथा मुहद्दिसों को संसार में भेजता और वे बड़ी-बड़ी गुप्त घटनाओं, भौतिक संसार और परोक्ष की खबरें देते तो लोगों के दिल में यह गुमान गुज़र सकता था कि शायद वे झूठे हैं या कुछ बातों में नक्षत्रों इत्यादि से सहायता लेते हैं या बीच में कोई और धोखा है। तो ख़ुदा ने इन सन्देहों को दूर करने के लिए सामान्य लोगों में रसूलों और नबियों की प्रजाति का एक माद्द: (तत्त्व) रख दिया है और नुबुव्वत की बहुत सी चीज़ों तथा बहुत सी अनिवार्य विशेषताओं में से एक विशेषता में उनको एक सीमा तक शामिल कर दिया है ताकि वे लोग ख़ुदा के नबियों, मामूरों और मुल्हमों के सत्यापन के लिए निकट हो जाएं और दिलों में समझ लें कि ये बातें वैध और संभव हैं तभी तो हम भी किसी सीमा तक भागीदार हैं और यदि ख़ुदा तआला उनको इतना भी माद्द: प्रदान न करता तो सामान्य लोगों पर नुबुव्वत का मामला समझना कठिन हो जाता और इनके स्वभाव इक़रार की अपेक्षा इन्कार से अधिक निकट होते। परन्तु अब समस्त सामान्य लोगों में यहां तक कि पापियों और दुष्कर्मियों में भी परोक्ष के ज्ञान का एक माद्द: है। इसलिए यदि वे पक्षपात को काम में न लाएं तो नुबुव्वत की वास्तविकता को बहुत शीघ्र समझ सकते हैं और इस बात में ख़तरा बहुत कम है कि यदि कोई ऐसा विचार करें कि मेरा अमुक स्वप्न भी सच्चा निकला और अमुक अवसर

पर मुझे कश्फ़ी दृश्य हुआ। कारण यह कि इन्सान जब नुबुव्वत और मुहद्दिसियत की सम्पूर्ण ख़ूबियां और उनके माशूक़ियत के मुक़ाम से भली भांति अवगत होगा तो बहुत आसानी से अपनी इस ग़लती पर सतर्क हो जाएगा। जैसा कि वह व्यक्ति जिसने कभी समुद्र नहीं देखा और अपने और अपने गांव के एक थोड़े से पानी को समुद्र के बराबर तथा उसकी अद्भुत चीज़ों से बराबर समझते हैं जब उसका गुज़र समुद्र पर होगा और उसकी वास्विकता पर सूचना पाएगा तो किसी नसीहत कर्ता की नसीहत के बिना स्वयं समझ जाएगा कि मैं एक बड़ी ग़लती के भंवर में ग्रस्त था परन्तु यदि ख़ुदा न करे इन्सानों की यह हालत होती कि उन में ग़ैबी मामलों के वरदान का कुछ भी माद्दः अमानत न रखा जाता और न यह ज्ञान होता कि कभी किसी ओर से परोक्ष के ज्ञान और खबरों का वरदान भी हुआ करता है तो वे उस व्यक्ति के समान होते जो जन्मजात अंधा और बहरा हो। तो इस स्थिति में समस्त नबियों को प्रचार में असफलता होती। उदाहरणतया जिस अंधे ने कभी प्रकाश नहीं देखा उसे किस प्रकार समझा सकते हैं कि प्रकाश क्या चीज़ है।

فتدبر ولا تکن من العمین واسئل رحم اللہ لیفتح عینک وھوارحم الراحمین

हम स्पष्ट तौर पर लिख आए हैं कि यह बात सर्वथा असंभव है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित आकाश पर चले गए हैं क्योंकि इसका सबूत न तो पवित्र क़ुर्आन से मिलता है और न हदीस से और न बुद्धि इस पर विश्वास कर सकती है अपितु क़ुर्आन, हदीस और बुद्धि तीनों इस को झुठलाने वाले हैं, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन ने खोल कर वर्णन कर दिया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए हैं और मेराज की हदीस ने हमें बता दिया है कि वह मृत्यु प्राप्त नबियों की रूहों में जा मिले हैं और इस संसार से पूर्णतया अलग हो गए और बुद्धि हमें बता रही है कि इस नश्वर शरीर के लिए यह ख़ुदा की सुन्नत नहीं कि आकाश पर चला जाए और शरीर के साथ जीवित होने के बावजूद खाने-पीने तथा जीवन की समस्त आवश्यकताओं से पृथक होकर उन रूहों में जा मिले जो

मृत्यु का प्याला पीकर दूसरे संसार में पहुंच गई हैं। बुद्धि के पास इस का कोई नमूना नहीं। फिर इसके अतिरिक्त जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आकाश पर चढ़ने की आस्था पवित्र क़ुर्आन के बयान के विपरीत है। ऐसा ही उनके आकाश से उतरने की आस्था भी क़ुर्आन के बयान से पूर्णतया पृथकता रखती है। क्योंकि पवित्र क़ुर्आन जैसा कि आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ (अलमाइदह-118) और आयत قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आले इमरान-145) में हज़रत ईसा को मार चुका है। ऐसा ही आयत اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (अलमाइदा आयत 4) और आयत وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ(अलअहज़ाब-41)में स्पष्ट तौर पर नुबुव्वत को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर समाप्त कर चुका है और स्पष्ट शब्दों में कह चुका है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अंबिया हैं जैसा कि फ़रमाया है لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ परन्तु वे लोग जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को दोबारा दुनिया में वापस लाते हैं उनकी यह आस्था है कि वे नियमानुसार अपनी नुबुव्वत के साथ दुनिया में आएंगे और निरन्तर पैंतालीस वर्ष तक उन पर जिब्रील अलैहिस्सलाम नुबुव्वत की वह्यी लेकर उतरता रहेगा। अब बताओ कि उनकी आस्था के अनुसार खत्मे नुबुव्वत और खत्मे वह्यी-ए-नुबुव्वत कहां शेष रही अपितु मानना पड़ा कि ख़ातमुल अंबिया हज़रत ईसा हैं। अत: नवाब मौलवी सिद्दीक़ हसन खां साहिब ने अपनी पुस्तक हुजजुलकिरामा के पृष्ठ 432 में यही लिखा है कि यह आस्था ग़लत है कि मानो हज़रत ईसा उम्मती बन कर आएंगे बल्कि वह नियमानुसार नबी होंगे और उन पर नुबुव्वत की वह्यी उतरेगी और स्पष्ट है कि जब वह अपनी नुबुव्वत पर स्थापित रहे और नुबुव्वत की वह्यी भी पैंतालीस वर्ष तक उतरती रही तो फिर बुख़ारी की यह हदीस कि امامکم منکم उन पर कैसे चरितार्थ होगी और यह विचार कि यहां इमाम से अभिप्राय महदी है प्रथम तो कलाम का अगला-पिछला प्रसंग इसके विरुद्ध है क्योंकि वह हदीस मसीह मौऊद के पक्ष में है और उसी की इस हदीस के सर पर प्रशंसा है। इसके अतिरिक्त विरोधी उलेमा के

कथनानुसार महदी तो केवल कुछ वर्ष रह कर मर जाएगा और फिर ईसा पैंतालीस वर्ष निरन्तर दुनिया में रहेगा हालांकि न वह उम्मती है और न क़ुर्आन की वह्यी का अनुयायी है अपितु उस पर स्वयं नुबुव्वत की वह्यी उतरती है। तो सोचो और विचार करो कि ऐसी आस्था रखना धर्म में कुछ कम खराबी नहीं डालती बल्कि सम्पूर्ण इस्लाम को अस्त-व्यस्त करती है और कितना अन्याय है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को स्वयं आकाश पर चढ़ाना और स्वयं आकाश से उतारना। हालांकि क़ुर्आन न उनके आकाश पर चढ़ने का सत्यापानकर्ता है और न उनके उतरने को वैध रखने वाला क्योंकि क़ुर्आन तो ईसा को मार कर पृथ्वी में दफ़्न करता है। फिर हज़रत मसीह का पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चढ़ाना क़ुर्आन से क्यों कर सिद्ध हो सके? क्या मुर्दे आकाश पर चढ़ेंगे? अतः क़ुर्आन के विरुद्ध हज़रत ईसा को आकाश पर चढ़ाना यह पवित्र क़ुर्आन को स्पष्ट तौर पर झुठलाना है। ऐसा ही फिर उनको नुबुव्वत और नुबुव्वत की वह्यी के साथ पृथ्वी पर उतारना यह भी स्पष्ट तौर पर ख़ुदा के कलाम के विषय के विरुद्ध है क्योंकि नुबुव्वत की वह्यी के समाप्त होने के खण्डन का कारण है तो फिर अफ़सोस हज़ार अफ़सोस कि इस निरर्थक हरकत से क्या लाभ हुआ कि केवल अपनी हुकूमत से हज़रत मसीह को आकाश पर चढ़ाया और फिर अपने ही विचार से किसी समय उतरना भी स्वीकार कर लिया। यदि हज़रत मसीह वास्तव में पृथ्वी पर उतरेंगे और पैंतालीस वर्ष तक जिब्राईल नुबुव्वत की वह्यी ले कर उन पर उतरता रहेगा तो क्या ऐसी आस्था से इस्लाम धर्म शेष रह जाएगा? और आंहज़रत की खत्मे नुबुव्वत और क़ुर्आन की खत्मे वह्यी पर कोई दाग़ नहीं लगेगा? कुछ मुसलमानों में से तंग आकर और प्रत्येक पहलू से निरुत्तर होकर यह भी कहते हैं कि किसी मसीह के आने की आवश्यकता ही क्या है। ये सब व्यर्थ डींगें हैं। क़ुर्आन ने कहां लिखा है कि कोई मसीह भी दुनिया में आएगा और फिर कहते हैं कि यह दावा सर्वथा व्यर्थ बातों और अंहकार से भरा हुआ है। हदीसों की सैकड़ों बातें सच्ची नहीं हुईं तो फिर कैसे विश्वास करें कि किसी मसीह का आना कोई सच बात है बल्कि ऐसा दावा करने वाले एक तुच्छ सी

बात हाथ में लेकर अपनी ओर लोगों को लौटाना चाहते हैं। हालांकि उन का जीवन अच्छा नहीं है। मक्र, छल, झूठ, धोखेबाज़ी, अंहकार, गालियां, कामवासना, व्यभिचार, वचन भंग करना, आत्मप्रशंसा, दिखावा, पापी जीवन उनकी पद्धति है। और फिर कहते हैं कि हम मसीह हैं। ऐसे मसीहों से अमुक-अमुक व्यक्ति हज़ार गुना अच्छे हैं जिनका जीवन पवित्र और जिन का काम छल, प्रपंच, झूठ, दिखावा और दुराचार नहीं। दिल और जीभ और मामले के साफ हैं। कोई अंहकारपूर्ण दावा नहीं करते। हालांकि वे ऐसे व्यक्ति से कई गुना अच्छे हैं और सही तौर पर ख़ुदा का इल्हाम पाते हैं। उनकी कई भविष्यवाणियां हम ने अपनी आंखों से पूरी होती देखी हैं परन्तु इस व्यक्ति की एक भी भविष्यवाणी सच्ची नहीं निकली और लोग बड़े ईमानदार हैं कोई दावा नहीं करते परन्तु यह व्यक्ति तो मक्कार, महा झूठा, झूठ गढ़ने वाला अकारण दावेदार, वचन भंग करने वाला, हराम माल खाने वाला, लोगों का अकारण रुपया दबाने वाला, बहुत बड़ा बेईमान है और उन ईमानदार मुल्हमों पर ख़ुदा ने अपने इल्हामों के द्वारा प्रकट कर दिया है कि वास्तव में यह व्यक्ति काफ़िर बल्कि सख़्त काफ़िर, फ़िरऔन और हामान से अधिक बुरा और कुछ अंत:पवित्र मुल्हमों को ख़ुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दिखाई दिए तो आपने फ़रमाया कि यह मुफ़्तरी, महा झूठा और दज्जाल है तथा क़त्ल योग्य और मैं उसका शत्रु हूं शीघ्र तबाह कर दूंगा। एक बुज़ुर्ग अपने सम्माननीय पीर के एक स्वप्न में जिसको उस युग का क़ुतुबुल अक़्ताब (क़ौम के सरदारों के सरदार) और इमामुल अब्दाल (वलियों के पेशवा) समझते हैं यह वर्णन करते हैं कि उन्होंने ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वप्न में देखा कि आप एक तख़्त पर बैठे हुए थे और आपके चारों ओर समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान के उलेमा जैसे बड़े सम्मानपूर्वक कुर्सियों पर बैठाए गए थे और तब यह व्यक्ति जो मसीह मौऊद कहलाता है आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आ खड़ा हुआ जो अत्यन्त कुरूप और मैले कुचैले कपड़ों में था। आप ने फ़रमाया यह कौन है? तब एक ख़ुदाई विद्वान उठा (शायद महमूदशाह वाइज़ या मुहम्मद अली बोपड़ी) और उसने कहा कि हे हज़रत यही व्यक्ति मसीह मौऊद होने का दावा करता है। आप ने फ़रमाया यह तो दज्जाल

है। तब आपके फ़रमाने से उसी समय उसके सर पर जूते लगने आरंभ हुए जिन का कुछ हिसाब और अनुमान न रहा और आप ने उन समस्त उलेमा-ए-पंजाब और हिन्दुस्तान की बहुत प्रशंसा की जिन्होंने इस व्यक्ति को काफ़िर और दज्जाल ठहराया तथा आप बार-बार प्यार करते और कहते थे कि ये मेरे रब्बानी उलेमा हैं जिनके अस्तित्व से मुझे गर्व है। यहां कुर्सी पर बैठने का क्रम का कुछ वर्णन नहीं किया।★ परन्तु मैं सोचता हूं कि उसका क्रम शायद यह होगा कि वह अदृश्य नूरानी अस्तित्व जिसने स्वयं को अपनी अनादि शक्ति के कारण स्वप्न में प्रकट किया था कि मैं मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हूं, जो एक सोने के तख़्त पर विराजमान था। उसके इस सोने के तख़्त के निकट मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी की कुर्सी होगी। साथ ही मियां अब्दुल हक़ ग़ज़नवी की और उसके पहलू में मौलवी अब्दुल जब्बार साहिब की कुर्सी और उस कुर्सी से मिली हुई एक और कुर्सी जिस पर ज़ीनत (शोभा) प्रदान करने वाले मौलवी अब्दुल वाहिद साहिब ग़ज़नवी थे और कुछ फासले से मौलवी रुसुल बाबा अमृतसरी की कुर्सी थी और इन दोनों कुर्सियों के मध्य एक और कुर्सी थी जिसका अन्दर से कुछ और रंग था बाहर से कुछ और। थोड़ी सी हरकत से भी हिल जाती थी तथा कुछ टूटी हुई भी थी। यह कुर्सी मौलवी अहमदुल्लाह साहिब अमृतसरी की थी और इस कुर्सी के साथ ही एक छोटी सी बेंच पर मियां चट्टू लाहौरी बैठे थे जो उसी दरबार के भागीदार थे, और मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी की कुर्सी के पास एक और कुर्सी थी जिस पर एक बुडढ़ा नव्वे वर्षीय बैठा हुआ था जिसे लोग नज़ीर हुसैन कहते थे। उसकी कुर्सी ने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को एक बच्चे की तरह गोद में लिया हुआ था। फिर इसके बाद मौलवी मुहम्मद और मौलवी अब्दुल अज़ीज़ लुधियानवी की कुर्सियां थीं जिन के अन्दर से बड़े ज़ोर के साथ आवाज़ आ रही थी कि ये पंजाब के समस्त

★**हाशिया :-** ये समस्त लोग वे हैं जिन्होंने मुझे गालियां देना स्वयं पर अनिवार्य कर रखा है और अब उनमें से कुछ मेरे अपमान के इरादे से झूठे स्वप्न अपनी ओर से बनाते हैं और फिर उनको प्रकाशित करते हैं। इसी से

मौलवियों में से काफिर कहने में बड़े बहादुर हैं और पैग़म्बर साहिब इस आवाज़ से बहुत प्रसन्न हो रहे थे और बार-बार प्यार से उनके हाथ और मौलवी मुहम्मद हुसैन के हाथ चूम कर कह रहे थे कि ये हाथ मुझे प्यारे मालूम होते हैं, जिन्होंने अभी थोड़े दिनों में मेरी उम्मत में से तीस हज़ार आदमी का नाम काफ़िर और दज्जाल रखा और फ़रमाते थे कि यह बहुत बड़ी ग़लती थी कि लोगों ने ऐसा समझा हुआ था कि यदि सौ में से निन्न्यानवे कुफ्र के लक्षण पाए जाएं और एक ईमान का निशान पाया जाए तो फिर उस को मोमिन समझो बल्कि सच बात यह है कि जिस व्यक्ति में निन्न्यानवे निशान ईमान के पाए जाएं और एक निशान कुफ्र का समझा जाए या गुमान किया जाए या बिना छान-बीन प्रसिद्धि दी जाए तो उसे निस्सन्देह काफ़िर समझना चाहिए यह फ़रमाया और फिर मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के हाथों को चूमा और कहा कि यह रब्बानी आलिम है जिस ने मेरी इस इच्छा को समझा। तब मौलवी मुहम्मद अली बोपड़ी खड़ा हुआ और कहा कि मैं तो सब से अधिक मस्जिदों, गलियों, कूचों तथा लोगों के घरों में इस व्यक्ति को जो कहते है कि मैं मसीह हूं गालियां दिया करता हूं और लानत भेजा करता हूं और हर समय मेरा काम है कि हर मज्लिस में लोगों को इस व्यक्ति का अपमान, तिरस्कार, और लानत व निन्दा करने के लिए कहता रहता हूं और हमेशा इन्हीं कामों के लिए सफर करके भी प्रेरणा देता रहता हूं और कोई गाली नहीं जो मैंने उठा नहीं रखी और कोई अपमान नहीं जो मैंने नहीं किया। तो मेरा क्या प्रतिफल है। तब उस पैग़म्बर साहिब ने बहुत प्यार के जोश से उठ कर बोपड़ी को अपने गले लगा लिया और कहा कि तू मेरा बेटा है तूने मेरी इच्छा को समझा। अत: जैसा कि हज़रत स्वप्न देखने वाले वर्णन करते हैं पंजाब के समस्त मौलवियों की कुर्सियां उस दरबार में मौजूद थीं और प्रत्येक बहुमूल्य लिबास पहने हुए नवाबों की भांति बैठा था और वह पैग़म्बर साहिब हर समय उन का हाथ चूमते थे कि ये हैं मेरे प्यारे उलेमा-ए-रब्बानी, पृथ्वी पर समस्त लोगों में से उत्तम और फिर आगे चल कर एक और कुर्सी थी उस पर एक और मौलवी साहिब कुर्सी पर कुछ छुप कर बैठे हुए थे और आवाज़ आ रही थी कि

यही हैं ख़लीफ़ा शेख बटालवी मुहम्मद हसन लुधियानवी तथा उन के साथ एक और कुर्सी थी और लोग कहते थे कि यह मौलवी वाइज़ महमूदशाह की कुर्सी है जो किसी अनुकूलता से मौलवी मुहम्मद हसन के साथ बिछाई गई सबसे पीछे एक अंधा वजीराबादी था जिसे अब्दुल मन्नान कहते थे और उसकी कुर्सी से انا المكفر की ज़ोर की आवाज़ आ रही थी। तो यह स्वप्न है जिसमें इन समस्त कुर्सी पर बैठे मौलवियों का वर्णन है परन्तु यह कुर्सियों का क्रम मेरी ओर से है परन्तु स्वप्न में यह भाग सम्मिलित है कि पंजाब के उलेमा इस पैग़म्बर साहिब के दरबार में बड़े सम्मानपूर्वक कुर्सियों पर बिठाए गए थे और समस्त आलिम अमृतसरी, बटालवी, लाहौरी, वज़ीराबादी, बोपड़ी तथा गोलड़वी इत्यादि इस दरबार में कुर्सियों पर शोभा बढ़ा रहे थे और पैग़म्बर साहिब ने मेरी तक्फ़ीर, कष्ट तथा अपमान के कारण उन से बड़ा प्यार व्यक्त किया तथा बड़े प्रेम एवं सम्मानपूर्वक व्यवहार किया था जैसे उन पर न्योछावर होते जाते थे। यह स्वप्न का निबंध है जो पत्र में मेरी ओर लिखा गया था जिसके बारे में वर्णन करने वाला एक बड़ा बुज़ुर्ग और शुद्धाचारी है जिस को दिखलाया कि ये सब मौलवी पंजाब और हिन्दुस्तान के अक़्ताब और अब्दाल के दर्जे पर हैं। चूंकि यह पत्र संयोग से गुम हो गया है और इस समय मुझे नहीं मिला। इसलिए में लेखक की सेवा में खेद करता हूं कि यदि उनके स्वप्न का कोई भाग जो पंजाब के मौलवियों की महान प्रतिष्ठा में है या उस दरबार में मुझे जो दण्ड दिया गया मेरे लिखने से रह गया हो तो क्षमा करें और मैंने यथाशक्ति इस स्वप्न के किसी भाग को छोड़ा नहीं। क्या यह सब ऐतराज़ है जो मुझ पर किया गया है और मुझे महा झूठा, दज्जाल, काफ़िर, मुफ़्तरी, पापी, धोखेबाज़, कामचोर, दिखावा करने वाला, अभिमानी, झूठी बुराई करने वाला, गालियां देने वाला बता कर फिर जैसे उन बुज़ुर्ग के इस स्वप्न के साथ इन समस्त आरोपों का सबूत देकर दावा क़ायम करने से निवृत्ति प्राप्त कर ली गयी है और साथ ही यह भी कहते हैं कि केवल यह कश्फ़ और स्वप्न ही तुम्हारे काफ़िर होने पर प्रमाण नहीं है बल्कि उम्मत का इज्मा भी तो हो गया। और इज्मा के यह मायने किए गए हैं कि गोलड़ा से

दिल्ली तक जितने मौलवी और गद्दी नशीन थे सब ने कुफ्र की गवाही दे दी। अब सन्देह क्या रहा, अपितु अब तो काफ़िर कहना और लानत भेजना श्रेणियों का कारण है और कुछ नफ़्ली इबादतों से उत्तम। उपरोक्त कथित ऐतराज़ में जितनी मेरी व्यक्तिगत बातों के बारे में आलोचना की गयी है मैं उस से नाराज़ नहीं हूं क्योंकि कोई रसूल और नबी और ख़ुदा का मामूर नहीं गुज़रा जिसके बारे में ऐसी आलोचनाएं नहीं हुईं। अभी एक पुस्तक आर्य लोगों ने प्रकाशित की है जिसमें नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मूसा को जैसे समस्त सृष्टि से निकृष्टतम ठहराया गया है और अदूरदर्शिता और पक्षपात से मुझ पर जितने ऐतराज़ किए जाते हैं वे सब उन पर किए गए हैं। यहां तक कि नऊज़ुबिल्लाह उनको वचन भंग करने वाला, झूठा और अत्याचारपूर्वक पराया माल हराम खाने वाला और छल करने वाला और धोखा देने वाला ठहराया है और कुछ आरोप मुझ से अधिक लगाए गए हैं। जैसे यह कि मूसा ने कई लाख दूध पीते बच्चे क़त्ल कराए। अब देखो जो मुझ पर ऐतराज़ करते हैं उनके हाथ में तो कुछ सबूत भी नहीं केवल कुधारणा से झूठ की गन्दगी है परन्तु जिन्होंने हज़रत मूसा पर ऐतराज़ किए वे तो अपने आरोपों के सबूत में तौरात की आयतें प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार बहुत से ऐतराज़ यहूदियों ने हज़रत मसीह के जीवन पर भी किए हैं जो अत्यन्त गन्दे और जिन का वर्णन करना उचित नहीं तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन और व्यक्तिगत परिस्थितियों पर जो-जो ऐतराज़ 'मीज़ानुलहक़' और पादरी इमादुद्दीन की पुस्तकों तथा 'उम्महातुल मोमिनीन' इत्यादि में किए गए हैं वे किसी से छुपे हुए नहीं। तो यदि इन ऐतराज़ों से कुछ परिणाम निकलता है तो केवल यही कि हमेशा अपवित्र विचार रखने वाले लोग ऐसे ही ऐतराज़ करते आए हैं और अल्लाह तआला भी चाहता था कि उनकी परीक्षा ले। इसलिए अपने पवित्र लोगों के कुछ कार्यों एवं मामलों की वास्तविकता उन पर छुपा दी ताकि उन की दुष्टता प्रकट करे और जो ऐतराज़ मेरी भविष्यवाणियों के बारे में किया है मैं उसका उत्तर पहले दे चुका हूं कि यह ऐतराज़ भी ख़ुदा की सुन्नत के अनुसार मुझ पर किया गया है। अर्थात् कोई नबी नहीं गुज़रा जिसकी कुछ

भविष्यवाणियों के बारे में ऐतराज़ नहीं हुआ। यह किस प्रकार का दुर्भाग्य है कि हमेशा से अंधे लोग ख़ुदा के स्पष्ट निशानों से लाभ नहीं उठाते रहे और यदि उन में कोई सरसरी तौर पर बारीक भविष्यवाणी इस प्रकार से प्रकटन में आई जिसे मोटी अक्लें समझ न सकीं तो वही ऐतराज़ योग्य बना लिया। जैसा कि पुस्तक तिरयाक़ुल क़ुलूब के पढ़ने वाले भली भांति जानते हैं कि आज तक मेरे हाथ पर ख़ुदा तआला के सौ से अधिक निशान प्रकट हुए जिन के संसार में कई लाख इन्सान गवाह हैं। परन्तु अंधे ऐतराज़ करने वालों ने उनकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और न उन से कुछ लाभ उठाया और जब एक-दो निशानों की अदूरदर्शिता या कृपणता या स्वाभाविक अन्धात्मा के कारण उनको समझ न आई तो इसके बिना कि कुछ सोचते समझते और विचार करते या मुझ से पूछते शोर मचा दिया। इसी प्रकार अबू जहल इत्यादि नबियों के विरोधी शोर मचाते रहे हैं। न मालूम इस अन्याय का ख़ुदा तआला को क्या उत्तर देंगे। इन लोगों का इसके अतिरिक्त अन्य कुछ आशय नहीं कि चाहते हैं कि ख़ुदा के प्रकाश को अपने मुंह की फूंकों से बुझा दें परन्तु वह बुझ नहीं सकता, क्योंकि ख़ुदा के हाथ ने उसे रोशन किया है। न मालूम कि मुझे झुठलाने के लिए इतने कष्ट क्यों उठा रहे हैं। यदि आकाश के नीचे मेरी तरह कोई और भी समर्थन प्राप्त है और मेरे इस मसीह मौऊद होने के दावे को झूठा कहता है तो वह क्यों मेरे मुकाबले पर मैदान में नहीं आता? स्त्रियों की तरह बातें बनाना यह तरीका किसे नहीं आता। हमेशा बेशर्म इन्कारी ऐसा ही करते हैं। परन्तु जबकि मैं मैदान में खड़ा हूं और तीस हज़ार के लगभग बुद्धिमान, उलेमा, फ़ुक़रा और प्रतिभाशाली इन्सानों की जमाअत मेरे साथ हैं और वर्षा की भांति आकाशीय निशान प्रकट हो रहे हैं तो क्या केवल मुंह की फ़ूंकों से यह ख़ुदाई सिलसिला बरबाद हो सकता है? कभी बरबाद नहीं होगा वही बरबाद होंगें जो ख़ुदा के प्रबंध को मिटाना चाहते हैं।

(1) ख़ुदा ने मुझे क़ुर्आन के माआरिफ़ प्रदान किए हैं।

(2) ख़ुदा ने मुझे क़ुर्आन की भाषा में चमत्कार प्रदान किया है।

(3) ख़ुदा ने मेरी दुआओं में सब से बढ़कर स्वीकारिता रखी है।

(4) ख़ुदा ने मुझे आकाश से निशान दिए हैं।

(5) ख़ुदा ने मुझे पृथ्वी से निशान दिए हैं।

(6) ख़ुदा ने मुझे वादा दे रखा है कि तुझ से प्रत्येक मुक़ाबला करने वाला पराजित होगा।

(7) ख़ुदा ने मुझे ख़ुशख़बरी दी है कि तेरे अनुयायी हमेशा अपनी सच्चाई के तर्कों में विजयी रहेंगे और दुनिया में प्राय: वे और उनकी नस्ल बड़े-बड़े सम्मान पाएंगे ताकि उन पर सिद्ध हो कि जो ख़ुदा की ओर से आता है वह कुछ हानि नहीं उठाता।

(8) ख़ुदा ने मुझे वादा दे रखा है कि क़यामत तक और जब तक कि दुनिया का सिलसिला समाप्त हो जाए मैं तेरी बरकतें प्रकट करता रहूंगा। यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेगे।

(9) ख़ुदा ने आज से बीस वर्ष पूर्व मुझे ख़ुशखबरी दी है कि तेरा इन्कार किया जाएगा और लोग तुझे स्वीकार नहीं करेंगे परन्तु मैं तुझे स्वीकार करूंगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से तेरी सच्चाई प्रकट करूंगा।

(10) ख़ुदा ने मुझे वादा दिया है कि तेरी बरकतों का प्रकाश दोबारा प्रकट करने के लिए तुझ से ही और तेरी ही नस्ल में से एक व्यक्ति खड़ा किया जाएगा जिसमें मैं रूहुल क़ुदुस की बरकतें फूंकूंगा। वह पवित्र बातिन और ख़ुदा से अत्यन्त पवित्र संबंध रखने वाला होगा और مظهر الحق والعلاء होगा मानो ख़ुदा आकाश से उतरा और ये पूरी दस हैं।

देखो वह समय चला आता है बल्कि निकट है कि ख़ुदा इस सिलसिले की बड़ी स्वीकारिता संसार में फैलाएगा और यह सिलसिला पूरब और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में फैलेगा और दुनिया में इस्लाम से अभिप्राय यही सिलसिला होगा। ये बातें इन्सान की बातें नहीं। यह उस ख़ुदा की वह्यी है जिस के आगे कोई बात अनहोनी नहीं।

अब मैं संक्षिप्त तौर पर अपने मसीह मौऊद और महदी माहूद होने के तर्कों को एक स्थान पर एकत्र कर के लिख देता हूं। शायद किसी सत्याभिलाषी

के काम आएं या कोई सीना सच को स्वीकार करने के लिए खुल जाए-

رب فاجعل فیھا من عندك برکۃ وتاثیرًا وھدایۃ وتنویرًا واجعل افئدۃ من الناس تھوی الیھا فانّك علٰی کلّ شیءٍ قدیر و بالاجابۃ جدیر۔ ربّنا اغفر لنا ذنوبنا وادفع بلایانا و کروبنا ونجّ من کلّ ھمٍّ قلوبنا و کفّل خطوبنا و کن معنا حیثما کنا یا محبوبنا واستر عوراتنا واٰمن روعاتنا۔ انّا توکّلنا علیك وفوّضنا الامر الیك انت مولانا فی الدنیا والاٰخرۃ وانت ارحم الرّاحمین۔ اٰمین۔ یاربّ العالمین۔

(1) पहला तर्क इस बात पर कि मैं ही मसीह मौऊद और महदी माहूद हूं यह है कि मेरा यह दावा महदी और मसीह होने का पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है। अर्थात् पवित्र क़ुर्आन अपने स्पष्ट और ठोस आदेशों से इस बात की अनिवार्य करता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मुकाबले पर जो मूस्वी ख़लीफ़ों को ख़ातमुल अंबिया हैं इस उम्मत में से भी एक अन्तिम ख़लीफ़ा पैदा होगा ताकि वह इसी प्रकार मुहम्मदी ख़िलाफत के सिलसिले का ख़ातमुल औलिया हो और मुजद्दिद वाली हैसियत और उससे संबंधित वस्तुओं में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समान हो और उसी पर मुहम्मदी सिलसिले की ख़िलाफ़त समाप्त हो जैसा कि हज़रत मसीह अलैहिस्सालाम पर मूस्वी सिलसिले की ख़िलाफ़त समाप्त हो गई है।

इस तर्क का विवरण यह है कि ख़ुदा तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मसील (समरूप) ठहराया है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास के बाद जो मसीह मौऊद तक ख़िलाफ़त का सिलसिला है इस सिलसिले से समान ठहराया है जैसा कि वह फ़रमाता है-

اِنَّآ اَرۡسَلۡنَآ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ اَرۡسَلۡنَآ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا (अलमुज़्ज़म्मिल - 16)

अर्थात् हम ने यह पैग़म्बर उसी पैग़म्बर के समान तुम्हारी ओर भेजा है कि जो फ़िरऔन की ओर भेजा गया था और यह इस बात का गवाह है कि तुम कैसी एक उद्दण्ड और अभिमानी क़ौम हो जैसा कि फ़िरऔन अहंकारी और उद्दण्ड था। यह तो वह आयत है जिस से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की समरूपता मूसा अलैहिस्सलाम से सिद्ध होती है। परन्तु जिस आयत से दोनों सिलसिलों अर्थात् मूस्वी सिलसिले की ख़िलाफ़त और मुहम्मदी सिलसिले की ख़िलाफ़त और मुहम्मदी सिलसिले की ख़िलाफ़त में समरूपता सिद्ध है। अर्थात् जिस से ठोस एवं निश्चित तौर पर समझा जाता है कि मुहम्मदी सिलसिले की नुबुव्वत के ख़लीफ़े मूस्वी सिलसिले की नुबुव्वत के ख़लीफ़ों के समान एवं समरूप हैं वह यह आयत है-

وَعَدَ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسۡتَخۡلِفَنَّہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ الخ (अन्नूर-56)

अर्थात् ख़ुदा ने उन ईमानदारों से जो नेक काम सम्पन्न करते हैं, वादा किया है कि उन में से पृथ्वी पर खलीफ़े नियुक्त करेगा उन्हीं खलीफ़ों के 'समान' जो उन से पहले हुए थे। अब जब हम 'समान' के शब्द को दृष्टिगत रख कर देखते हैं जो मुहम्मदी ख़लीफ़ों की मूस्वी ख़लीफ़ों से समरूपता अनिवार्य करता है तो हमें स्वीकार करना पड़ता है कि इन दोनों सिलसिलों के ख़लीफ़ों में समरूपता आवश्यक है। और समरूपता की पहली बुनियाद डालने वाला हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु है और समरूपता का अन्तिम नमूना प्रकट करने वाला वह मसीह, मुहम्मदी सिलसिले का खातमुल खुलफ़ा है जो मुहम्मदी ख़िलाफ़त के सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा है। सब से पहला खलीफ़ा जो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु है वह हज़रत यूशा बिन नून के मुकाबले पर उन का समरूप है जिसको ख़ुदा ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास के पश्चात् खिलाफ़त के लिए ग्रहण किया और सब से अधिक प्रवीणता की रूह उसमें फूंकी, यहां तक कि वे कठिनाइयां जो हज़रत मसीह के जीवित रहने की ग़लत आस्था की तुलना में ख़ातमुल खुलफ़ा के सामने आनी चाहिए थीं उन समस्त संदेहों को हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु ने पूर्ण सफाई

से हल कर दिया और समस्त सहाबा में से एक व्यक्ति भी ऐसा न रहा जिसका पहले अंबिया अलैहिस्सलाम के निधन पर विश्वास न हो गया हो अपितु समस्त बातों में सब सहाबा ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु का ऐसा ही आज्ञापालन किया जैसा कि हज़रत मूसा के निधन के पश्चात् बनी इस्राईल ने हज़रत यूशा बिन नून का आज्ञापालन किया था और ख़ुदा भी मूसा तथा यूशा बिन नून के नमूने पर जिस प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था और आप का सहायक और समर्थक था ऐसा ही अबू बक्र सिद्दीक़ का सहायक और समर्थक हो गया। वास्तव में ख़ुदा ने यशु बिन नून की तरह उसे ऐसा मुबारक किया कि कोई शत्रु उस का मुक़ाबला न कर सका और उसामा की सेना का अपूर्ण कार्य हज़रत मूसा के अपूर्ण कार्य से समानता रखता था हज़रत अबू बक्र के हाथ पर पूरा किया और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु की हज़रत यूश बिन नून के साथ एक और विचित्र समानता यह है कि हज़रत मूसा की मृत्यु की सूचना सर्वप्रथम हज़रत यूशा को हुई और ख़ुदा ने अविलम्ब उनके हृदय में वह्यी उतारी कि जो मूसा मर गया ताकि यहूदी हज़रत मूसा की मृत्यु के बारे में किसी ग़लती या मतभेद में न पड़ जाएं जैसा कि यशु की किताब अध्याय प्रथम से प्रकट है। इसी प्रकार सर्वप्रथम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर हज़रत अबू बक्र ने पूर्ण विश्वास व्यक्त किया और आपके मुबारक शरीर को चूम कर कहा कि तू जीवित भी पवित्र था और मृत्यु के बाद भी पवित्र है और फिर वे विचार जो आंहज़रत के जीवन के बारे में कुछ सहाबा के हृदय में उत्पन्न हो गए थे एक सार्वजनिक जल्से में पवित्र क़ुर्आन की आयत का संदर्भ देकर उन समस्त विचारों को दूर कर दिया और साथ ही उस ग़लत विचार का भी उन्मूलन कर दिया जो हज़रत मसीह के जीवित रहने के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों में पूर्ण रूप से विचार न करने के कारण कुछ लोगों के दिलों में पाया जाता था और जिस प्रकार हज़रत यूशा बिन नून ने धर्म के कट्टर शत्रुओं, झूठ बांधने वालों और उपद्रवियों को मार दिया था इसी प्रकार बहुत से उपद्रवी और झूठे पैग़म्बर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु के हाथ से मारे गए तथा जिस प्रकार हज़रत मूसा मार्ग में

ऐसे संवेदनशील समय में मृत्यु पा गए थे कि जब अभी बनी इस्राईल ने किन्आनी शत्रुओं पर विजय प्राप्त नहीं की थी और बहुत से उद्देश्य शेष थे ओर चारों और शत्रुओं का शोर था जो हज़रत मूसा की मृत्यु के पश्चात् एक ख़तरनाक युग पैदा हो गया था, अरब के कई फ़िर्के मुर्तद हो गए थे, कुछ ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया था और कई झूठे पैग़म्बर खड़े हो गए थे। ऐसे समय में जो एक बड़े सुदृढ़ हृदय और दृढ़चिन्त, पुख़्ता ईमान, बहादुर निर्भीक ख़लीफ़ा नियुक्त किए गए और उनको ख़लीफ़ा बनते ही बड़े ग़मों का सामना करना पड़ा, जैसा कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु का कथन है कि एक के बाद एक उपद्रवों और बद्दू लोगों का विद्रोह और झूठे पैग़म्बरों के खड़े होने, मेरे पिता पर जबकि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खलीफ़ा नियुक्त किया गया वे संकट पड़े और हृदय पर वे शोक आए कि यदि वे शोक किसी पर्वत पर पड़ते तो वह भी गिर पड़ता और टुकड़े-टुकड़े हो जाता। परन्तु चूंकि ख़ुदा की प्रकृति का यह नियम है कि जब ख़ुदा के रसूल का कोई ख़लीफ़ा उसकी मृत्यु के पश्चात् नियुक्त होता है तो बहादुरी और हिम्मत, प्रवीणता और हृदय सुदृढ़ होने की रूह उसमें फूंकी जाती है जैसा कि यशु की किताब अध्याय-प्रथम आयत - 6 हज़रत यशु को अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मज़बूत हो और हौसला कर। अर्थात् मूसा तो मृत्यु पा गया अब तू मज़बूत हो जा।★ यही आदेश प्रारब्ध के रंग में न कि शरीअत के रंग

★हाशिया :- ख़ुदा तआला के आदेश दो प्रकार के होते हैं। एक शरीअत के जैसा यह कि तू ख़ून न कर, चोरी न कर, झूठी गवाही न दे। दूसरी प्रकार आदेश का प्रारब्ध के आदेश हैं जैसा कि यह आदेश कि

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ (अल अंबिया-70)

शरीअत के आदेश में आदेशित का आदेश के विरुद्ध करना वैध है। जैसा कि बहुत से शरीअत का आदेश पाने के बावजूद ख़ून भी करते हैं, चोरी भी करते हैं, झूठी गवाही भी देते हैं परन्तु प्रारब्ध के आदेश में विरुद्ध करना कदापि वैध नहीं। इन्सान तो इन्सान प्रारब्ध के आदेश से स्थूल पदार्थ भी विरुद्ध नहीं कर सकते क्योंकि श्रेष्ठतापूर्ण आकर्षण उसके साथ होता है। तो हज़रत यशु को ख़ुदा का यह आदेश कि मज़बूत दिल हो जा क़दरी आदेश था अर्थात् भाग्य का आदेश। वही आदेश हज़रत अबू बक्र के हृदय पर भी उतरा था। (इसी से)

में हज़रत अबू बक्र के दिल पर भी उतरा था। घटनाओं की परस्पर अनुकूलता एवं समानता से मालूम होता है कि जैसे अबू बक्र बिन कुहाफ़ा और यशु बिन नून एक ही व्यक्ति हैं। ख़िलाफ़त की समरूपता ने यहां कसकर अपनी समानता दिखाई है यह इसलिए कि किसी दो लम्बे सिलसिलों में परस्पर समानता को देखने वाले स्वाभाविक तौर पर यह आदत रखते हैं कि या तो प्रथम को देखा करते हैं और या अन्तिम को, परन्तु दो सिलसिलों की मध्यवर्ती समानता को जिसकी पड़ताल और जांच अधिक समय चाहती है देखना आवश्यक नहीं समझते अपितु प्रथम और अन्तिम पर अनुमान कर लिया करते हैं इसलिए ख़ुदा ने इस समानता को जो यूशा बिन नून और हज़रत अबू बक्र में है जो दोनों ख़िलाफ़तों के प्रथम सिलसिले में हैं और इस समानता को जो हज़रत ईसा बिन मरयम तथा इस उम्मत के मसीह मौऊद में है जो दोनों ख़िलाफ़तों के अन्तिम सिलसिले में हैं अत्यन्त स्पष्ट एवं चमकदार करके दिखा दिया उदाहरणतया यूशा और अबू बक्र के मध्य में वह समानता रख दी मानो वह दोनों एक ही अस्तित्व हैं या एक ही जौहर के दो टुकड़े हैं और जिस प्रकार बनी इस्राईल हज़रत मूसा की मृत्यु के पश्चात् यूशा बिन नून की बातों के सुनने वाले हो गए और कोई मतभेद न किया और सब ने अपना आज्ञापालन व्यक्त किया। यही घटना हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु के सामने आई और सब ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वियोग में आंसू बहा कर हार्दिक अभिरुचि से हज़रत अबू बक्र की ख़िलाफ़त को स्वीकार किया। अत: प्रत्येक पहलू से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की समानता हज़रत यूशा बिन नून अलैहिस्सलाम से सिद्ध हुई। ख़ुदा ने जिस प्रकार हज़रत यूशा बिन नून को अपने वे समर्थन दिखलाए कि जो हज़रत मूसा को दिखाया करता था। इसी प्रकार ख़ुदा ने समस्त सहाबा के सामने हज़रत अबू बक्र के कार्यों में बरकत दी और नबियों की तरह उसका सौभाग्य चमका। उसने उपद्रवियों और झूठे नबियों को ख़ुदा से क़ुदरत और प्रताप पा कर क़त्ल किया ताकि सहाबा रज़ियल्लाहु जान लें कि जिस प्रकार ख़ुदा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था उसके भी साथ है। एक और विचित्र समानता हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु को हज़रत यशु बिन

नून अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बाद एक भयानक दरिया से जिसका नाम यरदुन में एक तूफान से पार न होते तो बनी इस्राईल का शत्रुओं के हाथ से विनाश होता था और यह पहला भयानक मामला था जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद यशु बिन नून को अपनी ख़िलाफ़त के काल में सामने आया। उस समय ख़ुदा तआला ने इस तूफान से चमत्कार के तौर पर यशु बिन नून और उसकी सेना को बचा लिया और यरदुन में खुश्की पैदा कर दी जिस से वह आसानी से गुज़र गया। वह खुश्की बतौर ज्वार-भाटा थी या केवल एक विलक्षण चमत्कार था। बहरहाल इस प्रकार ख़ुदा ने उनको तूफ़ान और शत्रु के आघात से बचा लिया। इसी तूफान के समान अपितु इस से बढ़कर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बाद हज़रत अबू बक्र सच्चे खलीफ़ा के सहाबा की कुल जमाअत के साथ जो एक लाख से अधिक थे सामना हुआ। अर्थात् देश में तीव्र विद्रोह फैल गया और वे अरब के ख़ानाबदोश जिन को ख़ुदा ने फरमाया था-

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا
يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ (अलहुजुरात-15)

अवश्य था कि इस भविष्यवाणी के अनुसार वे बिगड़ते ताकि यह भविष्यवाणी पूरी होती। फिर ऐसा ही हुआ और वे सब लोग मुर्तद हो गए तथा कुछ ने ज़कात देने से इन्कार किया और कुछ दुष्ट लोगों ने पैग़म्बरी का दावा कर दिया जिनके साथ कई लाख अभागे इन्सानों की जमाअत हो गई और शत्रुओं की संख्या इतनी बढ़ गई कि सहाबा की जमाअत उन के सामने कुछ भी चीज़ न थी और देश में एक भयंकर तूफान मच गया। यह तूफान उस भयावह पानी से बहुत बढ़ कर था जिस का सामना हज़रत यशु बिन नून अलैहिस्सालम को हुआ था और जैसा कि यशु बिन नून हज़रत मूसा की मृत्यु के पश्चात् अचानक इस कठोर परीक्षा में ग्रस्त हो गए थे कि दरिया प्रचंड तूफान में था और कोई जहाज़ न था तथा हर ओर शत्रु का भय था। यही परीक्षा हज़रत अबू बक्र के सामने आई थी कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वर्गवासी हो गए और अरब में मुर्तद होने का एक तूफान मच गया तथा झूठे पैग़म्बरों का एक अन्य तूफान उसे शक्ति देने वाला हो

गया। यह तूफ़ान यूशा के तूफ़ान से कुछ कम न था अपितु बहुत अधिक था और फिर जैसा कि ख़ुदा के कलाम ने हज़रत यूशा को शक्ति दी और फ़रमाया कि जहां-जहां तू जाता है मैं तेरे साथ हूं तू मज़बूत हो और बहादुर बन जा और उदास मत हो। तब यशु में बड़ी शक्ति दृढ़ता और वह ईमान पैदा हो गया जो ख़ुदा की सान्त्वना के साथ पैदा होता है। ऐसा ही हज़रत अबू बक्र को विद्रोह के तूफ़ान के समय ख़ुदा तआला से शक्ति मिली। जिस मनुष्य को उस युग के इस्लामी इतिहास पर सूचना है वह गवाही दे सकता है कि वह तूफ़ान ऐसा भयंकर तूफान था कि यदि अबू बक्र के साथ ख़ुदा का हाथ न होता और यदि वास्तव में इस्लाम ख़ुदा की ओर से न होता और यदि वास्तव में अबू बक्र सच्चा ख़लीफ़ा न होता तो उस दिन इस्लाम का अन्त हो गया था। परन्तु यशु नबी की तरह ख़ुदा के पवित्र कलाम से अबू बक्र सिद्दीक़ को शक्ति मिली। क्योंकि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में इस परीक्षा (आजमायश) की पहले से सूचना दे रखी थी। अत: जो व्यक्ति इस निम्नलिखित आयत को ध्यानपूर्वक पढ़ेगा वह विश्वास कर लेगा कि निस्सन्देह इस परीक्षा की सूचना पवित्र क़ुर्आन में पहले से दी गई थी और वह सूचना यह है कि

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ
فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي
ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ
شَيْئًا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (अन्नूर-56)

अर्थात् ख़ुदा ने मोमिनों को जो शुभकर्म करने वाले हैं वादा दे रखा है कि उनको ख़लीफ़ा बनाएगा उन्हीं ख़लीफ़ों के समान जो पहले बनाए गए थे और उसी ख़िलाफ़त के सिलसिले के समान सिलसिला स्थापित करेगा जो हज़रत मूसा के बाद स्थापित किया था और उनके धर्म को अर्थात् इस्लाम को जिस पर वह राज़ी हुआ पृथ्वी पर जमा देगा और उसकी जड़ लगा देगा तथा भय की हालत को अमन की हालत के साथ बदल देगा। वे मेरी इबादत करेंगे कोई दूसरा मेरे साथ नहीं मिलाएंगे।

देखो इस आयत में स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया है कि भय का युग भी आएगा

और अमन जाता रहेगा परन्तु ख़ुदा उस भय के युग को फिर अमन के साथ बदल देगा। यही भय यशु बिन नून के भी सामने आया था और जैसा कि उसके ख़ुदा के कलाम से सांत्वना दी गई ऐसा ही अबू बक्र रज़ियल्लाहु को भी ख़ुदा के कलाम से सांत्वना दी गयी और चूंकि प्रत्येक सिलसिले में ख़ुदा की प्रकृति का यह नियम है कि उसका कमाल (गुण) तब प्रकट होता है कि जब सिलसिले का अन्तिम भाग पहले भाग के समान हों जाए। इसलिए आवश्यक हुआ कि मूस्वी और मुहम्मदी सिलसिले के अन्तिम ख़लीफ़ा समान हो क्योंकि प्रत्येक चीज़ का कमाल बंधक★ होने को चाहता है। यही कारण है कि समस्त अमिश्रित तत्त्व गोल

★हाशिया :- इस्तिदारत (बंधक होना या गिरवी होना) के शब्द से मेरा अभिप्राय यह है कि जब एक दायरा पूर्ण रुपेण पूरा हो जाता है तो जिस बिन्दु से आरंभ हुआ था उसी बिन्दु से जा मिलता है और जब तक उस बिन्दु को न मिले तब तक उसे पूर्ण दायरा नहीं कह सकते। तो अन्तिम बिन्दु का पहले बिन्दु से जा मिलना वही बात है जिसे दूसरे शब्दों में पूर्ण समानता कहा करते हैं। तो जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को यशु बिन नून से समानता थी, यहां तक कि नाम में भी समानता थी, ऐसा ही अबू बक्र और मसीह मौऊद को कुछ घटनाओं के अनुसार बहुत ही समानता है और वह यह कि अबू बक्र को ख़ुदा ने भयंकर फ़ित्ने और विद्रोह तथा झूठ गढ़ने वालों और उपद्रवियों के काल में ख़िलाफ़त के लिए नियुक्त किया था। ऐसा ही मसीह मौऊद उस समय प्रकट हुआ जबकि समस्त छोटी निशानियों का तूफ़ान प्रकटन में आ चुका था और कुछ बड़ी में से भी। और दूसरी समानता यह है कि जैसा कि ख़ुदा ने हज़रत अबू बक्र के समय में भय के बाद अमन पैदा कर दिया और शत्रुओं की इच्छाओं के विरुद्ध धर्म को स्थापित कर दिया ऐसा ही मसीह मौऊद के समय में भी होगा कि उस झुठलाने के तूफ़ान, काफ़िर और पापी कहने के बाद सहसा लोगों को प्रेम और श्रद्धा की ओर झुकाव हो जाएगा और बहुत से प्रकाश उतरेंगे कि हमारे ऐतराज़ कुछ चीज़ न थे और हमने अपने निम्न स्तरीय विचार और मोटी अक़्ल, ईर्ष्या और पक्षपात के ज़हर को लोगों पर प्रकट कर दिया और फिर इसके बाद अबू बक्र तथा मसीह मौऊद में यह समानता प्रकट कर दी जाएगी कि उस धर्म को जिसका विरोधी लोग उन्मूलन करना चाहते हैं पृथ्वी पर भली भांति स्थापित कर दिया जाएगा और ऐसा सुदृढ़ किया जाएगा कि फिर क़यामत तक उसमें डगमगाहट नहीं होगी और फिर तीसरी समानता यह होगी कि मुसलमानों की आस्थाओं में जो शिर्क की मिलावट हो गयी थी वह उनके हृदयों से पूर्णतया निकाल दी जाएगी। इस से अभिप्राय यह है कि शिर्क का एक बड़ा भाग जो मुसलमानों की

आकृति पर पैदा किए गए है ताकि ख़ुदा के हाथ की पैदा की हुई चीज़ें दोषपूर्ण न हों। इसी आधार पर स्वीकार करना पड़ता है कि पृथ्वी की आकृति भी गोल है। क्योंकि दूसरी समस्त आकृतियां सर्वांगपूर्ण गुण के विरुद्ध हैं और जो चीज़ ख़ुदा

शेष हाशिया - आस्था में सम्मिलित हो गया था, यहां तक कि दज्जाल को भी ख़ुदाई की विशेषताएं दी गई थीं और हज़रत मसीह की सृष्टि के एक भाग का स्रष्टा समझा गया था यह प्रत्येक प्रकार का शिर्क दूर किया जाएगा। जैसा कि आयत-

يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا ط (अन्नूर-56)

ऐसा ही उस भविष्यवाणी से जो मसीह मौऊद और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु में सम्मिलित हैं। यह भी समझा जाता है कि जिस प्रकार शिया लोग हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु को काफ़िर कहते हैं और उनके पद और बुज़ुर्गी के इन्कारी हैं ऐसा ही मसीह मौऊद को भी काफ़िर ठहराया जाएगा और उनके विरोधी उनके वली के पद के इन्कारी होंगे। क्योंकि इस भविष्यवाणी के अन्त में यह आयत है

وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (अन्नूर-56)

और इस आयत के मायने जैसा कि राफ़िज़ियों की व्यावहारिक हालत से खुले हैं यही हैं कि कुछ गुमराह हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु के बुलन्द पद से इन्कारी हो जाएंगे और उनको काफ़िर ठहराएंगे। अत: इस आयत से समझा जाता है कि मसीह मौऊद को भी काफ़िर ठहराया जाएगा। क्योंकि वह ख़िलाफ़त के उस अन्तिम बिन्दु पर है जो ख़िलाफ़त के पहले बिन्दु से मिला हुआ है। यह बात स्मरण रखने योग्य बहुत आवश्यक है कि प्रत्येक दायरे का सामान्य नियम यही है कि उसका अन्तिम बिन्दु पहले बिन्दु से मेल-मिलाप रखता है। इसलिए इस सामान्य नियम के अनुसार मुहम्मदी ख़िलाफ़त के दायरे में ऐसा ही होना आवश्यक है। अर्थात् यह अनिवार्य बात है कि उस दायरे का अन्तिम बिन्दु जिस से अभिप्राय मसीह मौऊद है जो मुहम्मदी ख़िलाफ़त के सिलसिले का ख़ातम है वह उस दायरे के पहले बिन्दु से जो अबू बक्र रज़ियल्लाहु का ख़िलाफ़त का बिन्दु है जो मुहम्मदी ख़िलाफ़त के सिलसिले के दायरे का पहला बिन्दु जो अबू बक्र है वह उस दायरे के अन्तमि बिन्दु से जो मसीह मौऊद है पूर्ण मिलाप रखता है जैसा कि अवलोकन इस बात पर गवाह है कि प्रत्येक दायरे का अन्तिम बिन्दु उसके पहले बिन्दु से जा मिलता है। अब जबकि प्रथम और अन्तिम के दोनों बिन्दुओं का मिलाप मानना पड़ा तो इस से यह सिद्ध हुआ कि जो क़ुर्आनी भविष्यवाणियां ख़िलाफ़त के पहले बिन्दु के पक्ष में हैं अर्थात हज़रत अबू बक्र के पक्ष में वही ख़िलाफ़त के अन्तिम बिन्दु के पक्ष में भी हैं। अर्थात् मसीह मौऊद के पक्ष में और यही सिद्ध करना था। (इसी से)

के हाथ से बिना माध्यम निकली है उसमें सृष्टि होने का यथायोग्य सर्वांगपूर्ण गुण अवश्य चाहिए ताकि उस का दोष स्रष्टा के दोष की ओर लागू न हो। तो इसलिए अमिश्रित वस्तुओं का गोल रखना ख़ुदा तआला ने पसन्द किया कि गोल में कोई तरफ़ नहीं होती और यह बात तौहीद (एकेश्वरवाद) के अधिक यथायोग्य है। अतः कारीगरी का कमाल यद्यपि आकृति से ही प्रकट होता है। क्योंकि इसमें अन्तिम बिन्दु अपने गुण को इतना दिखाता है कि फिर अपने उद्गम से जा मिलता है।

अब हम फिर अपने मूल उद्देश्य की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि हमारे उपरोक्त कथित वर्णन से निश्चित एवं ठोस तौर पर सिद्ध हो गया कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु को जो हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास के बाद आप के प्रथम ख़लीफ़ा थे। हज़रत यूशा बिन नून अलैहिस्सलाम से जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के पश्चात् उनके प्रथम ख़लीफ़ा हैं बहुत समानता है। तो फिर इस से अनिवार्य हुआ कि जैसा कि मुहम्मदी सिलसिले की ख़िलाफ़त का प्रथम खलीफ़ा मूस्वी ख़िलाफ़त के प्रथम ख़लीफ़ा से समानता रखता है ऐसा ही मुहम्मदी सिलसिले की ख़िलाफ़त का अन्तिम ख़लीफ़ा जिसे मसीह मौऊद का नाम दिया गया है मूस्वी सिलसिले के अन्तिम ख़लीफ़ा से जो हज़रत ईसा बिन मरयम है समानता रखे ताकि दोनों सिलसिलों की पूर्ण समानता में जो क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश से सिद्ध होती है कुछ कमी न रहे। क्योंकि जब तक दोनों सिलसिले अर्थात् मूस्वी सिलसिले तथा मुहम्मदी सिलसिले से अन्त तक परस्पर समानता न दिखलाएं तब तक वह समरूपता जो आयत كَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِيۡنَ में كَمَا के शब्द से निकलती है सिद्ध नहीं हो सकती। और फिर चूंकि हम अभी हाशिए में सर्वांगपूर्ण तौर पर सिद्ध कर चुके हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु मसीह मौऊद से समानता रखते हैं और दूसरी ओर यह भी सिद्ध हो गया कि हज़रत अबू बक्र हज़रत यूशा बिन नून से समानता रखते हैं और हज़रत यूशा बिन नून उस नियम की दृष्टि से जो दायरे का प्रथम बिन्दु दायरे के अन्तिम बिन्दु से एकता रखता है जैसा कि अभी हम ने हाशिए में लिखा है हज़रत ईसा बिन मरयम से समानता रखते

हैं तो इस बराबरी के सिलसिले से अनिवार्य हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस्लाम के मसीह मौऊद से जो इस्लामी शरीअत का अन्तिम ख़लीफ़ा है समानता रखते हैं। क्योंकि हज़रत ईसा हज़रत यशु बिन नून से समान है और हज़रत यशु बिन नून हज़रत अबू बक्र से समान। और पहले सिद्ध हो चुका है कि हज़रत अबू बक्र इस्लाम के अन्तिम ख़लीफ़ा अर्थात् मसीह मौऊद से समान हैं। तो इस से सिद्ध हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अन्तिम ख़लीफ़ा से जो मसीह मौऊद है समान हैं। क्योंकि समान का समान होता है। उदाहरणतया यदि 'द' रेखा 'न' रेखा से समान है और रेखा 'न' रेखा 'ल' से समान तो मानना पड़ेगा कि रेखा 'द' रेखा 'ल' से समान है और यही उद्देश्य है। और स्पष्ट है कि समानता एक प्रकार से प्रतिकूलता को चाहती है इसलिए कहना पड़ा कि इस्लाम का मसीह मौऊद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नहीं हैं अपितु उस का ग़ैर (अन्य) है। और जन सामान्य जो बारीक बातों को समझ नहीं सकते उनके लिए इतना पर्याप्त है कि ख़ुदा तआला ने हज़रत इब्राहीम की सन्तान में से दो रसूल प्रकट करके उनको दो स्थायी शरीअतें प्रदान की हैं। एक मूस्वी शरीअत दूसरी मुहम्मदी शरीअत। और इन दोनों सिलसिलों में तेरह-तेरह ख़लीफ़े नियुक्त किए हैं और मध्य के बारह ख़लीफ़े जो इन दोनों शरीअतों में पाए जाते हैं वे हर दो शरीअत वाले नबी की क़ौम में से हैं। अर्थात् मूस्वी ख़लीफ़े इस्राईली हैं और मुहम्मदी ख़लीफ़े क़ुरैशी हैं। परन्तु अन्तिम दो ख़लीफ़े इन दोनों सिलसिलों के वे इन हर दो शरीअत वाले नबी की क़ौम में से नहीं हैं। हज़रत ईसा इसलिए कि उनका कोई पिता नहीं और इस्लाम के मसीह मौऊद के बारे में जो अन्तिम ख़लीफ़ा है स्वयं इस्लाम के उलेमा मान चुके हैं कि वह क़ुरैश में से नहीं है तथा पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है कि ये दोनों मसीह एक दूसरे का हू बहू नहीं हैं क्योंकि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में इस्लाम के मसीह मौऊद को मूस्वी मसीह मौऊद का समरूप ठहराता है न कि हू बहू। अतएव मुहम्मदी मसीह मौऊद को मूस्वी मसीह का हू बहू ठहराना पवित्र क़ुर्आन को झुठलाना है। और इस तर्क का विवरण यह है कि كَمَا का शब्द जो आयत كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ में है जिस से सम्पूर्ण मुहम्मदी सिलसिले

के ख़लीफ़ों की मूस्वी सिलसिले के ख़लीफ़ों के साथ समानता सिद्ध होती है हमेशा समरूपता के लिए आता है और समरूपता हमेशा एक प्रकार से प्रतिकूलता को चाहती है। यह संभव नहीं कि एक वस्तु स्वयं अपनी समरूप कहलाए अपितु उपमेय और उपमान में कुछ प्रतिकूलता आवश्यक है और ऐन (हूबहू) किसी कारण से स्वयं का प्रतिकूल नहीं हो सकता। तो जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत मूसा के समरूप हो कर उनके हूबहू नहीं हो सकते, ऐसा ही समस्त मुहम्मदी ख़लीफ़े जिन में से अन्तिम ख़लीफ़ा मसीह मौऊद है वह मूस्वी ख़लीफ़ों के जिन में से अन्तिम ख़लीफ़ा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हैं किसी प्रकार हूबहू नहीं हो सकते। इस से पवित्र कुर्आन का झूठा होना अनिवार्य आता है क्योंकि كما का शब्द जैसा कि हज़रत मूसा और आंहज़रत की समानता के लिए क़ुर्आन ने इस्तेमाल किया है वही كما का शब्द आयत كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ में आया है जो इसी प्रकार की प्रतिकूलता चाहता है जो हज़रत मूसा और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में है। स्मरण रहे कि इस्लाम का बारहवां ख़लीफ़ा जो तेरहवीं सदी के सर पर होना चाहिए वह यह्या नबी के मुक़ाबले पर है जिस का एक गन्दी क़ौम के लिए सर काटा गया (समझने वाला समझ ले) इसलिए आवश्यक है कि बारहवां ख़लीफ़ा जो चौदहवीं सदी के सर पर होना चाहिए जिस का नाम मसीह मौऊद है उस के लिए आवश्यक था कि वह क़ुरैश में से न हो, जैसा कि हज़रत ईसा इस्राईली नहीं हैं। सय्यिद अहमद साहिब बरेलवी मुहम्मदी सिलसिले की ख़िलाफ़त के बारहवें ख़लीफ़ा हैं जो हज़रत यह्या के समरूप (मसील) हैं और सय्यद हैं।

(2) उन तर्कों में से जो मेरे मसीह मौऊद होने पर संकेत करते हैं ख़ुदा तआला के वे दो निशान हैं जो संसार कभी नहीं भूलेगा। अर्थात् एक वह निशान जो आकाश में प्रकट हुआ और दूसरा वह निशान जो पृथ्वी ने प्रकट किया। आकाश का निशान चन्द्र और सूर्य ग्रहण है जो पवित्र आयत के ठीक अनुसार وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ (अल क़यामत-10) और दारे क़ुत्नी की हदीस के

अनुसार रमज़ान में हुआ।★और पृथ्वी का निशान वह है जिसकी ओर पवित्र क़ुर्आन की यह पवित्र आयत अर्थात्-

وَاِذَا الۡعِشَارُ عُطِّلَتۡ (अत्तक्वीर-5)

संकेत करती है जिस की पुष्टि में मुस्लिम में यह हदीस मौजूद है

وَ يُتْرَكُ القِلاصُ فَلَا يُسْعٰى عَلَيْها

चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण का निशान तो कई वर्ष हुए जो दोबार प्रकट हो गया और ऊंटों के छोड़े जाने और नई सवारी का इस्तेमाल यद्यपि इस्लामी देशों में लगभग सौ वर्ष से काम में आ रहा है परन्तु यह भविष्यवाणी अब विशेष तौर पर श्रेष्ठ मक्का और मदीना मुनव्वरा की रेल तैयार होने से पूरी हो जाएगी। क्योंकि वह रेल जो दमिश्क से आरंभ होकर मदीना में आएगी वही श्रेष्ठ मक्का में आएगी और आशा है कि बहुत शीघ्र और केवल कुछ वर्ष तक यह कार्य पूर्ण हो जाएगा। तब वे ऊंट जो तेरह सौ वर्ष से हाजियों को मक्का से मदीना की ओर ले जाते थे सहसा बेकार हो जाएंगे और अरब और शाम

★**हाशिया :-** शौकानी अपनी पुस्तक तौज़ीह में लिखता है कि महदी और मसीह के बारे में जो लक्षण आ चुके हैं वे رفع (रफ़ा अर्थात बुलंदी) के आदेश में हैं। क्योंकि भविष्यवाणियों में विवेचना को मार्ग नहीं, परन्तु मैं कहता हूं कि महदी और मसीह के बारे में बहुत सी भविष्यवाणियां ऐसी हैं जो परस्पर प्रतिकूलता रखती हैं या पवित्र क़ुर्आन की विरोधी हैं या सुन्नतुल्लाह के विपरीत हैं। इस स्थिति में यदि उनका रफ़ा भी होता तथापि उन में से कुछ कदापि स्वीकार करने योग्य न थीं। हां शौकानी साहिब के क़रार के अनुसार सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण की भविष्यवाणी निस्सन्देह रफ़ा के आदेश में है अपितु यह भविष्यवाणी मर्फ़ूअ मुत्तसिल हदीस से भी सैकड़ों गुना शक्तिशाली है, क्योंकि इसने अपने घटित होने से अपनी सच्चाई स्वयं प्रकट कर दी और पवित्र क़ुर्आन ने इस के विषय की पुष्टि की और पवित्र क़ुर्आन ने इसके मुकाबले की एक और भविष्यवाणी वर्णन की अर्थात् ऊंटों के बेकार होने की भविष्यवाणी। इस पृथ्वी के निशान का वर्णन आकाशीय निशान अर्थात् सूर्य ग्रहण और चन्द्र-ग्रहण का सत्यापनकर्ता है। क्योंकि ये दोनों निशान एक दूसरे के सामने पड़े हैं और ऐसा ही तौरात की कुछ किताबों में इसका सत्यापन मौजूद है और सबूत की यह श्रेणी किसी अन्य मर्फ़ूअ मुत्तसिल हदीस को जिस के साथ ये आवश्यक चीज़ें न हों प्राप्त नहीं। (इसी से)

देश में यात्राओं में महान क्रान्ति आ जाएगी। अत: यह कार्य बड़ी तेज़ी से हो रहा है तथा आश्चर्य नहीं कि तीन वर्ष के अन्दर-अन्दर मक्का और मदीना के मार्ग का यह भाग तैयार हो जाए और हाजी लोग बद्दुओं के पत्थर खाने की बजाए भिन्न-भिन्न प्रकार के मेवे खाते हुए मदीना मुनव्वरा में पहुंचा करें। अपितु संभवत: मालूम होता है कि कुछ थोड़ी ही अवधि में ऊंट की सवारी समस्त संसार से उठ जाएगी और यह भविष्यवाणी एक चमकती हुई विद्युत की भांति समस्त संसार को अपना दृश्य दिखलाएगी और समस्त संसार इसको स्वयं अपनी आंखों से देखेगा। और सच तो यह है कि मक्का और मदीना की रेल का तैयार हो जाना जैसे समस्त इस्लामी जगत में रेल का फिर जाना है।★ क्योंकि इस्लाम का केन्द्र श्रेष्ठ मक्का और मदीना मुनव्वरा है। यदि सोच कर देखा जाए तो अपनी हालत के अनुसार चन्द्र ग्रहण और सूर्य-ग्रहण की भविष्यवाणी और ऊंटों के बेकार होने की भविष्यवाणी एक ही स्तर पर मालूम होती हैं क्योंकि जैसा की चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण का दृश्य करोड़ों लोगों को अपना गवाह बना गया है, ऐसा ही ऊंटों के छोड़ने का दृश्य भी है अपितु यह दृश्य सूर्य-ग्रहण और चन्द्र-ग्रहण से बढ़कर है, क्योंकि चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण केवल दो बार हो कर और केवल कुछ घंटे तक रह कर संसार से गुज़र गया परन्तु इस नई सवारी का दृश्य जिस का नाम रेल है हमेशा याद

★**हाशिया :-** चूंकि रेल का अस्तित्व और ऊंटों का बेकार होना मसीह मौऊद के युग की निशानी है और मसीह के एक यह भी मायने हैं कि बहुत सफर करने वाला तो जैसे ख़ुदा ने मसीह के लिए तथा उसके मायने निश्चित करने के लिए और उसकी जमाअत के लिए जो इसी के आदेश में हैं रेल को एक यात्रा का माध्यम पैदा किया है ताकि वे यात्राएं जो पहले मसीह ने एक सौ बीस वर्ष तक सैकड़ों मेहनत के साथ पूरी की थीं इस मसीह के लिए केवल कुछ माह में वह समस्त भ्रमण और यात्रा उपलब्ध हो जाए और यह निश्चित बात है कि जैसे इस युग का एक ख़ुदा का मामूर रेल की सवारी के द्वारा खुशी और आराम से संसार के एक बड़े भाग का चक्कर लगा कर तथा यात्रा करके अपने देश में आ सकता है। यह सामान पहले नबियों के लिए उपलब्ध नहीं था इसलिए मसीह का अर्थ जैसे इस युग में शीघ्र पूरा हो सकता है किसी अन्य युग मे इसका उदाहरण नहीं। (इसी से)

दिलाता रहेगा कि पहले ऊंट हुआ करते थे। तनिक उस समय को सोचो कि जब श्रेष्ठ मक्का से कई लाख आदमी रेल की सवारी में एक व्यक्ति अपने समस्त सामानों के साथ मदीना की ओर जाएगा या मदीना से मक्का की ओर आएगा तो इस नए ढंग के क़ाफ़िले में ठीक उस हालत में जिस समय कोई अरब वाला यह आयत पढ़ेगा कि-

(अत्तक्वीर-5) وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ

अर्थात् स्मरण कर वह युग जब ऊंटनियां बेकार की जाएंगी और एक गर्भिणी ऊंटनी का भी महत्त्व न रहेगा जो अरब लोगों के नज़दीक बड़ी बहुमूल्य थी। और या जब कोई हाजी रेल पर सवार हो कर मदीना की ओर जाता हुआ यह हदीस पढ़ेगा कि وَيُتْرَكَ الْقِلَاصُ فَلَا يُسْعٰى عَلَيْهَا अर्थात् मसीह मौऊद के युग में ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी तथा उन पर कोई सवार न होगा तो सुनने वाले इस भविष्यवाणी को सुन कर कितने आत्मविस्मृति में आएंगे और उनका ईमान कितना सुदृढ़ होगा। जिस व्यक्ति को अरब के प्राचीन इतिहास की कुछ जानकारी है वह भली प्रकार जानता है कि ऊंट अरब वालों का बहुत पुराना मित्र है तथा अरबी भाषा में ऊंट के लगभग हज़ार नाम हैं और ऊंट अरब वालों के इतने पुराने संबंध पाए जाते हैं कि मेरे विचार में बीस हज़ार के लगभग अरबी भाषा में ऐसे शेर होंगे जिस में ऊंट का वर्णन है और ख़ुदा तआला भली भांति जानता था कि किसी भविष्यवाणी में ऊंटों की ऐसी महान क्रान्ति का वर्णन करना अरब वालों के हृदयों पर प्रभाव डालने के लिए और उनकी तबियतों में भविष्यवाणी की श्रेष्ठता बिठाने के लिए इस से बढ़कर अन्य कोई मार्ग नहीं। इसी कारण से यह महान भविष्यवाणी पवित्र क़ुर्आन में वर्णन की गई हैं जिस से प्रत्येक मोमिन को प्रसन्नता से उछलना चाहिए कि ख़ुदा ने पवित्र क़ुर्आन में अन्तमि युग के बारे में जो मसीह मौऊद और या याजूज माजूज और दज्जाल का युग है यह ख़बर दी है कि उस युग में अरब का यह पुराना साथी अर्थात् ऊंट जिस पर वह मक्का से मदीना की ओर जाते थे और शाम देश की ओर व्यापार करते थे हमेशा के लिए उन से अलग हो जाएगा। सुब्हान

अल्लाह। कितनी स्पष्ट भविष्यवाणी है यहां तक कि दिल चाहता है कि खुशी से नारे लगाएं, क्योंकि हमारी प्रिय ख़ुदा की किताब पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई और ख़ुदा की ओर से होने के लिए यह एक ऐसा निशान संसार में प्रकट हो गया है कि न तौरात में ऐसी महान और खुली-खुली भविष्यवाणी पाई जाती है और न इंजील में और न दुनिया की किसी अन्य किताब में। हिन्दुओं के एक पंडित दयानन्द नामक व्यक्ति ने अकारण बेकार तौर पर कहा था कि वेद में रेल का वर्णन है। अर्थात् पहले युग में आर्यवर्त (भारत देश) में रेल जारी थी। परन्तु जब सबूत मांगा गया तो निरर्थक बातों के अतिरिक्त अन्य कुछ उत्तर न था और दयानन्द का यह मतलब नहीं था कि वेद में भविष्यवाणी के तौर पर रेल का वर्णन है। क्योंकि दयानन्द इस बात का इक़रारी है कि वेद में कोई भविष्यवाणी नहीं अपितु उसका केवल यह मतलब था कि हिन्दुओं के शासन काल में भी यूरोप के दार्शनिकों की तरह ऐसे कारीगर मौजूद थे और उस युग में भी रेल मौजूद थी। अर्थात् हमारे बुज़ुर्ग भी अंग्रेज़ों की भांति कई कारीगरियां आविष्कृत करते थे परन्तु पवित्र क़ुर्आन यह दावा नहीं करता कि किसी युग में अरब देश में रेल मौजूद थी अपितु अन्तिम युग के लिए एक महान भविष्यवाणी करता है कि उन दिनों में एक बड़ी क्रान्ति प्रकटन में आएगी और ऊंटों की सवारी बेकार हो जाएगी जो ऊंटों से निःस्पृह कर देगी। यह भविष्यवाणी जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूं मुस्लिम की हदीस में भी मौजूद है जो मसीह मौऊद के युग की निशानी वर्णन की गई है। परन्तु ज्ञात होता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस भविष्यवाणी को पवित्र क़ुर्आन की इस आयत से ही ग्रहण किया है अर्थात् وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ से, स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन में दो प्रकार की भविष्यवाणियां हैं। एक क़यामत की और एक अन्तिम युग की। उदाहरणतया याजूज माजूज का पैदा होना और उन का समस्त राज्यों पर प्रधान होना। यह भविष्यवाणी अन्तिम युग के बारे में है। मुस्लिम की हदीस ने भविष्यवाणी يترك القلاص में स्पष्ट व्याख्या कर दी है और खोल कर

वर्णन कर दिया है कि मसीह के समय में ऊंट की सवारी त्याग दी जाएगी।

(3) तीसरा तर्क जो पहले कथित तर्कों की तरह वह भी पवित्र क़ुर्आन से ही ग्रहण किया गया है सूरह फ़ातिहा की इस आयत के आधार पर है कि

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ (अलफ़ातिहा - 6,7)

अर्थात् हे हमारे ख़ुदा! तू हमें वह सीधा मार्ग प्रदान कर जो उन लोगों का मार्ग है जिन पर तेरा इनाम है और बचा हम को उन लोगों के मार्ग से जिन पर तेरा प्रकोप है और जो मार्ग को भूल गए हैं। फ़त्हुलबारी शरह सही बुख़ारी में लिखा है कि इस्लाम के समस्त बुज़ुर्गों तथा इमामों की सहमति से मग़ज़ूब अलैहिम से अभिप्राय यहूदी लोग हैं और ज़ाल्लीन से अभिप्राय नसारा (ईसाई) हैं। और पवित्र क़ुर्आन की आयत يٰعِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ الخ से सिद्ध होता है कि यहूदियों के مغضوب علیهم होने का बड़ा कारण, जिसका दण्ड उनको क़यामत तक दिया गया और हमेशा के अपमान और दासता में गिरफ़्तार किए गए, यही है कि उन्होंने हज़रत ईसा के हाथ पर ख़ुदा तआला के निशान देख कर फिर भी पूरे वैर, शरारत और जोश से उन की तक्फ़ीर (काफ़िर कहना), अपमान, तफ्सीक़ (अवज्ञा) और तक्ज़ीब (झुठलाना) की तथा उन पर और उनकी मां मरयम सिद्दीक़ा पर झूठे आरोप लगाए जैसा कि आयत-

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

(आले इमरान-56)

से स्पष्ट समझा जाता है क्योंकि हमेशा की दासता जैसा और कोई अपमान नहीं और हमेशा के अपमान के साथ हमेशा का अज़ाब अनिवार्य पड़ा है। और इसी आयत का समर्थन एक अन्य आयत करती है जो सूरह आराफ़ आयत-168 में है और वह यह है-

وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ

(अलआराफ़-168) الْعَذَابِ ؕ

अर्थात् ख़ुदा ने यहूदियों के लिए हमेशा के लिए यह वादा किया है कि उन पर ऐसे बादशाह नियुक्त करता रहेगा जो उनको नाना प्रकार के अज़ाब देते रहेंगे। इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि यहूदियों के मग़ज़ूब अलैहिम होने का बड़ा कारण यही है कि उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को कठोर यातना दी उन को काफ़िर कहा उनको दुराचारी कहा, अपमान किया उनको मस्लूब ठहरा दिया ताकि वह नऊज़ुबिल्लाह लानती ठहराए जाएं और उनको इस सीमा तक दुख दिया कि आयत -

(अन्निसा-157) ★ وَ قَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا

उनकी मां पर भी बहुत बड़ा झूठा आरोप लगाया। अत: जितने कष्ट देने के प्रकार हो सकते हैं कि झुठलाना, गालियां देना, झूठ गढ़कर कई झूठे आरोप लगाना, कुफ्र का फ़त्वा देना और उनकी जमाअत को अस्त-व्यस्त करने के लिए प्रयास करना और अधिकारियों से सामने उनके बारे में झूठी जासूसी करना और अपमान की कोई कसर न छोड़ना और अन्त में क़त्ल के लिए तत्पर होना यह सब कुछ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में दुर्भाग्यशाली यहूदियों से प्रकटन में आया और आयत-

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ

(आले इमरान-56)

★**हाशिया :-** जैसा कि दुष्ट विरोधियों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की माँ पर आरोप लगाया उसी प्रकार मेरी पत्नी के सम्बन्ध में शैख़ मुहम्मद हुसैन और उसके हार्दिक मित्र जाफ़र ज़िटली ने केवल शरारत से गंदी ख्वाबें बनाकर अत्यंत अभद्रता के मार्ग द्वारा प्रकाशित कीं। और मेरी शत्रुता से इस स्थान पर वो लिहाज़ और अदब भी न रहा जो अहले बैअत रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहि वसल्लम के वंश कि पवित्र दामन औरतों से रखना चाहिए। मौलवी कहलाना और यह बेहयाई की हरकतें अफ़सोस हज़ार अफ़सोस! यही वो व्यर्थ हरकत थी जिस पर मिस्टर जे.एम्.डोई साहिब बहादुर आई० सी. एस भूतपूर्व डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ज़िला गुरदासपुर ने मौलवी मुहम्मद हुसैन की निंदा की थी। और आईंदा ऐसी हरकतों से रोका था। इसी से

को ध्यानपूर्वक पढ़ने से ज्ञात होता है कि आयत-

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ (अलबक़रह-62)

का दण्ड भी हज़रत मसीह के कष्ट के कारण ही यहूदियों को दिया गया है क्योंकि कथित आयत में यहूदियों के लिए हमेशा का अज़ाब का वादा है कि वे हमेशा दासता में जो प्रत्येक अज़ाब और अपमान की जड़ है जीवन व्यतीत करेंगे जैसा कि अब भी यहूदियों के अपमान की परिस्थितियों को देख कर यह सिद्ध होता है कि अब तक ख़ुदा तआला का वह क्रोध नहीं उतरा जो उस समय भड़का था जबकि उस सुन्दर नबी को गिरफ़्तार कराके सलीब पर चढ़ाने के लिए खोपरी के स्थान पर ले गए थे और जहां तक बस चला था हर प्रकार का अपमान पहुंचाया था और प्रयास किया गया था कि वह मस्लूब (सूली दिया हुआ) होकर तौरात के स्पष्ट आदेशानुसार मलऊन (लानती) समझा जाए और उसका नाम उनमें लिखा जाए जो मरने के बाद पाताल की ओर जाते हैं और ख़ुदा की ओर उनका रफ़ा नहीं होता। तो जबकि यह मुक़द्दमा पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों से सिद्ध हो गया कि **مغضوب علیھم** से अभिप्राय यहूदी हैं और **ضالّین** से अभिप्राय ईसाई। और यह भी सिद्ध हो गया कि मग़्ज़ूब अलैहिम की क्रोध से परिपूर्ण उपाधि जो यहूदियों को दी गई यह उन यहूदियों को उपाधि मिली थी जिन्होंने शरारत और बेईमानी से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को झुठलाया और उन पर कुफ्र का फ़त्वा लिखा और हर प्रकार से उनका अपमान किया तथा उनको अपने विचार में क़त्ल कर दिया और उनके रफ़ा से इन्कार किया अपितु उनका नाम लानती रखा। तो अब यहां स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होता है कि ख़ुदा तआला ने मुसलमानों को यह दुआ क्यों सिखलाई? अपितु पवित्र क़ुर्आन का प्रारंभ भी इसी दुआ से किया और इस दुआ को मुसलमानों के लिए एक ऐसा अनिवार्य विर्द (किसी कार्य को बार-बार करना) और हमेशा का वज़ीफ: (जप) कर दिया कि पांच

समय लगभग नव्वे★करोड़ मुसलमान विभिन्न देशों में अपनी नमाज़ों में यही दुआ पढ़ते हैं और बहुत से मतभेदों के बावजूद जो उन में और उनकी नमाज़ के ढंग में पाए जाते हैं मुसलमानों का कोई समुदाय ऐसा नहीं है कि जो अपनी नमाज़ में यह दुआ न पढ़ता हो। इस प्रश्न का उत्तर स्वयं पवित्र क़ुर्आन ने अपने दूसरे स्थानों में दे दिया है। उदाहरणतया जैसा कि आयत-

كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ (अन्नूर-56)

से स्पष्ट और साफ तौर पर समझा जाता है जिसका वर्णन पहले हो चुका है। अर्थात् जबकि समरूपता की आवश्यकता के कारण आवश्यक था उस उम्मत के ख़लीफ़ा पर समाप्त हो जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का समरूप (मसील) हो। तो समरूपता के समस्त कारणों में से एक कारण यह भी अवश्य होना चाहिए था कि जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समय के फ़क़ीह और मौलवी उनके शत्रु हो गए थे और उन पर कुफ़्र का फ़त्वा लिखा था और उन्हें बहुत बुरी-बुरी गालियां देते तथा उनका और उनकी पर्दे में रहने वाली औरतों का अपमान करते और उनके व्यक्तिगत दोष निकालते थे और प्रयास करते थे कि उनको लानती सिद्ध करें। ऐसा ही इस्लाम के मसीह मौऊद पर इस युग के मौलवी कुफ़्र का फ़त्वा लिखें और उसका अपमान करें और उसे बेईमान तथा लानती ठहराएं और गालियां दें और उसके व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप करें, उस पर भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठ बांधें और क़त्ल का फ़त्वा दें। तो चूंकि यह उम्मत दयनीय है और ख़ुदा नहीं चाहता कि तबाह हों। इसलिए उसने यह दुआ غير المغضوب عليهم की सिखा दी और उसे क़ुर्आन में उतारा और क़ुर्आनी इसी से आरंभ हुआ और यह दुआ मुसलमानों

★**हाशिया :-** जांच पड़ताल की दृष्टि से यही सही संख्या मुसलमानों की है। अर्थात नव्वे करोड़ मुसलमानों की जनगणना ही सही है। अंग्रेज़ों के इतिहासकार अरब के विभिन्न भागों की जनगणना को सही तौर पर मालूम नहीं कर सके। अफ़्रीका और चीन की आबादियाँ शायद दृष्टि से उपेक्षित ही रहीं। इसलिए जो कुछ ईसाई जनगणना में मुसलमानों की संख्या दिखाई गई है यह सही नहीं है, कदापि सही नहीं है। इसी से।

की नमाज़ों में शामिल कर दी ताकि वे किसी समय सोचें और समझें कि उनको यहूदियों के इस आचरण से डराया गया जिस आचरण को यहूदियों ने बहुत ही बुरे तौर से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर प्रकट किया था। यह बात स्पष्ट तौर पर समझ आती है कि इस दुआ में जो सूरह फ़ातिहा में मुसलमानों को सिखाई गई है फ़िर्क़ा غير المغضوب عليهم से मुसलमानों का कुछ संबंध न था क्योंकि जबकि पवित्र क़ुर्आन, हदीसों और इस्लाम के उलेमा की सहमति से सिद्ध हो गया है कि مغضوب عليهم से अभिप्राय यहूदी हैं और यहूदी भी वे जिन्होंने मसीह को बहुत सताया और दुख दिया था और उन का नाम काफ़िर तथा लानती रखा था और उन के क़त्ल करने में कुछ संकोच नहीं किया था और अपमान को उनकी औरतों तक पहुंचा दिया था। तो फिर मुसलमानों को इस दुआ से क्या संबंध था और क्यों यह दुआ उनको सिखाई गई। अब मालूम हुआ कि यह संबंध था कि यहां भी पहले मसीह के समान एक मसीह आने वाला था और निश्चित था कि उसका भी वैसा ही अपमान और तक्फ़ीर हो। इसलिए यह दुआ सिखाई गई जिसके यह मायने हैं कि हे ख़ुदा हमें इस पाप से सुरक्षित रख कि हम तेरे मसीह मौऊद को दुख दें और उस पर कुफ़्र का फ़त्वा लिखें और उसे दण्ड दिलाने के लिए अदालतों की ओर खींचें और उसकी घर वाली पवित्र स्त्रियों का अपमान करें और उस पर भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठे आरोप लगाएं और उसके क़त्ल के फ़त्वे दें। तो साफ़ प्रकट है कि यह दुआ इसलिए सिखाई गई ताकि क़ौम को उस याददाश्त के पर्चे की तरह जिस को हर समय अपनी जेब में रखते हैं या अपने बैठने के स्थान की दीवार पर लगाते हैं इस ओर ध्यान दिया जाए कि तुम में भी एक मसीह मौऊद आने वाला है और तुम में भी वह तत्त्व मौजूद है जो यहूदियों में था। अत: इस आयत पर एक अन्वेषणपूर्ण दृष्टि के साथ विचार करने से सिद्ध होता है कि यह एक भविष्यवाणी है जो दुआ के रंग में की गई। चूंकि अल्लाह तआला जानता था कि वादे के अनुसार

كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ (अन्नूर-56)

इस उम्मत का अन्तिम ख़लीफ़ा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के रंग में आएगा।★ और अवश्य है कि वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भांति क़ौम के हाथ से कष्ट उठाए और उस पर कुफ्र का फ़त्वा लिखा जाए तथा उसके क़त्ल के इरादे किए जाएं। इसलिए दया के तौर पर समस्त मुसलमानों को यह दुआ सिखाई कि तुम ख़ुदा से शरण चाहो कि उन यहूदियों की तरह न बन जाओ जिन्होंने मूस्वी सिलसिले के मसीह मौऊद को काफ़िर ठहराया था और उसका अपमान करते थे और उनको गालियां देते थे। और इस दुआ में साफ़ संकेत है कि तुम पर भी यह समय आने वाला है और तुम में भी बहुत से लोगों में यह तत्व मौजूद है। तो सावधान रहो और दुआ में व्यस्त रहो ताकि ठोकर न खाओ। और इस आयत का दूसरा वाक्य जो الضَّالّين है जिस के ये मायने हैं कि हे हमारे प्रतिपालक! हमें इस बात से भी बचा कि हम ईसाई बन जाएं। यह इस बात की ओर संकेत है कि उस युग में जबकि मसीह मौऊद प्रकट होगा ईसाइयों का बहुत ज़ोर होगा और ईसाइयत की गुमराही एक बाढ़ की तरह पृथ्वी पर फैलेगी और गुमराही का तूफान इतना जोश मारेगा कि दुआ के अतिरिक्त अन्य कोई चारा न होगा और तस्लीस के उपदेशक मक्र (छल) का इतना जाल फैलाएंगे कि निकट होगा कि ईमानदारों को भी गुमराह करें। इसलिए इस दुआ को भी पहली दुआ के साथ शामिल कर दिया गया और इसी गुमराही के युग की ओर संकेत है जो हदीस में आया है कि जब तुम दज्जाल को देखो तो सूरह कहफ़ की पहली आयतें पढ़ो और वे ये हैं-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ عَلٰی عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ یَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا
قَیِّمًا لِّیُنْذِرَ بَاْسًا شَدِیْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَیُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ

★हाशिया :- हम अपनी पुस्तकों में बहुत से स्थानों में वर्णन कर चुके हैं कि यह ख़ाकसार जो हज़रत ईसा बिन मरयम के रंग में भेजा गया है बहुत सी बातों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से समानता रखता है यहां तक कि जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सालम की पैदायश में एक विशिष्टता थी और इस ख़ाकसार की पैदायश में भी एक विशिष्टता है और वह यह कि मेरे साथ एक लड़की पैदा हुई थी और यह बात इन्सानी पैदायश की विशिष्टताओं में से है

الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ وَّ يُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّ لَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا (अलकहफ़ – 2 से 6)

इन आयतों से स्पष्ट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दज्जाल से अभिप्राय कौन सा गिरोह रखा है।★ और عِوَج (इवज) के शब्द से इस स्थान पर मख़्लूक़ (सृष्टि) को स्रष्टा (अल्लाह तआला) का भागीदार ठहराने से अभिप्राय है। जिस प्रकार ईसाइयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ठहराया है। फिर

शेष हाशिया - क्योंकि प्राय: एक ही बच्चा पैदा हुआ करता है और नुद्रत (विशिष्ट) का शब्द मैंने इसलिए प्रयोग किया है कि हज़रत मसीह का बिना बाप पैदा होना भी विशिष्ट बातों में से है। प्रकृति के नियम के विरुद्ध नहीं है। क्योंकि यूनानी, मिस्री, हिन्दी वैद्यों ने इस बात के बहुत से उदाहरण लिखे हैं कि कभी बिना बाप के भी बच्चा पैदा हो जाता है। कुछ स्त्रियां ऐसी होती हैं कि सर्वशक्तिमान ख़ुदा के आदेश से उनमें दोनों शक्तियां ठहराने वाली और ठहरने वाली पाई जाती हैं। इसलिए दोनों विशेषताएं नर और मादा की उन के बीज में मौजूद होती हैं। यूनानियों ने भी ऐसी पैदायशों के उदाहरण दिए हैं और अभी वर्तमान में मिस्र में जो तिब्ब संबंधी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें भी बड़े अनुसंधान के द्वारा उदाहरणों को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दुओं की पुस्तकों के शब्द चन्द्रवंशी और सूर्यवंशी वास्तव में इन्हीं बातों की ओर संकेत हैं। अत: इस प्रकार की पैदायश केवल अपने अन्दर एक विचित्रता रखती है, जैसे जुड़वां में एक विचित्रता है इस से अधिक नहीं। यह नहीं कह सकते कि बिना बाप पैदा होना एक ऐसी विलक्षण बात है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

★हाशिया :- निसाई ने अबू हुरैर: से दज्जाल की विशेषता में आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह हदीस लिखी है -

يخرج فی اٰخِر الزمان دجال يختلون الدنيا بالدين۔ يلبسون للناس جلود الضان۔ السنهم احلی من العسل و قلوبهم قلوب الذياب يقول الله عزّ و جلّ ابی يغترون ام علی يجترءون۔ الخ

अर्थात् अन्तिम युग में दज्जाल का एक गिरोह निकलेगा। वे दुनिया के अभिलाषियों को धर्म के साथ धोखा देंगे अर्थात् अपने धर्म के प्रचार में बहुत सा माल व्यय करेंगे, भेड़ों का लिबास पहन कर आएंगे। उनकी ज़ुबानें शहद से अधिक मीठी होंगी और दिल भेड़ियों के होंगे। ख़ुदा कहेगा कि क्या तुम मेरे ज्ञान के साथ घमंडी हो गए और क्या तुम मेरे कलिमात में अक्षरांतरण करने लगे। (कन्ज़ुल उम्माल पृष्ठ-174) इसी से।

इसी शब्द से फैज आवज बना है। और फैज आवज से वह मध्यकाल अभिप्राय है जिसमें मुसलमानों ने ईसाइयों की तरह हज़रत मसीह को कुछ विशेषताओं में ख़ुदा का भागीदार ठहरा दिया। इस स्थान पर प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है कि यदि दज्जाल का भी कोई पृथक अस्तित्व होता तो सूरह फातिहा में उसके उपद्रव का भी वर्णन अवश्य होता और उसके उपद्रव से बचने के लिए भी कोई पृथक दुआ होती।

शेष हाशिया - से विशिष्टता रखती है। यदि यह बात विलक्षण होती और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से ही विशिष्ट होती तो ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में उसका उदाहरण जो इस से बढ़कर था क्यों प्रस्तुत करता और क्यों फ़रमाता-

اِنَّ مَثَلَ عِیۡسٰی عِنۡدَ اللّٰہِ کَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَہٗ مِنۡ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَہٗ کُنۡ فَیَکُوۡنُ

(आले इमरान-60)

अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का उदाहरण ख़ुदा तआला के नज़दीक ऐसा है जैसा आदम का उदाहरण कि ख़ुदा ने उसको मिट्टी से जो समस्त इन्सानों की मां है पैदा किया और उसको कहा कि हो जा तो वह हो गया। अर्थात् जीता-जागता हो गया। अब स्पष्ट है कि किसी बात का उदाहरण पैदा होने से वह बात अद्वितीय नहीं कहला सकती और जिस व्यक्ति को किसी व्यक्तिगत लत का कोई उदाहरण मिल जाए तो फिर वह व्यक्ति नहीं कह सकता कि यह विशेषता मुझ से विशिष्ट है। इस निबंध के लिखने के समय ख़ुदा ने मुझे संबोधित करके फ़रमाया कि **'यलाश'** ख़ुदा का ही नाम है। यह एक नया इल्हामी शब्द है कि अब तक मैंने इसको इस रूप में क़ुर्आन और हदीस में नहीं पाया और न किसी शब्दकोश की पुस्तक में देखा। इसके अर्थ मुझ पर यह खोले गए कि हे लाशरीक (भागीदार रहित)। इस नाम के इल्हाम से तात्पर्य यह है कि कोई इन्सान किसी ऐसी प्रशंसनीय विशेषता या संज्ञा या किसी क्रिया से विशिष्ट नहीं है कि वह विशेषता या संज्ञा या क्रिया किसी अन्य में नहीं पाई जाती यही रहस्य है जिसके कारण प्रत्येक नबी की विशेषताएं तथा चमत्कार प्रतिबिम्बों के रंग में उसकी उम्मत के विशेष लोगों में प्रकट होते हैं जो इसके जौहर से पूर्ण अनुकूलता रखते हैं ताकि किसी विशिष्टता के धोखे में मूर्ख लोग उम्मत के किसी नबी को लाशरीक (भागीदार रहित) न ठहराएं। यह बड़ा कुफ्र है जो किसी नबी को यलाश का नाम दिया जाए। किसी नबी का कोई चमत्कार या विलक्षण बात ऐसी नहीं है जिसमें हज़ारों अन्य लोग भागीदार न हों। ख़ुदा को सबसे अधिक प्रिय अपनी तौहीद (एकेश्वरवाद) है। एकेश्वरवाद के लिए तो अंबिया अलैहिस्सलाम का यह सिलसिला महा तेजस्वी ख़ुदा ने पृथ्वी पर स्थापित किया। अतः यदि ख़ुदा का यह आशय था कि कुछ सिफ़ात की प्रतिपालन की विशेषताओं

परन्तु स्पष्ट है कि इस स्थान पर अर्थात् सूरह फ़ातिहा में केवल मसीह मौऊद को कष्ट देने से बचने के लिए तथा ईसाइयों के उपद्रव से सुरक्षित रहने के लिए दुआ

शेष हाशिया - से कुछ इन्सानों को विशिष्ट किया जाए तो फिर उसने क्यों कलिम-ए-तय्यिब: لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ (ला इलाहा इल्लल्लाह) की शिक्षा दी जिसके लिए अरब के मैदानों में हज़ारों सृष्टि पूजकों के ख़ून बहाए गए। अत: हे दोस्तो! यदि तुम चाहते हो कि ईमान को शैतान के हाथ से बचा कर अन्तिम सफर करो तो किसी इन्सान को विलक्षण विशेषता से विशिष्ट मत करो कि यही वह गन्दा चश्मा (स्त्रोत) है जिस से शिर्क की गन्दगियां जोश मार कर निकलती हैं और इन्सानों को तबाह करती हैं। अत: तुम इस से स्वयं तथा अपनी सन्तान को बचाओ कि तुम्हारी मुक्ति इसी में है। हे बुद्धिमानो! थोड़ा सोचो कि यदि उदाहरणतया हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उन्नीस सौ वर्ष से दूसरे आकाश पर जीवित बैठे हैं और मुर्दा रूहों को जा मिले और हज़रत यह्या के पहलू से पहलू मिला कर बैठ गए फिर भी इस संसार में हैं और किसी अन्तिम युग में जो मानो इस उम्मत के मरने के बाद आएगा, आकाश पर से उतरेंगे। तो शिर्क से बचने के लिए ऐसी किसी विलक्षण विशेषता का उदाहरण तो प्रस्तुत करो। अर्थात् किसी ऐसे मनुष्य का नाम लो जो लगभग दो हज़ार वर्ष से आकाश पर चढ़ा बैठा है और खाता, न पीता, न सोता और न कोई अन्य शारीरिक गुण प्रकट करता और फिर साकार है और रूहों के साथ भी ऐसा मिला हुआ है कि जैसे उन रूहों में एक रूह है और फिर सांसारिक जीवन में भी कोई अंतर नहीं। इस लोक में भी है और परलोक में भी, जैसे दोनों ओर अपने दो पैर फैला रखे हैं।* एक पैर दुनिया में और दूसरा पैर मृत्यु प्राप्त रूहों

***हाशिए का हाशिया -** हम बार बार लिख चुके हैं कि हज़रत मसीह को आकाश पर जीवित चढ़ने और इनती अवधि तक जीवित रहने और फिर दोबारा उतरने की इतनी बड़ी विशिष्टता दी गई है इसके प्रत्येक पहलू से हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान होता है और ख़ुदा तआला का एक बड़ा संबंध जिसकी कुछ गिनती और हिसाब नहीं हज़रत मसीह से ही सिद्ध होता है। उदाहरणतया आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आयु सौ वर्ष तक भी नहीं पहुंची परन्तु हज़रत मसीह अब लगभग दो हज़ार वर्ष से जीवित मौजूद हैं और ख़ुदा तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छुपाने के लिए एक ऐसा अधम स्थान बताया जो नितान्त दुर्गन्धिपूर्ण, संकीण, अंधकारमय और पृथ्वी के कीड़ों की गन्दगी का स्थान था। परन्तु हज़रत मसीह को आकाश पर जो स्वर्ग का स्थान और फ़रिश्तों के पड़ोस का मकान है बुला लिया। अब बताओ प्रेम किस से अधिक किया? सम्मान किस का अधिक किया? सानिध्य का स्थान किस को दिया? और फिर दोबारा आने का सम्मान किसे प्रदान किया? इसी से।

की गई है। हालांकि वर्तमान मुसलमानों के विचारों के अनुसार दज्जाल एक और व्यक्ति है और उस का उपद्रव समस्त उपद्रवों से बढ़कर है। तो जैसे नऊज़ुबिल्लाह

शेष हाशिया - में और सांसारिक जीवन भी विचित्र कि इतने लम्बे समय के बावजूद खाने-पीने का मुहताज नहीं और नींद से भी निवृत्त है और फिर अन्तिम युग में बड़ी धूम-धाम और तेजस्वी फ़रिश्तों के साथ आकाश पर से उतरेगा। और यद्यपि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मेराज की रात में न चढ़ना देखा गया और न उतरना। परन्तु हज़रत मसीह का उतरना देखा जाएगा। समस्त मौलवियों के सामने फ़रिश्तों के कंधों पर हाथ रखते हुए उतरेगा। फिर इसी पर बस नहीं अपितु मसीह ने वे कार्य दिखाए जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम विरोधियों के आग्रह के बावजूद दिखा न सके। बार-बार क़ुर्आन के चमत्कार का ही हवाला दिया। तुम्हारे कथानुसार मसीह सचमुच मुर्दों को जीवित करता रहा। शहर के लाखों लोग हज़ारों वर्षों के मरे हुए जीवित कर दिए। एक बार शहर का शहर जीवित कर दिया। परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी एक मक्खी भी जीवित नहीं की और फिर मसीह ने तुम्हारे कथानुसार हज़ारों पक्षी भी पैदा किए और अब तक ख़ुदा की कुछ सृष्टियां और कुछ उसकी सृष्टियां दुनिया में मौजूद हैं। इन समस्त विलक्षण कार्यों में वह भागीदार रहित अकेला है। अपितु कुछ बातों में ख़ुदा से बढ़ा हुआ है।* और उसकी पैदायश के समय शैतान ने भी उसे स्पर्श नहीं किया, परन्तु समस्त पैग़म्बरों को स्पर्श किया।

***हाशिए का हाशिया -** ख़ुदा से बढ़ा हुआ इस प्रकार से कि ख़ुदा तो नौ महीने में इन्सान का बच्चा पैदा करता है और प्रत्येक जानवर की पैदायश कुछ न कुछ मुहलत चाहती है परन्तु मसीह की यह अद्भुत सृष्टि करना ख़ुदा के सृजन से कई गुना बढ़ा हुआ मालूम होता है। क्योंकि मसीह का यह कार्य था कि तुरन्त मिट्टी का जानवर बनाया और फूंक मारते ही वह जीवित होकर उड़ने लगा और ख़ुदा के पक्षियों में जा मिला। मैंने एक बार एक ग़ैर मुक़ल्लिद से जो अहले हदीस कहलाते हैं पूछा कि जब तुम्हारे कथानुसार हज़रत मसीह ने हज़ारों पक्षी बनाए तो क्या तुम उन दो प्रकार के पक्षियों में कुछ अन्तर कर सकते हो कि मसीह के कौन से हैं और ख़ुदा के कौन से। उसने उत्तर दिया कि आपस में मिल गए। अब कैसे अन्तर हो सकता है। इस आस्था से नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा तआला भी धोखेबाज़ ठहरता है कि अपने बन्दों को तो आदेश दिया कि मेरा कोई भागीदार न बनाओ और फिर स्वयं हज़रत मसीह को ऐसा बड़ा भागीदार और हिस्सेदार बना दिया कि कुछ तो ख़ुदा की सृष्टि और कुछ हज़रत मसीह की सृष्टि है अपितु मसीह ख़ुदा के 'बअस बादलमौत' (मृत्यु के बाद क़यामत के दिन उठाना) में भी भागीदार और परोक्ष के ज्ञान में भी भागीदार। क्या अब भी न कहें कि झूठों पर ख़ुदा की लानत। इसी से

ख़ुदा भूल गया कि एक बड़े उपद्रव का वर्णन भी न किया और केवल दो उपद्रवों का वर्णन किया। एक आन्तरिक अर्थात् मसीह मौऊद को यहूदियों की तरह कष्ट देना दूसरे ईसाई धर्म ग्रहण करना। स्मरण रखो और भली भांति स्मरण रखो कि

शेष हाशिया - वह क़यामत को भी अपना कोई गुनाह नहीं बताएगा। परन्तु अन्य समस्त नबी गुनाहों में ग्रस्त होंगे, यहां तक कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी नहीं कह सकेंगे कि मैं मासूम हूं। अब बताओ कि इतनी विशेषताएं हज़रत मसीह में जमा करके क्या इन मौलवियों ने हज़रत ईसा को ख़ुदाई के पद तक नहीं पहुंचाया? और क्या किसी सीमा तक पादरियों के कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चले? और क्या इन लोगों ने हज़रत ईसा को भागीदार रहित अकेला होने की श्रेणी देने में कुछ अन्तर किया है? परन्तु मुझे ख़ुदा ने इस नवीनीकरण के लिए भेजा है कि मैं लोगों पर व्यक्त करूं कि ऐसा विचार करना कुफ़्र, स्पष्ट कुफ़्र और बहुत बड़ा कुफ़्र है। अपितु यदि वास्तविक तौर पर हज़रत मसीह ने कोई चमत्कार दिखाया है या कोई चमत्कारपूर्ण विशेषता हज़रत मसीह के किसी कथन या कर्म या दुआ या ध्यान में पाई जाती है तो निस्सन्देह वह विशेषता करोड़ों अन्य मनुष्यों में भी पाई जाती है-

ومن انکر بِہٖ فقد کفر و اغضب ربّہ اللّٰہ اکبر واللّٰہ تفرّد بتوحیدہ
لا الٰہ الّا ھو ولیس کمثلہ احد من نوع البشر والعباد یشابہ بعضھم بَعْضًا
فلا تجعل احدًا منھم وحیدًا واتّق اللّٰہ و احذر

अत्यन्त आश्चर्य उन लोगों की समझ पर है जो कहते हैं कि हम अहले हदीस और ग़ैर मुक़ल्लिद हैं तथा दावा करते हैं कि हम तौहीद (एकेश्वरवाद) के मार्गों को पसन्द करते हैं। ये वही लोग हैं जो हनफ़ियों को यह इल्ज़ाम देते है कि तुम कुछ वलियों को ख़ुदा की विशेषताओं में भागीदार कर देते हो और उनसे मनोकामनाएं मांगते हो। और अभी हम सिद्ध कर चुके हैं कि ये लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम में बहुत सी ख़ुदाई विशेषताएं स्थापित करते हैं और उनको स्रष्टा और मुर्दों को जीवित करने वाला तथा अन्तर्यामी ठहराते हैं और उनके लिए वे विशेषताएं स्थापित करते हैं जो किसी इन्सान में उनका उदाहरण पाए जाने की आस्था नहीं रखते। हांलाकि ख़ुदा की तौहीद की जड़ यही है कि वह अपने अस्तित्व में तथा अपनी विशेषताओं में अपने कार्यों में भागीदार रहित एक नहीं। ये वही लोग हैं जो उन चमत्कारों पर ऐतराज़ किया करते थे जो हज़रत सय्यद शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तथा अन्य आदरणीय औलिया से प्रकटन में आए। ये वही एकेश्वरवादी कहलाने वाले हैं जो इस बात पर हंसते थे कि क्योंकर संभव है कि एक नौका बारह वर्ष के बाद दरिया में से निकली और जितने लोग डूबे थे सब उसमें जीवित मौजूद हों। अब ये लोग

सूरह फ़ातिहा में केवल दो उपद्रवों से बचने के लिए दुआ सिखाई गई है-

(1) **प्रथम-** यह उपद्रव कि इस्लाम के मसीह मौऊद को काफ़िर ठहराना, उसका अपमान करना, उसकी व्यक्तिगत बातों में दोष निकालने का प्रयास करना,

---

शेष हाशिया - दज्जाल में वे चमत्कारी विशेषताएं स्थापित करते हैं जो कभी किसी वली के बारे में वैध नहीं रखते थे। ये लोग कहा करते थे कि हे शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी शैअन लिल्लाह (يَا شيخ عبد القادر جيلانی شيئًالله) कहना कुफ़्र है। और अब उस कुफ़्र को जो उस से बढ़कर है मसीह के बारे में वैध समझते हैं ⁂ जो उस से बढ़कर है मसीह के बारे में वैध समझते हैं और उनको कुछ विलक्षण विशेषताओं में ख़ुदा तआला की तरह भागीदार रहित एक ठहराते हैं। और स्मरण रहे कि ख़ुदा ने बिन बाप पैदा होने में हज़रत आदम से हज़रत मसीह को समानता दी है और यह बात कि किसी दूसरे इन्सान से क्यों समानता नहीं दी। यह केवल इस उद्देश्य से है ताकि प्रसिद्ध, परिचित उदाहरण प्रस्तुत किया जाए। क्योंकि ईसाइयों को यह दावा था कि बिन बाप पैदा होना हज़रत मसीह की विशेषता है और यह ख़ुदा होने का तर्क है। तो ख़ुदा ने इस तर्क का खण्डन करने के लिए वह उदाहरण प्रस्तुत किया जो ईसाइयों के नज़दीक मान्य और स्वीकृत है। यदि ख़ुदा तआला अपनी सृष्टि में से कोई अन्य उदाहरण प्रस्तुत करता तो वह उस उदाहरण की तरह नितान्त स्पष्ट और मान्य सबूत न होता और सरसरी बात होती। अन्यथा संसार में स्हात्रों लोग ऐसे हैं जो बिन बाप पैदा हुए हैं और निष्कर्ष यह कि यह बात दुर्लभ होना इसी प्रकार का है जैसे जुड़वां में दुलर्भ होना है जो ख़ुदा तआला की प्रकृति ने इस लेखक के हिस्से में रखी थी ताकि दुर्लभ होने में समानता हो जाए। और फिर ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मसीह को आदम से जो समानता दी है और फिर बराहीन अहमदिया में जिस को प्रकाशित हुए बीस वर्ष गुज़र गए मेरा नाम आदम रखा है। और यह इस बात की ओर संकेत है कि जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को हज़रत आदम से समानता है ऐसा ही मुझ से भी समानता है। एक तो यही समानता जो अद्भुत उत्पत्ति में है। दूसरी अधिक इस बात में कि वह इस्राईली ख़लीफ़ों में से अन्तिम ख़लीफ़ा हैं परन्तु इस्राईल के खानदान से नहीं। हालांकि ज़बूर में वादा था कि इस सिलसिले के समस्त ख़लीफ़े इस्राईली ख़ानदान में

⁂ **हाशिए का हाशिया -** इन लोगों की ग़लत, अक्षरांतरित आस्थाओं पर यह एक बड़ा तर्क है कि वास्तविक इस्लाम के लिए वादा है कि वह प्रत्येक धर्म पर विजयी होगा। परन्तु ये लोग ईसाई धर्म जैसी लज्जाजनक आस्थाओं के सामने एक मिनट भी अपने इन सिद्धान्तों के साथ ठहर नहीं सकते और बुरी तरह पराजित होकर भागते हैं। इसी से

उसके क़त्ल का फ़त्वा देना जैसा कि आयत غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ में इन्हीं बातों की ओर संकेत है।

(2) **द्वितीय-** ईसाइयों के उपद्रव से बचने के लिए दुआ सिखाई गई तथा सूरह को इसी के वर्णन पर समाप्त करके संकेत किया गया है कि ईसाइयों का फ़ित्न: (उपद्रव) एक भयंकर बाढ़ की तरह होगा इस से बढ़कर कोई उपद्रव नहीं। अत: इस अन्वेषण से स्पष्ट है कि इस ख़ाकसार के बारे में पवित्र क़ुर्आन ने अपनी पहली सूरह में ही गवाही दे दी, अन्यथा सिद्ध करना चाहिए कि किन مَغْضُوْبِ عَلَيْهِم से इस सूरह में डराया गया है? क्या यह सच नहीं कि हदीस

शेष हाशिया - से होंगे। तो जैसे मां का इस्राईली होना इस वादे को ध्यान में रखने के लिए पर्याप्त समझा गया। इसी प्रकार मैं भी मुहम्मदी सिलसिले के ख़लीफ़ों में से अन्तिम ख़लीफ़ा हूं। परन्तु बाप की दृष्टि से क़ुरैश में से नहीं हूं। यद्यपि कुछ दादियां सादात में से होने के कारण क़ुरैश में से हूं। मेरी तीसरी समानता हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से यह है कि वह प्रकट नहीं हुए जब तक हज़रत मूसा की मृत्यु पर चौदहवीं सदी का प्रकटन नहीं हुआ। ऐसा ही मैं भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत से चौदहवीं सदी के सर पर अवतरित हुआ हूं। चूंकि ख़ुदा तआला को यह पसन्द आया है कि प्रकृति के रूहानी नियम को प्रकृति के भौतिक नियम के समान करके दिखाए। इसलिए उस ने मुझे चौदहवीं सदी के सर पर पैदा किया। क्योंकि खिलाफ़त के सिलसिले से मूल उद्देश्य यह था कि सिलसिला उन्नति करता-करता पूर्णता के बिन्दु पर समाप्त हो। अर्थात् उसी बिन्दु पर जहां इस्लामी मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञान), इस्लामी प्रकाश, इस्लामी तर्क, और प्रमाण पूर्ण रूप से चमक-दमक के साथ मौजूद हों। और चूंकि चन्द्रमा चौदहवीं रात में अपने प्रकाश में पूर्णता तक पहुंचा हुआ होता है। इसलिए मसीह मौऊद को चौदहवीं सदी के सर पर पैदा करना इस ओर संकेत था कि उसके समय में इस्लामी मआरिफ़ और बरकतें पूर्णता तक पहुंच जाएंगी जैसा कि आयत-

لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ-10)

में इसी पूर्ण कमाल की ओर संकेत है। और चूंकि चन्द्रमा अपने पूर्ण कमाल की रात में अर्थात् चौदहवीं रात में पूरब की ओर से उदय होता है। इसलिए यह अनुकूलता भी जो ख़ुदा के भौतिक तथा आध्यात्मिक (रूहानी) क़ानून में होनी चाहिए यही चाहती थी कि मसीह मौऊद जो इस्लाम के पूर्ण कमाल को प्रकट करने वाला है पूरब के देशों में से ही पैदा हो। चौथी समानता मुझे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उस

और पवित्र क़ुरआन में अन्तं युग के कुछ उलमा को यहूद से समानता दी है क्या यह सच नहीं कि مغضوب علیھم से अभिप्राय वे यहूदी हैं जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जो मूस्वी सिलसिले के अन्तिम ख़लीफ़ा और मसीह मौऊद थे काफ़िर ठहराया था और उनका बहुत अपमान किया था और उनकी व्यक्तिगत बातों में झूठ गढ़ते हुए दोष प्रकट किए थे। तो जबकि यही مغضوب علیھم का शब्द उन यहूदियों के मसीलों (समरूपों) पर बोला गया जिन का नाम (उन्हें) काफ़िर कहने और अपमान करने के कारण مغضوب علیھم

शेष हाशिया - समय प्रकट हुए थे जब कि उन के जन्म भूमि वाले देश और उसके आस-पास से बनी इस्राईल की हुकूमत पूर्णतया समाप्त हो गई थी और ऐसे ही समय में ख़ुदा ने मुझे अवतरित किया। पांचवी समानता हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मुझे यह है कि वह रूमी सरकार के समय अर्थात् रूम के क़ैसर के युग में मामूर हुए थे। तो ऐसा ही मैं भी रूमी सरकार और क़ैसर-ए-हिन्द के शासन-काल में अवतरित किया गया हूं और ईसाई सरकार को मैंने इसलिए रूमी सरकार के नाम से याद किया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस ईसाई सरकार का नाम जो मसीह मौऊद के समय में होगी रूम ही रखा है। जैसा कि सही मुस्लिम की हदीस से प्रकट है। छठी समानता मुझे हज़रत मसीह से यह है कि जैसे उनको काफ़िर बनाया गया,गालियां दी गईं, उनकी मां का अपमान किया गया ऐसा ही मुझ पर कुफ्र का फ़त्वा लगा और गालियां दी गईं और मेरे घर वालों का अपमान किया गया। सातवीं समानता मुझे हज़रत मसीह से यह है कि जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर उनके गिरफ़्तार करने के लिए झूठे मुक़द्दमें बनाए गए और जासूसियां की गईं और यहूदियों के मौलवियों ने अदालत में जाकर उनके विरुद्ध गवाहियां दीं। इसी प्रकार मुझ पर भी झूठे मुक़द्दमें बनाए गए और उन झूठे मुक़द्दमों के समर्थन में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने मुझे फांसी दिलाने के लिए अदालत में कप्तान डगलस साहिब के सामने पादरियों की सहायता में गवाही दी। अन्तत: अदालत ने सिद्ध किया कि क़त्ल के आरोप का मुक़द्दमा झूठा है। अत: स्वयं सोच लो कि इस मौलवी की गवाही किस प्रकार की थी। आठवीं समानता मुझे हज़रत मसीह से यह है कि हज़रत मसीह का जन्म ऐसे अत्याचारी बादशाह अर्थात् हीरोडिस के काल में हुआ थी जो इस्राईल के लड़कों को क़त्ल करता था। इसी प्रकार मेरा जन्म भी सिक्खों के काल के अन्तिम भाग में हुआ था जो मुसलमानों के लिए हीरोडिस से कम न थे। इसी से

रखा गया था। अत: यहां مغضوب عليهم के पूरे अर्थ को दृष्टिगत रख कर जब सोचा जाए तो मालूम होगा कि यह आने वाले मसीह मौऊद की बारे में साफ और स्पष्ट भविष्यवाणी है कि वह मुसलमानों के हाथ से पहले मसीह की तरह कष्ट उठाएगा और यह दुआ कि हे मेरे अल्लाह! हमें مغضوب عليهم होने से बचा। इसके ठोस और निश्चित यही मायने हैं कि हमें इस से बचा कि हम तेरे मसीह मौऊद को जो पहले मसीह का मसील (समरूप) है कष्ट न दें, उसे काफ़िर न ठहराएं। इन अर्थों के लिए यह प्रसंग प्रर्याप्त है कि مغضوب عليهم केवल उन यहूदियों का नाम है जिन्होंने हज़रत मसीह को कष्ट दिया था और हदीसों में अन्तिम युग के उलेमा का नाम यहूदी रखा गया है। अर्थात् वे जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को काफ़िर ठहराया और अपमान किया था।★ और उस दुआ में है कि हे ख़ुदा! मुझे वह फ़िर्क़ा मत बना जिन का नाम مغضوب عليهم है। अत: दुआ के रंग में यह एक भविष्यवाणी है जो दो ख़बरों पर आधारित है। एक यह कि इस उम्मत में भी एक मसीह मौऊद पैदा होगा और दूसरी भविष्यवाणी यह है कि इस उम्मत में से कुछ लोग उसको भी काफ़िर ठहराएंगे और अपमान करेंगे, और वे लोग ख़ुदा के प्रकोप के पात्र होंगे। और उस समय का निशान यह है कि उन दिनों में ईसाइयों का फ़ित्न: (उपद्रव) भी सीमा से बढ़ा हुआ होगा। जिन का नाम ضالّين है और ضالّين पर भी अर्थात् ईसाइयों पर भी यद्यपि ख़ुदा तआला का प्रकोप है कि वे ख़ुदा के आदेश के श्रोता नहीं हुए परन्तु इस प्रकोप के लक्षण क़यामत को प्रकट होंगे। और यहां مغضوب عليهم से वे लोग अभिप्राय हैं जिन पर काफ़िर ठहराने और अपमान, कष्ट और मसीह मौऊद के क़त्ल के इरादे के कारण संसार में ही ख़ुदा का प्रकोप उतरेगा। यह मेरे जानी दुश्मनों के लिए क़ुर्आन की भविष्यवाणी है। स्मरण रखना चाहिए कि यद्यपि जो व्यक्ति सीधे मार्ग को छोड़ता है वह ख़ुदा

★हाशिया :- हदीसों में स्पष्ट तौर पर यह भी बताया गया है कि मसीह मौऊद को भी काफिर ठहराया जाएगा और समय के उलेमा उसे काफ़िर ठहराएंगे और कहेंगे कि यह कैसा मसीह है इसने तो हमारे धर्म को जड़ से उखाड़ दिया। इसी से।

तआला के प्रकोप के नीचे आता है। परन्तु ख़ुदा तआला का अपने दोषियों से दो प्रकार का मामला है और दोषी दो प्रकार के हैं-

(1) – एक वे दोषी हैं जो सीमा से अधिक नहीं बढ़ते और यद्यपि अत्यन्त पक्षपात से गुमराही को नहीं छोड़ते परन्तु वे अत्याचार और कष्ट के तरीक़ों में एक सामान्य स्तर तक रहते हैं। अपने अन्याय एवं अत्याचार को चरम सीमा तक नहीं पहुंचाते। अत: वे तो अपना दण्ड क़यामत को पाएंगे और सहनशील ख़ुदा उन्हें यहां नहीं पकड़ता क्योंकि उसके आचरण में सीमा से अधिक कठोरता नहीं। इसलिए ऐसे गुनाहों के दण्ड के लिए केवल एक ही दिन निर्धारित है जो योमुलमजाज़ात, योमुद्दीन, और यौमुल फ़स्ल कहलाता है।

(2) – दूसरे प्रकार के वे दोषी हैं जो अन्याय, अत्याचार, गुस्ताखी, घृष्टता में सीमा से बढ़ जाते हैं और चाहते हैं कि ख़ुदा के मामूरों, रसूलों तथा ईमानदारों को दरिन्दों की तरह फाड़ डालें और संसार से उनका नामो-निशान मिटा दें और उनको आग की तरह भस्म कर डालें। ऐसे दोषी के लिए जिनका प्रकोप चरम सीमा तक पहुंच जाता है। ख़ुदा की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला का प्रकोप उन पर इसी संसार में भड़कता है और इसी संसार में वे दण्ड पाते हैं। इस दण्ड के अतिरिक्त जो क़यामत को मिलेगा। इसलिए क़ुर्आनी परिभाषा में उनका नाम مغضوب علیھم है। और ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में इस नाम का वास्तविक चरितार्थ उन यहूदियों को ठहराया है जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मिटाना चाहा था। तो उनके हमेशा के प्रकोप के मुकाबले पर ख़ुदा ने भी उनको हमेशा के प्रकोप के वादे से पैरों के नीचे रौंद दिया। जैसा कि आयत -

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ (आले इमरान-56)

से समझा जाता है इस प्रकार का प्रकोप जो क़यामत तक समाप्त न हो उसका उदाहरण पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मसीह के शुत्रओं के या आने वाले मसीह मौऊद के दुश्मनों के अतिरिक्त अन्य किसी क़ौम के लिए नहीं पाया जाता।★

★**हाशिया :-** यद्यपि दुर्भाग्यशाली यहूदी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी शुत्रता रखते थे परन्तु उस मदद दिए गए सफल नबी के मुकाबले पर जिसके तीर दुश्मनों को ख़ूब

और مغضوب علیہم के शब्द में दुनिया के प्रकोप का अज़ाब का वादा है जो दोनों मसीहों के शत्रुओं के बारे में है। यह ऐसा स्पष्ट आदेश है कि इस से इन्कार क़ुर्आन से इन्कार है।

और यह मायने जो अभी मैंने सूरह फ़ातिहा की दुआ غیر المغضوب علیھم ولا الضّآ لّین (अलफ़ातिहा-7) के बारे में वर्णन किए हैं उन्हीं की ओर पवित्र क़ुर्आन की अन्तिम चार सूरतों में संकेत है। जैसा कि सूरह तब्बत की पहली आयत अर्थात् تَبَّتْ یَدَآ اَبِیۡ لَھَبٍ وَّ تَبَّ (अल्लहब-2) उस दुष्ट की ओर संकेत करती है जो जमाल-ए-अहमदी का द्योतक अर्थात् अहमद महदी का काफ़िर ठहराने वाला, झुठलाने वाला और अपमान करने वाला होगा। अत: आज से बीस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-510 में यही आयत बतौर इल्हाम इस ख़ाकसार के हक़ में मौजूद है और वह इल्हाम जो कथित पृष्ठ 19 और 22वीं पंक्ति में है यह है-

اذ یمکر بک الذی کفّر اوقد لی یا ھامان لعلّی اطّلع علی الٰہ موسٰی وانی لاظنّہ من الکاذبین تبّت یدا ابی لھب وتب ما کان لہ ان یدخل فیھا الّا خائفا وما اصابک فمن اللہ

अर्थात् स्मरण कर वह युग जब एक मौलवी तुझ पर कुफ्र का फ़त्वा लगाएगा और अपने किसी सहायक को जिस का लोगों पर प्रभाव पड़ सके, कहेगा कि मेरे लिए इस फ़ित्न: की आग भड़का। अर्थात् ऐसा कर और इस प्रकार का फ़त्वा दे दे कि समस्त लोग इस व्यक्ति को काफ़िर समझ लें ताकि मैं देखूं कि इस का ख़ुदा से क्या संबंध है। अर्थात् यह जो मूसा की तरह अपना कलीमुल्लाह होना व्यक्त करता है क्या ख़ुदा इस का सहायक है अथवा नहीं। और मैं सोचता हूं कि यह झूठा है। तबाह हो गए दोनों हाथ अबी लहब के (जबकि उसने यह फ़त्वा लिखा) और वह स्वयं भी तबाह हो गया। उसको नहीं चाहिए था कि इस कार्य में हस्तेक्षप करता परन्तु डर-डर कर। और जो ग़म तुझे पहुंचेगा वह तो ख़ुदा की ओर से है। यह भविष्यवाणी कुफ्र के फ़तवे से लगभग बारह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया मे प्रकाशित

तेज़ी दिखाते थे अभागे यहूदियों की कुछ चालाकी नहीं चली। इसी से।

हो चुकी है। अर्थात् जबकि मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब ने यह कुफ्र का फ़त्वा लिखा और मियां नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी को कहा कि सर्वप्रथम इस पर मुहर लगा दे और मेरे कुफ्र के बारे में फ़त्वा दे दे और समस्त मुसलमानों में मेरा काफ़िर होना प्रकाशित कर दे। अत: इस फ़त्वे और मियां साहिब की मुहर से बारह वर्ष पूर्व यह पुस्तक समस्त पंजाब और हिन्दुस्तान में प्रकाशित हो चुकी थी और मौलवी मुहम्मद हुसैन जो बारह वर्ष के बाद पहले मुकफ़्फ़िर बने। काफ़िर ठहराने के प्रवर्त्तक वही थे और इस आग को अपनी प्रसिद्धि के कारण सम्पूर्ण देश में सुलगाने वाले मियां नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी थे। यहां से ख़ुदा का ग़ैब का ज्ञान सिद्ध होता है कि अभी इस फ़त्वे का नामोनिशान न था अपितु मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब मेरे बारे में स्वयं को सेवकों के समान समझते थे। उस समय ख़ुदा तआला ने यह भविष्यवाणी की। जिस व्यक्ति को बुद्धि और समझ का कुछ भी हिस्सा है वह सोचे और समझे कि क्या मानवीय शक्तियों में यह बात सम्मिलित हो सकती है कि जो तूफान बारह वर्ष के बाद आने वाला था जिसका शक्तिशाली सैलाब मौलवी मुहम्मद हुसैन जैसे निष्कपटता के दावेदार को गुमराही की श्रेणी की ओर खींच ले गया और नज़ीर हुसैन जैसे निष्कपट को जो कहता था कि बराहीन अहमदिया जैसी कोई पुस्तक इस्लाम में नहीं लिखी गई इस सैलाब ने दबा लिया। इस तूफ़ान की खबर पहले मुझे या किसी अन्य को केवल बौद्धिक क्रमों से होती। यह ख़ुदा का शुद्ध ज्ञान है जिसे चमत्कार कहते हैं। तो बराहीन अहमदिया के इस इल्हाम में सूरह तब्बत की पहली आयत का चरितार्थ उस व्यक्ति को ठहराया है जिसने सर्वप्रथम ख़ुदा के मसीह मौऊद पर कुफ्र और अपमान के साथ आक्रमण किया। और यह इस बात पर तर्क है कि पवित्र क़ुर्आन ने भी इसी सूरह में अबू लहब की चर्चा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुश्मन के अलावा मसीह मौऊद के दुश्मन को अभिप्राय लिया है।★ और यह तफ़्सीर उस इल्हाम के

★**हाशिया :-** इब्ने सअद ने अपनी पुस्तक 'तवक़ात' में और अबू नईम ने अपनी हुलिय: में अबू क़लाबा से रिवायत की है कि अबूदर्दा ने कहा है कि-

انك لا تفقه كل الفقه حتّٰى ترى للقران وجوها

द्वारा खुली है जो आज से बीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर करोड़ों इन्सानों अर्थात् ईसाइयों, हिन्दुओं और मुसलमानों में प्रकाशित हो चुका था। इसलिए यह तफ़्सीर सर्वथा ख़ुदा की ओर से है और तकल्लुफ और बनावट से पवित्र है और प्रत्येक बुद्धिमान और न्याय प्रिय को इस बात में सन्देह न होगा कि जब ख़ुदा के इल्हाम ने आज से बीस वर्ष पूर्व एक महान भविष्यवाणी में बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-510 में दर्ज है और पूर्ण सफाई से पूरी हो चुकी है यही मायने किए हैं तो ये मायने विवेचनात्मक नहीं अपितु ख़ुदा की ओर से होकर निश्चित और ठोस हैं। और इस इल्हामी भविष्यवाणी की दृढ़ता पर आधारित हैं जिसने पूर्ण सफाई के साथ अपनी सच्चाई प्रकट कर दी है। अत: आयत

تَبَّتۡ یَدَاۤ اَبِیۡ لَهَبٍ وَّ تَبَّ (अल्लहब-2)

जो पवित्र क़ुर्आन के अन्तिम सिपारे में चार अन्तिम सूरतों में से पहली सूरह है। जिस प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुष्ट शत्रुओं पर संकेत करती है ऐसा ही क़ुरआनी आदेश के तौर पर इस्लाम के मसीह मौऊद को कष्ट देने वाले शत्रुओं पर इसकी दलील है और इसका उदाहरण यह है कि जैसे आयत-

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ

(अस्सफ़्फ़ - 10)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पक्ष में है और फिर यही आयत मसीह मौऊद के पक्ष में भी है जैसा कि समस्त व्याख्याकार (मुफ़स्सिर) इसकी ओर संकेत करते हैं। अत: यह बात कोई असाधारण बात नहीं है कि एक आयत का चरितार्थ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हों और फिर मसीह मौऊद भी उसी आयत का हो। अपितु पवित्र क़ुर्आन जो बहुमुखी है उस का मुहावरा

शेष हाशिया- अर्थात् तुझे क़ुर्आन की पूरी समझ कभी नहीं दी जाएगी जब तक तुझ पर यह न खुले कि क़ुर्आन कई कारणों पर अपने मायने रखता है। ऐसा ही मिश्कात में यह प्रसिद्ध हदीस है कि क़ुर्आन के लिए ज़हर (पीठ) और बतन (पेट) है और वह पहलों तथा बाद में आने वालों की जानकारी पर आधारित है। इसी से।

इसी शैली पर बना है कि एक आयत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभिप्राय और चरितार्थ होते हैं और उसी आयत का चरितार्थ मसीह मौऊद भी होता है। जैसा कि आयत

هُوَ الَّذِیْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰی (अस्सफ़्फ़-10)

से स्पष्ट है। और रसूल से अभिप्राय यहां आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी हैं और मसीह भी अभिप्राय है। कलाम का सारांश यह कि आयत تَبَّتْ يَدَآ اَبِیْ لَهَبٍ जो पवित्र क़ुर्आन के अन्त में है आयत مغضوب عليهم की एक व्याख्या है जो पवित्र क़ुर्आन के प्रारंभ में है। क्योंकि पवित्र क़ुर्आन के कुछ भाग कुछ की व्याख्या करते हैं फिर इसके बाद जो सूरह फ़ातिहा में والا الضَّالّين है उसके मुकाबले पर और उसकी व्याख्या में सूरह تَبَّت के बाद सूरह इख़्लास है। मैं वर्णन कर चुका हूं कि सूरह फ़ातिहा में तीन दुआएं सिखाई गई हैं-

(1) एक यह दुआ कि ख़ुदा तआला उस जमाअत में दाखिल रखे जो सहाबा की जमाअत है और फ़िर इसके बाद उस जमाअत में दाख़िल रखे जो मसीह मौऊद की जमाअत है जिनके बारे में पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है-

وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ (अलजुअ:-4)

तो इस्लाम में यही दो जमाअतें मुनइम अलैहिम (जिन पर इनाम हुए)। की जमाअतें हैं और इन्हीं की ओर संकेत है। आयत صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ में। क्योंकि सम्पूर्ण क़ुर्आन पढ़कर देखो जमाअतें दो ही हैं। एक सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की जमाअत दूसरी وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ की जमाअत जो सहाबा के रंग में है और वह मसीह मौऊद की जमाअत है। तो जब तुम नमाज़ में या नमाज़ के बाहर यह दुआ पढ़ो कि-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

तो दिल में यही ध्यान रखो कि मैं सहाबा और मसीह मौऊद की जमाअत का मार्ग मांगता हूं। यह तो सूरह फ़ातिहा की पहली दुआ है।

(2) दूसरी दुआ غير المغضوب عليهم है, जिस से अभिप्राय वे

लोग हैं जो मसीह मौऊद को दुख देंगे और इस दुआ के मुक़ाबले पर पवित्र क़ुर्आन के अन्त में सूरह इख़्लास है। अर्थात्-

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اَللّٰهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ (इख़्लास- 2-5)

और इसके बाद दो और सूरतें जो हैं, अर्थात् सूरह 'अलफ़लक' और सूरह 'अन्नास' ये दोनों सूरतें सूरह تَبَّت और सूरह इख़्लास के लिए बतौर व्याख्या के हैं। और इन दोनों सूरतों में उस अंधकारपूर्ण युग से ख़ुदा की शरण मांगी गई है जबकि लोग ख़ुदा के मसीह को दुख देंगे और जब ईसाइयत की गुमराही समस्त संसार में फैलेगी। इसलिए सूरह फ़ातिहा में इन तीनों दुआओं की शिक्षा बतौर बराअतुल इस्तिहलाल है अर्थात् वह अहम उद्देश्य जो क़ुर्आन में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है सूरह फ़ातिहा में संक्षिप्त तौर पर उसका प्रारंभ किया है सूरह تَبَّت और सूरह इख़्लास, सूरह अलफ़लक़ और सूरह अन्नास में क़ुर्आन के ख़तम के समय में इन्हीं दोनों बलाओं से ख़ुदा तआला की शरण मांगी गई है। तो ख़ुदा की किताब का प्रारंभ भी इन्हीं दोनों दुआओं से हुआ और ख़ुदा की किताब का अन्त भी इन्हीं दोनों दुआओं पर किया गया।

और स्मरण रहे कि इन दोनों फ़ित्नों का पवित्र क़ुर्आन में विस्तृत वर्णन है और सूरह फ़ातिहा और अन्तिम सूरतों में संक्षप्ति रूप में वर्णन है। उदाहरणतया सूरह फ़ातिहा में दुआ وَلا الضَّالّين में केवल दो शब्द में समझाया गया है कि ईसाइयत के फ़ित्ने से बचने के लिए दुआ मांगते रहो। जिस से समझा जाता है कि कोई महान फ़ित्न: सामने है जिस के लिए यह प्रबंध किया गया है कि नमाज़ के पांच समय में यह दुआ शामिल कर दी गई और यहां तक ज़ोर दिया गया कि इसके बिना नमाज़ हो नहीं सकती। जैसा कि हदीस لَا صَلٰوةَ اِلّا بالفاتحة से प्रकट होता है।★स्पष्ट है कि दुनिया में हज़ारों धर्म फैले हुए हैं। जैसा

★**हाशिया :-** यहां उन लोगों पर बड़ा अफ़सोस होता है जो कहते हैं कि हम अहले हदीस हैं। और सूरह फ़ातिहा पर हमेशा बल देते हैं कि इस के बिना नमाज़ पूरी नहीं होती। हालांकि सूरह फ़ातिहा का सार मसीह मौऊद की आज्ञा का पालन करना है। जैसा कि मूल इबारत में

कि पारसी अर्थात् मजूसी ब्रह्म अर्थात् हिन्दू धर्म और बुद्ध धर्म जो संसार के एक बड़े भाग पर क़ब्ज़ा रखता है और चीनी धर्म जिस में करोड़ों लोग दाखिल हैं और इसी प्रकार समस्त मूर्ति पूजक जो सख्या में सब धर्मों से अधिक हैं। और ये समस्त धर्म आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में बड़े ज़ोर और जोश से फैले हुए थे और ईसाई धर्म उनके नज़दीक ऐसा था जैसा कि एक पहाड़ के सामने एक तिनका। फिर क्या कारण कि सूरह फ़ातिहा में यह दुआ नहीं सिखाई कि उदाहरणतया ख़ुदा चीनी धर्म की पथ भ्रष्टताओं से शरण में रखे या मजूसियों की पथ भ्रष्टताओं से शरण में रखे या बुद्ध धर्म की गुमराहियों से शरण में रखे या आर्य धर्म की पथ भ्रष्टताओं से शरण में रखे या अन्य मूर्ति पूजकों की पथ भ्रष्टताओं से शरण में रखे अपितु यह फ़रमाया गया कि तुम दुआ करते रहो। कि ईसाई धर्म की पथ भ्रष्टताओं से सुरक्षित रहो। इस में क्या रहस्य है? और ईसाई धर्म में भविष्य के किसी युग में कौन सा महान फ़ित्न: पैदा होने वाला था जिस से बचने के लिए संसार के समस्त मुसलमानों को बल देकर कहा गया। अत: समझो और स्मरण रखो कि यह दुआ ख़ुदा के उस ज्ञान के अनुसार है कि जो उसे अन्तिम युग के बारे में था। वह जानता था कि ये सब धर्म मूर्ति पूजकों, चीनियों, पारसियों और हिन्दुओं इत्यादि के पतन पर हैं और उन के लिए कोई ऐसा जोश नहीं दिखाया जाएगा जो इस्लाम को खतरे में डाले। परन्तु ईसाइयत के लिए वह युग आता जाता है कि उसकी सहायता में बड़े-बड़े जोश दिखाए जाएंगे और करोड़ों रुपयों से और प्रत्येक यत्न और प्रत्येक छल और प्रपंच से उसकी उन्नति के लिए क़दम उठाया जाएगा और यह कामना की जाएगी कि समस्त संसार मसीह का उपासक हो जाए। तब वे दिन इस्लाम के लिए कठोर दिन होंगे और बड़ी परीक्षा के दिन होंगे। अत: अब यह वही फ़ित्न: का युग है जिस में तुम आज हो। तेरह सौ वर्ष की भविष्यवाणी जो सूरह फ़ातिहा में थी आज तुम में और तुम्हारे देश में पूरी हुई और इस फ़ित्न: की जड़ पूरब ही निकला। और जैसा कि इस फ़ित्ने का ज़िक्र क़ुर्आन के प्रारंभ में फ़रमाया गया ऐसा ही पवित्र

सिद्ध किया गया है। इसी से

क़ुरआन के अन्त में भी कर दिया गया ताकि यह बात दृढ़ होकर हृदयों में बैठ जाए। प्रारंभिक ज़िक्र जो सूरह फ़ातिहा में है वह तो तुम बार-बार सुन चुके हो और वह ज़िक्र जो पवित्र क़ुर्आन के अन्त में इस महान फ़ित्ने का है उसका हम कुछ और विवरण कर देते हैं। अत: वे सूरतें ये हैं-

(١۔سورۃ) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اَللّٰهُ الصَّمَدُ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ (अलइख़्लास 2 से 5)

(٢۔ سورۃ) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ (अलफ़लक़ 2 से 6)

(٣۔ سورۃ) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ مَلِكِ النَّاسِ اِلٰهِ النَّاسِ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ (अन्नास 2 से 7)

अनुवाद- तुम हे मुसलमानो! ईसाइयों से कहो कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह निस्पृह है, न उससे कोई पैदा हुआ और न वह किसी से पैदा हुआ और न कोई उसके बराबर का है। और तुम जो ईसाइयों का फ़ित्न: देखोगे और मसीह मौऊद के शत्रुओं का निशाना बनोगे, यों दुआ मांगा करो कि मैं समस्त मख़्लूक़ (सृष्टि) की बुराई से जो आन्तरिक और बाह्य शत्रु हैं उस ख़ुदा की शरण मांगता हूं जो सुब्ह का मालिक है। अर्थात् प्रकाश का प्रकट करना उसके अधिकार में है और मैं इस अंधेरी रात की बुराई से जो ईसाइयत के फ़ित्ने और मसीह मौऊद के इन्कार के फ़ित्ने की रात है ख़ुदा की शरण मांगता हूं। उस समय के लिए यह दुआ है जबकि अंधकार अपनी चरम सीमा को पहुंच जाए और मैं ख़ुदा की शरण उन स्त्रियों वाली प्रकृति के लोगों की शरारत से मांगता हूं जो गंडों पर पढ़-पढ़ कर फूंकते हैं (अर्थात् जो उक़्दे (जटिल बातें) शरीअत-ए-मुहम्मदिया में हल योग्य हैं) और जो ऐसी कठिनाइयां और معضلات हैं जिन पर मूर्ख विरोधी ऐतराज़ करते हैं और धर्म को झुठलाने का माध्यम ठहराते हैं उन पर और भी वैर के कारण फूंकें मारते हैं।

अर्थात् दुष्ट लोग इस्लामी बारीक मामलों को जो एक उक़्दे के रूप में हैं धोखा देने के तौर पर एक जटिल ऐतराज़ के रूप में बना देते हैं ताकि लोगों को गुमराह करें। इन गूढ़ मामलों पर अपनी ओर से कुछ हाशिए लगा देते हैं। और ये लोग दो प्रकार के हैं। एक तो स्पष्ट विरोधी और धर्म के शत्रु हैं, जैसे पादरी जो ऐसे काट-छांट कर ऐतराज़ बनाते रहते हैं और दूसरे वे इस्लाम के उलेमा जो अपनी ग़लती को त्यागना नहीं चाहते और अहंकार की फूंकों से ख़ुदा के स्वाभाविक धर्म में पेचीदिगियां पैदा कर देते हैं और औरतों वाला स्वभाव रखते हैं कि किसी मर्दे ख़ुदा के सामने मैदान में नहीं आ सकते। केवल अपने ऐतराज़ों को अक्षरांतरण एवं परिवर्तन की फूंकों से ऐसी समस्या बनाना चाहते है जो हल न हो सके और इस प्रकार से ख़ुदा के सुधारक के मार्ग में प्राय: कठिनाइयां डाल देते हैं और क़ुर्आन को झुठलाने वाले हैं कि उसकी इच्छा के विरुद्ध आग्रह करते हैं और अपने ऐसे कार्यों से जो क़ुर्आन के विपरीत हैं और शत्रुओं की आस्थाओं से समरंग हैं दुश्मनों की सहायता करते हैं। तो इस प्रकार समस्याओं में फूंक मार कर उनको हल न होने वाली बनाना चाहते हैं। अत: हम उनकी शरारतों से ख़ुदा की शरण मांगते हैं और हम उन लोगों की शरारतों से ख़ुदा की शरण मांगते हैं जो ईर्ष्या और ईर्ष्या के तरीक़े सोचते हैं और हम उस समय से शरण मांगते हैं जब वे ईर्ष्या करने लगें। और कहो कि तुम यों दुआ मांगा करो कि हम भ्रम डालने वाले शैतान के भ्रमों से जो लोगों के हृदयों में भ्रम डालता है और उन्हें धर्म से विमुख करना चाहता है कभी स्वयं और कभी किसी इन्सान में होकर, ख़ुदा की शरण मांगते हैं जो मनुष्य का प्रतिपालक है इन्सानों का बादशाह है, इन्सानों का ख़ुदा है। यह इस बात की ओर संकेत है कि एक समय आने वाला है कि उसमें न इन्सानी सहानुभूति रहेगी जो प्रतिपालन की जड़ है और न सच्चा इन्साफ़ रहेगा जो बादशाहत की शर्त है। तब उस युग में ख़ुदा ही ख़ुदा होगा जो संकटग्रस्तों का लौटने का स्थल होगा। और समस्त बातें अन्तिम युग की ओर संकेत हैं जबकि अमान और अमानत दुनिया से उठ जाएगी। अत: क़ुर्आन ने अपने आरंभ में भी مغضوب علیھم और ضَآلّین का ज़िक्र किया है और अपने अन्त में भी जैसा कि आयत لم یلد ولم یولد स्पष्ट तौर पर इस पर संकेत कर रही है और यह समस्त प्रबंध बल देने के लिए किया गया और इसलिए ताकि मसीह

मौऊद और ईसाइयों के प्रभुत्त्व की भविष्यवाणी सरसरी न रहे और सूर्य के समान चमक उठे। स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन के एक स्थान पर यह भी लिखा है कि मसीह को जो इन्सान है ख़ुदा करके मानना यह बात अल्लाह तआला के नज़दीक ऐसी भारी और उसके प्रकोप का कारण है कि करीब है कि इस से आकाश फट जाएं। अत: यह भी गुप्त तौर पर इसी बात की ओर संकेत है कि जब दुनिया समाप्त होने के निकट आ जाएगी तो यही धर्म है जिसके कारण मनुष्यों के जीवन की पंक्ति लपेट दी जाएगी। इस आयत से भी निश्चित तौर पर समझा जाता है कि यद्यपि इस्लाम कैसा ही विजयी हो और यद्यपि समस्त मिल्लतें एक मरे हुए जानवर के समान हो जाएं परन्तु यह प्रारब्ध है कि ईसाइयों की नस्ल क़यामत तक समाप्त नहीं होगी अपितु बढ़ती जाएगी और ऐसे लोग बड़ी प्रचुरता के साथ पाए जाएंगे जो चौपायों की तरह सोचे-समझे बिना हज़रत मसीह को ख़ुदा जानते रहेंगे, यहां तक कि उन पर क़यामत आ जाएगी। यह पवित्र क़ुर्आन की आयत का अनुवाद और उसका आशय है। हमारी ओर से नहीं। अत: हमारे मुसलमानों की यह आस्था कि अन्तिम युग में एक खूनी महदी प्रकट होगा और वह समस्त ईसाइयों को मार देगा और पृथ्वी को ख़ून से भर देगा और जिहाद समाप्त नहीं होगा जब तक वह प्रकट न हो। और अपनी तलवार से एक दुनिया को मार न दे। ये सब झूठी बातें हैं जो क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश -

وَ اَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ (अलमाइदह - 65)

के विरुद्ध और विपरीत हैं। प्रत्येक मुसलमान को चाहिए कि इन बातों पर कदापि विश्वास न रखे अपितु जिहाद अब बिल्कुल अवैध है जिहाद उसी समय तक था कि जब इस्लाम पर धर्म कि लिए तलवार उठाई जाती थी। अब स्वयं एक ऐसी हवा चली है कि प्रत्येक पक्ष इस कार्रवाई को नफ़रत की दृष्टि से देखता है कि धर्म के लिए ख़ून किया जाए। पहले युगों में केवल मुसलमानों में ही जिहाद नहीं था अपितु ईसाइयों में भी जिहाद था और उन्होंने भी धर्म के लिए हज़ारों ख़ुदा के बन्दों को इस दुनिया से मौत के घाट उतार दिया था। परन्तु अब वे लोग भी इन अनुचित कार्रवाइयों से पृथक हो गए हैं। और सामान्य तौर पर समस्त लोगों में बुद्धि, सभ्यता और शालीनता आ गई है। इसलिए उचित है कि अब मुसलमान भी जिहाद

की तलवार को तोड़कर खेती-बाड़ी के उपकरण बना लें। क्योंकि मसीह मौऊद आ गया और अब पृथ्वी पर समस्त युद्धों की समाप्ति हो गई। हां अभी आकाशीय युद्ध शेष हैं जो चमत्कारों और निशानों के साथ होंगे न कि तलवार और बन्दूक़ के साथ और वही वास्तविक युद्ध हैं जिन से ईमान सुदृढ़ होते हैं और विश्वास का प्रकाश बढ़ता है अन्यथा तलवार का युद्ध ऐसा ऐतराज़ का स्थान है कि यदि इस्लाम की मुख्य एवं प्रारंभिक अवस्था में मुसलमानों के हाथ में यह बहाना न होता कि वे विरोधियों के अनुचित आक्रमणों से पीसे गए और समाप्त होने तक पहुंच गए, तब तलवार उठाई गई तो इस बहाने के बिना इस्लाम पर जिहाद का एक दाग़ होता। ख़ुदा उन बुज़ुर्गों तथा ईमानदारों पर हज़ारों हज़ार दया की वर्षा करे जिन्होंने मौत का प्याला पीने के बाद फिर अपनी सन्तान और इस्लाम की अनश्वरता के लिए दुश्मनों का वही प्याला उनको वापस किया। परन्तु अब मुसलमानों पर कौन सा संकट है और कौन उनको मार रहा है कि वे अनुचित तौर पर तलवार उठाते हैं और हृदयों में जिहाद की इच्छा रखते हैं। इन्हीं गुप्त इच्छाओं के कारण जो प्राय: मौलवियों के हृदयों में हैं प्रतिदिन सरहद में बेगुनाह लोगों के ख़ून होते हैं। ये ख़ून किस गिरोह की गर्दन पर हैं? मैं बेधड़क कहूंगा उन्हीं मौलवियों की गर्दन पर जो निष्कपटतापूर्वक इस बिदअत को दूर करने के लिए पूर्ण प्रयास नहीं करते।

यहां एक बात कुछ अधिक विवरण के योग्य है और वह यह है कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं कि ख़ुदा तआला ने समस्त मुसलमानों को सूरह फ़ातिहा में यह दुआ सिखाई है कि वे उस पक्ष का मार्ग मांगते रहे जो इनाम किए गया पक्ष है और इनाम किए गए पूर्ण रूपेण चरितार्थ मात्रा की प्रचुरता और गुणवत्ता की शुद्धता, ख़ुदा तआला की नेमतों, क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश और अल्लाह के मुर्सल की निरन्तरता वाली हदीसों की दृष्टि से दो गिरोह हैं। एक गिरोह सहाबा और दूसरा गिरोह मसीह मौऊद की जमाअत। क्योंकि ये दोनों गिरोह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ के प्रशिक्षण प्राप्त हैं किसी अपने परिश्रम के मुहताज नहीं। कारण यह कि पहले गिरोह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौजूद थे जो ख़ुदा से सीधे तौर पर हिदायत पाकर वही नुबुव्वत की हिदायत के पवित्र ध्यान के साथ सहाबा

रज़ियल्लाहु के हृदय में डालते थे और उनके बिना माध्यम अभिभावक थे। और दूसरे गिरोह में मसीह मौऊद है जो ख़ुदा से इल्हाम पाता और हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहानियत से लाभ उठाता है। इसलिए उसकी जमाअत भी खुश्क कोशिश करने की मुहताज नहीं है। जैसा कि आयत-

(अलजुमुअः 4) وَاٰخَرِیۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ

से समझा जाता है और मध्यवर्ती गिरोह जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ैज आवज का नाम दिया है और जिन के बारे में फ़रमाया है- ★ لَیۡسُوۡا مِنِّیۡ وَ لَسۡتُ مِنۡهُمۡ अर्थात् वे लोग मुझ में से नही हैं और न मैं उनमें से हूं। यह गिरोह वास्तविक तौर पर इनाम प्राप्त नहीं हैं और यद्यपि फ़ैज आवज के युग में भी जमाअत अत्यधिक गुमराहों के मुकाबले पर नेक, वली और हर सदी के सर पर मुजद्दिद भी होते रहे हैं परन्तु कथित आयत-

★हाशिया :- इस हदीस का यह वाक्य जो لَیۡسُوا مِنِّیۡ है जिस के ये अर्थ है कि वे लोग मुझ से नहीं हैं यही शब्द अर्थात् مِنِّیۡ (मिन्नी अर्थात मुझ में से) महदी माहूद के लिए उस हदीस में भी आया है जिसको अबू-दाऊद अपनी पुस्तक में लाया है और वह यह है-

لو لم یبق من الدُّنیا الا یوم لطوّل اللّٰہ ذالك الیوم حتّٰی یبعث فیه رجلًا منّی

अर्थात् यदि दुनिया में से केवल एक दिन शेष होगा तो ख़ुदा उस दिन को लम्बा कर देगा जब तक कि एक इन्सान अर्थात् महदी को प्रकट करे जो मुझ में से होगा अर्थात् मेरे गुण और शिष्टाचार लेकर आएगा। स्पष्ट है कि यहां مِنِّیۡ (मिन्नी) के शब्द से क़ुरैश होना अभिप्राय नहीं अन्यथा यह हदीस केवल महदी का क़ुरैश होना प्रकट करती और किसी महान अर्थ पर आधारित न होती। परन्तु जिस ढंग से हम ने مِنِّیۡ शब्द के अर्थ अभिप्राय लिए हैं। अर्थात् आंहज़रत के शिष्टाचार और ख़ूबियों, चमत्कारों तथा चम्तकारी व्यवस्था वाले कलाम का ज़िल्ली तौर पर वारिस होना इस से स्पष्ट सिद्ध होता है कि महदी कामिल लोगों में से और अपने आचरणों की खूबियों में आंहज़रत सल्लल्लाहु का ज़िल्ल है और यही महान संकेत है जो مِنِّیۡ के शब्द से निकलता है अन्यथा शारीरिक तौर पर अर्थात् केवल क़ुरैशी होने से कुछ श्रेष्ठता सिद्ध नहीं होती, अपितु इस स्थिति में एक नास्तिक और बद आख़िरत वाला आदमी भी इस शब्द का चरितार्थ हो सकता है। तो مِنِّیۡ के शब्द से क़ुरैश समझना केवल निरर्थक है अन्यथा अनिवार्य आता है कि जो लोग हदीस لَیۡسُوۡا مِنِّیۡ के नीचे हैं उनसे समस्त वे लोग अभिप्राय हों जो क़ुरैशी नहीं हैं और ये मायने सर्वथा बिगड़े हुए हैं। इसी से

(अलवाक़िअ: 40,41) ثُلَّةٌ مِّنَ الۡاَوَّلِیۡنَ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الۡاٰخِرِیۡنَ

शुद्ध मुहम्मदी गिरोह जो प्रत्येक अपवित्र मिलावट से पवित्र और सच्ची तौब: से नहलाए हुए ईमान, आत्मज्ञान की बारीकियां,, ज्ञान, कर्म और संयम की दृष्टि से एक बहुसंख्यक जमाअत है। इस्लाम में ये केवल दो गिरोह हैं। अर्थात् पहलों का गिरोह और बाद में आने वालों का गिरोह जो सहाबा और मसीह मौऊद की जमाअत से अभिप्राय है और चूंकि आदेश मात्रा की अधिकता तथा प्रकाशों की पूर्ण सफाई पर होता है। इसलिए इस सूरह में اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ के वाक्य से अभिप्राय यही दोनों गिरोह हैं। अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी जमाअत के साथ और मसीह मौऊद अपनी जमाअत के साथ। सारांश यह है कि ख़ुदा ने प्रारंभ से इस उम्मत में दो गिरोह ही बनाए है और इन्हीं की ओर सूरह फ़ातिहा के वाक्य اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ में संकेत है।

(1) एक- अव्वलीन (पहले लोग) जो नबवी जमाअत है।

(2) दूसरे- आख़रीन (बाद में आने वाले) जो मसीह मौऊद की जमाअत है।

और कामिल लोग जो मध्यवर्ती युगमें हैं जो फ़ैज आवज के नाम से नामित है जो अपनी मात्रा की कमी और दुष्टों और व्यभिचारियों की प्रचुरता, नास्तिकों के समूहों की भीड़, बुरी आस्था रखने वाले तथा दुष्कर्मों के कारण बहुत कम के आदेश में समझे गए, यद्यपि अन्य फ़िर्कों की अपेक्षा मध्यवर्ती युग के उम्मते मुहम्मदिया के सदाचारी भी बिदअतों के तूफ़ान के बावजूद एक महान दरिया के समान हैं। बहरहाल ख़ुदा तआला और उसके रसूल का ज्ञान जिसमें ग़लती का रास्ता नहीं बताता है के मध्यवर्ती युग जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग से अपितु समस्त ख़ैरुल क़ुरून के युग से बाद में है और मसीह मौऊद के युग से पहले है। यह युग फैज आवज का युग है अर्थात् टेढे गिरोह का युग जिसमें ख़ैर (भलाई) नहीं परन्तु बहुत कम। यही फ़ैज आवज का युग है जिसके बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस है-

لَیۡسُوۡا مِنِّیۡ وَ لَسۡتُ مِنۡھُمۡ

अर्थात् न ये लोग मुझ में से हैं और न मैं उनमें से हूं अर्थात् मुझे उन से

कुछ संबंध नहीं। यही युग है जिसमें हज़ारों बिदअतें, असंख्य गन्दी रस्में, प्रत्येक प्रकार का शिर्क ख़ुदा के अस्तित्व, विशेषताओं एवं कर्मों में और समूह के समूह अपवित्र धर्म जो तिहत्तर तक पहुंच गए पैदा हो गए और इस्लाम जो स्वर्गीय जीवन का आदर्श लेकर आया था इतनी (अधिक) मलिनताओं से भर गया जैसे एक सड़ी हुई और गन्दगी से भरी हुई भूमि होती है। इस फ़ैज आवज की निन्दा में वे शब्द पर्याप्त हैं जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुंह से उस की परिभाषा में निकले हैं और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बढ़ कर कोई दूसरा मनुष्य इस फ़ैज आवज की बुराई क्या वर्णन करेगा। उसी युग के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि पृथ्वी अन्याय और अत्याचार से भर जाएगी। परन्तु मसीह मौऊद का युग जिस से अभिप्राय चौदहवीं सदी सन प्रारंभ से उस का अन्त है तथा युग का कुछ और भाग जो ख़ैरुल क़ुरून से बराबर और फ़ैज आवज के युग से श्रेष्ठतर है। यह एक ऐसा मुबारक युग है कि फ़ज़्ल (कृपा) और ख़ुदा की दानशीलता ने निश्चित कर रखा है कि यह युग फिर लोगों को सहाबा के रंग में लाएगा और आकाश से कुछ ऐसी हवा चलेगी कि ये मुसलमानों के तिहत्तर फ़िर्क़े जिन में से एक के अतिरिक्त सब इस्लाम की शर्म और इस पवित्र झरने के बदनाम करने वाले हैं स्वयं कम होते जाएंगे और समस्त अपवित्र फ़िर्क़े जो इस्लाम में परन्तु इस्लामी वास्तविकता के विपरीत हैं पृथ्वी से समाप्त होकर एक ही फ़िर्क़ा रह जाएगा जो सहाबा रज़ियल्लाहु के रंग पर होगा। अब प्रत्येक इन्सान सोच सकता है कि इस समय ठीक-ठीक क़ुर्आन पर चलने वाले फ़िर्क़े मुसलमानों के समस्त फ़िर्कों में से कितने कम हैं जो मुसलमानों के तिहत्तर गिरोहों में से केवल एक गिरोह है और फिर उस में से भी वे लोग जो वास्तव में इच्छा, नफ़्स और लोगों से पृथक होने के सब प्रकार से ख़ुदा के हो गए हैं और उन के कर्मों और कथनों, हरकतों और स्थिरताओं, नीयतों तथा खतरों में बुराई की कोई मिलावट शेष नहीं है वे इस युग में लाल गंधक (अप्राप्य) के आदेश में हैं। अत: समस्त खराबियों के विवरण को दृष्टिगत रख कर भली भांति समझ आ सकता है कि वास्तव में इस्लाम की वर्तमान हालत किसी प्रसन्नता के योग्य नहीं और वह

बहुत सी खराबियों का समूह हो रही है और इस्लाम के प्रत्येक फ़िर्के को बिदअतों, न्यूनधिकताओं, ग़लती, घृष्टता और उद्दण्डता के हज़ारों कीड़े चिमट रहे हैं और इस्लाम में बहुत से धर्म ऐसे पैदा हो गए हैं जो इस्लाम के तौहीद, संयम, शिष्टाचार के सुधार और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों के उद्देश्यों के कट्टर शत्रु हैं। तो ये कारण हैं जिन के अनुसार अल्लाह तआला फ़रमाता है-

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ (अलवाक़िअः 40,41)

अर्थात् नेकों और भले लोगों के बड़े गिरोह जिन के साथ बुरे धर्मों की मिलावट नहीं वे दो ही हैं। एक पहलों की जमाअत अर्थात् सहाबा की जमाअत जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रशिक्षण के अन्तर्गत है। दूसरी पिछलों की जमाअत जो रूहानी प्रशिक्षण के कारण आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जैसा कि आयत واٰخرين منهم से समझा जाता है। सहाबा के रंग में है। यही दो जमाअतें इस्लाम में वास्तविक तौर पर इनाम प्राप्त हैं। और ख़ुदा तआला का इनाम उन पर यह है कि उनको नाना प्रकार की गलतियों और बिदअतों से मुक्ति दी है और उनके हर प्रकार के शिर्क से पवित्र किया है और उन्हें शुद्ध एवं प्रकाशमान एकेश्वरवाद प्रदान किया है जिसमें न दज्जाल को ख़ुदा बनाया जाता है और न इब्ने मरयम को ख़ुदाई विशेषताओं का भागीदार ठहराया जाता है और अपने निशानों से उस जमाअत के ईमान को सुदृढ़ किया है और अपने हाथ से उनको एक पवित्र गिरोह बनाया है। उनमें से जो लोग ख़ुदा का इल्हाम पाने वाले और ख़ुदा की विशेष भावना से उनकी ओर खिंचे हुए हैं नबियों के रंग में हैं और जो लोग निष्ठा दिखाने वाले और व्यक्तिगत प्रेम से बिना किसी मतलब के अल्लाह तआला की इबादत करने वाले हैं वे सिद्दीक़ों के रंग में हैं। और उनमें से जो लोग अन्तिम नेमतों की आशा पर दुख उठाने वाले हैं और प्रतिफल के दिन का हृदय की आंखों के साथ अवलोकन करके जान को हथेली पर रखने वाले हैं वे शहीदों के रंग में हैं और जो लोग उनमें से हर एक उपद्रव से दूर रहने वाले हैं वे सदाचारी के रूप में हैं यही सच्चे मुसलमान का मूल उद्देश्य है कि इन पदों को मांगे और जब तक प्राप्त न हों तब तक मांग और तलाश में सुस्त न हों। और वे दो गिरोह जो इन

के मुक़ाबले पर वर्णन किए गए हैं वे مَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ और ضَالِّیۡن हैं जिन से सुरक्षित रहने के लिए ख़ुदा तआला से इसी सूरह फ़ातिह में दुआ मांगी गई है। और यह दुआ जिस समय इकट्ठी पढ़ी जाती है अर्थात् इस प्रकार से कहा जाता है कि हे ख़ुदा हमें इनाम प्राप्त वालों में दाख़िल कर और مَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ तथा ضَالِّیۡن से बचा। तो उस समय साफ समझ आता है कि ख़ुदा तआला के ज्ञान में इनाम प्राप्त लोगों में से एक वह गिरोह है जो مَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ और ضَالِّیۡن का समकालीन है और जबकि مَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ से अभिप्राय इस सूरह में निश्चित रूप से वे लोग हैं जो मसीह मौऊद से इन्कार करने वाले और उसको काफ़िर ठहराने वाले और झुठलाने तथा अपमान करने वाले हैं। तो निस्सन्देह उनके मुकाबले पर यहां इनाम प्राप्त से वही लोग अभिप्राय लिए गए है जो सच्चे हृदय से मसीह मौऊद पर ईमान लाने वाले और उस का हृदय से सम्मान करने वाले और उसके सहायक है और दुनिया के सामने उसकी गवाही देते हैं। रहे ضَالِّیۡن तो जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गवाही★ और इस्लाम के समस्त बुज़ुर्गों की गवाही से

★**हाशिया :-** बैहक़ी ने 'शैबुल ईमान' ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि सूरह फ़ातिहा में المغضوب علیھم से अभिप्राय यहूदी और ضالّین से अभिप्राय नसारा हैं। देखो पुस्तक 'दुर्रे मन्सूर' पृष्ठ-9, तथा अब्दुर्रज़्ज़ाक़ और अहमद ने अपनी मुस्नद में और अब्द इब्ने हमीद और इब्ने जरीर तथा बग़वी ने मोजिमुस्सहाबा में और इब्न मुन्ज़र तथा अबुशशेख ने अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ से रिवायत की है-

قال اخبرنی من سمع النبی صلی اللہ علیہ وسلم وھو بوادی القری علی فرس۔ لہ و سألہ رجل من بنی العین فقال من المغضوب علیھم یا رسول اللہ۔ قال الیھود۔ قال فمن الضالّون۔ قال النصاری

अर्थात् कहा उस व्यक्ति ने मुझे ख़बर दी है जिसने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना था जबकि आप क़ुरा घाटी में घोड़े पर सवार थे कि बनी ऐन में से एक व्यक्ति ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया कि सूरह फ़ातिहा में مغضوب علیھم से कौन अभिप्राय है? फ़रमाया कि यहूद फिर प्रश्न किया कि ज़ाल्लीन से कौन अभिप्राय है फ़रमाया कि नसारा। दुर्रे मन्सूर पृष्ठ-17 इसी से।

ضَـالّـِين से अभिप्राय ईसाई हैं और ज़ाल्लीन (गुमराह लोग) से शरण मांगने की दुआ भी एक भविष्यवाणी के रंग में है, क्योंकि हम पहले भी लिख चुके हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में ईसाइयों का कुछ भी ज़ोर न था अपितु फ़ारसियों की हुकूमत बड़ी शक्ति और वैभव में थी और धर्मों में से संख्या की दृष्टि से दुनिया में बौद्ध धर्म समस्त धर्मों से बढ़ा हुआ था और मजूसियों का धर्म भी बहुत ज़ोर और जोश में था और हिन्दू भी शक्तिशाली एकता के अतिरिक्त बड़ा वैभव, सत्ता और समूह रखते थे और चीनी भी अपनी सम्पूर्ण शक्तियों से भरे हुए थे तो फिर इस जगह स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न होता है कि ये समस्त प्राचीन धर्म जिनकी बहुत प्राचीन और शक्तिशाली हुकूमतें थीं और जिन की हालतें कौमी एकता, सत्ता शक्ति प्राचीनता और दूसरे सामान की दृष्टि से बहुत उन्नति पर थीं उनकी बुराई से बचने के लिए क्यों दुआ नहीं सिखाई! और ईसाई क़ौम थी क्यों उनकी बुराई से सुरक्षित रहने के लिए दुआ सिखलाई गई! उस प्रश्न का उत्तर यही है जो भली भांति स्मरण रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला के ज्ञान में यह प्रारब्ध था कि यह क़ौम दिन-प्रतिदिन उन्नति करती जाएगी यहां तक कि समस्त संसार में फैल जाएगी और अपने धर्म में सम्मिलित करने के लिए प्रत्येक उपाय से ज़ोर लगाएंगे। और क्या ज्ञान संबंधी सिलसिले के रंग में और क्या आर्थिक प्रेरणाओं से तथा क्या शिष्टाचार और क्या कलाम की मधुरता दिखाने से और क्या दौलत और वैभव की चमक से और क्या कामवासना संबंधी इच्छाओं और क्या हर हलाल-व-हराम (वैध-अवैध) की वैधता और आज़ादी के माध्यमों से और क्या आलोचनाओं और आरोपों के द्वारा और क्या बीमारों और दरिद्रों, थके हारों तथा अनाथों का अभिभावक बनने से नाख़ूनों तक यह कोशिश करेंगे कि किसी अभागे मूर्ख, लालची या व्यभिचारी या प्रतिष्ठा चाहना, या निराश्रय, या किसी मां-बाप के बच्चे को अपने क़ब्ज़े में लाकर अपने धर्म में सम्मिलित करें। तो इस्लाम के लिए यह ऐसा फ़ित्न: था कि कभी इस्लाम की आंख ने इसका उदाहरण नहीं देखा और इस्लाम के लिए यह एक महान परीक्षा थी जिस से लाखों लोगों के मर जाने की आशा थी। इसलिए

ख़ुदा ने सूरह फ़ातिहा में जिस से क़ुर्आन का प्रारंभ होता है इस घातक फ़ित्ने से बचने के लिए दुआ सिखाई। स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन में यह एक महान भविष्यवाणी दें। क्योंकि यद्यपि पवित्र क़ुर्आन में और बहुत सी भविष्यवाणियां हैं जो हमारे इस युग में पूरी हो गई हैं। जैसे चन्द्रम और सूर्य ग्रहण के जमा होने की भविष्यवाणी जो आयत

(अलक़ियामत-10) جمع الشمس و القمر

से मालूम होती है। ऊंटों के बेकार होने और मक्का तथा मदीना में रेल जारी होने की भविष्यवाणी जो आयत

(अत्तक्वीर-3) و اذا العشار عُطّلت

से साफ़ तौर पर समझी जाती है परन्तु इस भविष्यवाणी के प्रसिद्ध करने और हमेशा उम्मत की दृष्टि के सामने रखने में सर्वाधिक प्रबन्ध ख़ुदा तआला ने किया है। क्योंकि इस सूरह में अर्थात् सूरह फ़ातिहा में इस दुआ के तौर पर सिखाया है जिसको करोड़ों मुसलमान पांच समय अपने फ़र्ज़ों और नमाज़ों में पढ़ते हैं और संभव नहीं कि बुद्धिमान मुसलमानों के दिलों में यह विचार न गुज़रे कि जिस हालत में इस युग के सामान्य मुसलमानों के विचार के अनुसार इस उम्मत के लिए दज्जाल का फ़ित्न: सब फ़ित्नों से बढ़कर है जिस का उदाहरण हज़रत आदम से दुनिया के अन्त तक कोई नहीं तो ख़ुदा तआला ने ऐसी महान दुआ में जो बहुत प्रचुरता से दोहराने, मुबारक समयों में अनश्वर वार्तालाप का होना स्वीकारिता की संभवाना रखती है इस बड़े फ़ित्ने का वर्णन क्यों छोड़ दिया? इस प्रकार से सूरह फ़ातिहा में क्यों दुआ न सिखाई कि

غير المغضوب عليهم و لا الدَّجّال

इसका उत्तर यही है कि दज्जाल कोई अलग फ़िर्क़ा नहीं है और न कोई ऐसा व्यक्ति है कि जो ईसाइयों और मुसलमानों को कुचल कर दुनिया का मालिक हो जाएगा। ऐसा विचार करना पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा के विपरीत है क्योंकि अल्लाह तआला हज़रत मसीह को सम्बोधित करके फ़रमाता है-

وَ جَاعِلُ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ ۚ
(आले इमरान-56)

अर्थात् हे ईसा ख़ुदा तेरे वास्तविक अनुयायियों को जो मुसलमान हैं और दावा करने वाले अनुयायियों को जो ईसाई हैं दावे के तौर पर क़यामत तक उन लोगों पर विजयी रखेगा जो तेरे शत्रु, इन्कारी और झुठलाने वाले हैं। अब प्रकट है कि हमारे विरोधी मौलवियों का काल्पनिक दज्जाल भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इन्कारी होगा। तो यदि ईसाइयों और मुसलमानों पर उसे विजयी किया गया और समस्त पृथ्वी (संसार) की, सत्ता की और हुकूमत की बागडोर उसके हाथ में दी गई तो इस से पवित्र क़ुर्आन का झूठा होना अनिवार्य आता है। और न केवल एक पहलू से अपितु नऊज़ुबिल्लाह दो पहलू से ख़ुदा तआला का कलाम झूठा ठहरता है-

(1) प्रथम यह कि जिन क़ौमों के क़यामत तक विजयी और शासक रहने का वादा था वे इस स्थिति में विजयी और शासक नहीं रहेंगे।

(2) दूसरे यह कि जिन दूसरी क़ौमों के पराजित होने का वादा था वे विजयी हो जाएंगे और पराजित न रहेंगे और यदि यह कहा जाए कि यद्यपि इन क़ौमों की हुकूमत और शक्ति तथा दौलत क़यामत तक स्थापित रहेगी और हम उसे स्वीकार करते हैं परन्तु दज्जाल भी किसी छोटे से राजा या रईस की तरह दस-बीस या पचास-सौ गांवों का शासक और राजा बन जाएगा तो यह कथन भी ऐसा ही पवित्र क़ुर्आन के विरूद्ध है क्योंकि जब दज्जाल समस्त नबियों का इतना (बड़ा) दुश्मन है कि उनको मुफ़्तरी (झूठ गढ़ने वाला) समझता है और स्वयं ख़ुदाई का दावा करता है कथित आयत के अनुसार चाहिए था कि एक घड़ी के लिए भी वह अहंकारी शासक न बनाया जाता ताकि فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا में कुछ हानि और विघ्न न पड़ता। इसके अतिरिक्त जब यह माना गया है कि हरमैन शरीफ़ैन के अतिरिक्त प्रत्येक देश में दज्जाल की हुकूमत स्थापित हो जाएगी तो फिर आयत-

وَ جَاعِلُ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ ۚ

दज्जाल की सामान्य हुकूमत की स्थिति में सच्ची क्योंकर रह सकती है

अपितु दज्जाली हुकूमत के स्थापित होने से तो मानना पड़ता है कि जो हज़रत मसीह के अनुयायियों के लिए श्रेष्ठता और विजयी होने का स्थायी वादा था वह चालीस वर्ष तक दज्जाल की ओर स्थानांतरित हो जाएगा। जो व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन को ख़ुदा का कलाम और सच्चा मानता है वह तो इस बात को स्पष्ट कुफ्र समझेगा कि ऐसी आस्था रखी जाए जिस से ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम का झुठलाना अनिवार्य आता है। तुम स्वयं ही सोचो कि जब आयत

وَ جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

के अनुसार हमारा यह ईमान होना चाहिए कि क़यामत तक दौलत और हुकूमत मुसलमानों और ईसाइयों में स्थापित रहेगी और वे लोग जो हज़रत मसीह के इन्कारी हैं वे कभी इस्लामी देशों के बादशाह और मालिक नहीं बनेंगे यहां तक कि क़यामत आ जाएगी। तो इस स्थिति में दज्जाल की कहां गुंजायश है? क़ुर्आन को छोड़ना और ऐसी हदीस को पकड़ना जो उस के स्पष्ट कथन के विरुद्ध है और केवल एक काल्पनिक बात है क्या यही इस्लाम है? और यदि प्रश्न यह हो कि दज्जाल का भी हदीसों में वर्णन पाया जाता है कि वह दुनिया में प्रकट होगा और सर्वप्रथम नुबुव्वत का दावा करेगा और फिर ख़ुदाई का दावेदार बन जाएगा तो इस हदीस की हम क्या तावील करें? तो इस का उत्तर यह है कि अब तुम्हारी तावील की कुछ आवश्यकता नहीं। घटनाओं के प्रकटन ने स्वयं इस हदीस के मायने खोल दिए हैं। अर्थात् यह हदीस एक ऐसी क़ौम की ओर संकेत करती है जो अपने कार्यों से दिखाएंगे कि उन्होंने नबुव्वत का दावा भी किया है और ख़ुदाई का दावा भी। नुबुव्वत का दावा इस प्रकार से कि वे लोग ख़ुदा तआला की किताबों में अपने अक्षरांतरण एवं परिवर्तन और नाना प्रकार के अनुचित हस्तक्षेपों से जो अत्यन्त साहस, धृष्टता और गुस्ताख़ी से होंगे, अनुवादों को इतना बिगाड़ेंगे कि जैसे वे स्वयं नुबुव्वत का दावा कर रहे हैं। अत: यह तो नुबुव्वत का दावा हुआ। अब ख़ुदाई के दावे की भी व्याख्या सुनिए और वह यों है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि वे लोग आविष्कार, कारीगरी और ख़ुदाई के कार्यों का मर्म ज्ञात करने में और इस धुन में कि ख़ुदाई

के प्रत्येक काम और कारीगरी की नक़ल उतार लें इतने लालची होंगे कि जैसे वे ख़ुदाई का दावा कर रहे हैं।★ वे चाहेंगे कि उदाहरणतया किसी प्रकार वर्षा करना और वर्षा को बन्द कर देना और पानी प्रचुर मात्रा में पैदा करना और पानी को खुश्क कर देना। और हवा का चलाना और हवा का बन्द कर देना और खानों के प्रत्येक प्रकार के जवाहिरात को अपनी हुनर से पैदा कर लेना। अत: सृष्टि के समस्त भौतिक कार्यों पर क़ब्ज़ा कर लेना यहां तक कि मानवीय वीर्य को किसी पिचकारी के माध्यम से जिस गर्भाशय में चाहें डाल देना और इस से गर्भ धारण करने के लिए सफल हो जाना और किसी प्रकार से मुर्दों को जीवित कर देना। और आयु को बढ़ा देना तथा परोक्ष की बातें ज्ञात कर लेना और सम्पूर्ण भौतिक व्यवस्था पर पूर्ण अधिकार कर लेना उनके हाथ में आ जाए और उनके आगे कोई बात अनहोनी न हो। तो जबकि प्रतिपालन का आदर और ख़ुदाई की श्रेष्ठता उनके हृदयों से पूर्णतया समाप्त हो जाएगी और ख़ुदाई तक़्दीरों को टालने के लिए सामने से युद्ध करने वाले के समान यत्न और सामान तलाश करते रहेंगे तो वे आकाश पर ऐसे ही समझे जाएंगे कि जैसे ख़ुदाई का दावा कर रहे हैं। और मुझे उस अस्तित्व की क़सम है जिस के हाथ में मेरी जान है कि यही मायने सच हैं। और जो दज्जाल की आंखों के संबंध में हदीसों में आया है कि उसकी एक

★हाशिया :- प्रतिपालन की श्रेष्ठता और ख़ुदाई के प्रताप और स्रष्टा के एकेश्वरवाद को ध्यान में रख कर विनय और दासता के साथ आविष्कार और कारीगरी की ओर संतुलन के अनुसार व्यस्त होना यह और बात है परन्तु उद्दण्डता और अहंकार को अपने मस्तिष्क में स्थान देकर और प्रारब्ध के सिलसिले पर उपहास करके ख़ुदा के पहलू में अपने अहं को किसी आविष्कृत कार्य इत्यादि से प्रकट करना यही दज्जालियत है। और दज्जाल के शब्द से हमारा अभिप्राय वह नहीं है जो आज के मौलवी अभिप्राय लेते हैं और उसे ऐसा व्यक्ति समझते हैं जिस से वे लड़ाइयां करेंगे। क्योंकि हमारे नज़दीक दज्जाल हो या कोई हो उस से धर्म के लिए लड़ाई करना मना है। प्रत्येक सृष्टि से सच्ची हमदर्दी चाहिए और लड़ाई के सब विचार ग़लत हैं और दज्जाल से अभिप्राय केवल वह फ़िर्क़ा है जो ख़ुदा के कलाम में परिवर्तन करते हैं या नास्तिक के रंग में ख़ुदा से लापरवाह हैं। या नास्तिक के शब्द से पर्याय हैं। इसी से

आंख बिल्कुल अंधी होगी और एक में फूला होगा। इसके ये मायने हैं कि वह गिरोह जो दज्जाली विशेषताओं से नामित होगा उसका यह हाल होगा कि उसकी एक आंख तो कम देखेगी और वास्तविकताओं के चेहरे उसको धुंधले दिखाई देंगे परन्तु दूसरी आंख बिल्कुल अंधी होगी। वह कुछ भी देख नहीं सकेगी। जैसा कि यह क़ौम जो दृष्टि के सामने है तौरात पर तो कुछ ईमान लाती है यद्यपि अपूर्ण और ग़लत तौर पर परन्तु पवित्र क़ुर्आन को देख नहीं सकते जैसे उनकी एक आंख में अंगूर के दाने की तरह टेंट पड़ा हुआ है। परन्तु दूसरी आंख जिस से पवित्र क़ुर्आन को देखना था बिल्कुल अंधी है। यह कश्फी रंग में दज्जाल का रूप है और इसकी ताबीर यह है कि वे लोग ख़ुदा तआला की अन्तिम क़िताब को बिल्कुल नहीं पहचानेंगे और स्पष्ट है कि इस तावील की दृष्टि से जो बिल्कुल उचित और अनुमान के अनुसार है किसी नए दज्जाल की तलाश की आवश्यकता नहीं। अपितु जिस गिरोह ने पवित्र क़ुर्आन को झुठलाया और जिन को ख़ुदा ने किताब दी और फिर उन्होंने इस किताब पर अमल न किया और अपनी और अपनी ओर से इतना अक्षरांतरण किया कि जैसे नई किताब उतर रही है और दूसरे प्रारब्ध के कारखाने में इतनी बाधा डाली कि ख़ुदा की प्रतिष्ठा हृदयों से सर्वथा समाप्त हो गई। वही लोग दज्जाल हैं। एक पहलू से नुबुव्वत के दावेदार और दूसरे पहलू से ख़ुदाई के दावेदार। समस्त हदीसों का उद्देश्य यही है और यही पवित्र क़ुर्आन के अनुसार है और इसी से वह आरोप दूर होता है जो ولا الضالّين की दुआ पर आ सकता था। और यह वह बात है कि जिस पर घटनाओं के क्रम की एक ज़बरदस्त गवाही पाई जाती है। और न्याय करने वाले इन्सान को मानने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं। और यद्यपि दज्जाल शब्द के एक ग़लत और ख़तरनाक मायने करने में मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या लिप्त है परन्तु जो बात क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों और उन हदीसों के स्पष्ट आदेशों से जो क़ुर्आन के अनुसार हैं ग़लत सिद्ध हो गया और सद्बुद्धि ने भी उसकी पुष्टि की तो ऐसा मामला एक इन्सान या करोड़ इन्सान के ग़लत विचारों के कारण ग़लत नहीं ठहर सकता, अन्यथा अनिवार्य आता है कि जिस धर्म की संख्या दुनिया में अधिक हो वही सच्चा हो।

तो अब यह सबूत पूर्णता को पहुंच गया है और यदि अब भी कोई उद्दण्डता से ने रुके तो वह शर्म से रिक्त और पवित्र क़ुर्आन के झुठलाने पर दिलेर है और वे स्पष्ट हदीसें जो क़ुर्आन की इच्छा के अनुसार दज्जाल की वास्तविकता प्रकट करती हैं वे यद्यपि बहुत हैं परन्तु हम यहां नमूने के तौर पर उनमें से एक दर्ज करते हैं। वह हदीस यह है-

يخرج فی اٰخر الزمان دجال يختلون الدنيا بالدين يلبسون للناس جلود الضّأن من الدين السنتهم احلیٰ من العسل و قلوبهم قلوب الذياب يقول اللّٰه عزّ وجلّ أبي يغترون ام علیّ يجترء ون حتّی حلفت لأ بعثن علی اولٰئك منهم فتنة الخ

(कन्ज़ुल उम्माल जिल्द-7, पृष्ठ-174)

अर्थात् अन्तिम युग में दज्जाल प्रकट होगा। वह एक धार्मिक गिरोह होगा जो पृथ्वी पर जगह-जगह ख़ुरूज करेगा (निकलेगा) और वे लोग दुनिया के अभिलाषियों को धर्म के साथ धोखा देंगे अर्थात् उन को अपने धर्म में दाख़िल करने के लिए बहुत सा धन प्रस्तुत करेंगे और हर प्रकार के आराम और सांसारिक आनन्दों का लालच देंगे और इस उद्देश्य से कि कोई उनके धर्म में दाख़िल हो जाए भेड़ों की पोस्तीन पहन कर आंएगे, उनकी जीभें शहद से अधिक मीठी होंगी और उनके दिल भेड़ियों के दिल होंगे और ख़ुदा तआला कहेगा कि क्या ये लोग मुझ पर झूठ बांधने में दिलेरी कर रहे हैं। अर्थात् मेरी किताबों के अक्षरांतरण करने में क्यों इतने व्यस्त हैं। मैंने क़सम खाई है कि मैं इन्हीं में से और इन्हीं की क़ौम में से इन पर एक फ़ित्ना खड़ा करूंगा। देखो कन्जुलउम्माल जिल्द-7 पृष्ठ-174 अब बताओ कि क्या इस हदीस से दज्जाल एक व्यक्ति मालूम होता है और क्या ये समस्त विशेषताएं जो दज्जाल की लिखी गई हैं ये आजकल किसी क़ौम पर चरितार्थ हो रही हैं या नहीं? और हम इस से पूर्व पवित्र क़ुर्आन से भी सिद्ध कर चुके हैं कि दज्जाल एक गिरोह का नाम है न यह कि कोई एक व्यक्ति। और इस उपरोक्त कथित हदीस में दज्जाल के लिए जो बहुवचन के शब्द प्रयोग किए गए हैं। जैसे यख़्तलूना और

यल्बसूना और यगतरूना और यजतरूना और उलाइका और मिन्हुम ये भी बुलन्द आवाज़ में पुकार रहे हैं कि दज्जाल एक जमाअत है न कि एक इन्सान। और पवित्र क़ुर्आन में जो याजूज-माजूज का वर्णन है, जिन को ख़ुदा की पहली किताबों ने यूरोप की क़ौमें ठहराया है और क़ुर्आन ने इस बयान को झूठा नहीं कहा। ये दज्जाल के उस बयान को झूठा नहीं कहा। ये दज्जाल के उन अर्थों पर जो हमने वर्णन किए हैं एक बड़ा सबूत है। कुछ हदीसें भी तौरात के इस बयान की पुष्टि करने वाली हैं। और लन्दन में याजूज-माजूज की पत्थर की मूर्तियां किसी प्राचीन काल से अब तक सुरक्षित हैं। ये समस्त बातें जब इकट्ठी नज़र से देखी जाएं तो आंखों देखे विश्वास की श्रेणी पर यह सबूत ज्ञात होती है और समस्त दज्जाली विचार एक ही क्षण में बिखर जाते हैं। यदि अब भी यह बात स्वीकार न की जाए कि वास्तव में सच्चाई केवल इतनी है जो सूरह फ़ातिहा के अन्तिम वाक्य अर्थात् ولاالضالّین से समझी जाती है तो जैसे इस बात का स्वीकार करना होगा कि क़ुर्आन की शिक्षा को मानना कुछ आवश्यक नहीं अपितु उसके विपरीत क़दम रखना बड़े पुण्य की बात है। अत: वे लोग जो हमारे इस विरोध पर ख़ून पीने को तैयार है उचित है कि इस अवसर पर ख़ुदा तआला से तनिक डर कर सोचें कि वे ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम से कितनी शत्रुतापूर्ण लड़ाई कर रहे हैं यद्यपि फ़र्ज़ के तौर पर उनके पास ऐसी हदीसों के ढेर की ढेर हों जिन से दज्जाल माहूद का एक भयावह अस्तित्व प्रकट होता हो अपनी शारीरिक बनावट के कारण एक ऐसी सवारी का मुहताज है जिसके दोनों कानों की दूरी लगभग तीन सौ हाथ है और पृथ्वी तथा आकाश चन्द्रमा और सूर्य, दरिया और हवाएं तथा मेंह उस के आदेश में हैं। परन्तु ऐसा भयावह अस्तित्व प्रस्तुत करने से कोई सबूत पैदा नहीं होगा। इस बुद्धि और अनुमान के युग में ऐसा प्रकृति के नियम के विरुद्ध अस्तित्व मानना इस्लाम पर एक दाग़ होगा और अन्तत: हिन्दुओं के महादेव, विष्णु और ब्रह्मा की तरह मुसलमानों के हाथ में भी लोगों के हंसाने के लिए यह एक अनर्थ कहानी होगी जो क़ुर्आन की भविष्यवाणी ولاالضالّین के भी विरुद्ध है और दूसरे उसकी एकेश्वरवाद की शिक्षा के भी सर्वथा विरुद्ध। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ऐसे अस्तित्व

को मानना जिसके हाथ में यद्यपि थोड़े समय के लिए समस्त ख़ुदाई शक्ति और ख़ुदाई प्रबंध होगा इस प्रकार के शिर्क को ग्रहण करना है जिसका उदाहरण हिन्दुओं, चीनियों और पारसियों में भी कोई नहीं। अफ़सोस कि अहले हदीस जो एकेश्वरवादी कहलाते हैं शिर्क के इस प्रकार से विमुखता व्यक्त करते हैं जो चूहे से बहुत कम है। तथा इस शिर्क को अपने घर में दाखिल करते हैं जो हाथी से भी अधिक है। इन लोगों की तौहीद (एकेश्वरवाद) भी विचित्र प्रकार की सुदृढ़ है कि ईसा इब्ने मरयम को स्रष्टा होने में ख़ुदा का लगभग आधा भागीदार मान कर फिर तौहीद में कुछ विघ्न नहीं आया। आश्चर्य है कि ये लोग इस्लाम का सुधार और तौहीद का दम मारते हैं वही इस प्रकार के शिर्कों पर ज़ोर, रहे हैं और ख़ुदा की तरह मसीह को अपितु दज्जाल को भी अनन्त और असीमित ख़ुदाई खूबियों से विभूषित समझते हैं। विचित्र बात है कि उनकी दृष्टि में ख़ुदा की सल्तनत भी इस प्रकार के समान भागीदारों से पवित्र नहीं है और फिर विशेष एकेश्वरवादी और अहले हदीस हैं। कौन कह सकता है कि मुश्रिक हैं। और यद्यपि ईसाई मानें या न मानें परन्तु ये लोग वास्तव में मिशनरियों पर बहुत ही उपकार कर रहे हैं कि एक मुसलमान को यदि वह इनकी उन आस्थाओं का पाबन्द हो जाए जिन को ये मौलवी मसीह और दज्जाल के बारे में सिखा रहे हैं बड़ी आसानी से ईसाई धर्म के क़रीब ले आते हैं। यहां तक कि एक पादरी केवल कुछ मिनट में ही हंसी-खुशी में उनको मुर्तद कर सकता है। यह नहीं सोचना चाहिए कि दज्जाल को ख़ुदाई विशेषताएं देने से ईसाइयों को क्या लाभ पहुंचाता है, यद्यपि मसीह में ऐसी विशेषताएं स्थापित करने से तो लाभ पहुचंता है। क्योंकि जबकि दज्जाल जैसे धर्म के शत्रु और अपवित्र प्रकृति वाले के बारे में मान लिया गया कि वह अपने अधिकार से वर्षा करने, मुर्दों को ज़िन्दा करने, वर्षा को रोकने तथा अन्य ख़ुदाई विशेषताओं पर सामर्थ्यवान होगा। तो इस से बड़ी सफ़ाई के साथ यह मार्ग खुल जाता है कि जब एक ख़ुदा का शत्रु ख़ुदाई के पद पर पहुंच सकता है और जब ख़ुदाई कारखान: में ऐसी अव्यवस्था और गड़बड़ी पड़ी हुई है कि दज्जाल भी अपनी झूठी ख़ुदाई चालें एक वर्षा तक या चालीस दिन तक चलाएगा तो फिर हज़रत ईसा की ख़ुदाई में कौन सी आपत्ति

आ सकती है। तो ऐसे लोगों के बपतस्मा पाने पर पादरी लोगों को दिलों में बड़ी-बड़ी आशाएं रखनी चाहिए और वास्तव में यदि ख़ुदा तआला आकाश से अपने इस सिलसिले की बुनियाद इस संवेदनशील समय में न डालता तो इन आस्थाओं के कारण हज़ारों मौलवियों की रूहें पादरी इमादुद्दीन की रूह से मिल जातीं। परन्तु कठिनाई यह है कि ख़ुदा तआला का स्वाभिमान और उसका वह वादा जो सदी के सर से संबंधित था वह पादरी सज्जनों की इस सफलता में बाधक हो गया परन्तु मौलवियों की ओर से कोई अन्तर नहीं रहा था। बुद्धिमान भली भांति जानते हैं कि इस्लाम की भावी उन्नति के लिए और पादरियों के प्रहारों से इस्लाम को बचाने के लिए यह अत्यन्त शुभ शकुन है कि वे समस्त बातें जिस से मसीह को जीवित आकाश पर चढ़ाया गया और केवल उसी को ज़िन्दा और मासूम रसूल, शैतान के स्पर्श से पवित्र तथा हज़ारों मुर्दों को जीवित करने वाला और असंख्य परिन्दों को पैदा करने वाला और लगभग आधे में ख़ुदा का भागीदार समझा गया था और दूसरे समस्त नबी मुर्दे, असहाय और शैतान के स्पर्श से ग्रस्त समझे गए थे जिन्होंने एक मक्खी भी पैदा न की। ये समस्त इफ़्तिरा और झूठ के जादू ख़ुदा ने मुझे अवतरित करके ऐसे तोड़ दिए कि जैसे एक क़ाग़ज़ का तख्ता लपेट दिया जाए। और ख़ुदा ने ईसा बिन मरयम से समस्त अतिरिक्त विशेषताओं को पृथक कर के मामूली मानवीय स्तर पर बैठा दिया और उसे अन्य नबियों के कार्यों और विलक्षणताओं के बारे में एक कण भर विशेषता न रही और प्रत्येक पहलू से हमारे सय्यद-व-मौला नबिउलवरा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उच्च विशेषताएं सूर्य के समान चमक उठीं। हे ख़ुदा! हम तेरे उपकारों की कृतज्ञता कैसे करें कि तू ने एक तंग और अंधकारमय क़ब्र से इस्लाम तथा मुसलमानों को बाहर निकाला और ईसाइयों तथा मुसलमानों को बाहर निकाला और ईसाइयों के समस्त गर्व ख़ाक में मिला दिए और हमारा क़दम कि हम मुहम्मदी गिरोह हैं एक बुलन्द और अत्यन्त ऊंचे मीनार पर रख दिया। हमने तेरे निशान जो मुहम्मदी रिसालत पर प्रकाशमान तर्क हैं अपनी आंखों से देखे। हमने आकाश पर रमज़ान में उस चन्द्र और सूर्य ग्रहण को देखा जिसके बारे में तेरी किताब क़ुर्आन तथा तेरे नबी की ओर से तेरह

सौ वर्ष से भविष्यवाणी की थी हमने अपनी आंखों से देख लिया कि तेरी किताब और तेरे नबी की भविष्यवाणी के अनुसार ऊंटों की सवारी रेल के जारी होने से स्थगित हो गई और शीघ्र ही मक्का तथा मदीना के मार्ग से भी ये सवारियां स्थापित होने वाली हैं। हमने तेरी किताब क़ुर्आन की भविष्यवाणी ولاالضالّين को भी बड़े ज़ोर-शोर से पूर्ण होते हुए देख लिया और हमने विश्वास कर लिया कि वास्तव में यही वह फ़ित्न: है जिस का आदम से लेकर क़यामत तक इस्लाम को हानि पहुंचाने में कोई उदाहरण नहीं। इस्लाम के हस्तक्षेप के लिए यही एक भारी फ़ित्न: था जो प्रकटन में आ गया। अब इसके बाद क़यामत तक कोई ऐसा बड़ा फ़ित्न: नहीं। हे कृपालु! तू ऐसा नहीं है कि अपने इस्लाम धर्म पर दो मौतें जमा करे। एक मौत जो महान इब्तिला (आज़मायश) था जो मुसलमानों तथा इस्लाम के लिए प्रारब्ध था प्रकटन में आ गया। अब हे हमारे दयालु ख़ुदा! हमारी रूह गवाही देती है कि जैसा कि तूने तौरात में वादा किया कि मैं फिर इस प्रकार मनुष्यों को तूफ़ान से नहीं मारूंगा। अत: देख हे हमारे ख़ुदा! कि इस उम्मत पर यह नूह के तूफ़ान के दिनों से कुछ कम नहीं आया, लाखों प्राणों की क्षति हुई और तेरे नबी करीम का सम्मान एक कीचड़ में फेंक दिया गया। तो क्या इस तूफ़ान के बाद इस उम्मत पर कोई और भी तूफान है या कोई और भी दज्जाल है★ जिसके भय से हमारे प्राण पिघलते रहे। तेरी दया ख़ुश ख़बरी देती है कि "कोई नहीं" क्योंकि तू वह नहीं जो इस्लाम और मुसलमानों पर दो मौतें जमा करे। परन्तु एक मौत जो आ चुकी। अब इस एक बार के क़त्ल के बाद इस सुन्दर जवान के क़त्ल पर कोई दज्जाल क़यामत तक सामर्थ्यवान नहीं

★**हाशिया :-** दज्जाल के शब्द के बारे में हम पहले भी वर्णन कर चुके हैं कि इससे वह ख़ूनी व्यक्ति अभिप्राय नहीं है जिसकी मुसलमानों को प्रतीक्षा है अपितु इस से केवल एक फ़िर्क़ा अभिप्राय है जो किताबों में अक्षरांतरण एवं परिवर्तन करके सच्चाई को दफ़्न करता है और दज्जाल के क़त्ल करने से केवल यह अभिप्राय है कि उनको तर्कों के साथ पराजित किया जाए और मसीह इब्ने मरयम जो ख़तरनाक रोगियों को जो बेहोशी की तीव्रता के कारण मुर्दों के समान थे जिन्दा करता था। इस युग में उसके नमूने पर मसीह मौऊद का यह काम है कि इस्लाम को ज़िन्दा करे जैसा कि बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम है कि يُقِيْمُ الشَّرِيْعَةِ وَيُحْيِ الدِّيْنَ (इसी से)

होगा। स्मरण रखो इस पैशगोई को हे लोगों ! ख़ूब याद रखो कि यह सुन्दर पहलवान कि जो जवानी की सम्पूर्ण शक्तियों से भरा हुआ है अर्थात् इस्लाम यह केवल एक की बार दज्जाल के हाथ से क़त्ल होना था। तो जैसा कि प्रारब्ध था यह पूर्वी ज़मीन में क़त्ल हो गया और अत्यन्त निर्दयता से उसके शरीर को काटा गया फिर दज्जाल ने अर्थात् उसकी आयु के अंत ने चाहा कि यह जवान जीवित हो। अत: अब वह ख़ुदा के मसीह के द्वारा जीवित हो गया और अब उसे अपनी सम्पूर्ण शक्तियों में दोबारा भरता जाएगा और पहले से अधिक सुदृढ़ हो जाएगा-

ولا ترد علیہ موتۃ الّا موتتہ الّاولی۔ واذا اھلک الدَّجّال فلا دجّال بعدہ الٰی یوم القیامۃ امر من لدن حکیم علیم و نبأ من عند ربّنا الکریم و بشارۃ من اللہ الرؤف الرّحیم۔ لَا یأتی بعد ھذا الّا نصر من اللہ و فتح عظیم۔

हे सामर्थ्यवान ख़ुदा! तेरी शान क्या ही बुलन्द है। तू ने अपने बन्दे के हाथ पर कैसे-कैसे महान निशान दिखाए। जो कुछ तेरे हाथ ने सौम्य के रंग में आथम के साथ किया और प्रतापी रंग में लेखराम के साथ किया ये चमकते हुए निशान ईसाइयों में कहां हैं और किस देश में है कोई दिखलाए। हे सामर्थ्यवान ख़ुदा! जैसा तूने इस बन्दे को कहा कि मैं हर मैदान में तेरे साथ हूंगा और प्रत्येक मुक़ाबले में मैं रूहुल क़ुदुस से तेरी सहायता करूंगा। आज ईसाइयों में ऐसा व्यक्ति कौन है जिस पर इस प्रकार से ग़ैब और चमत्कार के दरवाज़े ख़ोले गए हों। इसलिए हम जानते हैं और अपनी आंखों से देखते हैं कि तेरा वही रसूल कृपा और सच्चाई लेकर आया है जिस का नाम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। हज़रत ईसा की नुबुव्वत का भी उसी के अस्तित्व से रंग और रौनक़ है अन्यथा हज़रत मसीह की नुबुव्वत पर यदि पहले किस्सों को पृथक करके कोई ज़िन्दा सबूत मांगा जाए तो एक कण के बराबर भी सबूत नहीं मिल सकता। और किस्से तो प्रत्येक क़ौम के पास हैं। क्या हिन्दुओं के पास नहीं हैं?

और उन समस्त तर्कों में से जो मेरे मसीह मौऊद होने को बताते हैं वे

व्यक्तिगत निशानियां हैं जो मसीह मौऊद के बारे में वर्णन की गई हैं, उनमें से एक बड़ी निशानी यह है कि मसीह मौऊद के लिए आवश्यक है कि वह अन्तिम युग में पैदा हो जैसा कि यह हदीस है –

یکون فی اٰخر الزمان عند تظاھر من الفتن و انقطاع من الزمن ۔

और इस बात के सबूत के लिए कि वास्तव में यह अन्तिम युग है जिसमें मसीह प्रकट हो जाना चाहिए दो प्रकार के तर्क मौजूद हैं –

(1) प्रथम वे क़ुर्आनी आयतें और आसारे नबविय्य: जो कयामत के करीब होने को बताते हैं और पूरे हो गए हैं जैसा कि सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण का एक ही महीने में अर्थात् रमज़ान में होना जिसकी व्याख्या आयत -

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ (अलक़ियामत-10)

में की गई है और ऊंटों की सवारी का स्थगित हो जाना जिसकी व्याख्या आयत -

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ (अत्तक्वीर-5)

से स्पष्ट है। और देश में नहरों का प्रचुर मात्रा में निकलना जैसा कि आयत -

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ (अलइन्फ़ितार-4)

से स्पष्ट है और सितारों का निरन्तर टूटना जैसा कि आयत -

وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ (अलइन्फ़ितार-3)

से स्पष्ट है और दुर्भिक्ष पड़ना और संक्रामक रोग पड़ना तथा वर्षा का न होना जैसा कि आयत -

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ (अलइन्फ़ितार-2)

से प्रकट है।★ और सख़्त प्रकार का सूर्य ग्रहण जिस से अंधकार फैल

★**हाशिया :-** पवित्र क़ुर्आन में سماء का शब्द न केवल आकाश पर ही बोला जाता है जैसा का जन सामान्य का विचार है अपितु कई मायनों पर 'समा' का शब्द पवित्र क़ुर्आन में आया है। अत: मेंह का नाम भी पवित्र क़ुर्आन में 'समा' है और अहले अरब मेंह को 'समा' कहते हैं और ताबीर की पुस्तकों में 'समा' से अभिप्राय बादशाह भी होता है और आकाश के फटने से

जाए, जैसा कि आयत -

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ (अत्तक़्वीर-2)

से प्रकट है और पहाड़ों को अपने स्थान से उठा देना जैसा कि आयत -

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ (अत्तक़्वीर-4)

से समझा जाता है, और जो लोग वहशी, कमीने और इस्लामी सुशीलता से वंचित हैं उनका भाग्य चमक उठना जैसा कि आयत -

وَإِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ (अत्तक़्वीर-6)

से प्रकट हो रहा है।* और सम्पूर्ण संसार में संबंधों तथा मुलाक़ातों का सिलसिला गर्म हो जाना और सफर के द्वारा एक का दूसरे को मिलना आसान हो जाना जैसा कि स्पष्ट तौर पर आयत

وَإِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ (अत्तक़्वीर-8)

से समझा जाता है। और पुस्तकों एवं पत्रिकाओं तथा पत्रों का देशों में

शेष हाशिया - बिदअतें तथा गुमराहियां तथा हर प्रकार का अन्याय एवं अत्याचार अभिप्राय लिया जाता है और हर प्रकार के फ़ित्नों का प्रकटन अभिप्राय लिया जाता है। 'ता'तीरुल अनाम' पुस्तक में लिखा है

فان رایٔ السمآء انشقت دلّ علی البدعة و الضلالة

देखो पृष्ठ – 305 'ता'तीरुल अनाम'। (इसी से)

***हाशिया :-** हम इस से पूर्व अबू दरदाअ की रिवायत से लिख चुके हैं कि क़ुर्आन बहुअर्थी है और जिस व्यक्ति ने पवित्र क़ुर्आन की आयतों को एक ही पहलू पर सीमित कर दिया। उसने पवित्र क़ुर्आन को नहीं समझा और न उसे ख़ुदा की किताब का ज्ञान प्राप्त हुआ और उस से बढ़कर कोई मूर्ख नहीं। हां संभव है कि उन आयतों में से कुछ क़यामत से भी संबंध रखती हों परन्तु उन आयतों का प्रथम चरितार्थ यही दुनिया है क्योंकि यह अन्तिम की निशानियां हैं और जब दुनिया का सिलसिला ही लपेटा गया तो यह निशानियां किस बात की होंगी। संभवत: इस्लाम में ऐसे मूर्ख भी होंगे जो इस राज़ को नहीं समझे होंगे और ख़ुदा तआला की भविष्यवाणियां जिन से ईमान सुदृढ़ होता उनकी दृष्टि में वे समस्त बातें दुनिया के बाद हैं। ये समस्त क़ुर्आनी भविष्यवाणियां पहली किताबों में मसीह मौऊद के समय की निशानियां ठहराई गई हैं। देखो दानियाल अध्याय-12 (इसी से)

प्रकाशित हो जाना जैसा कि आयत

وَ إِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ (अत्तक्वीर-11)

से प्रकट हो रहा है। और उलेमा की आन्तरिक हालत का जो इस्लाम के नक्षत्र हैं धुंधला हो जाना जैसा कि

وَ اِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ (अलइन्शक़ाक़-2)

से स्पष्ट मालूम होता है तथा बिदअतों, गुमराहियों और हर प्रकार के पाप एवं दुराचारों का फैल जाना जैसा कि आयत

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ (अलइन्शक़ाक़-2)

से ज्ञात होता है और दुनिया पर एक महान क्रान्ति आ गई है। और जबकि स्वयं आंहज़रत का युग क़यामत के करीब का युग है जैसा कि आयत

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَ انْشَقَّ الْقَمَرُ (अलक़मर-2)

से समझा जाता है। तो फिर युग जिस पर तेरह सौ वर्ष और गुज़र गए इसके अन्तिम युग होने में किस को आपत्ति हो सकती है और पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों के अतिरिक्त हदीसों के समस्त बुज़ुर्ग अहले कश्फ़ की इस पर सहमति है कि चौदहवीं सदी वह अन्तिम युग है जिसमें मसीह मौऊद प्रकट होगा। हज़ारों वलियों के दिल इसी ओर झुके रहे हैं कि मसीह मौऊद के प्रकट होने का युग अन्ततः चौदहवीं सदी है इस से बढ़कर कदापि नहीं। अत: नवाब सिद्दीक हसन ख़ान ने भी अपनी पुस्तक हुजजुल किरामः में इस बात को लिखा है। और फिर इसके अतिरिक्त सूरह मुर्सलात में एक आयत है जिस से ज्ञात होता है कि क़यामत के करीब होने की एक भारी निशानी यह है कि ऐसा व्यक्ति पैदा हो जिस से रसूलों की सीमा तय हो जाए। अर्थात् मुहम्मदी ख़िलाफ़त के सिलसिले का अन्तिम खलीफ़ा जिस का नाम मसीह मौऊद और महदी माहूद है प्रकट हो जाए। और वह आयत यह है

وَاِذَاالرُّسُلُ اُقِّتَتْ (अलमुर्सलात-12)

अर्थात् वह अन्तिम युग जिस से रसूलों की संख्या का निर्धारण हो जाएगा। अर्थात् अन्तिम ख़लीफ़ा के प्रकटन से प्रारब्ध का अनुमान जो मुर्सलों की संख्या के

बारे में छुपा था प्रकटन में आ जाएगा। यह आयत भी इस बात पर स्पष्ट आदेश है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा। क्योंकि यदि पहला मसीह ही दोबारा आ जाए तो संख्या के निर्धारण का लाभ नहीं दे सकता, क्योंकि वह तो बनी इस्राईल के नबियों में से एक रसूल है जो मृत्यु पा चुका है और यहां मुहम्मदी सिलसिले के ख़लीफ़ों का निर्धारण अभीष्ट है। और यदि प्रश्न यह हो कि اُقِّتَتْ के यह मायने अर्थात् उस संख्या का निर्धारण करना जो इरादा किया गया है कहां से मालूम हुआ? तो इसका उत्तर यह है कि शब्दकोश की पुस्तक 'लिसानुल अरब' इत्यादि में लिखा है -

قد يجئى التوقيت بمعنى تبيين الحدود والمقدار كما جاء فى حديث ابن عباس رضى الله عنه لم يقت رسول الله صلى الله عليه وسلم فى الخمر حدًّا اى لم يقدّر ولم يحده بعدد مخصوص۔

अर्थात् शब्द توقيت जिस से اقّتت निकला है कभी हद, संख्या और मात्रा के वर्णन करने के लिए आता है जैसा कि हदीस इब्ने अब्बास रज़ि. में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़म्र की कुछ तौक़ीत (निश्चित करना) नहीं की। अर्थात् ख़म्र की हद की कोई संख्या और मात्रा वर्णन नहीं की और संख्या का निर्धारण नहीं किया। अत: यही मायने आयत -

وَ إِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ (अलमुर्सलात-12)

के हैं जिन को ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया और यह आयत इस बात की ओर संकेत है कि रसलूों का अन्तिम योग प्रकट करने वाला मसीह मौऊद है और यह स्पष्ट बात है कि एक सिलसिले का अन्त प्रकट हो जाता है तो बुद्धि के नज़दीक इस सिलसिले की पैमायश हो जाती है और जब तक कि कोई खींची लम्बी लकीर किसी बिन्दु पर समाप्त न हो ऐसी लकीर की पैमायश होना असंभव है क्योंकि उसकी दूसरी ओर अज्ञात और अनिश्चित है। अत: इस पवित्र आयत के ये मायने हैं कि मसीह मौऊद के प्रकटन से दोनों ओर मुहम्मदी ख़िलाफ़त के सिलसिले के दोनो ओर निश्चित और परीक्षित हो जाएंगे। मानो यों फ़रमाता है -

واذالخلفاء بيّن تعدادهم وحدد عدم هم بخليفة هو

اٰخِرِ الخلفاء الذی ھو المسیح الموعود فان اٰخر کلِّ شیئٍ بعین مقدار ذلک الشیئ وتعداده فھذا ھو المعنی وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتۡ

और दूसरा तर्क युग के अन्तिम होने पर यह है कि पवित्र क़ुर्आन की सूरह अस्र से मालूम होता है कि हमारा यह युग हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से छठे हज़ार पर है। अर्थात् हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदायश से यह छठा हज़ार जाता है और ऐसा ही सही हदीसों से सिद्ध है कि आदम से लेकर अन्त तक दुनिया की आयु सात हज़ार वर्ष है।★ इसलिए अन्तिम छठा हज़ार वह अन्तिम भाग इस दुनिया का हुआ जिस से प्रत्येक भौतिक और आध्यात्मिक पूर्णता सम्बद्ध है, क्योंकि ख़ुदाई का कारख़ाना क़ुदरत में छठे दिन और छठे हज़ार को ख़ुदा के कार्य पूर्ति के लिए सदैव से निर्धारित किया गया है उदाहरणतया हज़रत आदम अलैहिस्सलाम छठे दिन में अर्थात् शुक्रवार (जुमा) के दिन के अन्तिम भाग में पैदा हुए। अर्थात् आप के अस्तित्व

★**हाशिया :-** हकीम तिरमिज़ी ने नवादिरुलउसूल में अबू हुरैर: से रिवायत की है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसलल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया की आयु सात हज़ार वर्ष है और अनस बिन मालिक से रिवायत है कि जो व्यक्ति अल्लाह तआला की राह में एक मुसलमान की आवश्यकता पूर्ण करे उसके लिए दुनिया की आयु के अनुमान पर दिन को रोज़ा रखना और रात को इबादत करना लिखा जाता है और दुनिया की आयु सात हज़ार वर्ष है। देखो तारीख इब्ने असाकिर। फिर वही लेखक अनस से मर्फ़ूअ रिवायत करता है कि दुनिया की आयु आख़िरत के दिनों में से सात दिन अर्थात् आयत के अनुसार

وَ اِنَّ یَوۡمًا عِنۡدَ رَبِّکَ کَاَلۡفِ سَنَۃٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ (अलहज्ज - 48)

सात हज़ार वर्ष है। इस आयत के यह मायने हैं कि तुम्हारा हज़ार वर्ष ख़ुदा का एक दिन है। ऐसा ही तिबरानी ने और बैहक़ी ने दलाइल में और शिब्ली ने रौज़ अन्फ़ में दुनिया की आयु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़ार वर्ष रिवायत की है। ऐसा ही सही तरीके से इब्ने अब्बास से नकल किया गया है कि दुनिया सात दिन हैं और प्रत्येक दिन हज़ार वर्ष का है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रकटन सातवें हज़ार के अन्त में हैं परन्तु यह हदीस दो पहलू से ऐतराज़ का कारण है जिसका निवारण करना आवश्यक है। प्रथम यह कि इस हदीस को कुछ दूसरी हदीसों से विरोधाभास है। क्योंकि दूसरी हदीसों में यों लिखा है कि नबवी अवतरण सातवें हज़ार के अन्त में है और इस हदीस में

की सर्वांगपूर्ण सजावट, वस्त्रादि छठे दिन प्रकट हुआ यद्यपि आदम का ख़मीर आहिस्ता-आहिस्ता तैयार हो रहा था और समस्त स्थूल, वनस्पति, प्राणी पैदायशों के

शेष हाशिया - है कि सातवें हज़ार में है। तो यह विरोधाभास अनुकूलता चाहता है। इसका उत्तर यह है कि वास्तविक और सही बात यह है कि नबवी अवतरण सातवें हज़ार के अन्त में है जैसा कि क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेश सहमति के साथ गवाही दे रहे हैं। परन्तु चूंकि सदी का अन्त या उदाहरणतया अन्तिम हज़ार का उस सदी या हज़ार का सर कहलाता है जो इसके बाद आरंभ होने वाला है और इसके साथ संलग्न है इसलिए यह मुहावरा प्रत्येक क़ौम का है कि वह किसी सदी के अन्तिम भाग को जिस पर मानो सदी समाप्त होने के हुक्म में है दूसरी सदी पर जो उसके बाद आऱंभ होने वाली है चरितार्थ कर देते हैं। उदाहरणतया कह देते हैं कि अमुक मुजद्दिद बारहवीं सदी के सर पर प्रकट हुआ था यद्यपि वह ग्यारहवीं सदी के अन्त पर प्रकट हुआ हो। अर्थात् ग्यारहवीं सदी के कुछ वर्ष रहते उसने प्रकटन किया हो और फिर कभी कलाम को अनदेखा करने के कारण या रावियों के समझने के दोष के कारण या नबवी कलिमात के असन्तुलन और भूल के कारण जो मनुष्य होने को अनिवार्य है कुछ और भी परिवर्तन हो जाता है। तो इस प्रकार का विरोधाभास ध्यान देने योग्य नहीं अपितु वास्तव में यह कुछ विरोधाभास ही नहीं। ये सब बातें आदत और मुहावरे में दाखिल हैं। कोई बुद्धिमान इसको विरोधाभास नहीं समझेगा।

(2) दूसरा पहलू जिसकी दृष्टि से ऐतराज़ होता है यह है कि उस हिसाब के अनुसार जो यहूदियों और ईसाइयों में सुरक्षित और निरन्तर चला आता है जिस की गवाही चमत्कार के तौर पर पवित्र क़ुर्आन के कलाम की चमत्कारी व्यवस्था में पूर्ण उत्तमता के साथ वर्णन मौजूद है। जैसा कि हमने मूल इबारत में विस्तारपूर्वक वर्णन कर दिया है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से क़मरी और शम्सी हिसाब के अनुसार 4598 वर्ष बाद आदम सफ़ीउल्लाह हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला की ओर से प्रकट हुए। तो इस से स्पष्ट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक सौ पांचवीं सदी में अर्थात् एक हज़ार पांच में अवतरित हुए। न कि एक हज़ार छ: में और यह हिसाब बहुत सही है। क्योंकि यहूदियों और ईसाइयों के उलेमा की निरन्तरता इसी पर है। और पवित्र क़ुर्आन इसी की पुष्टि करता है। तथा कई अन्य कारण तथा बौद्धिक तर्क जिन का विवरण लम्बाई का कारण है इस बात पर निश्चित तौर पर सुदृढ़ करते हैं कि हमारे आक़ा मुहम्मद मुस्तफ़ा और आदम सफीउल्लाह में यही

साथ भी सम्मिलित था। परन्तु पूर्ण पैदायश का दिन छठा दिन था। और पवित्र क़ुर्आन भी यद्यपि आहिस्ता-आहिस्ता पहले से उतर रहा था परन्तु उसका पूर्ण अस्तित्व भी

शेष हाशिया - फासला है इस से अधिक नहीं। यद्यपि आकाशों और ज़मीनों के पैदा करने का इतिहास नहीं। यद्यपि आकाशों और ज़मीनों के पैदा करने का इतिहास लाखों वर्ष हों या करोड़ों वर्ष हों जिसका ज्ञान ख़ुदा तआाल के पास है, परन्तु हमारी प्रजाति के जनक आदम सफ़ी उल्लाह की पैदायश को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय तक यही अवधि गुज़री थी अर्थात् 4739 वर्ष क़मरी हिसाब से और 4598 वर्ष शम्सी हिसाब से। और जबकि क़ुर्आन तथा हदीस और अहले किताब की निरन्तरता से यही अवधि सिद्ध होती है तो यह बात स्पष्ट तौर पर ग़लत है कि ऐसा विचार किया जाए कि जैसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक हज़ार छः के अन्त पर अवतरित हुए थे। क्योंकि यदि वह एक हज़ार छः का अन्त था तो अब तेरह सौ सत्रह होंगे। हालांकि हदीसों की पूर्ण सहमति के अनुसार दुनिया की आयु कुछ सात हज़ार वर्ष ठहराया गया था। तो जैसे अब हम दुनिया के बाहर जीवन व्यतीत कर रहे हैं और मानो दुनिया को समाप्त हुए तीन सौ सत्रह वर्ष गुज़र गए। यह कितना व्यर्थ और निरर्थक विचार है। जिसकी ओर हमारे उलेमा ने कभी ध्यान नहीं दिया। एक बच्चा भी समझ सकता है कि जब सही और निरन्तर हदीसों की दृष्टि से दुनिया की आयु हज़रत आदम से लेकर अन्त तक सात हज़ार वर्ष ठहरी थी और पवित्र क़ुर्आन में भी आयत

وَإِنَّ يَوْمًا عِندَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ (अलहज-48)

और ख़ुदा तआला का सात दिन निर्धारित करना और उनके बारे में सात सितारे निर्धारित करना और सात आकाश और सात पृथ्वी की परतें जिनको हफ्त इक़्लीम कहते हैं ठहराना ये सब इसी ओर संकेत हैं तो फिर कौन सा हिसाब है जिस के अनुसार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग को छठा हज़ार ठहरा दिया जाए। स्पष्ट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग को आज की तिथि तक तेरह सौ सत्रह वर्ष और छः महीने ऊपर गुज़र गए। तो फिर यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छठे हज़ार के अन्त में अवतरित हुए और ऐतराज़ का उत्तर यह है कि प्रत्येक नबी का एक अवतरण है परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो अवतरण हैं और इस पर अटल स्पष्ट आदेश पवित्र आयत -

وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ (अलजुमअ:4)

छठे दिन ही शुक्रवार (जुमा) के दिन अपने कमाल को पहुंचा और आयत
اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (अलमाईद: - 4)

शेष हाशिया - है। समस्त बड़े व्याख्याकार इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं कि इस उम्मत का अन्तिम गिरोह अर्थात् मसीह मौऊद की जमाअत सहाबा के रंग में होंगे और सहाबा रज़ि. की तरह बिना किसी अन्तर के आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वरदान और हिदायत पाएंगे। अत: जब यह बात क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश से सिद्ध हुई, जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ैज़ सहाबा पर जारी हुआ ऐसा ही बिना किसी अन्तर के मसीह मौऊद की जमाअत पर फ़ैज़ होगा तो इस स्थिति में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक और अवतरण मानना पड़ा जो अन्तिम युग में मसीह मौऊद के समय में छठे हज़ार में होगा। इस वर्णन से यह बात पुख़्ता सबूत को पहुंच गई कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो अवतरण हैं या दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि एक बुरूज़ी रंग में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुनिया में दोबारा आने का वादा दिया गया था जो मसीह मौऊद और महदी माहूद के प्रादुर्भाव से पूर्ण हुआ। तो जबकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो अवतरण हुए तो जो कुछ हदीसों में यह ज़िक्र है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छठे हज़ार के अन्त में अवतरित हुए थे। इस से दूसरा अवतरण अभिप्राय है। जो अटल स्पष्ट आदेश पवित्र आयत-

وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ (अलजुमअ:4)

से समझा जाता है। यह विचित्र बात है कि मूर्ख मौलवी जिन के हाथों में केवल खाल ही खाल है हज़रत मसीह के दोबारा आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु पवित्र क़ुर्आन हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दोबारा आने की ख़ुशख़बरी देता है क्योंकि यश पहुंचाना बिना अवतरण के असंभव है। और इस आयत وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ का सारांश यही है कि दुनिया में ज़िन्दा रसूल एक ही है अर्थात् मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो छठे हज़ार में भी अवतरित होकर ऐसा ही फ़ैज़ पहुंचाएगा जैसा कि वह पांचवें हज़ार में पहुंचाता था और अवतरित होने के यहां यही मायने हैं कि जब छठा हज़ार आएगा और महदी मौऊद उसके अन्त में प्रकट होगा तो यद्यपि प्रत्यक्ष में महदी माहूद के माध्यम से दुनिया को हिदायत होगी। परन्तु वास्तव में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ुव्वते क़ुदसिया नए सिरे से दुनिया के सुधार की ओर ऐसी तन्मयता से ध्यान देगी कि

उतरी और इन्सानी वीर्य भी अपने परिवर्तन की छठी श्रेणी पर इन्सानी पैदायश से पूरा हिस्सा पाता है जिसकी ओर आयत- ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ (अलमोमिनून-15) में इशारा है। और छ: श्रेणियां ये हैं - (1) वीर्य (2) अलक़: (3) मुज़ग़ (4)

शेष हाशिया - जैसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोबारा अवतरित होकर दुनिया में आ गए हैं। यही मायने इस आयत के हैं कि-

وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अलजुमअ:4)

अत: यह खबर जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वितीय अवतरण के बारे में है जिसके साथ यह शर्त है कि वह अवतरण छठे हज़ार के अन्त पर होगा। इस हदीस से इस बात का ठोस फैसला होता है कि अवश्य है कि महदी माहूद और मसीह मौऊद जो मुहम्मदी चमकारों का द्योतक है जिस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का द्वितीय अवतरण निर्भर है वह चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट हो, क्योंकि यही सदी छठे हज़ार के अन्तिम भाग में पड़ती है। यहां कुछ उलेमा का यह तावील करना कि दुनिया की आयु से अभिप्राय पहली आयु है जो सही नहीं है। क्योंकि ये समस्त हदीसें भविष्यवाणी करने की हैसियत से हैं और हदीस हफ्त पाय: मिम्बर स्वप्न में देखने की भी इसी की समर्थक है। और इस बारे में यहूदियों और ईसाइयों के मान्य इज्मा की जो आस्था है वह भी इसी का समर्थन करती है और पहले नबियों के सिलसिले पर दृष्टि डालने से यही अनुमान समझ में आता है और यह कहना कि भविष्य की आयु की सात हज़ार वर्ष ठहराने से इस बात के बारे में कि किस घड़ी क़यामत आएगी कोई ठोस तर्क मालूम नहीं होता, क्योंकि सात हज़ार के शब्द से यह नहीं निकलता कि अवश्य सात हज़ार वर्ष पूर्ण करके क़यामत आ जाएगी। कारण यह कि प्रथम तो यह बात संदिग्ध रहेगी कि यहां ख़ुदा तआला ने सात हज़ार से सूर्य के हिसाब की अवधि अभिप्राय ली है या चन्द्रमा के हिसाब की और सूर्य के हिसाब से यदि सात हज़ार साल हो तो चन्द्रमा के हिसाब से लगभग दो सौ वर्ष और ऊपर चाहिए। तथा इसके अतिरिक्त चूंकि अरब की आदत में यह दाख़िल है कि भिन्न संख्याओं को हिसाब से गिरा हुआ रखते हैं मतलब में बाधक नहीं समझते। इसिलए संभव है कि सात हज़ार से इतना अधिक भी हो जाए जो आठ हज़ार तक न पहुंचे। उदाहरणतया दो तीन सौ वर्ष और अधिक हो जाएं तो इस स्थिति में इस अवधि के वर्णन के बावजूद वह विशेष घड़ी तो गुप्त ही रही और यह अवधि एक निशानी के तौर पर हुई। जैसा कि इन्सान की मौत की घड़ी जो छोटी क़यामत है गुप्त है। परन्तु यह निशानी प्रकट है कि एक सौ बीस वर्ष तक इन्सान का जीवन समाप्त हो जाता है और वृद्धावस्था भी उसकी

इज़ाम (हड्डियां) (5) लहम हड्डियां के चारों ओर मांस (6) ख़ल्क़ आख़र इस क़ानून क़ुदरत से जो छठे दिन और छ: श्रेणियों के बारे में मालूम हो चुका है मानना पड़ता है कि दुनिया की आयु का छठा हज़ार भी अर्थात् उसका अन्तिम भाग भी जिसमें हम हैं किसी आदम के पैदा होने का समय और किसी धार्मिक पूर्ति के प्रकटन का युग है। जैसा कि बराहीन अहमदिया का यह इल्हाम कि لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّه और यह इल्हाम कि اَرَدْتُ ان استخلف فخلقتُ اٰدم इसको बता रहा है। और याद रहे कि यद्यपि पवित्र क़ुर्आन के ज़ाहिर शब्दों में दुनिया की आयु के बारे में कुछ वर्णन नहीं, परन्तु पवित्र क़ुर्आन में बहुत से ऐसे संकेत भरे हुए हैं जिन से यही मालूम होता है कि दुनिया की आयु अर्थात् आदम के दौर का युग सात हज़ार साल है। अत: क़ुर्आन के इन समस्त संकेतों में से एक यह भी है कि ख़ुदा तआला ने मुझे एक कश्फ़ के द्वारा सूचना दी है कि सूरह अलअस्र के अददों से अब्जद के हिसाब से मालूम होता है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक अस्र तक जो नुबुव्वत काल है अर्थात् तेईस वर्ष का सम्पूर्ण युग यह कुल अवधि गुज़रे युग के साथ मिला कर 4739 वर्ष दुनिया के प्रारंभ से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के दिन तक चांद के हिसाब से हैं।★ तो इस से मालूम हुआ

★**हाशिया :-** इस हिसाब की दृष्टि से मेरा जन्म उस समय हुआ जब छ: हज़ार वर्ष में से ग्यारह वर्ष रहते थे। तो जैसा कि आदम अलैहिस्सलाम अन्तिम भाग में पैदा हुआ ऐसा ही मेरा जन्म हुआ। ख़ुदा ने इन्कारियों के बहानों को तोड़ने के लिए यह अच्छा प्रबंध किया है कि मसीह मौऊद के लिए चार आवश्यक निशानियां रख दी हैं। (1) एक यह कि उसका जन्म हज़रत आदम के जन्म के रंग में छठे हज़ार के अन्त में हो। (2) दूसरी यह कि उसका प्रकटन और बुरूज़ सदी के सर पर हो। (3) तीसरी यह कि उसके दावे के समय रमज़ान के महीने में आकाश

शेष हाशिया - मौत की एक निशानी है। ऐसा ही घातक रोग भी मौत की निशानी हैं तथा इसमें क्या सन्देह है कि पवित्र क़ुर्आन में क़यामत के करीब होने की बहुत सी निशानियां वर्णन की गई हैं और ऐसा ही हदीसों में भी। तो इन सब में से सात हज़ार साल भी एक निशानी है। यह भी याद रहे कि क़यामत भी कई प्रकार पर विभाजित है और संभव है कि सात हज़ार साल के बाद कोई छोटी क़यामत हो जिस से दुनिया का एक बड़ा परिवर्तन अभिप्राय हो न कि बड़ी क़यामत। इसी से

कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पांचवें हज़ार में जो मिर्रीख़ (मंगल तारा) की ओर सम्बद्ध है अवतरित हुए हैं और शम्सी (सूर्य) हिसाब से यह अवधि 4598 होती है और ईसाइयों के हिसाब से जिस पर बाइबल का सम्पूर्ण दारोमदार रखा गया है 4636 वर्ष हैं। अर्थात् हज़रत आदम से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत के अन्तिम युग तक 4636 वर्ष होते हैं। इस से प्रकट हुआ कि क़ुर्आन के हिसाब से जो सूरह अलअस्र के अददों से मालूम होता है ईसाइयों की बाइबल के हिसाब सें जिस की दृष्टि से बाइबल के हाशिए पर जगह-जगह तिथियां लिखते हैं केवल अड़तीस वर्ष का अन्तर है और यह पवित्र क़ुर्आन के ज्ञान के चमत्कारों में से एक महान चमत्कार है जिस उम्मते मुहम्मदिया के समस्त लोगों में से विशेषत: मुझ को जो मैं अन्तिम युग का महदी हूं सूचना दी गई है ताकि क़ुर्आन का यह ज्ञान संबंधी चमत्कार तथा उस से अपने दावे का सबूत लोगों पर प्रकट करूं। और इन दोनों हिसाबों के अनुसार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग जिस की ख़ुदा तआला ने सूरह वलअस्र में क़सम खाई पांचवां हज़ार है अर्थात् पांचवा हज़ार जो मिर्रीख (मंगल तारा) के असर के अधीन है। और यही रहस्य है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उन उपद्रवियों के क़त्ल और खून बहाने के लिए आदेश दिया गया। जिन्होंने मुसलमानों को क़त्ल किया और क़त्ल करना चाहा और उनके उन्मूलन की घात में लगे। और यही ख़ुदा तआला के आदेश और आज्ञा से मिर्रीख (मंगल तारा) का प्रभाव है। अत: आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहले अवतरण

पर चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण हो। (4) चौथी यह कि उसके दावे के समय ऊंटों के स्थान पर दुनिया में एक और सवारी पैदा हो जाए। अब स्पष्ट है कि चारों निशानियां प्रकट हो चुकी हैं। अत: बहुत समय हुआ कि छठा हज़ार गुज़र गया और लगभग पचासवां साल उस पर अधिक हो रहा है। अब दुनिाय सातवें हज़ार को गुज़र रही है और सदी के सर पर से भी सत्रह वर्ष गुज़र गए और चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण पर भी कई साल गुज़र गए और ऊंटों के स्थान पर रेल की सवारी भी निकल आई। अत: वह क़यामत तक कोई दावा नहीं कर सकता कि मैं मसीह मौऊद हूं। क्योंकि अब मसीह मौऊद की पैदायश और उसके प्रादुर्भाव का समय गुज़र गया। (इसी से)

का युग पांचवां हज़ार था जो मुहम्मद इस्म (नाम) के चमकार का द्योतक था। अर्थात् यह पहला अवतरण प्रतापी निशान प्रकट करने के लिए था। परन्तु दूसरा अवतरण जिसकी ओर पवित्र आयत

وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ (अलजुमअ: - 4)

में संकेत है वह चमकार का द्योतक इस्म (नाम) 'अहमद' है जो जमाली है।★ जैसा कि आयत-

مُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّأْتِيْ مِنْ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ (अस्सफ़ - 7)

इसी की ओर संकेत कर रही है और इस आयत के यही मायने हैं कि महदी माहूद जिस का नाम आकाश पर अवास्तविक तौर पर अहमद है जब अवतरित होगा तो उस समय वह नबी करीम जो वास्तविक तौर पर इस नाम का चरितार्थ है इस मजाज़ी अहमद की पद्धति में होकर अपनी जमाली चमकार प्रकट करेगा। यही वह बात है जो इस से पहले मैंने अपनी पुस्तक "इज़ाला औहाम" में लिखी थी। अर्थात् यह कि मैं इस्म अहमद में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भागीदार हूं। इस पर मूर्ख मौलवियों ने जैसा कि उनकी हमेशा से प्रकृति है शोर मचाया था। हालांकि यदि इस से इन्कार किया जाए तो इस भविष्यवाणी का समस्त सिलसिला उथल-पुथल हो जाता है। अपितु पवित्र क़ुर्आन का झुठलाना अनिवार्य आता है जो नऊज़ुबिल्लाह कुफ्र तक नौबत पंहुचाता है। इसलिए जैसा

★**हाशिया :-** यह बारीक भेद याद रखने योग्य है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वितीय अवतरण में महान चमकार जो सर्वांपूर्ण है वह केवल 'अहमद' नाम की चमकार है क्योंकि द्वितीय अवतरण छठे हज़ार के अन्त में है और छठे हज़ार का संबंध मुश्तरी (बृहस्पति) नक्षत्र के साथ है जो ख़न्नस-कुन्नस में से छठा नक्षत्र है और इस नक्षत्र का यह तीसरा है कि मामूरों को खून बहाने से मना करता और बुद्धि एवं विवेक और तर्क की सामग्री को बढ़ाता है इसलिए यद्यपि यह बात सच है कि इस द्वितीय अवतरण में भी मुहम्मद नाम की चमकार से जो प्रतापी चमकार है और जमाली चमकार के साथ शामिल है परन्तु वह प्रतापी चमकार रूहानी तौर पर होकर जमाली रंग के समान हो गई है क्योंकि इस समय के अवतरण पर बृहस्पति नक्षत्र प्रतिबिम्ब है कि मिर्रीख का प्रतिबिम्ब। इसी कारण से बार-बार इस पुस्तक में लिखा गया है कि छठा हज़ार केवल अहमद नाम का पूर्ण द्योतक है जो जमाली चमकार को चाहता है। (इसी से)

कि मोमिन के लिए दूसरे ख़ुदाई आदेशों पर ईमान लाना अनिवार्य है। ऐसा ही इस बात पर ईमान अनिवार्य है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो अवतरण हैं। (1) एक अवतरण मुहम्मदी जो जलाली (प्रताषि) रंग में है जो मिर्रीख नक्षत्र के प्रभाव से नीचे है जिसके बारे में तौरात के हवाले से पवित्र क़ुर्आन में यह आयत है

مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ (अलफ़त्ह-30)

(2) दूसरा अवतरण अहमदी जो जमाली रंग में है जो मुश्तरी (बृहस्पति) नक्षत्र के प्रभाव के नीचे है जिसके बारे में इंजील के हवाले से पवित्र क़ुर्आन में यह आयत है -

مُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّأْتِيْ مِنْۢ بَعْدِى اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ط (अस्सफ़-7)

और चूंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने अस्तित्व और अपने समस्त ख़लीफ़ों के सिलसिले की दृष्टि से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से एक बाह्य और खुली खुली समरूपता है। इसलिए अल्लाह तआला ने बिना माध्यम (सीधे तौर पर) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को हज़रत मूसा के रंग पर अवतरित किया। परन्तु चूंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत ईसा से एक गुप्त और सूक्ष्य समरूपता थी इसलिए ख़ुदा तआला ने एक बुरूज़ के दर्पण में उस गुप्त समरूपता का पूर्णरूप से रंग दिखा दिया। तो वास्तव में महदी और मसीह होने के दोनों जौहर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व में मौजूद थे। ख़ुदा तआला से पूर्ण हिदायत पाने के कारण जिसमें इन्सानों में से किसी उस्ताद का उपकार न था। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कामिल (पूर्ण) महदी थे और आप से दूसरी श्रेणी पर मूसा महदी था जिसने ख़ुदा से ज्ञान पाकर बनी इस्राईल के लिए शरीअत की बुनियाद डाली और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस कारण से भी महदी थे कि अल्लाह तआला ने समस्त सफलताओं के मार्ग आप पर खोल दिए। और जो लोग विरोधियों में से मार्ग का पत्थर थे उनका उन्मूलन किया और उन मायनों की दृष्टि से भी आप से दूसरी श्रेणी पर हज़रत मूसा भी महदी थे। क्योंकि ख़ुदा

ने मूसा के हाथ पर बनी इस्राईल का मार्ग खोल दिया। और फ़िरऔन इत्यादि दुश्मनों से उन को मुक्ति देकर अभीष्ट मंज़िल तक पहुंचाया। इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मूसा के महदी होने में दोनों मायनों की दृष्टि से समानता थी। अर्थात् इन दोनों पवित्र नबियों के लिए सफ़लता का मार्ग भी दुश्मनों के उन्मूलन से खोला गया और ख़ुदा तआला की ओर से शरीअत के समस्त मार्ग समझाए गए और पहली सदियों को समाप्त करके दोनों शरीअतों की नई बुनियाद डाली गई और नए सिरे से सम्पूर्ण इमारत बनाई गई। परन्तु कामिल और वास्तविक महदी दुनिया में केवल एक ही आया है जिसने अपने रब्ब के अतिरिक्त किसी उस्ताद से एक अक्षर नहीं पढ़ा। परन्तु बहरहाल चूंकि पहली सदियों के तबाह होने के बाद जिन का विस्तृत ज्ञान हमें नहीं दिया गया शरीअत की बुनियाद डालने वाला और ख़ुदा से ज्ञान पाकर हिदायत प्राप्त मूसा था जिसने यथाशक्ति ग़ैर माबूदों (उपास्यों) का अंकित चिन्ह मिटाया और धर्म पर आक्रमण करने वालों को मार दिया तथा अपनी क़ौम को अमन प्रदान किया। इसलिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यद्यपि मूसा की अपेक्षा प्रत्येक पहलू से पूर्ण महदी है परन्तु वह मूसा की सामयिक प्राथमिकता के कारण मूसा का मसील कहलाता है। क्योंकि जिस प्रकार हज़रत मूसा ने विरोधियों को मार कर और ख़ुदा से हिदायत पाकर एक भारी शरीअत की बुनियाद डाली और ख़ुदा ने मूसा के मार्ग को ऐसा साफ किया कि कोई उसके सामने ठहर न सका और ख़लीफ़ों का एक लम्बा सिलसिला उसे प्रदान किया। यही रंग और यही रूप और इसी सिलसिले के समान सिलसिला आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया अतः मूसा और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में एक बहुत बड़ी समानता है। और इस समय में अद्भुत बात यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी उस समय नई शरीअत मिली जबकि यहूदियों की पहली शरीअत भिन्न-भिन्न प्रकार की मिलावट के कारण जो उनकी आस्थाओं में दाखिल हो गई और अक्षरांतरण एवं परिवर्तन के कारण पूर्ण रूप से तबाह हो चुकी थी तथा एकेश्वरवाद और ख़ुदा की उपासना का स्थान

शिर्क और दुनिया परस्ती ने ले लिया था। निष्कर्ष यह कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हज़रत मूसा से खुली-खुली समानता और दोनों नबी अर्थात् सय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मूसा दोनों मायनों की दृष्टि से महदी हैं अर्थात् इस दृष्टि से भी महदी कि ख़ुदा से उनको नई शरीअत मिली और नई हिदायतें अपनी असलियत पर शेष नही रही थीं। और इस दृष्टि से भी महदी हैं कि ख़ुदा ने दुश्मनों को जड़ से उखाड़ कर सफलताओं के मार्गों की उनको हिदायत की और विजय एवं सौभाग्य के मार्ग उन पर खोल दिए। ऐसा ही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत ईसा से भी दो समानताएं रखते हैं -

(1) एक यह कि वह मसीह की तरह मक्का में विरोधियों के आक्रमणों से बचाए गए और विरोधी क़त्ल के इरादे में असफल रहे।

(2) दूसरे यह कि आप का जीवन संयमी था और आप पूर्णतया ख़ुदा की ओर सब कुछ त्याग कर लीन थे और आपकी सम्पूर्ण खुशी और आंखों की ठण्डक नमाज़ और इबादत में थी। इन दोनों विशेषताओं के कारण आप का नाम अहमद था अर्थात ख़ुदा का सच्चाई इबादत करने वाला तथा उसकी कृपा और दया का कृतज्ञ। और ये नाम अपनी वास्तविकता की दृष्टि से यसू के नाम का पर्याय है तथा इसके यही मायने हैं कि दुश्मनों के आक्रमण से और नफ़्स के आक्रमण से मुक्ति दिया गया। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक्का का जीवन हज़रत ईसा से समानता रखता है और मदीने का जीवन हज़रत मूसा के समान है। और चूंकि हिदायत की पूर्ति के लिए आप ने दो बुरूज़ों में प्रकटन किया था। एक मूस्वी बुरूज़ और दूसरे ईस्वी बुरूज़। और इसी उद्देश्य के लिए इन दोनों हिदायतों तौरात तथा इंजील का पवित्र क़ुर्आन जामिअ उतरा और प्रत्येक हिदायत की पाबन्दी उसके यथास्थान तथा यथाअवसर आवश्यक ठहराई गई तथा इस प्रकार से ख़ुदा की हिदायत अपनी सर्वांगपूर्णता को पहुंची। इसलिए हिदायत की पूर्ति के बाद जो किसी बुरूज़ के माध्यम के बिना आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तम अस्तित्व से प्रकटन में आई। हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति की आवश्यकता थी और वह एक ऐसे युग पर निर्भर थी जिसमें प्रकाशन के

समस्त साधन उत्तम और पूर्ण तौर पर उपलब्ध हों। इसलिए हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दो बुरूज़ों की आवश्यकता पड़ी। (1) बुरूज़ मुहम्मदी मूस्वी (2) दूसरा बुरूज़ अहमदी ईस्वी।

बुरूज़ मुहम्मदी मूस्वी की दृष्टि से मुहम्मदी वास्विकता के द्योतक का नाम महदी रखा गया। और मिथ्या मिल्लतों की तबाही के लिए तलवार के स्थान पर क़लम से काम लिया गया, क्योंकि जब इन्सानों ने अपने तरीक़े को बदला और तलवार के साथ सच का मुक़ाबला न किया तो ख़ुदा ने भी अपना तरीक़ा बदला और तलवार का काम क़लम से लिया। क्योंकि ख़ुदा अपने प्रत्यपकार में इन्सान के क़दम-ब-कदम चलता है

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ (अर्रअद-12)

और बुरूज़ अहमदी ईस्वी की दृष्टि से अहमदी वास्तविकता के द्योतक का नाम मसीह और ईसा रखा गया तथा जैसा कि मसीह ने उस सलीब पर विजय पाई थी जिसको यहूदियों ने उसके क़त्ल के लिए खड़ा किया था। इस मसीह का काम यह है कि उस सलीब पर विजय पाए जो उसकी मानव जाति के मारने के लिए ईसाइयों ने खड़ी की है तथा इसी प्रकार एक यह भी काम है यहूदी चरित्र लोगों के आक्रमणों से बच कर उनका सुधार भी करे और अन्ततः दुश्मनों के समस्त झूठों से पवित्र होकर नेकनामी के साथ ख़ुदा की ओर उठाया जाए। जैसा कि बराहीन अहमदिया में मेरे बारे में यह इल्हाम है -

يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَيَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ جَاعِلُ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

और यह मुहम्मदी अवतरण जो प्रकाशन की पूर्ति के लिए था जो मूस्वी और ईस्वी बुरूज़ की पद्धति में था, इसके लिए भी ख़ुदा की हिकमत ने यही चाहा कि छठे दिन में प्रकटन में आए जैसा कि हिदायत की पूर्ति छठे दिन में हुई थी। तो इसमें हिकमत यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुलअंबिया हैं जैसा कि आदम अलैहिस्सलाम ख़ातमुलमख़्लूक़ात हैं। अतः ख़ुदा तआला ने

चाहा कि जैसा कि उसने हुज़ूर नबवी की समानता हज़रत आदम से पूर्ण करने के लिए क़ुर्आनी हिदायत की पूर्ति का छठा दिन निर्धारित किया अर्थात् शुक्रवार (जुमअ:) का दिन। और उसी दिन यह आयत उतरी कि -

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ (अलमाइदह-4)

ऐसा ही हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति के लिए छठा हज़ार निर्धारित किया जो क़ुर्आन की आयतों की व्याख्यानुसार छठे दिन के स्थान पर है।

अब मैं दोबारा याद दिलाता हूं कि हिदायत की पूर्ति के दिन में तो स्वयं आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में मौजूद थे। और वे दिन अर्थात् जुमआ का दिन जो दिनों में से छठा दिन था मुसलमानों के लिए बड़ी ख़ुशी का दिन था जब आयत -

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ (अलमाइदह-4)

उतरी और क़ुर्आन जो समस्त आसमानी किताबों का आदम और पहली किताबों के समस्त मआरिफ का संग्रहीता था और ख़ुदा की सम्पूर्ण विशेषताओं का द्योतक था उसने आदम की तरह छठे दिन अर्थात् जुमे के दिन अपने अस्तित्व को सर्वांगपूर्ण तौर पर प्रकट किया। यह तो हिदायत की पूर्ति का दिन था परन्तु प्रसार की पूर्ति का दिन उस दिन के साथ जमा नहीं हो सकता था क्योंकि अभी वे साधन पैदान नहीं हुए थे जो समस्त संसार के सम्बन्धों को परस्पर मिला देते, तथा मुसाफ़िरों के लिए थल और समुद्री सफरों को आसान कर देते। और धार्मिक पुस्तकों की एक बड़ी मात्रा लिखने के लिए जो समस्त संसार के भाग में आ सके जल्द लिखने के उपकरण उपलब्ध कर देते और न विभिन्न भाषाओं का ज्ञान मानव जाति को प्राप्त हुआ था और न समस्त धर्म एक दूसरे के मुकाबले पर प्रकटन के तौर पर एक जगह मौजूद थे। इसलिए वह वास्तविक प्रचार जो समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के साथ प्रत्येक क़ौम पर हो सकता है और प्रत्येक देश तक पहुंच सकता है न उसका अस्तित्व था और न मामूली प्रचार के साधन मौजूद थे। इसलिए प्रचार की पूर्ति के लिए एक और युग ख़ुदा के ज्ञान ने निर्धारित किया। जिसमें कामिल प्रचार (तब्लीग़) के लिए कामिल साधन मौजूद

थे और अवश्य था कि जैसा कि हिदायत की पूर्ति आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ से हुई ऐसा ही हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा हो। क्योंकि ये दोनों आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पद संबंधी काम थे। परन्तु ख़ुदा की सुन्नत की दृष्टि से इतना हमेशा रहना आप के लिए असंभव था कि आप उस अन्तिम युग को पाते। और ऐसा हमेशा रहना शिर्क के फैलने का एक माध्यम था। इसलिए ख़ुदा तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस पद संबंधी सेवा को एक ऐसे उम्मती के हाथ से पूरा किया कि जो अपनी आदत और रूहानियत की दृष्टि से जैसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ललम के अस्तित्व का एक टुकड़ा था या यों कहो कि वही था और आकाश पर ज़िल्ली तौर पर आप के नाम का भागीदार था। और हम अभी लिख चुके हैं कि हिदायत की पूर्ति का दिन छठा दिन था अर्थात् जुमा। इसलिए परस्पर अनुकूलता को रखने की दृष्टि से हिदायत के प्रचार की पूर्ति का दिन भी छठा दिन है। जैसा कि इस वादे की ओर आयत

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ़्फ़-10)

संकेत कर रही है। और इस छठे दिन में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रकृति और रंग पर एक व्यक्ति जो अहमदी और मुहम्मदी चमकारों का द्योतक था अवतरित किया गया ताकि क़ुर्आनी हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति उस पूर्ण द्योतक के माध्यम से हो जाए। निष्कर्ष यह कि ख़ुदा तआला की पूर्ण हिकमत ने इस बात को अनिवार्य किया कि जैसा कि क़ुर्आनी हिदायत के प्रचार की पूर्ति के लिए छठा हज़ार निर्धारित किया गया जो क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशानुसार छठे दिन के आदेश में है और जैसा कि क़ुर्आनी हिदायत की पूर्ति का छठा दिन जुमा था ऐसा ही छठे हज़ार में भी ख़ुदा तआला की ओर से जुमे का अर्थ गुप्त है। अर्थात् जैसा कि जुमे का दूसरा भाग समस्त मुसलमानों को एक मस्जिद में जमा करता है और विभिन्न इमामों को निलंबित करके एक ही इमाम का अनुयायी कर देता है और फूट को मध्य से उठा कर मुसलमानों में सामूहिक रूप पैदा कर देता है। यही विशिष्टता छठे हज़ार के अन्तिम भाग में है।

अर्थात् वह भी जन-समूह को चाहता है। इसीलिए लिखा है कि इस समय इस्म हादी का प्रतिबिम्ब ऐसे ज़ोर में होगा कि बहुत दूर पड़े पड़े हुए दिलों को भी ख़ुदा की ओर खींच लाएगा। और इसी की ओर इस आयत में संकेत है कि -

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا (अलकहफ़-100)

तो यह جمع का शब्द इसी रूहानी जुमाअ की ओर संकेत है। अत: आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए दो अवतरण निर्धारित थे। (1) एक अवतरण हिदायत के प्रचार की पूर्ति के लिए। (2) दूसरा अवतरण हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति के लिए और ये दोनों प्रकार की पूर्ति छठे दिन से सम्बद्ध थी ताकि ख़ातमुलअंबिया की समानता ख़ातमुलमख़्लूक़ात से सर्वांगपूर्ण तौर पर हो जाए। और ताकि सृष्टि का दायरा अपने पूर्ण बंधक होने को पहुंच जाए। अत: एक तो वह छठा दिन था जिसमें आयत

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (अलमाइदह-4)

और दूसरे वह छठा दिन है जिसके बारे में आयत

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ्फ-10)

में वादा था। अर्थात् छठे हज़ार का अन्तिम भाग। और इस्लाम में जो छठे दिन को ईद का दिन निर्धारित किया गया। अर्थात् जुमाअ को यह भी वास्तव में इसी की ओर संकेत है कि छठे दिन हिदायत की पूर्ति और हिदायत के प्रचार की पूर्ति का दिन है। इस समय के समस्त विरोधी मौलवियों को यह बात अवश्य मानना पड़ेगी कि चूंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अंबिया थे और आप की शरीअत समस्त संसार के लिए सामान्य थी और आप के बारे में फ़रमाया गया था -

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ (अलअहज़ाब-41)

और आप को यह उपाधि प्रदान हुई थी -

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُوْلُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (अलआराफ-159)

तो यद्यपि आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल में वे समस्त

विभिन्न हिदायतें जो हज़रत आदम से हज़रत ईसा तक थीं पवित्र क़ुर्आन में जमा की गईं परन्तु आयत का विषय قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا अलआराफ़-159) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में क्रियात्मक) तौर पर पूरा नहीं हो सका क्योंकि पूर्ण प्रकाशन इस पर निर्भर था कि समस्त विभिन्न देश अर्थात् एशिया, यूरोप, अफ़्रीका, अमरीका और दुनिया की आबादी के अन्तिम कोनों तक आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में ही क़ुर्आन की तब्लीग़ (प्रचार) हो जाती और यह उस समय असम्भव था अपितु उस समय तक तो दुनिया की कई आबादियों का अभी पता भी नहीं लगा था और बहुत दूर के सफरों के साधन ऐसे कठिन थे कि जैसे थे ही नहीं। अपितु यदि वे साठ वर्ष अलग कर दिए जाएं जो इस ख़ाकसार की आयु के हैं तो 1257 हिज्री तक भी प्रकाशन के पूर्ण साधन जैसे थे ही नहीं और इस युग तक अमरीका कुल और यूरोप का अधिकांश भाग क़ुर्आन की तब्लीग़ और उसके तर्कों से वंचित रहा हुआ था अपितु दूर-दूर देशों के कोनों में तो ऐसी बेखबरी थी कि जैसे वे लोग इस्लाम के नाम से भी अपरिचित थे। अत: उपरोक्त आयत में जो फ़रमाया गया था कि हे पृथ्वी के रहने वालो! मैं तुम सब की ओर रसूल हूं। क्रियात्मक तौर पर इस आयत के अनुसार समस्त संसार को इन दिनों से पहले कदापि तब्लीग़ नहीं हो सकी और न समझाने का अंतिम प्रयास पूर्ण हुआ क्योंकि प्रकाशन के साधन मौजूद नहीं थे और भाषाओं की अजनबियत बहुत बड़ी रोक थी दूसरे यह कि इस्लाम की वास्तविकता के तर्कों की जानकारी इस पर निर्भर थी कि इस्लामी हिदायतें ग़ैर भाषाओं में अनुवाद हों और या वे लोग स्वयं इस्लाम की भाषा से जानकारी पैदा करें। और यह दोनों बातें उस समय असंभव थीं। परन्तु यह आशा दिलाता था कि अभी ومن بلغ पवित्र क़ुर्आन का यह फ़रमाना कि और बहुत से लोग हैं कि अभी क़ुर्आन की तब्लीग़ उन तक नहीं पहुंची। ऐसी आयत

وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ (अलजुमअ:4)

इस बात को प्रकट कर रही थी कि यद्यपि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में हिदायत का भण्डार पूर्ण हो गया परन्तु अभी प्रकाशन अपूर्ण है। और इस आयत में जो منهم का शब्द है वह प्रकट कर रहा था कि

एक व्यक्ति इस युग में जो प्रकाशन की पूर्ति के लिए उचित है अवतरित होगा जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रंग में होगा और उसके दोस्त निष्कपट सहाबा के रंग में होंगे। तो इसमें किसी को पहलों और पिछलों में से कलाम नहीं कि इस्लामी समृद्धि के युग के दो भाग किए गए।★ (1) एक हिदायत की पूर्ति का युग जिस की ओर यह आयत संकेत करती है

يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अलबय्यिन:-3,4)

(2) दूसरे प्रकाशन की पूर्ति का युग जिसकी ओर आयत -

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ़-10)

संकेत कर रही है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जैसा कि यह कर्त्तव्य था कि खतमे नुबुव्वत के कारण हिदायत की पूर्ति करें ऐसा ही शरीअत के सामान्य होने के कारण यह भी कर्त्तव्य था कि समस्त संसार में प्रकाशन की पूर्ति भी करें। परन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में यद्यपि हिदायत की पूर्ति हो गई जैसा कि आयत -

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (अलमाइदह-4)

★**नोट:-** इस विभाजन को खूब स्मरण रखो कि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दो पद स्थापित करता है। (1) एक कामिल किताब को प्रस्तुत करने वाला जैसा कि फ़रमाया

يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अलबय्यिन:4)

(2) द्वितीय समस्त संसार में इस किताब को प्रकाशित करने वाला। जैसा कि फरमाता है-

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ़-10)

और हिदायत की पूर्ति के लिए ख़ुदा ने छठा दिन ग्रहण किया। इसलिए यह पहली अल्लाह की सुन्नत हमें समझाती है कि हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति का दिन भी छठा है। और वह छठा हज़ार है और उलेमा-ए-किराम की पूर्ति का दिन भी छठा ही है। और वह छठा हज़ार है और उलेमा-ए-किराम तथा समस्त मिल्लत के बुज़ुर्ग इस्लाम स्वीकार कर चुके हैं कि प्रकाशन की पूर्ति मसीह मौऊद के द्वारा होगी। और अब सिद्ध हुआ कि प्रकाशन की पूर्ति छठे हज़ार में होगी। इसलिए परिणाम यह निकला कि मसीह मौऊद छठे हज़ार में अवतरित हो। (इसी से)

और आयत-

(अलबय्यिन:-3,4) يَتۡلُوۡا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ؕ

इस पर गवाह है परन्तु उस समय हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति अंसभव थी और धर्म को अन्य भाषाओं तक पहुंचाने के लिए और फिर उसके तर्कों को समझाने के लिए और फिर उन लोगों की मुलाक़ात के लिए कोई उत्तम प्रबंध न था और समस्त देशों के संबंध एक दूसरे से ऐसे पृथक थे कि जैसे प्रत्येक क़ौम यही समझती थी कि उनके देश के अतिरिक्त कोई अन्य देश नहीं। जैसा कि हिन्दू भी सोचते हैं कि हिमालय पर्वत के पार और कोई आबादी नहीं और सफर के साधन भी सरल और आसान नहीं थे और जहाज़ का चलना भी केवल वायु की शर्त पर निर्भर था। इसलिए ख़ुदा तआला ने प्रकाशन की पूर्ति को एक ऐसे युग पर स्थगित कर दिया जिसमें क़ौमों के परस्पर संबंध पैदा हो गए और थल एवं जल के मिश्रिण ऐसे निकल आए जिन से बढ़कर सवारी की सुविधा संभव नहीं और प्रेस की प्रचुरता ने पुस्तकों को एक ऐसा माधुर्य की तरह बना दिया कि दुनिया के समस्त जमावड़े में वितरित हो सके। तो इस समय आयत के आशय के अनुसार

(अलजुमअ:4) وَّاٰخَرِيۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا يَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ

और इस आयत के अनुसार

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ اِلَيۡكُمۡ جَمِيۡعَا

(अलआराफ़-159)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूसरे अवतरण की आवश्यकता हुई और उन समस्त सेवकों ने जो रेल, अग्निबोट, प्रेस, डाक का उत्तम प्रबंध, परस्पर भाषाओं का ज्ञान और विशेष तौर पर हिन्द देश में उर्दू ने जो हिन्दुओं और मुसलमानों में एक भाषा साझी हो गई थी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में व्यवहारिक रूप से निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम समस्त सेवक उपस्थित हैं और प्रकाशन का कर्त्तव्य पूर्ण करने के लिए दिल-व-जान से तल्लीन हैं आप आइए और अपने इस कर्त्तव्य को पूरा कीजिए क्योंकि आप का दावा है कि समस्त लोगों के

लिए आया हूं और अब यह वह समय है कि आप उन समस्त क़ौमों को जो पृथ्वी पर रहती हैं क़ुर्आन की तब्लीग़ कर सकते हैं और हुज्जत को पूर्ण करने के लिए समस्त लोगों में क़ुर्आन की सच्चाई के तर्क फैला सकते हैं। तब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहानियत ने उत्तर दिया कि देखो मैं बुरूज के तौर पर आता हूं।★ परन्तु मैं हिन्द देश में आऊंगा, क्योंकि धर्मों का जोश और समस्त धर्मों का जमावड़ा और समस्त मिल्लतों का मुक़ाबला, अमन और आज़ादी इसी जगह है तथा आदम अलैहिस्सलाम इसी जगह उतरा था। अत: युग के दौर की समाप्ति के समय भी वह जो आदम के रंग में आता है इसे इसी देश में आना जाहिए ताकि अन्तिम और प्रथम का एक ही जगह जमावड़ा होकर दायरा पूरा हो जाए। और चूंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आयत **وآخرين منهم** के अनुसार दोबारा आना बुरूज़ के रूप के अतिरिक्त असंभव था। इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहानियत ने एक ऐसे व्यक्ति को अपने लिए चुना जो पैदायश, प्रकृति, हिम्मत और प्रजा की हमदर्दी में उसके समान था और मजाज़ी तौर पर अपना नाम अहमद और मुहम्मद उसको प्रदान किया ताकि यह समझा जाए कि जैसे उस का प्रकटन बिल्कुल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रकटन था परन्तु यह बात कि यह दूसरा अवतरण

★हाशिया :- चूंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दूसरा निर्धारित किया हुआ कर्त्तव्य जो हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति है आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में प्रकाशन के साधनों के अभाव के कारण असंभव था। इसलिए पवित्र क़ुर्आन की आयत

وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अलजुमअ:4)

में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वितीय आगमन का वादा दिया गया है। इस वादे की आवश्यकता इसी कारण से पैदा हुई ताकि दूसरा निर्धारित किया हुआ कर्त्तव्य आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अर्थात धर्म की हिदायत के प्रकाशन की पूर्ति जो आपके हाथ से पूर्ण होनी चाहिए थी उस समय साधनों के अभाव के कारण पूर्ण नहीं हुआ। अत: इस कर्त्तव्य को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने द्वितीय आगमन से जो बुरूज़ी रंग में था ऐसे युग में पूरा किया जबकि पृथ्वी की समस्त कौमों तक इस्लाम पहुँचाने के लिए साधन पैदा हो गए थे। (इसी से)

किस युग में चाहिए था? इसका उत्तर यह है कि चूंकि ख़ुदा तआला के कामों में अनुकूलता होती है और وضع الشیئی فی محلّہ उसकी आदत है। जैसा कि इस्म हकीम की मांग होना चाहिए और वह 'एक' होने के कारण एकता को पसन्द करता है। इसलिए उसने यही चाहा कि जैसा कि क़ुर्आन की हिदायत की पूर्ति आदम की सृष्टि की तरह छठे दिन की गई अर्थात् जुमा का बुरूज़ ऐसा ही प्रकाशन की पूर्ति का युग भी वही हो जो छठे दिन से समान हो। इसलिए उसने इस द्वितीय अवतरण के लिए छठे हज़ार को पसन्द किया और प्रकाशन के साधन भी इसी छठे हज़ार में विशाल किए गए और प्रत्येक प्रकाशन का मार्ग खोला गया प्रत्येक देश की ओर सफर आसान किए गए। जगह-जगह प्रेस जारी हो गए। डाकखानों की उत्तम व्यवस्था हो गई। अधिकतर लोग एक दूसरे की भाषा से भी परिचित हो गए और ये मामले पांचवे हज़ार में कदापि न थे अपितु उस साठ साल से पहले जो इस ख़ाकसार की पिछली आयु के दिन हैं देश इन समस्त प्रकाशन के साधनों से खाली पड़ा हुआ था और जो कुछ उन में से मौजूद था वह अपूर्ण, कम मात्रा और बहुत कम के आदेश में था।

ये वे सबूत हैं जो मेरे मसीह मौऊद और महदी माहूद होने पर खुले-खुले तौर पर बताते हैं और इसमें कुछ सन्देह नहीं कि एक व्यक्ति बशर्ते कि संयमी हो जिस समय इन समस्त तर्कों में विचार करेगा तो उस पर प्रकाशमान दिन की तरह खुल जाएगा कि मैं ख़ुदा की ओर से हूं। इन्साफ़ से देखो कि मेरे दावे के समय मेरी सच्चाई पर कितने गवाह जमा हैं।★(1) पृथ्वी पर वे खराबियां मौजूद

★**हाशिया :-** समस्त गवाहों में से एक यह भी ज़बरदस्त गवाह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के सबूत प्रत्येक पहलू से इस युग में पैदा हो गए हैं। यहां तक कि यह सबूत भी नितान्त सुदृढ़ और रोशन तर्कों से मिल गया कि आप की क़ब्र श्रीनगर कश्मीर के ख़ानयार मुहल्ले में है। याद रहे कि हमारे और हमारे विरोधियों के सच और झूठ को आज़माने के लिए हज़रत ईसा अलैहिस्सालम की मृत्यु जीवन है। यदि हज़रत ईसा वास्तव में ज़िन्दा हैं तो हमारे सब दावे झूठे और सब तर्क तुच्छ हैं और यदि वह वास्तव में पवित्र क़ुर्आन की दृष्टि से मृत्यु प्राप्त हैं तो हमारे विरोधी असत्य पर हैं। अब क़ुर्आन मध्य में है इसी को सोचो। (इसी से)

हैं जिन्होंने इस्लाम और मुसलमानों की लगभग जड़ उखाड़ दी है। इस्लाम की आन्तरिक हालत ऐसी कमज़ोर हो रही है कि पवित्र धर्म हज़ारों बिदअतों के नीचे दब गया है। बारह सौ वर्ष में तो इस्लाम के केवल तिहत्तर फ़िर्क़े हो गए थे परन्तु तेरहवीं सदी ने इस्लाम में वे बिदअतें और नए फ़िर्क़े पैदा किए जो बारह सौ वर्ष में पैदा नहीं हुए थे और इस्लाम पर बाह्य आक्रमण इतने ज़ोर-शोर से हो रहे हैं कि वे लोग जो केवल वर्तमान परिस्थितियों से परिणाम निकालते हैं और आकाशीय इरादों से अपरिचित हैं उन्होंने रायें व्यक्त कर दीं कि अब इस्लाम का अन्त है। ऐसा आलीशान धर्म जिस में एक व्यक्ति के मुर्तद होने से भी क़ौम में क़यामत का शोर मच जाता था, अब लाखों इन्सान धर्म से बाहर होते जाते हैं और सदी का सर जिस के बारे में यह ख़ुशख़बरी थी कि इसमें मौजूद खराबियों के सुधार के लिए कोई व्यक्ति उम्मत में से अवतरित होता रहेगा। अब खराबियां तो मौजूद हैं अपितु अत्यन्त उन्नति पर परन्तु हमारे विरोधियों के कथनानुसार ऐसा कोई व्यक्ति अवतरित नहीं हुआ जो इन खराबियों का सुधार करता जो ईमान को खाती जाती हैं। और सदी में से लगभग पांचवा भाग गुज़र भी गया जैसे ऐसी आवश्यकता के समय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी झूठी हो गई। हालांकि यही वह सदी थी जिस के सर पर ऐसा व्यक्ति अवतरित होना चाहिए था जो ईसाई आक्रमणों को रोकता और सलीब पर विजय पाता या दूसरे शब्दों में यों कहो कि मसीह मौऊद होकर आता और सलीब तोड़ता। तो ख़ुदा ने इस सदी पर पथ भ्रष्टता का यह तूफ़ान देखकर और इतनी रूहानी मौतों का अवलोकन करके क्या प्रबंध किया? क्या कोई व्यक्ति इस सदी के सर पर सलीबी खराबियों के तोड़ने के लिए पैदा हुआ? इस में क्या सन्देह है कि गुमराही (पथ भ्रष्टता) का केन्द्र हिन्दुस्तान था।★ क्योंकि

★**हाशिया :-** यदि कोई अपने घर की चारदीवारी से कुछ दिनों के लिए बाहर जाकर श्रेष्ठ मक्का और मदीना मुनव्वरा तथा शाम इत्यादि इस्लामी देशों की सैर करे तो वह इस बात की गवाही देगा कि आजकल जितने विभिन्न धर्मों का मज्मूआ हमारा देश हो रहा है और जितने प्रत्येक धर्म के लोग दिन-रात एक दूसरे पर आक्रमण कर रहे हैं उसका उदाहरण किसी देश में

इस देश में हज़ारों बिगड़े धर्म और हज़ारों घातक बिदअतें जिन का उदाहरण किसी देश में पैदा नहीं हुआ और आज़ादी ने जैसा कि बुराई के लिए मार्ग खोला ऐसा ही नेकी के लिए भी। परन्तु चूंकि बुराई के मवाद बहुत जमा हो रहे थे इसलिए सर्व प्रथम बुराई को ही आज़ादी ने शक्ति दी और पृथ्वी में इतना कांटा और गोखरू पैदा हुआ कि कदम रखने का स्थान न रहा। प्रत्येक बुद्धि जो साफ़ और पवित्र और रूहुल क़ुदुस से सहायता प्राप्त है वह समझ सकती है कि यही युग मसीह मौऊद के पैदा होने का था और यही सदी इस योग्य थी कि इसमें वह ईसा इब्ने मरयम अवतिरत होता जो वर्तमन युग की सलीब पर विजय पाता जो यहूदियों के हाथ में है जैसा कि पहले ईसा इब्ने मरयम ने उस सलीब पर विजय पाई थी जो यहूदियों के हाथ में थी। नबवी हदीसों में इसी विजय को कस्रे सलीब का नाम दिया गया है। सलीबी फित्न: जिस स्तर तक पहुंच चुका है वह एक ऐसा स्तर है कि ख़ुदा का स्वाभिमान नहीं चाहता कि इससे बढ़कर इस की उन्नति हो। इस पर यह तर्क पर्याप्त है कि जिस कमाल सैलाब तक इस समय यह फ़ित्न: मौजूद है और जिन नाना प्रकार के पहलुओं से इस फ़ित्ने ने इस्लाम धर्म पर आक्रमण किया है और जिस दिलेरी और घृष्टता के हाथ से जनाब नबवी के सम्मान पर इस फ़ित्ने ने हाथ डाला है और जिन पूर्ण यत्नों से इस्लाम के प्रकाश को बुझाने के लिए इस फ़ित्ने ने काम लिया है उसका उदाहरण युग के किसी इतिहास में मौजूद नहीं। और जिन फ़ित्नों से समय में बनी इस्राईल में नबी और रसूल आया करते थे या इस उम्मत में मुजद्दिद प्रकट होते थे वे समस्त फ़ित्ने इस फ़ित्ने के सामने कुछ भी चीज़ नहीं। और यह बात उन नितान्त स्पष्ट और महसूस बातों में से है जिन का इन्कार नहीं हो सकता। इस्लाम के झुठलाने और खण्डन में तेरहवीं सदी में बीस करोड़ के लगभग पुस्तकें और पत्रिकाएं लिखी जा चुकी हैं और प्रत्येक घर में ईसाइयत दाख़िल हो गई है। तो क्या इस सौ साल के आक्रमण

मौजूद नहीं। (इसी से)

के बाद ख़ुदा के एक आक्रमण का समय अब तक नहीं आया।★और यदि आ गया तो अब तुम आप ही बताओ कि सलीब पर विजय पाने के लिए या पुरानी परिभाषा के अनुसार सलीब (सलीब तोड़ने वाला) का क्या नाम रखा? क्या सलीब तोड़ने वाले का नाम मसीह मौऊद और ईसा इब्ने मरयम नहीं है? फिर क्योंकर संभव था कि इस सदी के सर पर मसीह मौऊद के अतिरिक्त कोई और मुजद्दिद आ सकता?⁕

★हाशिया :- इस आक्रमण से अभिप्राय यह नहीं है कि इस्लाम तलवार और बन्दूक से आक्रमण करे अपितु सच्ची हमदर्दी सबसे अधिक तेज़ हथियार है। ईसाइयत को तर्कों से पराजित करो परन्तु नेक नीयत और मानव जाति के प्रेम से। और इस समय ख़ुदा के स्वाभिमान की यह मांग नहीं है कि खूब बहाने और लड़ाइयों कि बुनियाद डाले अपितु ख़ुदा इस समय केवल यह चाहता है कि इन्सान की नस्ल पर दया करके अपने खुले-खुले निशानों के साथ और अपने शक्तिशाली तर्कों तथा अपनी क़ुदरत के प्रदर्शन के बाज़ू के ज़ोर से शिर्क और मख़्लूक परस्ती से उनको मुक्ति दे। (इसी से)

⁕ प्रत्येक सदी के सर पर मुजद्दिद तो आता है और इसमें एक हदीस मौजूद है परन्तु मसीह मौऊद के आने के लिए पवित्र क़ुर्आन बुलन्द आवाज़ से वादा कर रहा है। सूरह फ़ातिहा की यह दुआ कि ख़ुदा से दुआ करो कि ख़ुदा तुम्हें उस समय के फ़ित्ने से बचाए जब ख़ुदा के मसीह मौऊद को काफ़िर कहा जाएगा और पृथ्वी पर ईसाइयत का प्रभुत्व होगा साफ शब्दों में इस मौऊद की खबर देती है। ऐसा ही आयत -

(अलहिज्र-10) اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ

साफ बता रही है कि जब एक क़ौम पैदा होगी जो इस ज़िक्र को दुनिया से मिटाना चाहेगी तो उस समय ख़ुदा आकाश से अपने किसी भेजे हुए के द्वारा उसकी रक्षा करेगा। (इसी से)

पुस्तक की समाप्ति

इस समाप्ति में हम दर्शकों को ध्यान दिलाने के लिए यह वर्णन करना चाहते हैं कि पवित्र क़ुर्आन और ख़ुदा तआला की पहली किताबों की दृष्टि से बड़ी स्पष्टतापूर्वक प्रकट होता है कि जब संसार में तीन प्रकार की सृष्टि प्रकट हो जाए तो समझो कि मसीह मौऊद आ गया या दरवाज़े पर है।

(1) मसीहुद्दज्जाल जिसका अनुवाद है कि इब्लीस (शैतान) का ख़लीफ़ा। क्योंकि दज्जाल इब्लीस के नामों में से एक नाम है जिसके मायने हैं कि सच को छुपाने वाला तथा झूठ को शोभा और चमक देने वाला और तबाही के मार्गों को खोलने वाला और जीव न के मार्गों पर पर्दा डालने वाला और यही सब से बड़ा अभीष्ट शैतान है इसलिए यह नाम उस का महानतम नाम है और इसके मुकाबले पर मसीहुल्लाह अलहय्य अलक़य्यूम (जीवित और हमेशा क़ायम रहने वाले ख़ुदा का मसीह) जिसका अनुवाद है जीवित और हमेशा क़ायम रहने वाले ख़ुदा का ख़लीफ़ा <u>हय्यो-क़य्यूम अल्लाह</u> पूर्ण सहमति के साथ ख़ुदा का महानतम नाम है जिसके मायने हैं रूहानी (आध्यात्मिक) और शारीरिक तौर पर जीवित करने वाला और दोनों प्रकार के जीवन का स्थायी सहारा, स्वयं से कायम (स्थापित) और सब को अपने व्यक्तिगत आकर्षण से क़ायम रखने वाला तथा अल्लाह जिस का अनुवाद है। वह उपास्य (माबूद) अर्थात् वह हस्ती जो समझ में न आने वाली बुद्धि से ऊपर, दूर से दूर और सूक्ष्म से सूक्ष्म है। जिसकी ओर हर एक चीज़ उपासना के रंग अर्थात् प्रेम में तल्लीनता की अवस्था में जो अवास्तविक फ़ना है या वास्तविक फ़ना की अवस्था में जो मौत है लौट रही है। जैसा कि प्रकट है कि सम्पूर्ण व्यवस्था अपने गुणों को नहीं छोड़ती जैसे एक आज्ञा की पाबंद है। इस विवरण से स्पष्ट है कि जो ख़ुदा तआला का महानतम नाम है अर्थात् 'अल्लाह अल हय्युल क़य्यूम' उसके मुकाबले पर शैतान का महानतम नाम अद्दज्जाल है

और ख़ुदा तआला ने चाहा कि अन्तिम युग में उसके महानतम नाम और शैतान के महानतम नाम की एक नौका हो। जैसा कि पहले भी आदम की पैदायश के समय में एक नौका (नाव) हुई है। अत: जैसा कि एक युग में ख़ुदा ने शैतान को अय्यूब पर नियुक्त कर दिया था, ऐसा ही उसने इस नौका के समय इस्लाम पर शैतान को नियुक्त किया और उसे अनुमति दे दी कि अब तू अपने समस्त सवारों और पैदल सेना के साथ निस्सन्देह इस्लाम पर आक्रमण कर। तब शैतान★ ने

★हाशिया :- यह जांच-पड़ताल की हुई बात है और यही हमारा मत है कि वास्तव में दज्जाल शैतान का इस्मे आज़म (महानतम नाम) है जो ख़ुदा तआला के इस्म आज़म के मुकाबले पर है कि अल्लाह अलहय्युलक़य्यूम है। इस अनुसंधान (जांच) से स्पष्ट है न वास्तविक तौर से यहूदियों को दज्जाल कह सकते हैं, न ईसाइयों के पादरियों को और न किसी अन्य क़ौम को। क्योंकि ये सब ख़ुदा के असहाय बन्दे हैं। ख़ुदा ने अपने मुकाबले पर उन्हें कुछ अधिकार नहीं दिया। इसलिए किसी प्रकार से उनका नाम दज्जाल नहीं हो सकता। हां शैतान के इस नाम के लिए द्योतक हैं कि जब से संसार आरंभ हुआ है उस समय से वे द्योतक भी चले आते हैं। पहला द्योतक क़ाबील था जो हज़रत आदम का पहला बेटा था, जिसने अपने भाई हाबील की प्रतिष्ठा पर ईर्ष्या की, और उस ईर्ष्या के दण्ड से एक निर्दोष के खून से अपना दामन गन्दा कर लिया। और अन्तिम द्योतक शैतान के नाम दज्जाल का जो सर्वांगपूर्ण द्योतक और खातमुल मज़ाहिर है वह क़ौम है जिसका क़ुर्आन के आरंभ में भी वर्णन है तथा अन्त में भी अर्थात् वह ज़ाल्लीन (पथभ्रष्टों) का फ़िर्क़ा (समुदाय) जिसके वर्णन पर सूरह फ़ातिहा समाप्त होती है।✶ और फिर पवित्र क़ुर्आन की अन्तिम तीन सूरतों में भी

✶हाशिए का हाशिया - ज़ाल्लीन से अभिप्राय केवल पथ भ्रष्ट (गुमराह) नहीं अपितु वे ईसाई अभिप्राय हैं जो प्रेम की अधिकता के कारण मसीह की शान में अतिशयोक्ति करते हैं, क्योंकि ज़लालत के ये भी अर्थ हैं कि प्रेम की अधिकता से एक व्यक्ति को ऐसा अपनाया जाए कि दूसरे का सम्मानपूर्वक नाम सुनने को भी सहन न कर सके। जैसा कि इस आयत में भी यही अर्थ अभिप्राय है कि اِنَّكَ لَفِىْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ (यूसुफ - 96) और مغضوب عَلَيْهِمْ (अलफ़ातिहा - 7) से वे यहूदी उलेमा अभिप्राय हैं जिन्होंने दुश्मनी के कारण हज़रत ईसा के संबंध में यह भी उचित न समझा कि उनको मोमिन ठहराया जाए अपितु काफ़िर कहा और क़त्ल करने योग्य ठहराया और मग़ज़ूब अलैहि वह अत्यन्त प्रकोपित व्यक्ति होता है जिस के प्रकोप की अतिशयता पर दूसरे को प्रकोप आए। और ये दोनों शब्द परस्पर आमने-सामने हैं। अर्थात् ज़ाल्लीन (ضَآلِّين) वे है जिन्होंने प्रेम की अधिकता से हज़रत ईसा को ख़ुदा बनाया

जैसा कि उसकी आदत है एक क़ौम को अपना द्योतक (मज़्हर) बनाया, और

शेष हाशिया - इस का वर्णन है। अर्थात् सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़, सूरह फ़लक़ और सूरह अन्निसा में। अन्तर केवल यह है कि सूरह इख़्लास में तो उस क़ौम की आस्थागत स्थिति का वर्णन है जैसा कि फ़रमाया –

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اَللّٰهُ الصَّمَدُ لَمْ یَلِدْ ۙ وَ لَمْ یُوْلَدْ وَ لَمْ یَکُنْ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ

(अल इख़्लास -2 से 5)

अर्थात् ख़ुदा एक है और अहद है (एकमात्र है) अर्थात् उस में कोई तरकीब (मिश्रण) नहीं, न कोई उसका बेटा और न वह किसी का बेटा और न कोई उस के बराबर है। अत: इस सूरह में तो क़ौम की आस्थाएं बताई गईं। फिर इसके बाद सूरह फ़लक़ में यह संकेत किया गया कि यह क़ौम इस्लाम के लिए खतरनाक है और इसके द्वारा अन्तिम युग में घोर अंधकार फैलेगा। और उस युग में इस्लाम को एक बड़े उपद्रव का सामना होगा तथा ये लोग कठिन बातों और धार्मिक बारीकियों में गांठ पर गांठ देकर धोखेबाज़ स्त्रियों की भांति लोगों को धोखा देंगे। और यह सम्पूर्ण कारोबार केवल ईर्ष्या के कारण होगा, जैसा कि काबील का कारोबार ईर्ष्या के कारण था। अन्तर केवल यह है कि क़ाबील ने अपने भाई का ख़ून पृथ्वी पर गिराया, परन्तु ये लोग ईर्ष्या के जोश के कारण सच्चाई का ख़ून करेंगे। अत: सूरह क़ुल हुवल्लाहो अहद में इन लोगों की आस्थाओं का वर्णन है और सूरह फ़लक़ में उन लोगों के उन कर्मों की व्याख़्या है जो शक्ति और बल के समय उन से प्रकट होंगे। इसलिए दोनों सूरतों को सामने रखने से साफ समझ आता है कि पहली सूरह अर्थात् सूरह इख़्लास में ईसाइयों की क़ौम की आस्थागत अवस्थाओं का वर्णन है और दूसरी सूरह में क्रियात्मक अवस्थाओं की चर्चा है, तथा घोर अंधकार से अन्तिम युग की ओर संकेत है। जबकि ये लोग उस रूह के पूर्णरूपेण द्योतक होंगे जो ख़ुदा की ओर से गुमराह हैं और इन दोनों रुपों के परस्पर सामने लिखने से शीघ्रतर इन सूक्ष्म संकेतों का ज्ञान हो सकता है। उदाहरणतया मुकाबले पर रख कर यों पढ़ो -

हाशिए का हाशिया - और المغضوب علیھم वे यहूदी हैं जिन्होंने ख़ुदा के मसीह को शत्रुता की अधिकता से काफ़िर ठहराया। इसलिए मुसलमानों को सूरह फ़ातिहा में डराया गया और संकेत किया गया कि तुम्हें इन दोनों परीक्षाओं का सामना करना पड़ेगा। मसीह मौऊद आएगा और पहले मसीह के समान उसे भी काफ़िर कहा जाएगा और ज़ाल्लीन अर्थात् ईसाइयों का प्रभुत्व भी चरम सीमा को पहुंच जाएगा। जो हज़रत ईसा को ख़ुदा कहते हैं तुम स्वयं को इन दोनों फ़ित्नों (उपद्रवों) से बचाओ और बचने के लिए नमाज़ों में दुआएं करते रहो। (इसी से)

इस्लाम पर एक ज़ोरदार आक्रमण किया और ख़ुदा ने अपने इस्म आज़म का

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (अलफ़लक – 2)

कहा कि मैं शरण मांगता हूं उस रब्ब की जिसने सम्पूर्ण सृष्टि पैदा की इस प्रकार से कि एक को फाड़कर उसमें से दूसरा पैदा किया अर्थात् कुछ को कुछ का मुहताज बनाया और जो अंधकार के बाद सुबह को पैदा करने वाला है।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (अलफ़लक – 3)

हम ख़ुदा की शरण मांगते हैं ऐसी सृष्टि के उपद्रव से जो समस्त उपद्रव करने वालों से उपद्रव में बढ़ी हुई है और उपद्रवों में उसका उदाहरण दुनिया के आरंभ से अन्त तक और कोई नहीं। जिनकी आस्था सच बात لَمْ يَلِدْ ولَمْ يو لَدْ के विरुद्ध है अर्थात् वे ख़ुदा के लिए एक बेटा बनाते हैं।

وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ (अलफ़लक – 4 से 6)

और हम शरण मांगते हैं ख़ुदा तआला की, उस युग से जब तस्लीस और शिर्क का अंधकार सम्पूर्ण संसार पर फैल जाएगा तथा उन लोगों के उपद्रव से जो फूंकें मार कर गांठें देंगे अर्थात् धोखा देने में जादू का काम दिखांएगे और सीधे मार्ग की पहचान

शेष हाशिया -

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ (अल इख़्लास -2 से 3)

कह वह वास्तविक माबूद (उपास्य) जिसकी ओर सब चीज़ें पूर्ण बन्दगी की फ़ना के बाद या प्रकोपी फ़ना (नश्वरता) के बाद लौटती हैं एक शेष सब सृष्टि फ़ना के दो प्रकार में से किसी फ़ना के अधीन है और सब चीज़ें उसकी मुहताज हैं वह किसी का मुहताज नहीं।

لَمْ يَلِدْ وَ لَمْ يُوْلَدْ (अल इख़्लास -4)

वह ऐसा है कि न तो उसका कोई बेटा है और न वह किसी का बेटा है।

وَ لَمْ يُوْلَدْ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

(अल इख़्लास - 5)

और अनादिकाल से उसका कोई सदृश समतुल्य नही अर्थात् वह अपने अस्तित्व में सहश और समतुल्य से पवित्र एवं शुद्ध है।

एक व्यक्ति को द्योतक बनाया और उसको एक फ़ना (नश्वरता) की अवस्था

शेष हाशिया - को कठिनाइयों में डाल देंगे। तथा उस बड़े ईर्ष्यालु की ईर्ष्या से शरण मांगता हूँ जबकि वह गिरोह सर्वथा ईर्ष्या के कारण सच को छुपाएगा। ये समस्त संकेत ईसाई पादरियों की ओर हैं कि एक युग आने वाला है कि जब वे संसार में उपद्रव फैलाएंगे और संसार को अंधकार धोखा जादू के समान होगा और वे कट्टर ईर्ष्यालु होंगे तथा इस्लाम को ईर्ष्या से देखेंगे तथा शब्द रब्बिल फ़लक़ इस ओर संकेत करता है कि उस अंधकार के बाद फिर सुबह का युग भी आएगा। जो मसीह मौऊद का युग है।

इस मुकाबले से जो सूरह इख़्लास से सूरह फ़लक़ का किया गया। स्पष्ट है कि इन दोनों सूरतों में एक ही फ़िर्के का वर्णन है। उत्तर केवल यह है कि सूरह इख़्लास में उस फ़िर्के की आस्थागत स्थिति का वर्णन है और सूरह फ़लक़ में इस फ़िर्के की क्रियात्मक स्थिति का वर्णन है, तथा इस फ़िर्के का नाम सूरह फ़लक़ में شرّ ما خلق रखा गया है अर्थात् 'शर्रुल बरिय्य:' है। क्योंकि आदम के समय से अन्त तक शर (बुराई) में उसके बराबर कोई नहीं। फिर इन दोनों सूरतों के बाद सूरह अन्नास है। और वह यह है-

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ مَلِكِ النَّاسِ اِلٰهِ النَّاسِ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ (अन्नास - 2 से 7)

अर्थात् वह जो मनुष्यों का प्रतिपालक और मनुष्यों का बादशाह और मनुष्यों का ख़ुदा है। मैं दुविधा में डालने वाले ख़न्नास की दुविधाओं से उसकी पनाह (शरण) मांगता हूं। वह खन्नास जो मनुष्यों के दिलों में दुविधा डालता है जो जिन्नों और आदमियों में से है।

इस आयत में यह संकेत है कि उस खन्नास के दुविधा में डालने का वह युग होगा कि जब इस्लाम के लिए न कोई अभिभावक और ख़ुदाई विद्वान पृथ्वी पर मौजूद होगा और न इस्लाम में कोई धर्म का सहायक बादशाह होगा। तब मुसलमानों के लिए प्रत्येक अवसर पर ख़ुदा वही अभिभावक (मुरब्बी) वही बादशाह और बस! अत: स्पष्ट हो कि ख़न्नास शैतान

देकर अपनी ओर लौटाया ताकि वास्तविक इबादत के रंग में अलमाबूद (उपास्य)

शेष हाशिया - के नामों में से एक नाम है। अर्थात् जब शैतान सांप के चरित्र पर क़दम मारता (चलता) है और खुले-खुले बलात् एवं जब्र से काम नहीं लेता तथा सर्वथा छल-प्रपंच और दुविधा में डालने से काम लेता है और अपने डंक मारने के लिए अत्यन्त गुप्त मार्ग अपनाता है, तब उसे ख़न्नास कहते हैं। इब्रानी में उस का नाम नह्हाश है। अत: तौरात के आरंभ में लिखा है कि नह्हाश ने हव्वा को बहकाया और हव्वा ने उसके बहकाने से फल खाया जिसके खाने से मना किया गया था।⁕ तब आदम ने भी खाया। अत: इस सूरह 'अन्नास' से स्पष्ट होता है

⁕**हाशिए का हाशिया -** याद रहे कि यह हव्वा का गुनाह था कि सीधे तौर पर शैतान की बात को माना और ख़ुदा के आदेश को तोड़ा। और सच तो यह है कि हव्वा का न एक गुनाह बल्कि चार गुनाह थे-

(1) एक यह कि ख़ुदा के आदेश का अनादर किया और उसे झूठा समझा।

(2) दूसरा यह कि ख़ुदा के दुश्मन और अनश्वर.......... लानत के पात्र और झूठ के पुतले शैतान को सच्चा समझ लिया।

(3) तीसरा यह कि उस अवज्ञा (नाफ़रमानी) को केवल आस्था तक सीमित न रखा बल्कि ख़ुदा के आदेश को तोड़ कर क्रियात्मक तौर पर गुनाह किया।

(4) चौथा यह कि हव्वा ने न केवल स्वयं ही ख़ुदा का आदेश तोड़ा बल्कि शैतान का क़ायम मक़ाम (स्थापन्न) बन कर आदम को भी धोखा दिया। तब आदम ने केवल हव्वा के धोखा देने से वह फल खाया जिस से मना किया गया था। इसी कारण ख़ुदा के नज़दीक अत्यन्त गुनाहगार (पापी) ठहरी, परन्तु आदम असमर्थ समझा गया। केवल एक हल्की ग़लती जैसा कि पवित्र आयत – وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا (ताहा – 116) से स्पष्ट है। अर्थात् अल्लाह इस आयत में फ़रमाता है कि आदम ने जानबूझ कर मेरे आदेश को नहीं तोड़ा बल्कि उसको ऐसा विचार आया कि हव्वा ने जो यह फल खाया और मुझे दिया, शायद उसे ख़ुदा की अनुमति हो गई कि उसने ऐसा किया। यही कारण है कि ख़ुदा ने अपनी किताब में हव्वा का बरी होना व्यक्त नहीं किया, परन्तु आदम का बरी होना व्यक्त किया। अर्थात् उसके बारे में لم نجد له عزما फ़रमाया और हव्वा को कठोर दण्ड दिया। पुरुष का पराधीन (महकूम) बनाया और उसका पराश्रय (दूसरे के सहारे जीवन व्यतीत करने वाला) कर दिया और गर्भ का कष्ट और बच्चा जनने का दु:ख उसको लगा दिया। आदम चूंकि ख़ुदा के रूप पर बनाया गया था, इसलिए शैतान उसके सामने न आ सका। इसी कारण से यह बात निकलती है कि जिस व्यक्ति की पैदायश में नर का भाग नहीं वह कमज़ोर है और तौरात के अनुसार उसके बारे में कहना कठिन है कि वह ख़ुदा के रूप (शक्ल) पर या ख़ुदा के

के साथ उसका संबंध हो और उसका नाम अहमद रखा। क्योंकि सर्वोत्तम और उच्चतम प्रकार इबादत का हम्द (स्तुति) है जो स्रष्टा की विशेषताओं की पूर्ण पहचान को चाहती है पूर्ण पहचान के बिना पूर्ण हम्द हो ही नहीं सकती और ख़ुदा तआला के महामिद (कीर्तिया) दो प्रकार के हैं- (1) एक वे जो उसके व्यक्तिगत उच्चता, बुलन्दी और क़ुदरत तथा पूर्ण शुद्धता के बारे में हैं। (2) दूसरे वे जिन भौतिक एवं आन्तरिक नेमतों का सृष्टि पर प्रभाव प्रकट है और जिसे आसमान से अहमद का नाम प्रदान किया जाता है। प्रथम उस पर रहमानियत नाम की मांग से निरन्तरता से भौतिक एवं आन्तरिक नेमतों का होना होता है।

शेष हाशिया - कि अन्तिम युग में यही नह्हाश फिर प्रकट होगा। इसी नह्हाश का दूसरा नाम दज्जाल है। यही था जो आज से छ: हज़ार वर्ष पहले हज़रत आदम के ठोकर खाने का कारण हुआ था, और उस समय यह अपने उस छल में सफल हो गया था और आदम पराजित हो गया था। किन्तु ख़ुदा ने चाहा कि इसी प्रकार छठे दिन के अन्तिम भाग में आदम को फिर पैदा करके अर्थात् छठे हज़ार के अन्त में जैसा कि पहले वह छठे दिन में पैदा हुआ था नह्हाश के मुकाबले पर उसे खड़ा करे। और इस बार नह्हाश पराजित हो तथा आदम विजयी। अत: ख़ुदा ने आदम के समान इस ख़ाकसार को पैदा किया और इस ख़ाकसार का नाम आदम रखा, जैसा कि बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम है कि

ارد ت ان استخلف فخلقت اٰدم और यह इल्हाम

خلق اٰدم فا کر مه और यह इल्हाम

يا اٰدم اسكن انت وزوجك الجنَّة

तथा आदम के बारे में तौरात के पहले अध्याय में यह आयत है – तब ख़ुदा ने कहा कि हम मनुष्य को अपने रूप और अपने समान बना दें। देखो तौरात अध्याय 1/26, और फिर किताब दानीएल अध्याय – 12 में लिखा है- और उस समय मीकाईल (जिसका अनुवाद है ख़ुदा के समान) वह बड़ा सरदार जो तेरी क़ौम के पुत्रों की सहायता के लिए खड़ा है उठेगा (अर्थात् मसीह मौऊद अन्तिम युग में प्रकट होगा) अत: मीकाईल अर्थात् ख़ुदा के समान वास्तव में तौरात में आदम का नाम है और हदीस-ए-नबवी में भी इसी की ओर संकेत है कि ख़ुदा ने आदम को अपनी शक्ल पर पैदा किया। अत: इस से ज्ञात हुआ

शेष हाशिए का हाशिया - समान पैदा किया गया। हां आदम भी अवश्य मृत्यु पा गया, परन्तु यह मृत्यु गुनाह से पैदा नहीं हुई बल्कि मरना प्रारंभ से मानवीय बनावट की विशेषता थी। यदि गुनाह न करता तब भी मरता। (इसी से)

फिर इस कारण से कि जो उपकार उपकारी के प्रेम का कारण है उस व्यक्ति के दिल में उस वास्तविक उपकारी का प्रेम उत्पन्न हो जाता है और फिर वह प्रेम पोषण एवं विकास पाते-पाते व्यक्ति प्रेम की श्रेणी तक पहुंच जाता है। और फिर व्यक्तिगत प्रेम से सानिध्य होता है और फिर सानिध्य (क़ुर्ब) से महा तेजस्वीनाम वाले स्रष्टा की समस्त प्रतापी एवं सौन्दर्य संबंधी विशेषताओं का प्रकटन हो जाता है। अत: जिस प्रकार अल्लाह का नाम सर्वांगपूर्ण विशेषताओं का संग्रहीता है। इसी प्रकार अहमद का नाम समस्त मआरिफ़ (आध्यात्म ज्ञानों) का संग्रहीता बन जाता है और जिस प्रकार अल्लाह का नाम अल्लाह तआला के लिए इस्म-ए-आज़म है, इसी प्रकार अहमद का नाम मानव जाति में से उस इन्सान का इस्म-ए-आज़म है जिसको आसमान पर यह नाम प्रदान हो और इस से बढ़कर इन्सान के लिए और कोई नाम नहीं। क्योंकि यह ख़ुदा का पूर्ण मारिफ़त तथा ख़ुदा के पूर्ण वरदानों का द्योतक हैं। और जब ख़ुदा तआला की ओर से पृथ्वी पर एक महान ज्योति होती है और वह अपनी पूर्ण विशेषताओं के गुप्त ख़ज़ाने को प्रकट करना चाहता है तो पृथ्वी पर एक इन्सान का प्रकटन

शेष हाशिया - कि मसीह मौऊद आदम के रूप पर प्रकट होगा। इसी कारण से छठे दिन के स्थान पर है। अर्थात् जैसा कि छठे दिन के अन्तिम भाग में आदम पैदा हुआ, उसी प्रकार छठे हज़ार के अन्तिम भाग में मसीह मौऊद का पैदा होना निश्चित किया गया, और जैसा कि आदम नह्हाश के साथ परखा गया जिसको अरबी में ख़न्नास कहते हैं जिसका दूसरा नाम दज्जाल है ऐसा ही इस अन्तिम आदम के मुकाबले पर नह्हाश पैदा किया गया ताकि वह ज़नाना स्वभाव रखने वाले लोगों को अनश्वर जीवन का लोभ दे, जैसा कि हव्वा को उस सांप ने दिया था जिसका नाम तौरात में नह्हाश और क़ुर्आन में ख़न्नास है। परन्तु इस बार प्रारब्ध किया गया कि यह आदम उस नह्हाश पर विजयी होगा। अत: अब छ: हज़ार वर्ष के अन्त पर आदम और नह्हाश का फिर मुक़ाबला आ पड़ा है और अब वह पुराना सांप काटने की शक्ति नहीं पाएगा। जैसा कि पहले उसने हव्वा को काटा और फिर आदम ने उस ज़हर से भाग लिया, अपितु वह समय आता है कि उस सांप से बच्चे खेलेंगे और वह हानि पहुंचाने पर समर्थ नहीं होगा। पवित्र क़ुर्आन में यह सूक्ष्म संकेत है कि उसने सूरह फ़ातिहा को اَلضَّآلِّیۡن पर समाप्त किया और क़ुर्आन को ख़न्नास पर। ताकि बुद्धिमान मनुष्य समझ सके कि वास्तविकता और रूहानियत (आध्यात्मिकता) में ये दोनों नाम एक ही हैं। (इसी से।)

होता है जिसको आसमान पर अहमद नाम से पुकारते हैं। अतः चूंकि अहमद का नाम ख़ुदा तआला के इस्म-आज़म का पूर्ण प्रतिबिम्ब (ज़िल्ल) है। इसलिए अहमद के नाम को हमेशा शैतान के मुकाबले पर विजय होती है और ऐसा ही अन्तिम युग के लिए निश्चित था कि एक ओर शैतानी शक्तियों का पूर्ण स्तर पर प्रकटन और बुरूज़ हो और पृथ्वी पर शैतान का इस्म-आज़म प्रकट हो और फिर उसके मुकाबले पर वह नाम प्रकट हो जो ख़ुदा तआला के इस्म आज़म का प्रतिबिम्ब है। अर्थात् अहमद और उस अन्तिम नौका के इतिहास छठे हज़ार का अन्तिम भाग निर्धारित किया गया। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में इस बात की व्याख्या की गई है कि प्रत्येक वस्तु को ख़ुदा ने छः दिन के अन्दर पैदा किया, परन्तु उस इन्सान को जिस पर सृष्टि का दायरा समाप्त होता था छठे दिन के अन्तिम भाग में पैदा किया। इसी प्रकार उस अन्तिम इन्सान के लिए छठे हज़ार का अन्तिम भाग प्रस्तावित किया गया और वह उस समय पैदा हुआ जब कि चन्द्रमा के हिसाब के अनुसार छठे हज़ार के पूर्ण होने में केवल कुछ वर्ष ही शेष रहते थे और उसकी वह प्रौढ़ता जो रसूलों के लिए निर्धारित की गई है। अर्थात् चालीस वर्ष उस समय हुए जबकि चौदहवीं सदी का सर आ गया और उस अन्तिम ख़लीफ़ा के लिए यह आवश्यक था कि छठे हज़ार के अन्तिम भाग में आदम के समान पैदा हो और चालीसवें वर्ष में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भांति अवतरित हो तथा सदी का सर (आरंभ) हो। ये तीन शर्तें ऐसी हैं कि इसमें झूठा और झूठ गढ़ने वाले का हस्तक्षेप असंभव है। फिर उनके साथ चौथी बात रमज़ान में चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण का होना है जिसे मसीह मौऊद की निशानी ठहराया गया है।

दूसरे प्रकार की सृष्टि (मख़्लूक़) जो मसीह मौऊद की निशानी है याजूज माजूज का प्रकट होना है। तौरात में पश्चिमी देशों की कुछ क़ौमों को याजूज माजूज कहा है और उनका युग मसीह मौऊद का युग बताया गया है। पवित्र क़ुर्आन ने उस क़ौम के लिए एक निशानी यह लिखी है कि

مِنۡ كُلِّ حَدَبٍ يَّنۡسِلُوۡنَ (अल अंबिया – 97)

अर्थात् उनको प्रत्येक ज़मीनी श्रेष्ठता प्राप्त हो जाएगी तथा प्रत्येक क़ौम पर वे विजयी हो जाएंगे। दूसरे इस निशानी की ओर संकेत किया है कि वे आग के कार्यों में पारंगत होंगे अर्थात् आग के माध्यम से उनके युद्ध होंगे और आग के माध्यम से उनके इंजन चलेंगे और आग से काम लेने में बड़ी निपुणता (महारत) रखेंगे। इसी कारण से उनका नाम याजूज माजूज है। क्योंकि अजीज आग के शोले को कहते है और शैतान के अस्तित्व की बनावट भी आग से है। जैसा कि आयत

(अलआराफ़ – 13) خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّار

से स्पष्ट है। इसलिए क़ौम याजूज माजूज से उसको एक स्वभाविक समानता है इसी कारण से यही क़ौम उसके इस्म आज़म की आभा के लिए तथा उसका पूर्ण द्योतक बनने के लिए उचित है। परन्तु ख़ुदा के इस्म आज़म की महान आया जिस का पूर्ण द्योतक नाम अहमद है, जैसा कि अभी वर्णन किया जा चुका है ऐसे अस्तित्व को चाहती थी जो लड़ाई और रक्तपात का नाम न ले तथा शान्ति, प्रेम एवं सुलह को संसार में फैलाए। ऐसा ही बृहस्पति नक्षण के प्रभाव की भी यही मांग थी कि रक्तपात के लिए तलवार न पकड़ी जाए। ऐसा ही छठे हज़ार का अन्तिम भाग जो अपने अन्दर जमाअत (समुदाय) का अर्थ रखता है और समस्त (आपसी) फूटों तथा हानियों के मध्य से हटा कर उस सृष्टि के समूह को उनके इमाम सहित दिखाता है जो पहले उदाहरण की दृष्टि से जो पूर्ण रूप से शान्ति और मैत्री से भरा हुआ है यही चाहता था कि फूट और विरोध अपनी आवश्यक सामग्री के साथ जो युद्ध और लड़ाई है मध्य से समाप्त हो जाए जैसा कि ख़ुदा की किताब प्रकट करती है कि ख़ुदा ने पृथ्वी और आकाश को छ: दिन में पैदा करके और छठे दिन★ आदम को

★हाशिया :- निम्नलिखित आयतों से प्रकट होता है कि आदम छठे दिन पैदा हुआ, और वे आयतें ये हैं

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَ لَکُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰۤی اِلَی السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَ هُوَ بِکُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۔ وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِکَةِ اِنِّیْ

अस्तित्व का लिबास पहना कर संसार की व्यवस्था को परस्पर जोड़ दिया और आदम को बृहस्पति नक्षण के महान प्रभाव के अधीन पैदा किया ताकि संसार अमन और मैत्री को लाए तीसरा प्रकार सृष्टि का जो मसीह मौऊद की निशानी

शेष हाशिया -

جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَ يَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (अक बक़रह- 30, 31)

अर्थात् ख़ुदा तआला ने जो कुछ पृथ्वी में है सब पैदा करके और आसमान को भी सात तहें बना कर अन्तत: इस कायनात की पैदायश से पूर्णतया निवृत हो कर फिर चाहा कि आदम को पैदा करे। अत: उसने उसे छठे दिन अर्थात् जुमे (शुक्रवार) के अन्तिम भाग में पैदा किया। क्योंकि जो वस्तुएं क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों के अनुसार छठे दिन में पैदा हुई थीं आदम उन सब के बाद में पैदा किया गया और इस पर तर्क यह है कि सूरह हाम्मीम अस्सज्दह (पारा-24) में इस बात की व्याख्या है कि ख़ुदा ने जुमेरात और जुमे के दिन (वीरवार-शुक्रवार) सात आसमान बनाए और प्रत्येक आसमान के निवासी को जो उस आसमान में रहता था उस आसमान के संबंध में जो आदेश था वह उसको समझा दिया और निचले आसमान को सितारों के चिरागों से सजाया तथा उन सितारों को इसलिए पैदा किया कि संसार की सुरक्षा की बहुत सी बातें उन पर निर्भर थीं। ये अनुमान उस ख़ुदा के निर्धारित किए हुए हैं जो ज़बरदस्त और प्रवीण है। जिन आयतों का यह अनुवाद हमने लिखा है वे ये हैं-

فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَ اَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَ حِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ (सूरह हाम्मीम अस्सज्दह – 13)

इन आयतों से ज्ञात हुआ कि आसमानों को सात बनाना और उन के मध्य के मामलों की व्यवस्था करना ये समस्त शेष मामले शेष रहे दो दिनों में किए गए अर्थात् जुमेरात और जुमाअ में। और पहली आयतें जिनका अभी हम उल्लेख कर चुके हैं, उन से सिद्ध होता है कि आदम का पैदा करना आसमान की सात परतें बनाने के बाद और प्रत्येक ज़मीनी आसमानी व्यवस्था के बाद। अत: सम्पूर्ण क़ायनात की तैयारी के बाद प्रकटन में आया, और चूंकि यह समस्त कारोबार जुमेरात को समाप्त नहीं हुआ बल्कि उसने कुछ भाग जुमे (शुक्रवार) का भी लिया। जैसा कि आयत -

فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ

से स्पष्ट है, अर्थात् ख़ुदा के इस आयत में فِي يوم नहीं फ़रमाया बल्कि يومين फ़रमाया। इस से निश्चित तौर पर समझा गया कि शुक्रवार का पहला भाग आसमानों के

है دابّـة الارض का निकालना है तथा दाब्बतुलअर्ज़ से वे लोग अभिप्राय हैं जिन की जीभों पर ख़ुदा है और दिल भी बौद्धिक तौर पर उसके मानने से प्रसन्न होते हैं, परन्तु आसमान की रूह उनके अन्दर नहीं केवल संसार के

शेष हाशिया - बनाने और उनकी आन्तरिक व्यवस्था में व्यय हुआ। इसलिए स्पष्ट आदेश से इस बात का फैसला हो गया कि आदम शुक्रवार के अन्तिम भाग में पैदा किया गया। और यदि यह सन्देह हो कि संभव है कि आदम सातवें दिन पैदा किया गया हो तो इस सन्देह को यह आयत दूर करती है, जो सूरह अलहदीद की चौथी आयत है। और वह यह है

هُوَ الَّذِیۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ فِیۡ سِتَّۃِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسۡتَوٰی عَلَی الۡعَرۡشِ ؕ

(अलहदीद -5)

अनुवाद – इस आयत का यह है कि ख़ुदा वह है जिसने सम्पूर्ण पृथ्वी और आसमानों को छ: दिन में पैदा किया फिर उसने अर्श पर क़रार पाया। अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि को छ: दिन में पैदा करके फिर न्याय और दया की विशेषताओं को प्रकटन में लाने लगा। ख़ुदा का ख़ुदाई के तख़्त पर बैठना इस बात की ओर संकेत है कि सृष्टि की रचना करने के बाद प्रत्येक सृष्टि से न्याय, दया राजनीति की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए कार्रवाई आरंभ की। यह मुहावरा इस से लिया गया है कि जब सब मुकद्दमा करने वाले और राज्य के प्रमुख पदाधिकारी तथा रोबदार सेनाएं उपस्थित हो जाती हैं और कचहरी गर्म हो जाती है और प्रत्येक अधिकार का पात्र अपने अधिकार को बादशाही न्याय से मांगता है तथा श्रेष्ठता एवं प्रतिष्ठा के समस्त सामान उपलब्ध हो जाते हैं, तब बादशाह सब के बाद आता है और अदालत के तख़्त को अपने से शोभा प्रदान करता है। फलत: इन आयतों से सिद्ध हुआ कि आदम शुक्रवार के अन्तिम भाग में पैदा किया गया। क्योंकि छठे दिन के बाद पैदायश का सिलसिला बन्द किया गया। कारण यह कि सातवें दिन बादशाही तख्त पर बैठने का दिन है न कि पैदायश का। यहूदियों ने सातवें दिन को आराम का दिन रखा है। परन्तु यह उनका बोधभ्रम है अपितु यह एक मुहावरा है कि जब इन्सान एक महान कार्य से निवृत्त हो जाता है तो फिर जैसे उस समय उस के आराम का समय होता है। ऐसी इबारतें तौरात में बतौर मजाज़ (अवास्तविक) हैं, न यह कि वास्तव में ख़ुदा तआला थक गया और दुर्दशाग्रस्त एवं थका होने के कारण उसे आराम करना पड़ा।

इन आयतों के बारे में एक यह बात भी है कि फ़रिश्तों का ख़ुदा के सामने यह कहना कि क्या तू उपद्रवी को ख़लीफ़ा बनाने लगा है? इसके क्या मायने हैं? अत: स्पष्ट हो कि असल वास्तविकता यह है कि जब ख़ुदा तआला ने छठे दिन आसमानों की सात

कीड़े हैं। वे रूह के बुलाए नहीं बोलते बल्कि अंधा अनुसरण या कामभावना संबंधी उद्देश्य उनकी जीभ खोलते हैं। ख़ुदा ने उनका नाम दाब्बतुलअर्ज़ इसी कारण से रखा है कि कोई आसमानी अनुकूलता उनके अन्दर नहीं। अति

शेष हाशिया - परतें बनाईं और प्रत्येक आसमान के प्रारब्ध का प्रबंध किया और छठा दिन जो बृहस्पति ग्रह का दिन है अर्थात् मुश्तरी नक्षत्र का दिन समाप्त होने के निकट हो गया और फ़रिश्ते जिन को आयत के विषयानुसार

وَ اَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا (हाम्मीम अस्सज्दह – 13)

शुभ और अशुभ का ज्ञान दिया गया था तथा उन्हें ज्ञात हो चुका था सब से अधिक शुभ बृहस्पति है, और उन्होंने देखा कि प्रत्यक्षत: उस दिन का भाग आदम को नहीं मिला, क्योंकि दिन में से बहुत ही कम समय शेष है। अत: यह विचार गुज़रा कि अब आदम की पैदायश ज़ुहल (शनि ग्रह) के समय में होगी। उसके स्वभाव में शनि के प्रभाव जो प्रकोप और अज़ाब आदि है रखे जाएंगे और इसलिए उसका अस्तित्व बड़े उपद्रवों का कारण होगा। अत: आरोप का कारण एक काल्पनिक बात थी न कि निश्चित। इसलिए उन्होंने काल्पनिक तौर पर इन्कार किया और कहा कि क्या तू ऐसे व्यक्ति को पैदा करता है जो उपद्रवी और हत्यारा होगा तथा सोचा कि हम संयमी, उपासक, और पवित्रता वर्णन करने वाले तथा प्रत्येक बुराई से पवित्र हैं और हमारी पैदायश बृहस्पति ग्रह के समय में है जो महा शुभ है। तब उनको उत्तर मिला कि

اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (अल बक़रह – 31)

अर्थात् तुम्हें मालूम नहीं कि मैं आदम को किस समय बनाऊंगा। मैं उसको बृहस्पति ग्रह के उस भाग में बनाऊंगा जो उस दिन के समस्त भागों में से अधिक मुबारक है। और यद्यपि शुक्रवार का दिन बहुत शुभ है (बृहस्तपति ग्रह है) परन्तु उसके अस्र के समय की घड़ी उसकी प्रत्येक घड़ी से सौभाग्य और बरकत में आगे निकल गई है। अत: आदम शुक्रवार के अन्तिम समय में बनाया गया, अर्थात् अस्र के समय पैदा किया गया। इसी कारण से हदीसों में प्रेरणा दी गई है कि शुक्रवार को अस्र और मग़ारिब के मध्य बहुत दुआ करो कि उसमें एक समय है जिसमें दुआ स्वीकार होती है। यह वही समय (घड़ी) है जिसकी खबर फ़रिश्तों को भी न थी। इस समय में जो पैदा हो वह आसमान पर आदम कहलाता है तथा उस से एक बड़े सिलसिले की बुनियाद पड़ती है। अत: आदम उस घड़ी (समय) में पैदा किया गया। इसलिए दूसरा आदम अर्थात् इस खाक़सार को यही घड़ी प्रदान की गई। इसी की ओर बराहीन अहमदिया के इस इल्हाम में संकेत है कि-

يَنقطع اٰباءك و يبدء منك

विचित्र यह कि अन्तिम युग में वे सच्चे धर्म के गवाह हैं। स्वयं मुर्दा है परन्तु जीवित की गवाही देते हैं। ये तीन वस्तुएं हैं अर्थात् दज्जाल, याजूज माजूज और दाब्बतुलअर्ज़ जो पृथ्वी पर मसीह मौऊद के आने के लक्षण हैं। इनके

शेष हाशिया - देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-490 और यह अद्‌भुत संयोग में से है कि यह ख़ाकसार न केवल छठे हज़ार के अन्तिम भाग में पैदा हुआ जो बृहस्पति ग्रह से वही संबंध रखता है जो आदम का छठे दिन अर्थात् उसका अन्तिम भाग संबंध रखता था, अपितु यह ख़ाकसार शुक्रवार के दिन चन्द्रमा की चौदहवीं तिथि में पैदा हुआ है। यहां एक और बात उल्लेखनीय है कि यदि यह प्रश्न हो कि शुक्रवार की अन्तिम घड़ी जो अस्र के समय की है जिसमें आदम पैदा किया गया क्यों ऐसी मुबारक (शुभ) है और क्यों आदम की पैदायश के लिए वह विशेष की गयी? इसका उत्तर यह है कि ख़ुदा तआला ने सितारों के प्रभाव की व्यवस्था ऐसी रखी है कि एक सितारे का कुछ प्रभाव (असर) ले लेता है जो उस भाग से संलग्न हो और उसके बाद में आने वाला हो। अब चूंकि अस्र के समय से जब आदम पैदा किया गया रात निकट थी, इसलिए वह समय शनि ग्रह के प्रभाव से भी कुछ भाग रखता था और बृहस्तपति ग्रह से भी लाभ प्राप्त था जो सौन्दर्य से संबंध रखता है। अत: ख़ुदा ने आदम को शुक्रवार को अस्र के समय बनाया। क्योंकि वह चाहता था कि आदम को प्रताप और सौन्दर्य का संग्रहीता बनाए। जैसा कि इसी की ओर यह आयत संकेत करती है- خلقت بيدیّ अर्थात् मैंने आदम को अपने दोनों हाथ से पैदा किया है। स्पष्ट है कि ख़ुदा के हाथ मनुष्य की भांति नहीं हैं। अत: दोनों हाथ से अभिप्राय सौन्दर्य संबंधी तथा प्रताप संबंधी आया है। इसलिए इस आयत का मतलब यह है कि आदम को प्रताप और सौन्दर्य संबंधी आभा (तजल्ली) का संग्रहीता पैदा किया गया और चूंकि अल्लाह तआला ज्ञान संबंधी सिलसिले को नष्ट करना नहीं चाहता। इसलिए उस ने आदम की पैदायश के समय उन सितारों के प्रभाव से भी काम लिया है जिन को उस ने अपने हाथ से बनाया था, और ये सितारे केवल सजावट के लिए नहीं हैं जैसा कि लोग समझते हैं बल्कि इनमें तीसरे (प्रभाव) हैं। जैसा कि आयत-

وَ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَ حِفْظًا (हाम्मीम अस्सज्दह – 13)

से अर्थात् حِفْظًا के शब्द से ज्ञात होता है अर्थात् संसार की व्यवस्था की सुरक्षा में इन सितारों का संबंध है, उसी प्रकार का संबंध जैसा कि मानवीय स्वास्थ्य में दवा और भोजन का होता है जिसको ख़ुदाई सत्ता में कुछ संबंध नहीं, अपितु ख़ुदा की प्रतिष्ठा के आगे ये समस्त वस्तुएं मुर्दे की भांति हैं। ये वस्तुएं ख़ुदा की आज्ञा के बिना कुछ नहीं कर सकतीं। उन के प्रभाव ख़ुदा तआला के हाथ में हैं। अत: निश्चित एवं सही बात यही है कि सितारों में

अतिरिक्त और भी ज़मीनी लक्षण हैं। अत: ऊंट की सवारी और सामान ढ़ोने का अधिकांश भाग पृथ्वी से स्थगित हो जाना मसीह के आने का एक विशेष लक्षण है। हुजजुल किरामा में इब्ने वातील इत्यादि से रिवायत लिखी है कि

शेष हाशिया - प्रभाव (तासीरें) हैं, जिनका पृथ्वी पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए संसार में उस मनुष्य से अधिक कोई मूर्ख नहीं कि जो दवा में काम आने वाली बूटी (बनफ्शः) कमल, रसौत, सकमूनिया (एक प्रकार का गोंद) और खीरा शबर का तो क़ायल है (मानता है) परन्तु उन सितारों की तासीर का इन्कारी है जो क़ुदरत के हाथ के प्रथम श्रेणी पर आभा-स्थल और चमत्कारों के द्योतक हैं जिन के बारे में स्वयं ख़ुदा तआला ने حِفۡظًا का शब्द इस्तेमाल किया है। ये लोग जो पूर्णतया मूर्खता में निमग्न (ग़र्क़) हैं इस ज्ञान के सिलसिले को शिर्क में सम्मिलित करते हैं, नहीं जानते कि संसार में ख़ुदा की प्रकृति का नियम यही है कि उसने कोई वस्तु व्यर्थ और फायदा तथा प्रभाव रहित पैदा नहीं की। जबकि वह फ़रमाता है कि प्रत्येक वस्तु मनुष्य के लिए पैदा की गई है। अत: अब बताओ سَمَآءَ الدُّنۡیَا को लाखों सितारों से भर देना, इस से मनुष्य को क्या लाभ है? और ख़ुदा का यह कहना कि ये सब वस्तुएं मनुष्य के लिए पैदा की गई है अवश्य हमें इस ओर ध्यान दिलाता है कि इन वस्तुओं के अन्दर विशेष वे प्रभाव हैं जो मानव जीवन और मानवीय रहन सहन पर अपना प्रभाव डालते हैं। जैसा कि पहले दार्शनिकों ने लिखा है कि पृथ्वी प्रारंभ में बहुत असम (ऊंची-नीची) थी। ख़ुदा ने सितारों के प्रभावों के साथ उसको ठीक किया है और ये सितारे जैसा कि ये मूर्ख लोग समझते हैं। आसमान निकटता पर ही नहीं हैं अपितु कुछ कुछ से बहुत बड़ी दूरी पर हैं। इसी आसमान में बृहस्पति ग्रह (मुश्तरी) दिखाई देता है जो छठे आसमान पर है। ऐसा ही ज़ुहल (शनि ग्रह) भी दिखाई देता है जो सातवें आसमान पर है। इसी कारण से उसका नाम ज़ुहल है कि उसकी दूरी होने वाले को भी कहते हैं। और आसमान से अभिप्राय वे सूक्ष्म तहें हैं जो कुछ, कुछ से अपनी विशेषताओं के साथ पृथक (भिन्न) हैं। यह कहना भी मूर्खता है कि आसमान कुछ वस्तु नहीं क्योंकि जहां तक आसमान की ओर भ्रमण किया जाए तो केवल अन्तरिक्ष का भाग किसी जगह दिखाई नहीं देगा। अत: पूर्ण खोज जो अज्ञात की वास्तविकता ज्ञात करने के लिए प्रथम श्रेणी पर है, व्यापक एवं स्पष्ट तौर पर समझती है कि केवल रिक्त किसी जगह नहीं है। और जैसा कि पहला आदम सौन्दर्य एवं प्रताप संबंधी रूप में बृहस्पति और शनि ग्रह दोनों के प्रभाव ले कर पैदा हुआ, इसी प्रकार वह आदम जो छठे हज़ार के अन्त में पैदा हुआ वह भी ये दोनों प्रभाव अपने अन्दर रखता है। उसके पहले क़दम पर मुर्दों का जीवित होना है और दूसरे क़दम पर मुर्दों का जीवित होना है और दूसरे

मसीह अस्र के समय आसमान से उतरेगा और अस्र के हज़ार का अन्तिम भाग अभिप्राय लिया है। देखो हुजजुल किरामा पृष्ठ 428. इस कथन से स्पष्ट

शेष हाशिया - क़दम पर जीवितों का मरना है अर्थात् क़यामत में ख़ुदा ने उसके समय में रहमत (दया) की निशानियां भी रखी हैं और प्रकोप की भी, ताकि जमाली और जलाली दोनों रंग सिद्ध हो जाएं। अन्तिम युग के बारे में ख़ुदा तआला का यह फ़रमाना कि सूर्य और चन्द्रमा एक ही समय में अंधकारमय हो जाएंगे। पृथ्वी पर जगह-जगह उथल-पुथल होगी, पर्वत उड़ाए जाएंगे। ये सब प्रकोप एवं प्रताप से संबंधित लक्षण हैं। ईसाइयत की विजय के युग के बारे में भी पवित्र क़ुर्आन में इसी प्रकार के संकेत पाए जाते हैं। क्योंकि लिखा है कि निकट है कि इस धर्म की विजय के समय आसमान फट जाएं और पृथ्वी के धंसने इत्यादि के कारण मौतें हों। अत: दूसरे आदम का अस्तित्व भी सौन्दर्य एवं प्रताप का संग्रहीता है, और इसी कारण छठे हज़ार के अंत में पैदा किया गया और छठे हज़ार की दृष्टि से संसार के दिनों का यह जुमाअ (शुक्रवार) है और शुक्रवार में से यह अस्र (दिन का अन्तिम भाग अर्थात् तीसरा पहर) का समय है जिस में यह आदम पैदा हुआ। सूरह फ़ातिहा में इस मक़ाम के संबंध में एक बारीक संकेत है और वह यह कि चूंकि सूरह फ़ातिहा एक ऐसी सूरह है जिसमें प्रारंभ करने का स्थान तथा लौटकर जाने का स्थान (परलोक) का वर्णन है। अर्थात् ख़ुदा के प्रतिपालन से लेकर यौमिद्दीन (दण्ड एवं प्रतिफल का दिन) तक ख़ुदा की विशेषताओं के सिलसिले को पहुंचाया है। इस अनुकूलता की दृष्टि से अनादि दार्शनिक (ख़ुदा) ने इस सूरह को सात आयतों पर विभाजित किया है। ताकि संसार की आयु में सात हज़ार की ओर संकेत हो। इस सूरह की छठी आयत

اهدنا الصراط المستقيم

है। मानो यह इस बात की ओर संकेत है कि छठे हज़ार का अंधकार आसमानी हिदायत को चाहेगा और मानवीय शांत स्वभाव ख़ुदा के दरबार से एक हादी (पथ-प्रदर्शक) को मांगेगे अर्थात् मसीह मौऊद को। और ضالّين पर क़यामत आएगी। यह सूरह वास्तव में बड़ी बारीकियों एवं सच्चाइयों की संग्रहीता है। जैसा कि हम पहले भी वर्णन कर चुके हैं। और इस सूरह

की यह दुआ कि

اهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم غير المغضوب عليهم وَلَا الضَّالّين

(अलफ़ातिहा – 6, 7)

यह स्पष्ट संकेत कर रही है कि इस उम्मत के लिए एक आने वाले गिरोह مغضوب عليهم के प्रकटन से और दूसरे गिरोह ضالّين की विजय के युग में एक बड़ी परीक्षा का सामना है, जिससे बचने के लिए पांच समय दुआ करना चाहिए। सूरह फ़ातिहा की यह

है कि यहां हज़ार से अभिप्राय छठा हज़ार है और छठे हज़ार का अस्र का समय इस ख़ाकसार की पैदायश का युग है जो हज़रत आदम की पैदायश के युग के मुकाबले पर है इस पर तर्क यह है कि अन्तिम युग का जो हज़ार है वह आदम के छठे दिन के मुकाबले पर छठा हज़ार है, जिसमें मसीह मौऊद

शेष हाशिया - दुआ इस प्रकार से सिखाई गयी है कि पहले الحمد لله (अलहम्दुलिल्लाह) से मालिके यौमिद्दीन तक ख़ुदा की कीर्तियां तथा जलाली एवं जमाली विशेषताएं व्यक्त की गईं ताकि दिल बोल उठे कि वह माबूद (उपास्य) है। अत: मानवीय स्वभाव ने इन पवित्र विशेषताओं पर मुग्ध होकर اِيّاك نَعْبُدُ का इक़रार किया और फिर अपनी कमज़ोरी को देखा तो اِيَّاكَ نَسْتَعِين कहना पड़ा। फिर ख़ुदा से सहायता पा कर यह दुआ की जो समस्त प्रकार की बुराइयों से बचने के लिए तथा समस्त प्रकार की भलाइयों को एकत्र करने के लिए काफी एवं सम्पूर्ण है। अर्थात् यह दुआ कि

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ (अलफ़ातिहा - 6,7)

यह तो स्पष्ट है कि पूर्ण सौभाग्य तभी प्राप्त होता है कि मनुष्य उन समस्त बुराइयों एवं उपद्रवों से सुरक्षित रहे, जिनका कोई नमूना क़यामत तक प्रकट होने वाला है और समस्त नेकियां प्राप्त हों जो क़यामत तक प्रकट होने वाली हैं। अत: इन दोनों पहलुओं की यह दुआ सिद्धहस्त (जामिअ) है। इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन के अन्त की तीन सूरतों में से प्रथम सूरह 'अलइख़्लास' में यह सिखाया गया है कि

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (अलइख़्लास - 3)

और इस आयत में वह आस्था जो स्वीकार करने योग्य है प्रस्तुत की गई और फिर

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ (अलइख़्लास - 4)

सिखा कर वह आस्था जो अस्वीकार करने योग्य है वह वर्णन की गई और फिर सूरह अलफ़लक़ में अर्थात् आयत-

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ (अलफ़लक़ - 4)

में आने वाले एक घोर अंधकार से डराया गया और वाक्य-

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (अलफ़लक - 2)

में आने वाली एक सच्चे प्रभात (सवेरा) की ख़ुशख़बरी दी गई तथा इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सूरह अन्नास में धैर्य एवं दृढ़ता के साथ भ्रमों से बचने पर बल दिया। (इसी से)

का आना आवश्यक है और उसका अन्तिम भाग अस्त्र का समय कहलाता है। अत: इब्ने वातील का असल कथन जो नुबुव्वत के उद्गम से लिया गया है इस प्रकार से ज्ञात होता है-

نزول عیسی یکون فی وقت صلوٰۃ العصر فی الیوم السادس من الایام المحمدّیۃ حین تمضی ثلاثۃ اربا عہ

अर्थात् ईसा मसीह का नुज़ूल (उतरना) मुहम्मदी दिन में अस्त्र के समय होगा, जब उस दिन के तीन भाग गुज़र चुकेंगे। अर्थात् छठे हज़ार का अन्तिम भाग कुछ शेष रहेगा। और बाक़ी सब गुज़र चुकेगा। उस समय ईसा की रूह पृथ्वी पर आएगी। याद रहे कि सूफियों की परिभाषा में मुहम्मदी दिन से अभिप्राय हज़ार वर्ष है जिसकी गणना आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास के दिन से की जाती है। अत: हम इसी हिसाब से सूरह वलअस्त्र की संख्या लिख कर सिद्ध कर चुके हैं कि इस ख़ाकसार की पैदायश (जन्म) उस समय हुई थी जबकि मुहम्मदी दिन में से केवल ग्यारह वर्ष शेष रहते थे जो उस दिन का अन्तिम भाग है। स्मरण रहे कि अधिकतर सूफी जो हज़ार से भी कुछ अधिक हैं अपने कश्फ़ों द्वारा इस बात की ओर गए हैं कि मसीह मौऊद तेरहवीं सदी में अर्थात् छठे हज़ार के अन्त में पैदा होगा। अत: शाह वलीउल्लाह साहिब का इल्हाम "चिराग़दीन" जो महदी माहूद की पैदायश के बारे में है स्पष्ट तौर पर सिद्ध करता है कि प्रकटन का समय छठे हज़ार का अन्त है। इसी प्रकार उम्मत के बहुत से बुज़ुर्गों ने मसीह मौऊद की पैदायश के लिए छठे हज़ार का अन्तिम भाग लिया है और चौदहवीं सदी उसके अवतरण एवं प्रादुर्भाव की तिथि लिखी है। और चूंकि मोमिन के लिए ख़ुदा तआला की किताब से बढ़ कर कोई गवाह नहीं, इसलिए इस बात से इन्कार करना कि मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव का समय छठे हज़ार का अन्तिम भाग है, ख़ुदा तआला की किताब से इन्कार है। क्योंकि अल्लाह तआला ने मुहम्मदी ख़िलाफ़त के सिलसिले को मूस्वी ख़िलाफ़त के सिलसिले से समानता देकर स्वयं प्रकट कर दिया है कि मसीह मौऊद छठे हज़ार के

अन्त में है। फिर इसके अतिरिक्त संसार की स्थिति पर दृष्टि डालने से मालूम होता है कि छठे हज़ार में पृथ्वी पर एक महान क्रान्ति आई है? विशेषतौर पर इस साठ वर्ष की अवधि में कि जो लगभग मेरी आयु का अनुमान है इतना व्यापक परिवर्तन संसार के पटल पर प्रकटनशील है कि जैसे वह संसार ही नहीं रहा। न वे सवारियां रहीं और न वह रहन-सहन की पद्धित रही और न बादशाहों में शासन के प्रभुत्व की विशालता रही और न वह मार्ग और न वह मिश्रण (मुरक्कब) और यहां तक कि प्रत्येक बात में आधुनिकता हुई कि मनुष्य की रहन-सहन की पहली समस्त पद्धतियां जैसे निरस्त हो गईं और पृथ्वी तथा पृथ्वी वालों ने प्रत्येक पहलू में जैसे आधुनिक लिबास पहन लिया और بُدّلت الارض غير الارض का दृश्य आंखों के सामने आ गया और एक अन्य रूप में भी क्रान्ति ने अपना दृश्य दिखाया अर्थात् जैसा कि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में भविष्यवाणी के तौर पर फ़रमाया था कि एक वह गंभीर समय आने वाला है, निकट है कि तस्लीस के प्रभुत्व के समय आसमान फट जाएं और पृथ्वी विदीर्ण (फटना) हो जाए और पर्वत गिर जाएं। ये समस्त बातें प्रकट हो गयीं और इतनी सीमा से अधिक ईसाइयत का प्रचार और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाने में अतिशयोक्ति की गई निकट है कि वे सत्यनिष्ठ जो निष्कपटता के कारण आसमानी कहलाते हैं गुमराह हो जाएं और पृथ्वी फट जाए अर्थात् समस्त ज़मीनी लोग बिगड़ जाएं और वे दृढ़ प्रतिज्ञ लोग जो अटल पर्वतों के समान हैं गिर जाएं तथा पवित्र क़ुर्आन की वह आयत जिसमें यह भविष्यवाणी है कि-

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَ تَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَ تَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا

(मरयम - 91)

और आयत चूंकि दोमुखी है, इसलिए इसके दूसरे अर्थ ये भी हैं कि महाप्रलय के निकट पृथ्वी पर ईसाइयत का बहुत प्रभुत्व हो जाएगा जैसा कि आज तक प्रकट हो रहा है। इस पवित्र आयत का उद्‌देश्य यह है कि यदि इस उपद्रव के समय ख़ुदा तआला अपने मसीह को भेजकर इस उपद्रव

का सुधार न करे तो तुरन्त क़यामत (प्रलय) आ जाएगी और आसमान फट जाएंगे। परन्तु ईसाइयत की इतनी अतिशयोक्ति तथा इतने झुठलाने के बावजूद जो अब तक करोड़ों पुस्तकें, पत्रिकाएं और दो-दो पृष्ठों के लीफलेट्स देश में प्रकाशित हो चुके हैं क़यामत नहीं आई तो यह इस बात पर सबूत है कि ख़ुदा ने अपने बन्दों पर दया करके अपने मसीह को भेज दिया है। क्योंकि संभव नहीं कि ख़ुदा का वादा झूठा निकले और पहले वर्णन की दृष्टि से जबकि संसार पर महान क्रान्ति आ चुकी है और लगभग समस्त ऐसी रूहें (आत्माएं) जो सच्चाई से ख़ुदा का आवाहन कर सकतीं तबाह हो गईं। इसलिए इस युग में दोबारा रूहानी जीवन स्थापित करने के लिए एक नए आदम की आवश्यकता पड़ी। इस आदम का मान-सम्मान इस से प्रकट है कि वह आदम ईमान जैसे जौहर को संसार में दोबारा लाने वाला और पृथ्वी को अपवित्रता से पवित्र करने वाला है और इसकी आवश्यकता इस से प्रकट है कि अब इस्लाम अपने आस्थागत एवं क्रियात्मक दोनों पहलुओं की दृष्टि से ग़रीबी की अवस्था में है। इसलिए नबियों की समस्त भविष्यवाणियों के प्रकट होने का यह समय है तथा आसमानी बरकतों की प्रतीक्षा।

अब हम इस समापन में दानियाल की किताब में से एक भविष्यवाणी और इसी प्रकार यसइया नबी की किताब में से भी एक भविष्यवाणी का उल्लेख करते हैं कि जो मसीह मौऊद के प्रकटन के बारे में है और वह यह है-

दानियाल बाब - 12

دانیال باب ۱۲

ובעת ההיא יעמד מיכאל השר

باعیث هھیا یعمود میکائیل هَسَّار

तथा उस समय वह अवतरित होगा जो ख़ुदा के समान है श्रेष्ठ

הגדול העמד על-בני עמך

هجادول هاعومئد عل بنی عمیک

शासक वह अवतरित होगा तेरी क़ौम के समर्थन में

והיתה עת צרה אשר

وهایتاه عیت ضاره اشیر

और शत्रुओं का ऐसा युग होगा

לא-נהיתה מהיות גוי עד העת

لونهی تاه مهیؤت گوی عد هاعت

कि न हुआ होगा उम्मत के आरंभ से लेकर

ההיא ובעת ההיא ימלט

هھیا و باعیت هھیا یمالیط

उस समय तक, और उस समय ऐसा होगा कि मुक्ति पाएगा

עמך כל-הנמצא כהתב בספר

عمیکا کول هنمصا کاتوب بسیفر

तेरी क़ौम में से प्रत्येक के पाया जाएगा लिखा हुआ किताब में

ורבים מישני אדמת - עפר

و ربیم مشینی ادمت عافار

और बहुत जो सुस्त पड़े हैं पृथ्वी के अन्दर

יקיצו אלה להביי עולם ואלה

یا قیضو ایلیه لحبے عولام ایلیه

जाग उठेंगे यह हमेशा के जीवन के

לחרפות לדראון עולם

لحرافوت لدراون عولام

लिए तथा यह इन्कार और अनश्वर लानत के लिए

והמשכילים יזהירו כזהר

و همسکیلیم یزهی رو کزوهر

और बुद्धिमान चमकेंगे आकाश

הרקיע ומצדיקי הרבים ככוכבים

هارقیعه و مصدیقی هاربیم ککوکابیم

की चमक के समान तथा स्त्यनिष्ठों से बहुत होंगे सितारों के समान

לעולם ועד ואתה דניאל סתם

لعولام و عاد واتاه دانی ایل ستوم

हमेशा और हमेशा और तू हे दानियाल गुप्त रख

הדברים וחתם הספר לד - עת

هد باریم و ختوم هسیفر عد عیت

इन बातों को और इस किताब को बन्द रख अन्तिम समय

קץ ישטטו רבים ותרבה הדעת

قیص یش ططو ربیم و تربیه هداعت

तक जबकि लोग पृथ्वी पर शततू होंगे और इधर-उधर दौड़ेंगे तथा सैर करेंगे और मिलेंगे तथा

וראיתי אני דניאל והנה שנים

و رائیتی انی دانی ایل و هنیه شنے یم

ज्ञान बहुत बढ़ जाएगा और दृष्टि की उसमें दानियाल ने और देखे दो

אחרים עמדים אחד הנה לשפת

احرے ریم عومدیم احاد هیناه لشؤفت

और खड़े होंगे एक इस ओर दरिया के

היאר ואחד הבה לשפת

هیور و احاد هیناه لشوفت هیور

तथा दूसरा दरिया के उस ओर दरिया

ויאמר לאיש לבוש הבדים אשר

و یؤمیر لا ایش لبوش هبدیم اشیر

और कहा उस आदमी को जिसका लिबास लम्बे धागों का था जो कि

ממעל למימי היאר עד - מתי

ممعل لمے مئے هیور عد ماتی

दरिया के पानी के ऊपर था कब होगा

קץ הפלאות ואשמע את - האיש

قیص هفلا اوت و اشمع ایت ها ایش

कष्टों का अन्त और मैंने सुना उस आदमी को लम्बे धागों वाला

לבוש הבדים אשר ממעל למימי

لبوش هیدیم اشیر ممعل لمے مے

लिबास पहने था जो कि था ऊपर दरिया

היאר וירם ימינו ושמאלו אל

هیور و یارام یمینو و شمولو ال

के पानियों के और उसने बुलन्द किया अपना दायाँ हाथ और

השמים וישבע בחי העולם כי למועד

هشامیم و یشابع بحے هاعولام کی لموئید

बायाँ हाथ आकाश की ओर और क़सम खाई अनादि जीवित ख़ुदा की कि इस युग की अवधि

מועדים וחצי ובכלות נפץ יד עם

موعدیم وحیصی و ککلوت نفئیص یدعم

दो युग हैं और एक युग का भाग और यह पूरा होगा पवित्र जमाअत में फूट पड़ेगी

קדש תכלינה כל - אלה ואני שמעתי

قودیش تک یے ناہ کول اے لیہ دانی شامعتی

और उनका ज़ोर टूट जाएगा तथा ये समस्त बातें पूरी होंगी और मैं सुना

ולא אבין ואמרה אדני מה אחרית

ولو ابین واومراہ ادونی ماہ احریت

पर न जाना और मैंने कहा हे ख़ुदावन्द क्या है अंजाम

אלה ויאמר לך דנישל כי סתמים

ایلیہ و یومئر لیک دانی ایل کی ستومیم

इन सब बातों का और कहा चला जा दानियाल, क्योंकि गुप्त रहेंगी

וחתמים הדברים עד - עת - קץ יתבררו

و حتومیم ھد باریم عد عیت قیص یت باررو

और बन्द रहेंगी यह बाते अन्तिम समय तक। बहुतों का बुरा किया जाएगा

ויתלבנו ויצרפו רבים והרשי עו רשעים

و یت لب نو و یصارفو ربیم و ہر شی عو رشاعیم

और बहुतों को सफीक किया जाएगा और बहुतों को परीक्षा में डाला जाएगा
और उपद्रवी उपद्रव से शोर और

ולא יבינו כל - רשעים והמשכילים

و لو یابی نو کول رشاعیم و ہمسکیلیم

कोलाहल मचाएंगे और उपद्रवियों में से कोई न समझेगा, परन्तु बुद्धिमान

יבינו ומעת הוסר התמיד ולתת

یابی نو و مے عیت ہو سر ھتامید و لاتیت

समझ लेंगे और उस समय से जबकि स्थायी कुर्बानी स्थगित होगी तथा मूर्तियों को

שקוץ שמם ימים אלסף מאתים

شقوص شومیم یامیم ایلیف ماتیم

तबाह किया जाएगा उस समय तक बारह सौ नव्वे

ותשעים אשרי המחכה ויגיע

و تش عیم اشرے همحکاه و یجیع

दिन होंगे। मुबारक है जो प्रतीक्षा किया जाएगा और अपना काम

לימעם אלף שלש מאות שלשים

لیامیم ایلیف شلوش مے اوت شلوشیم

मेहनत से करेगा तेरह सौ पैंतीस दिन तक

וחמשה ואתה לך לקץ ותנוח

و حمی شاہ و اتاہ لیک لقیص و تانوح

और तू चला जा अन्त तक हे दानियाल ۱۳۳۵★

ותעמד לגרלך לקץ הימין

و تعمود لجورالک لقیص هیامین

और आराम कर तथा अपने भाग पर अन्त में खड़ा होगा।

★**हाशिया :**– इस वाक्य में दानियाल नबी बताता है कि उस अंतिम युग के नबी के प्रकटन से (जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है) जब बारह सौ नव्वे वर्ष गुज़रेंगे तो वह मसीह मौऊद प्रकट होगा और तेरह सौ पैंतीस हिज्री तक अपना काम चलाएगा। अर्थात् चौदहवीं सदी में से पैंतीस वर्ष निरन्तर काम करता रहेगा। अब देखो इस भिवष्यवाणी में कितनी स्पष्टता से मसीह मौऊद का युग चौदहवीं सदी को ठहरा दिया गया। अब बताओ क्या इस से इन्कार करना ईमानदारी है? इसी से।

החרישו אלי איים ולאמים

هح يشو اےلَيْ ايّيم وُل اُومِيُم

खामोश हो जाओ मेरे आगे हे द्वीपों, उम्मत

יחליפו כח יגשו אז ידברו

وحلی فو كواح يج شو آز يَدَبِّيرو

नए सिरे से हरी-भरी होगी और शक्ति ग्रहण करेगी, वे निकट पहुंचेंगे फिर सब एक

יחדו למשפט נקרבה מי העיר

يجدَاُ ملشفاط نِقرِيَاه مِیُ هی عير

बात पर सहमत होंगे हम फैसले के निकट आएँगे किसने अवतरित किया

ממזרח צדק יקראהו לרגלו יתן

مِمِزرَاح صديق يقراء هو لرجلو يتّيَ

सच्चे को★ पूरब की ओर से, उसे अपने पास बुलाया धर दिया

לפניו גוים ומלכים ירד יתן

لفانا يو گويم و ملاكيم يرئِد يتين

उसके मुंह के आगे क़ौमों को और बादशाहों पर उसे हाकिम किया। उसने कर दिया

כעפר חרבו כקש נדף קשתו

كعافار حَرُبُو كقاش نِدّاف قشتو

मिट्टी के समान उसकी तलवार को भूसे के सामान उड़ते गहवे से उस धनुष को

★**हाशिया :-** इस आयत का मतलब यह है कि मसीह मौऊद अंतिम युग में पैदा होगा वह पूरब में वह हिन्द देश में प्रकट होगा। यद्यपि इस आयत में व्याख्या नहीं कि क्या वह पंजाब में अवतरित होगा या हिन्दुस्तान में परन्तु दूसरे स्थानों से प्रकट होता है कि वह पंजाब में ही अवतरित होगा। इसी से।

ירדפם יעבר שלום ארח ברגליו

یردفیم یعبور شالوم اورح برَجُلایو

उस ने उनका पीछा किया और सलामती से गुज़र गया ऐसे रास्ते से जिस पर वह

לא יבוא מי - פעל ועשה

لو یابو مِی فاعَلُ وعَاسَاهٗ

अपने पाँव से नहीं चला, किस ने यह काम किया और उसे अंजाम दिया

קרא הדרות מראש אני יהוה

قوری هدّوروت مے روش انی یهوواه

वो जिस ने सारी पुश्तों को शुरू से पढ़ कर सुनाया, मियन वही पहला ख़ुदा हूँ

ראשון ואת - אחרונים אני - הוא

رِئ شؤن واِئتُ اَحَرونِیم اَنِي هُو

और आख़िर वालों के साथ हूँ

. . . . . ★ . . . .

परिशिष्ट (ज़मीमा) तोहफ़ा गोलड़विय्य:

हमने उचित समझा कि अपने दावे के संबंध में जितने भी सबूत हैं उनको संक्षिप्त तौर पर यहां इकट्ठा कर दिया जाए। अत: प्रथम भूमिका के तौर पर इस बात का लिखना आवश्यक है कि मेरा दावा यह है कि मैं वह मसीह मौऊद हूं जिसके बारे में ख़ुदा तआला की समस्त पवित्र किताबों में भविष्यवाणियां हैं कि वह अन्तिम युग में प्रकट होगा। हमारे उलेमा का यह विचार है कि वही मसीह ईसा इब्ने मरयम जिस पर इंजील उतरी थी अन्तिम युग में आकाश से उतरेगा। परन्तु स्पष्ट है कि पवित्र क़ुर्आन इस विचार का विरोधी है और आयत

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ (अलमाइदह - 118)

और आयत

كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ (अलमाइदह - 76)

और आयत

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आलेइमरान-145)

और आयत

فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ (अलआराफ़ - 26)

और दूसरी समस्त आयतें जिनका हम अपनी पुस्तकों में वर्णन कर चुके हैं इस बात को ठोस रंग में सिद्ध करती हैं कि हज़रत ईसा अलाहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं और उनकी मृत्यु का इन्कार क़ुर्आन से इन्कार है, तत्पश्चात् यद्यपि इस बात की आवश्यकता नहीं कि हम हदीसों से हज़रत मसीह की मृत्यु का प्रमाण ढूंढे किन्तु फिर भी जब हम हदीसों पर दृष्टि डालते हैं तो स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि इस प्रकार की हदीसों का पर्याप्त भाग मौजूद है जिनमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आयु एक सौ बीस वर्ष लिखी है तथा जिनमें वर्णन किया गया है कि यदि ईसा और मूसा जीवित होते तो मेरा अनुसरण करते तथा जिन

में उल्लेख किया गया है कि अब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु प्राप्त रूहों (आत्मओं) में सम्मलित हैं। अत: मेराज की समस्त हदीसें जो सही बुख़ारी में हैं वे इस बात पर गवाह हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मेराज की रात में मृत्यु प्राप्त रूहों में देखे गए। और सब से बढ़कर हदीसों के अनुसार यह प्रमाण मिलता है कि समस्त सहाबा की इस पर सर्वसम्मति हो गयी थी कि पिछले समस्त नबी जिनमें हज़रत ईसा भी सम्मिलित हैं सब के सब मृत्यु पा चुके हैं। इस इज्माअ (सर्वसम्मति) का वर्णन सही बुख़ारी में मौजूद है जिन से एक सहाबी भी बाहर नहीं। अब उस सत्याभिलाषी (सच की खोज करने वाला) जो ख़ुदा तआला से डरता है हज़रत मसीह की मृत्यु के बारे में अधिक सबूत की आवश्यकता नहीं, सिवाए इसके कि स्वयं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इंजील में इस बात का इक़रार करते कि मेरा दोबारा आगमन (आमद सानी) बुरूजी रंग में होगा न कि वास्तविक रंग में और इक़रार यह है-

(10) और उसके शिष्यों ने उस से पूछा फिर फ़क़ीह क्यों कहते हैं कि पहले इल्यास का आना आवश्यक है (अर्थात् मसीह के आने से पहले किताबों की दृष्टि से इल्यास का आना आवश्यक है)

(11) यसू ने उन्हें उत्तर दिया कि इल्यास यद्यपि पहले आएगा और सब चीज़ों का बन्दोवस्त (व्यवस्था) करेगा।

(12) पर मैं तुम से कहता हूं कि इल्यास तो आ चुका परन्तु उन्होंने उसको नहीं पहचाना अपितु जो चाहा उसके साथ किया।★ इसी प्रकार इब्ने आदम भी उन से (दोबारा आगमन के समय में) दु:ख उठाएगा। (देखो इंजील मती बाब

★**हाशिया :-** क्या आश्चर्य है कि सय्यद अहमद बरेलवी इस मसीह मौऊद के लिए इल्यास के रंग में आया हो, क्योंकि उसके रक्त ने एक अत्याचारी शासन को जड़ से उखाड़कर मसीह मौऊद के लिए जो यह लेखक है मार्ग को प्रशस्त किया। उसी के रक्त का प्रभाव मालूम होता है जिसने अंग्रेज़ों को पंजाब में बुलाया और इतनी कठोर धार्मिक रुकावटों को जो एक लोहे के तन्दूर की भांति थीं दूर करके पंजाब को एक स्वतंत्र शासन के सुपुर्द कर दिया और इस्लाम के प्रचार की नींव डाल दी। (इसी से)

17 आयत 10,11,12) इन आयतों में मसीह ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि उसका दोबारा आना भी इल्यास के रंग में होगा। चूंकि मसीह इस से पूर्व कई बार हवारियों के सामने अपने दोबारा आने की चर्चा कर चुका था जैसा कि इसी मती की इंजील से स्पष्ट है। इसलिए उस ने चाहा कि इल्यास के दोबारा आगमन की बहस में अपने दोबारा आगमन की वास्तविकता भी प्रकट कर दे। अतः उसने बता दिया कि मेरा दोबारा आना भी इल्यास के दोबारा आने के समान होगा अर्थात् मात्र बुरूज़ी तौर पर होगा। अब कितना बड़ा अन्याय है कि मसीह तो अपने दोबारा आने को बुरूज़ी तौर पर बताता है और स्पष्ट तौर पर कहता है कि मैं नहीं आऊंगा अपितु आचरण और स्वभाव पर कोई और आएगा। हमारे मौलवी तथा कुछ ईसाई यह सोच रहे हैं★ कि वास्तव में स्वयं वह ही दोबारा संसार में आ जाएगा यहां एक लतीफ़ा (चुटकुला) वर्णन करने के योग्य है जिस से स्पष्ट होगा कि ख़ुदा तआला के ज्ञान में एक समय निश्चित था जिसमें मृत्यु प्राप्त रूहें बुरूज़ी तौर पर आने वाली थीं और वह यह है कि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में अर्थात् सूरह अंबिया भाग-17 में एक भविष्यवाणी की है जिसका अर्थ यह है कि तबाह हुए लोग याजूज-माजूज के युग में पुनः संसार में लौटेंगे और वह आयत यह –

وَ حَرٰمٌ عَلٰی قَرۡیَۃٍ اَهۡلَکۡنٰهَاۤ اَنَّهُمۡ لَا یَرۡجِعُوۡنَ حَتّٰۤی اِذَا فُتِحَتۡ یَاۡجُوۡجُ وَ مَاۡجُوۡجُ وَ هُمۡ مِّنۡ کُلِّ حَدَبٍ یَّنۡسِلُوۡنَ وَ اقۡتَرَبَ الۡوَعۡدُ الۡحَقُّ

(अलअंबिया - 96 से 98)

और उस से ऊपर की आयतें ये हैं-

وَ الَّتِیۡۤ اَحۡصَنَتۡ فَرۡجَهَا فَنَفَخۡنَا فِیۡهَا مِنۡ رُّوۡحِنَا وَ جَعَلۡنٰهَا

★**हाशिया :-** हम ने 'कुछ' का शब्द इसलिए लिखा है कि कुल ईसाई इस पर सहमत नहीं हैं कि मसीह दोबारा संसार में आएगा अपितु ईसाइयों में से एक गिरोह इस बात को भी मानता है कि दूसरा मसीह कोई और है जो मसीह इब्ने मरयम के रंग और स्वभाव पर आएगा। इसी कारण ईसाइयों में से कुछ ने झूठे दावे किए कि वह मसीह हम हैं। (इसी से)

وَ ابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ- اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّ اَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ- وَ تَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ- فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَ اِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ

(अलअंबिया – 92 से 95)

इन आयतों का अनुवाद यह है कि मरयम ने जब अपनी अन्दामे निहानी (सतीत्व) को ग़ैर मुहरम से सुरक्षित रखा अर्थात् असीम श्रेणी का सतीत्व धारण किया तो हम ने उसको यह इनाम दिया कि वह बच्चा उसे प्रदान किया जो रूहुल क़ुदुस की फूंक से पैदा हुआ था। यह इस बात की ओर संकेत है कि संसार में बच्चे दो प्रकार के पैदा होते हैं-

(1) एक जिन में रूहुल क़ुदुस की फूंक का प्रभाव होता है और ऐसे बच्चे वे होते हैं कि जब स्त्रियां सतीत्व धारण करने वाली और पवित्र विचार रखने वाली हों तथा इसी स्थिति में गर्भ ठहरे, वे बच्चे पवित्र होते हैं और उनमें शैतान का भाग नहीं होता।

(2) दूसरी वे स्त्रियां हैं जिन की परिस्थितियां प्राय: गन्दी और अपवित्र रहती हैं परन्तु उनकी सन्तान में शैतान अपना भाग डालता है जैसा कि आयत

وَ شَارِكْهُمْ فِى الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ (बनी इस्राईल – 65)

इसी की ओर संकेत कर रही है जिस में शैतान को सम्बोधन है कि उन के धन और बच्चों में भागीदार बन जा अर्थात् वे हराम के धन (अवैध धन) एकत्र करेंगी और अपवित्र सन्तान जनेंगी। ऐसा समझना ग़लती है कि हज़रत ईसा को रूह के फूंकने से कुछ विशेषता थी जिसमें दूसरों को हिस्सा नहीं अपितु नऊज़ुबिल्लाह यह विचार कुफ्र के बहुत निकट जा पहुंचता है। मूल वास्तविकता यह है कि पवित्र क़ुर्आन में मनुष्यों की पैदायश में दो प्रकार की भागीदारी वर्णन की गई है।

(1) एक रूहुल क़ुदुस की भागीदारी, जब माता-पिता के विचारों पर अपवित्रता और कमीनगी विजयी न हो।

(2) और एक शैतान की भागीदारी, जब उन के विचारों पर अपवित्रता और

मलिनता विजयी हो। इसी की ओर संकेत इस आयत में भी है कि-

(नूह – 28) لَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا

अत: निस्सन्देह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उन लोगों में से थे जो शैतान के स्पर्श से और इब्लीस (शैतान) की फूंक से पैदा नहीं हुए। उनका बिना बाप पैदा होना यह दूसरी बात थी जिसका रूहुल क़ुदुस से कुछ संबंध नहीं। संसार में हज़ारों कीड़े-मकोड़े बरसात के दिनों में बिना बाप के अपितु मां-बाप दोनों के बिना पैदा हो जाते हैं तो क्या वे रूहुल क़दुस के बेटे कहलाते हैं? रूहुल क़ुदुस के बेटे वही हैं जो स्त्रियों के पूर्ण सतीत्व और पुरुषों के पूर्ण पवित्र विचारों की स्थिति में मां की बच्चे दानी में अस्तित्व धारण करते हैं। इन का विलोम शैतान के बेटे हैं। ख़ुदा की समस्त पुस्तकें यही गवाही देती आई हैं। शेष अनुवाद यह है- हमने मरयम और उसके पुत्र को बनी इस्राईल के लिए तथा उन सब के लिए जो समझें एक निशान बनाया। यह इस बात की ओर संकेत है कि हज़रत ईसा को बिना बाप के पैदा करके बनी इस्राईल को यह समझा दिया कि तुम्हारे दुष्कर्मों के कारण बनी इस्राईल से नुबुव्वत जाती रही क्योंकि ईसा बाप की दृष्टि से बनी इस्राईल में से नहीं है। यहां यह बात भी स्मरण रखने योग्य है कि अधिकतर पादरी जो कहा करते है कि तौरात में जो मसील-ए-मूसा का वादा है और लिखा है कि तुम्हारे भाइयों में से मूसा के समान एक नबी क़ायम किया जाएगा। वह नबी यसू अर्थात् ईसा इब्ने मरयम है। उन का यह कथन इसी स्थान से ग़लत सिद्ध होता है, क्योंकि जिस स्थिति में बनी इस्राईल में से हज़रत ईसा का कोई बाप नहीं है तो वह बनी इस्राईल का भाई क्योंकर बन सकता है। अत: निस्सन्देह स्वीकार करना पड़ा कि शब्द "तुम्हारे भाइयों में से" जो तौरात में मौजूद है इससे अभिप्राय वह नबी है जो बनी इस्माईल में से प्रकट हुआ अर्थात् मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। क्योंकि तौरात में अनेकों स्थान पर बनी इस्माईल को बनी इस्राईल के भाई लिखा है, परन्तु ऐसा व्यक्ति जो दोनों सदस्यों के इक़रार से किसी इस्राईली पुरुष के वीर्य में से नहीं है और न इस्माईली पुरुष के वीर्य से वह किसी भी प्रकार से इस्राईल का भाई नहीं कहला

सकता और न ईसाइयों के दावे के अनुसार वह मूसा के समान है क्योंकि वह तो उनके विचार में ख़ुदा है और मूसा तो ख़ुदा नहीं। और हमारे विचार में भी वह मूसा के समान नहीं क्योंकि मूसा ने प्रकट हो कर तीन बड़े-बड़े कार्य किए जो संसार पर स्पष्ट हो गए। ऐसे ही खुले-खुले तीन कार्य जो संसार पर व्यापक तौर पर प्रकटन हो गए हों जिस नबी से प्रकटन में आए हों वही नबी मूसा का मसील (समरूप) होगा और वे कार्य ये हैं – (1) प्रथम यह कि मूसा ने उस शत्रु का वध किया जो उन का और उनकी शरीअत (धार्मिक विधान) का समूल विनाश (उन्मूलन) करना चाहता था।

(2) दूसरे यह कि मूसा ने एक मूर्ख क़ौम को जो ख़ुदा और उसकी किताबों से अपरिचित थी और जानवरों की भांति चार सौ वर्ष से जीवन यापन करती थी किताब और ख़ुदा की शरीअत दी और उनमें शरीअत की नींव डाली।

(3) तीसरे यह कि इसके पश्चात् कि वे लोग अपमानजनक जीवन व्यतीत करते थे उनको शासन और बादशाहत प्रदान की तथा उनमें से बादशाह बनाए। इन तीनों इनामों का पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है। जैसा कि फ़रमाया –

قَالَ عَسٰی رَبُّکُمْ اَنْ یُّھْلِکَ عَدُوَّکُمْ وَ یَسْتَخْلِفَکُمْ فِی الْاَرْضِ فَیَنْظُرَ کَیْفَ تَعْمَلُوْنَ (सूरह अलआराफ़ -130)

देखो सूर: अलआराफ़ भाग-9 फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाया-

فَقَدْ اٰتَیْنَآ اٰلَ اِبْرٰھِیْمَ الْکِتٰبَ وَ الْحِکْمَۃَ وَ اٰتَیْنٰھُمْ مُّلْکًا عَظِیْمًا

(अन्निसा - 55)

देखो सूरह अन्निसा भाग - 5 अब विचार करके देख लो कि इन तीनों कार्यों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से लेशमात्र भी अनुकूलता नहीं। न वह पैदा हो कर यहूदियों के शत्रुओं का विनाश कर सके और न वह उनके लिए कोई नई शरीअत लाए और न उन्होंने बनी इस्राईल अथवा उनके भाइयों को बादशाहत प्रदान की। इंजील क्या थी वह केवल तौरात के कुछ आदेशों का सारांश है, जिससे पहले यहूदी अपरिचित नहीं थे। यद्यपि उसका पालन नहीं करते थे। यहूदी यद्यपि हज़रत मसीह के समय में

प्राय: दुष्कर्मी थे परन्तु फिर भी उनके हाथ में तौरात थी। अत: न्याय हमें इस गवाही के लिए विवश करता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कुछ समानता नहीं रखते और यह कहना कि जिस प्रकार हज़रत मूसा ने बनी इस्राईल को फ़िरऔन के हाथ से मुक्ति दी, इसी प्रकार हज़रत ईसा ने अपने अनुयायियों को शैतान के हाथ से मुक्ति दी। यह ऐसा बेहूदा (निरर्थक) विचार है कि कोई व्यक्ति यद्यपि कैसा ही दोष से नज़रें हटाने वाला हो इस विचार से अवगत होकर स्वयं को हंसने से रोक नहीं सकेगा। विरोधी के सामने इस बात का क्या सबूत है कि ईसा ने अवश्य अपने अनुयायियों को शैतान से इस प्रकार मुक्ति दे दी जैसा कि मूसा ने बनी इस्राईल को फ़िरऔन के अधिकार से मुक्ति दी। मूसा का बनी इस्राईल को फ़िरऔन के अधिकार से मुक्ति देना एक ऐतिहासिक बात है जिस का न कोई यहूदी इन्कार कर सकता है और न कोई ईसाई और न कोई मुसलमान न अग्निपूजक, न कोई हिन्दू। क्योंकि वह संसार की घटनाओं में से एक प्रसिद्ध घटना है परन्तु ईसा का अपने अनुयायियों को शैतान के हाथ से मुक्ति देना केवल आस्थागत बात है जो केवल ईसाइयों के विचारों से बाह्य तौर पर उसका कोई अस्तित्व नहीं जिसे देख कर प्रत्येक व्यक्ति व्यापक तौर पर मान सके कि हां ये लोग वास्तव में शैतान तथा प्रत्येक दुष्कर्म से मुक्ति पा गए हैं और इन का गिरोह प्रत्येक बुराई से पवित्र है। न उनमें व्यभिचार (ज़िना) है, न मदिरापान, न जुएबाज़ी और न रक्तपात अपितु समस्त धर्मों के पेशवा अपने-अपने विचार में अपनी-अपनी उम्मतों को शैतान के हाथ से मुक्ति देते हैं। इस मुक्ति देने के दावे से किस पेश्वा को इन्कार है। अब इस बात का निर्णय कौन करे कि दूसरों ने अपनी उम्मत को मुक्ति नहीं दी परन्तु मसीह ने दी। भविष्यवाणी में तो कोई स्पष्ट ऐतिहासिक घटना होनी चाहिए जो मूसा की घटना के समान हो न कि आस्थागत बात कि जो स्वयं प्रमाण चाहती है। स्पष्ट है कि भविष्यवाणी से केवल यह अभीष्ट होता है कि वह दूसरी के लिए बतौर तर्क के काम आ सके, किन्तु जब एक भविष्यवाणी स्वयं प्रमाण की मुहताज है तो किस काम की है। समानता ऐसी

बातों में चाहिए जो प्रसिद्ध घटनाओं में सम्मिलित हों न यह कि केवल अपनी आस्थाएं हों जो स्वयं सबूत की मुहताज हैं। भला न्याय की दृष्टि से तुम स्वयं ही विचार करो कि मूसा ने तो फ़िरऔन को उसकी सेना सहित तबाह करके विश्व को दिखा दिया कि उसने यहूदियों को उस अज़ाब और गिरफ़्त से मुक्ति दे दी जिसमें वे लोग लगभग चार सौ वर्ष से ग्रस्त चले आ रहे थे। तत्पश्चात् उनको बादशाहत भी दे दी, परन्तु हज़रत मसीह ने उस मुक्ति के यहूदियों को क्या लक्षण दिखाए और कौन सा देश उन के सुपुर्द किया और कब यहूदी उन पर ईमान लाए और कब उन्होंने मान लिया कि इस व्यक्ति ने मूसा की भांति हमें मुक्ति दे दी। और दाऊद का तख़्त दोबारा स्थापित किया। और मान लें यदि वे ईमान भी लाते तो भावी संसार की मुक्ति तो एक गुप्त मामला है और ऐसा गुप्त मामला कब इस योग्य है कि भविष्यवाणी में एक व्यापक बात की तरह उसको दिखाया जाए। जो व्यक्ति किसी नुबुव्वत के दावेदार पर ईमान लाता है, यह ईमान तो स्वयं अभी बहस का स्थान है। किसी को क्या खबर कि वह ईमान लाने से मुक्ति पाता है या उसका अंजाम अज़ाब एवं खुदा की पकड़ है। भविष्यवाणी में तो वे मामले प्रस्तुत करने चाहिएं जिन को खुले-खुले तौर पर संसार देख सके और पहचान सके। इस भविष्यवाणी का तो यह मतलब है कि वह नबी मूसा की भांति बनी इस्राईल को या उनके भाइयों को एक अज़ाब से मुक्ति दी थी। और न केवल मुक्ति देगा बल्कि उनको अपमान के दिनों के बाद हुकूमत भी प्रदान करेगा। जैसा कि मूसा ने बनी इस्राईल को चार सौ वर्ष के अपमान के बाद मुक्ति दी और फिर हुकूमत प्रदान की। और फिर उसी वहशी क़ौम को मूसा की भांति एक नई शरीअत से सभ्य बनाएगा और वह क़ौम बनी इस्राईल के भाई होंगे। अब देखो कि कैसी सफ़ाई और रोशनी से यह भविष्यवाणी सय्यिदिना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हक़ में पूरी हो गई है, और ऐसी सफ़ाई से पूरी हो गई है कि यदि उदाहरण के तौर पर एक हिन्दू के सामने भी जो सद्बुद्धि रखता हो ये दोनों ऐतिहासिक घटनाएं रखी जाएं अर्थात् जिस प्रकार मूसा ने अपनी क़ौम को फ़िरऔन के

हाथ से मुक्ति दी और फिर हुकूमत प्रदान की और फिर उन वहशी लोगों को जो ग़ुलामी (दासता) में जीवन व्यतीत कर रहे थे एक शरीअत प्रदान की, और जिस प्रकार सय्यिदिना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन ग़रीबों और कमज़ोरों को जो आप पर ईमान लाए थे अरब के खून पीने वाले (अत्याचारी) दरिन्दों से मुक्ति दी और हुकूमत प्रदान की। और फिर उस जंगली पशुओं जैसी हालत के बाद उनको एक शरीअत प्रदान की, तो निस्सन्देह वह हिन्दू दोनों घटनाओं को एक ही समान समझेगा और उनकी समरूपता की गवाही देगा। और हम स्वयं जब देखते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अनुयायियों को अरब के निर्दयी अत्याचारियों के हाथ से बचा कर अपने परों के नीचे ले लिया, और फिर उन लोगों को जो सैकड़ों वर्ष से जंगली पशुओं जैसी हालत में जीवन व्यतीत कर रहे थे एक नई शरीअत प्रदान की और अपमान एवं दासता के दिनों के बाद हुकूमत प्रदान की तो निस्सन्देह मूसा के युग का नक्शा हमारी आंखों के सामने आ जाता है और फिर थोड़ा और विचार करके जब हज़रत मूसा के खलीफ़ों के सिलसिले पर दृष्टि डालते हैं जो चौदह सौ वर्ष तक संसार में क़ायम रहा तो इस की तुलना में सिलसिला मुहम्मदिया भी हमें इसी मात्रा पर दिखाई देता है यहां तक कि हज़रत मूसा के खलीफ़ों के सिलसिले के अन्त में एक मसीह है जिस का नाम ईसा बिन मरयम है। इसी प्रकार इस सिलसिले के अन्त में भी जो मात्रा और समय में मूस्वी सिलसिले के समान है एक मसीह दिखाई देता है और दोनों सिलसिले एक दूसरे की तुलना पर ऐसे दिखाई देते हैं कि जिस प्रकार एक इन्सान की दो टांगें एक दूसरी के सामने होती हैं। अत: इस से बढ़कर समरूपता के क्या मायने हैं। और यही वास्तविकता यह आयत व्यक्त करती है-

إِنَّآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا

(अलमुज़्ज़म्मिल - 16)

और इस स्थान से प्रकट होता है कि इस उम्मत के अन्तिम युग में मसीह के अवतरित होने की क्यों आवश्यकता थी, अर्थात् यही आवश्यकता थी जब

कि ख़ुदा तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मसील (समरूप) ठहराया और ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया के सिलसिले को ख़िलाफ़त-ए-मूसविया के सिलसिले का मसील नियुक्त किया। अत: जिस प्रकार मूस्वी सिलसिला मूसा से आरंभ हुआ और मसीह पर समाप्त हुआ। यह सिलसिला भी ऐसा ही चाहिए था। अत: मूसा के स्थान पर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नियुक्त किए गए और फिर सिलसिले के अन्त में जो मुकाबले पर हिसाब की दृष्टि से चौदहवीं सदी थी ऐसा व्यक्ति मसीह के नाम से प्रकट किया गया जो क़ुरैश में से नहीं था। जिस प्रकार हज़रत ईसा बिन मरयम बाप की दृष्टि से बनी इस्राईल में से नहीं था। अत: इस उम्मत के अन्तिम युग में मसीह के आने की आवश्यकता यही है ताकि दोनों सिलसिलों का प्रथम और अन्तिम परस्पर समानता हो जाए और जैसा कि एक सिलसिला चौदह सौ वर्ष की अवधि तक मूसा से लेकर ईसा बिन मरयम तक समाप्त हुआ ऐसा ही दूसरा सिलसिला जो ख़ुदा के कलाम में उसके समान खड़ा किया गया है। इसी चौदह सौ वर्ष की अवधि तक मूसा के मसील से लेकर ईसा बिन मरयम के मसील तक समाप्त हुआ। यही ख़ुदा का इरादा था जिसके साथ यह बात भी दृष्टिगत है कि जैसा कि मूस्वी सिलसिले का ईसा उस सलीब पर विजयी हुआ था जो यहूदियों ने खड़ा किया था, ऐसा ही मुहम्मदी सिलसिले के ईसा के लिए यह प्रारब्ध था कि वह उस सलीब पर विजयी हो जो ईसाइयों ने खड़ा किया है। निष्कर्ष यह कि इस उम्मत में भी पूरा मुक़ाबला दिखाने के लिए अंतिम मुहम्मदी ख़लीफ़ाओं में से ईसा के नाम पर आना आवश्यक था। जैसा कि पहले सिलसिले में मूसा के नाम पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित हुए और जिस प्रकार यह इस्लामी सिलसिला मूसा के मसील से आरंभ हुआ इसी प्रकार आवश्यक था कि ईसा के मसील पर इसका अन्त होता, ताकि ये दोनों सिलसिले अर्थात् मूस्वी सिलसिला और मुहम्मदी सिलसिला परस्पर समान हो जाते। अत: ऐसा ही प्रकटन में आया, और इसी वास्तविकता को समझने पर समस्त झगड़ों का फ़ैसला निर्भर है। जो बात ख़ुदा

ने चाही मनुष्य उसे अस्वीकार नहीं कर सकता। ख़ुदा ने समस्त संसार को अपनी क़ुदरत के चमत्कार दिखाने के लिए इब्राहीम की सन्तान से दो सिलसिले स्थापित किए। प्रथम मूस्वी सिलसिला जो बनी इस्राईल में स्थापित किया गया और एक ऐसे व्यक्ति पर समाप्त किया गया जो बनी इस्राईल में से नहीं था अर्थात् ईसा मसीह। और ईसा मसीह के दो गिरोह दुश्मन थे। एक आन्तरिक गिरोह अर्थात् वे यहूदी जिन्होंने उसको सलीब पर चढ़ा कर मारना चाहा जिनकी ओर सूरह फ़ातिहा में अर्थात् आयत غير المغضوب عليهم में संकेत है। द्वितीय – बाह्य दुश्मन, अर्थात् वे लोग जो रोम की क़ौम में से द्वेष रखने वाले थे, जिनका विचार था कि यह व्यक्ति शासन के धर्म और प्रताप का दुश्मन है। ऐसा ही ख़ुदा ने अन्तिम मसीह के लिए दो दुश्मन ठहराए। एक वही जिन को उसने यहूदी का नाम दिया। वे असल यहूदी नहीं थे। जिस प्रकार यह मसीह जो आसमान पर ईसा बिन मरयम कहलाता है वास्तव में ईसा बिन मरयम नहीं बल्कि उसका मसील (समरूप) है। दूसरे उस मसीह के वे दुश्मन हैं जो सलीब पर अतिशयोक्ति करते हैं और सलीब की विजय चाहते हैं। किन्तु इस मसीह की पहले मसीह की भांति आसमान पर बादशाहत है, पृथ्वी की हुकूमतों से कुछ संबंध नहीं। हां जिस प्रकार रोम की क़ौम में अन्तत: मसीही धर्म प्रविष्ट हो गया, यहां भी ऐसा ही होगा।

अब सारांश यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की इंजील में यह दावा नहीं कि मैं मूसा के समान भेजा गया हूं और न ऐसा दावा वह कर सकते थे, क्योंकि वह मूस्वी सिलसिले के अधीन उस सिलसिले के अन्तिम ख़लीफ़ा थे। इसलिए वह मूसा के मसील किसी प्रकार हो सकते थे। मसील तो वह था जिसने मूसा की भांति अमन दिया और शासन दिया और शरीअत दी। फिर मूसा की भांति चौदह सौ वर्ष का एक सिलसिला स्थापित किया और स्वयं मूसा बन कर अपने ख़लीफ़ाओं के अन्तिम सिलसिले में मूसा की भांति एक मसीह की ख़ुशख़बरी दी, और जिस प्रकार मूसा ने तौरात में लिखा कि यहूदा का शासन जाता रहेगा जब तक मसीह न आए। इसी प्रकार मूसा का मसील

(समरूप) मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐसे समय में मुहम्मदी सिलसिले का मसीह आएगा, जबकि रूमी शक्तियों के साथ इस्लामी शासन मुक़ाबला नहीं कर सकेगा तथा कमज़ोर, अधम और पराजित हो जाएगा और पृथ्वी पर ऐसा शासन स्थापित होगा जिसके मुकाबले पर कोई हाथ खड़ा नहीं हो सकेगा। मसीह ने सम्पूर्ण इंजील में कहीं दावा नहीं किया कि मैं मूसा के समान हूं, परन्तु क़ुर्आन बुलन्द आवाज़ से कहता है -

اِنَّـآ اَرۡسَـلۡنَآ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ اَرۡسَـلۡنَآ اِلٰى فِرۡعَـوۡنَ رَسُـوۡلًا

(अल मुज़म्मिल – 16)

अर्थात् हम ने इस रसूल को हे अरब के बेरहम अत्याचारियो! उसी रसूल के समान भेजा है जो तुम से पहले फ़िरऔन की ओर भेजा गया था। अत: स्पष्ट है कि यदि यह भविष्यवाणी जो इतने ज़ोर-शोर से पवित्र क़ुर्आन में लिखी गई है ख़ुदा तआला की ओर से न होती तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नऊज़ुबिल्लाह उस झूठे दावे के साथ कि स्वयं को मूसा का मसील ठहरा लिया अपने विरोधियों पर कभी विजयी न हो सकते। परन्तु इतिहास गवाही दे रहा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने विरोधियों पर वह महान विजय प्राप्त हुई कि सच्चे नबी के अतिरिक्त अन्य को हरगिज़ प्राप्त नहीं हो सकती थी। अत: समरूपता इस का नाम है जिसके समर्थन में दोनों ओर से ऐतिहासिक घटनाएं इस ज़ोर-शोर से गवाही दे रही हैं कि वे दोनों घटनाएं व्यापक तौर पर दिखाई देती हैं। और मूसा के ये तीन कार्य कि विरोधी गिरोह को जो शान्ति के लिए हानिप्रद था नष्ट करना और फिर अपने गिरोह को शासन और दौलत प्रदान करना तथा उन्हें शरीअत देना आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्हीं तीन कार्यों के साथ ऐसे समान सिद्ध हो गए कि मानो वे दोनों कार्य एक ही हैं। यह एक ऐसी समरूपता है जिस से ईमान सुदृढ़ होता है और विश्वास करना पड़ता है कि ये दोनों किताबें ख़ुदा तआला की ओर से हैं। सच तो यह है कि इस भविष्यवाणी से ख़ुदा के होने का पता लगता है कि वह कैसा सामर्थ्यवान और शक्तिशाली ख़ुदा है कि उसके आगे कोई बात अनहोनी

नहीं। इसी स्थान से सत्याभिलाषी के लिए अटल विश्वास की श्रेणी तक यह मारिफ़त पहुंच जाती है कि आने वाला मसीह मौऊद उम्मते मुहम्मदिया में है न कि वही ख़ुदा का नबी ईसा दोबारा संसार में आकर मुहम्मदी रिसालत के ख़ातमियत के मामले को संदिग्ध कर देगा और नऊज़ुबिल्लाह فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ का झूठ सिद्ध करेगा। जिस व्यक्ति के दिल में सच की खोज है वह समझ सकता है कि पवित्र क़ुर्आन के अनुसार कई मनुष्यों का बुरूज़ी तौर पर आना प्रारब्ध था- (1) प्रथम मूसा के मसील का अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जैसा कि आयत-

اِنَّـآ اَرْسَـلْنَآ اِلَيْكُـمْ رَسُـوْلًا ۙ شَـاهِدًا عَلَيْكُـمْ كَمَـآ اَرْسَـلْنَآ اِلٰى فِرْعَـوْنَ رَسُـوْلًا (अल मुज़्ज़म्मिल – 16)

से सिद्ध है।

(2) द्वितीय - मूसा के खलीफ़ाओं के समरूपों का जिन में मसीह का समरूप भी सम्मिलित है। जैसा कि आयत –

كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِن قَبْلِهِمْ (अन्नूर – 56)

से सिद्ध है।

(3) तृतीय – आम सहाबा के मसीलों का जैसा कि आयत-

وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ط (अलजुमुआ -4)

से सिद्ध है।

(4) चतुर्थ - उन यहूदियों के मसीलों का जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर कुफ्र का फ़त्वा लिखा और उन्हें क़त्ल करने के लिए फ़त्वे दिए और उन्हें कष्ट देने और क़त्ल करने के लिए प्रयास किया जैसा कि आयत غير المغضـوب عليـهم में जो दुआ सिखाई गई है उस से स्पष्ट तौर पर प्रतीत हो रहा है.

(5) पंचम - यहूदियों के बादशाहों के उन मसीलों का जो इस्लाम में पैदा हुए, जैसा कि इन दो परस्पर सामने की आयतों से जिन के शब्द परस्पर मिलते

हैं समझा जाता है और वह ये हैं।

इस्लाम के बादशाहों के बारे में	यहूदियों के बादशाहों के बारे में
ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِی الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَیْفَ تَعْمَلُوْنَ (यूनुस -15)	قَالَ عَسٰی رَبُّكُمْ اَنْ یُّهْلِكَ عَدُوَّ كُمْ وَ یَسْتَخْلِفَكُمْ فِی الْاَرْضِ فَیَنْظُرَ كَیْفَ تَعْمَلُوْنَ (सूरह आराफ़ - 130)

ये दो वाक्य अर्थात् فَیَنْظُرَ كَیْفَ تَعْمَلُوْنَ जो यहूदियों के बादशाहों के हक़ में है और उस के मुकाबले पर दूसरा वाक्य अर्थात् لِنَنْظُرَ كَیْفَ تَعْمَلُوْنَ जो मुसलमानों के बादशाहों के पक्ष में है। स्पष्ट बता रहे हैं कि इन दोनों क़ौमों के बादशाहों की घटनाएं भी परस्पर समान होंगी। अतः ऐसा ही प्रकटन में आया। और जिस प्रकार यहूदी बादशाहों से लज्जाजनक गृह-युद्ध प्रकटन में आए और अधिकतर के चरित्र भी ख़राब हो गए, यहां तक कि उनमें से कुछ व्यभिचार, मदिरापान, रक्तपात और अत्यन्त निर्दयता में कहावत बन गए। यही मार्ग मुसलमानों के अधिकतर बादशाहों ने अपना लिए। हां कुछ यहूदियों के नेक और न्यायवान बादशाहों की भांति नेक और न्यायवान बादशाह भी बने। जैसा कि उमर बिन अब्दुलअज़ीज़।

(6) षष्टम - उन बादशाहों के मसीलों का पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है जिन्होंने यहूदियों के बादशाहों के व्यभिचारों के समय उन के देशों पर क़ब्ज़ा किया। जैसा कि आयत –

غُلِبَتِ الرُّوْمُ فِیْۤ اَدْنَی الْاَرْضِ وَ هُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَیَغْلِبُوْنَ

(अरूम – 3,4)

से प्रकट होता है। हदीसों से सिद्ध है कि रूम से अभिप्राय नसारा (ईसाई) हैं और वे अन्तिम युग में इस्लामी बादशाहों के देश उनके दुराचारों के समय में उसी प्रकार ईसाइयों के क़ब्ज़े में आ जाएंगे जैसा कि इस्राईली बादशाहों के दुष्कर्मों के समय रूमी शासन ने उनका देश दबा लिया था। अतः स्पष्ट हो कि

यह भविष्यवाणी हमारे इस युग में पूरी हो गई। उदारहणतया रूस ने जो कुछ रूमी शासन को ख़ुदा की अनादि इच्छा से क्षति पहुंचाई वह छिपी हुई नहीं और इस आयत में जबकि अन्य प्रकार से अर्थ किए जाएं विजयी होने के समय में रूम से अभिप्राय रूम के क़ैसर का खानदान नहीं क्योंकि वह खानदान इस्लाम के हाथ से नष्ट हो चुका बल्कि इस स्थान पर बुरूज़ी तौर पर रूम से रूस तथा अन्य ईसाई शासन अभिप्राय हैं जो ईसाई धर्म रखते हैं। यह आयत प्रथम उस अवसर पर उतरी जबकि ईरान के बादशाह किस्रा ने कुछ सीमाओं पर युद्ध करके रूम के बादशाह क़ैसर को पराजित कर दिया था। फिर जब इस भविष्यवाणी के अनुसार بضع سنين

(3 से 9 वर्ष की अवधि) में रूम का बादशाह क़ैसर ईरान के बादशाह पर विजयी हो गया तो फिर यह आयत उतरी कि –

غُلِبَتِ الرُّوْمُ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَ هُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ (अर्रूम - 3,4)

जिसका मतलब यह था कि रूमी शासन अब तो विजयी हो गया है परन्तु फिर بِضْعِ سِنِين में इस्लाम के हाथ से पराजित होंगे। किन्तु इसके बावजूद कि दूसरी क़िरअत में غُلِبَتْ में भूतकाल मालूम था और سَيَغْلِبُون में मुज़ारिअ मज्हूल था परन्तु फिर भी पहली क़िरअत जिसमें غُلِبَتْ की विभक्ति भूतकाल मज्हूल थी और سَيَغْلِبُون मुज़ारिऊ मालूम था की तिलावत निरस्त नहीं हुई बल्कि इसी प्रकार जिब्राईल अलैहिस्सलाम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पवित्र क़ुर्आन सुनाते रहे जिस से ख़ुदा की उस सुन्नत के अनुसार जो पवित्र क़ुर्आन के उतरने में है यह सिद्ध हुआ कि एक बार पुन: प्रारब्ध है कि ईसाई शासन रूम की कुछ सीमाओं को पुन: अपने क़ब्ज़े में कर लेगा। इसी कारण हदीस में आया है कि मसीह के समय में संसार में सर्वाधिक रूमी होंगे अर्थात् ईसाई।

इस लेख से हमारा उद्देश्य यह है कि क़ुर्आन और हदीसों में रूम का शब्द भी बुरूज़ी (समरूपता के) तौर पर आया है। अर्थात् रूम से असल रूम अभिप्राय नहीं बल्कि ईसाई अभिप्राय हैं। अत: इस स्थान पर छ: बुरूज़ हैं जिन

का पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है। अत: बुद्धिमान सोच सकता है कि जब सिलसिला मुहम्मदिया में मूसा नाम भी बुरूज़ी (समरूपता के) तौर पर रखा गया है और मुहम्मद महदी भी बुरूज़ी तौर पर और मुसलमानों का नाम यहूदी भी बुरूज़ी तौर पर और ईसाई शासन के लिए रूम का नाम भी बुरूज़ी तौर पर। तो फिर इन समस्त तौर पर ईसा बिन मरयम ही होना सर्वथा अनुचित है★ और ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में बार-बार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर इसलिए बल दिया है ताकि भविष्यकाल में ऐसे लोगों पर हुज्जत हो जाए जो अकारण इस धोखे में पड़ने वाले थे कि मानो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर जीवित मौजूद है और मसीह के जीवित रहने पर उन के पास कोई सबूत नहीं और जो सबूत प्रस्तुत करते हैं उन से प्रकट होता है कि उन पर चरम स्तर की मूर्खता विजयी हो गई है। उदाहरणतया वे कहते हैं कि आयत

وَ اِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ (अन्निसा – 160)

हज़रत मसीह के जीवित रहने को सिद्ध करती है। और उनकी मृत्यु से पहले समस्त अहले किताब उन पर ईमान ले आएंगे। किन्तु अफ़सोस कि वे

★**हाशिया :-** सही बुखारी में जो यह हदीस है कि ईसा बिन मरयम के अतिरिक्त कोई शैतान के स्पर्श से सुरक्षित नहीं रहा। इस स्थान पर फ़त्हुलबारी में और विद्वान ज़मख़्शरी ने यह लिखा है कि इस स्थान पर समस्त नबियों में से केवल ईसा को ही मासूम ठहराना पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों के विपरीत है। ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में यह कहकर कि

اِنَّ عِبَادِیۡ لَیۡسَ لَكَ عَلَیۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ (बनी इस्राईल - 66)

समस्त नबियों को मासूम ठहराया है। फिर ईसा बिन मरयम की क्या विशेषता है। इसलिए इस हदीस के ये अर्थ हैं कि सब वे लोग जो बुरूज़ी तौर पर ईसा बिन मरयम के रंग में हैं। अर्थात् रूहुल क़ुदुस से हिस्सा लेने वाले और ख़ुदा से पवित्र संबंध रखने वाले वे सब मासूम हैं और सब ईसा बिन मरयम ही हैं और हज़रत ईसा की मासूमियत को विशेष तौर पर इसलिए वर्णन किया गया है कि यहूदियों का यह भी आरोप था कि हज़रत ईसा का जन्म शैतान के स्पर्श के साथ है अर्थात् मरयम का गर्भ नऊज़ुबिल्लाह वैध तौर पर नहीं हुआ था, जिस से हज़रत ईसा पैदा हुए। अत: अवश्य था कि इस गंदे आरोप को दूर किया जाता। (इसी से)

अपने स्वयं निर्मित अर्थों से क़ुर्आन में मतभेद डालना चाहते हैं। जिस हालत में अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَ اَلۡقَیۡنَا بَیۡنَہُمُ الۡعَدَاوَۃَ وَ الۡبَغۡضَآءَ اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَۃِ ؕ

(अलमाइदा – 65)

जिसके अर्थ ये हैं कि यहूदियों और ईसाइयों में क़यामत तक बैर और दुश्मनी रहेगी। अत: अब बताओ कि जब समस्त यहूदी क़यामत से पहले ही हज़रत मसीह पर ईमान ले आएंगे तो फिर क़यामत तक बैर और दुश्मनी कौन लोग करेंगे। जब यहूदी न रहे तथा सब ईमान ले आए तो फिर बैर और दुश्मनी के लिए कौन सा अवसर एवं स्थान रहा और ऐसा ही अल्लाह तआला फ़रमाता है

فَاَغۡرَیۡنَا بَیۡنَہُمُ الۡعَدَاوَۃَ وَ الۡبَغۡضَآءَ اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَۃِ ؕ

(अलमाइदा – 15)

इसके भी यही अर्थ हैं जो ऊपर गुज़र चुके और यही आरोप है जो ऊपर वर्णन हो चुका और ऐसा ही अल्लाह तआला फ़रमाता है –

وَ جَاعِلُ الَّذِیۡنَ اتَّبَعُوۡکَ فَوۡقَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَۃِ ۚ (आलेइमरान – 56)

इस स्थान पर کَفَـرُوا से अभिप्राय भी यहूदी हैं। क्योंकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम केवल यहूदयों के लिए आए थे और इस आयत में वादा है कि हज़रत मसीह को मानने वाले यहूदियों पर क़यामत तक विजयी रहेंगे। अब बताओ कि जब इन अर्थों की दृष्टि से जो हमारे विरोधी आयत اِنۡ مِّـنۡ اَهۡـلِ الۡكِتٰـبِ के करते हैं समस्त यहूदी हज़रत ईसा पर ईमान ले आएंगे तो फिर ये आयतें कैसे सही ठहर सकती हैं कि यहूदियों और ईसाइयों की क़यामत तक परस्पर दुश्मनी रहेगी तथा क़यामत तक यहूदी ऐसे फ़िर्क़ों से पराजित रहेंगे जो हज़रत मसीह को सच्चा समझते होंगे। ऐसा ही यदि मान लिया जाए कि हज़रत मसीह जीवित पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर चले गए। तो फिर आयत فلمّـا توفّيتنى कैसे सही ठहर सकती है जिसके अर्थ ये हैं कि हज़रत मसीह की मृत्यु के पश्चात् ईसाई बिगड़ गए, जब तक कि वह जीवित थे ईसाई नहीं बिगड़े और फिर इस आयत

के क्या अर्थ हो सकते हैं कि-

(आलआराफ़ – 26) فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ

कि तुम पृथ्वी पर ही जीवन व्यतीत करोगे और पृथ्वी पर ही मरोगे। क्या वह व्यक्ति जो अठारह सौ वर्ष से आसमान पर विरोधियों के कथनानुसार जीवन व्यतीत कर रहा है वह मनुष्यों के प्रकारों में से नहीं है? यदि मसीह मनुष्य है तो नऊज़ुबिल्लाह मसीह के इतनी लम्बी अवधि तक आसमान पर ठहरने से यह आयत झूठी ठहरती है और यदि हमारे विरोधियों के नज़दीक मनुष्य नहीं है बल्कि ख़ुदा है तो ऐसी आस्था से वे स्वयं मुसलमान नहीं ठहर सकते। फिर पवित्र क़ुर्आन की यह आयत कि- اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَاء (अन्नहल – 26) जिसके मायने ये हैं कि ख़ुदा के अतिरिक्त जिन लोगों की तुम इबादत (उपासना) करते हो वे सब मर चुके हैं उनमें से कोई भी जीवित नहीं, स्पष्ट बता रही है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं और फिर यह आयत कि

(आले इमरान – 145) وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ

बुलन्द आवाज़ से गवाही दे रही है कि हज़रत मसीह मृत्यु पा चुके हैं। क्योंक यह आयत वह महान आयत है जिस पर एक लाख चौबीस हज़ार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इज्मा (सर्वसम्मति) करके इक़रार किया था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले सब नबी मृत्यु पा चुके हैं। जैसा कि हम इस से पहले इसी पुस्तक में विस्तारपूर्वक वर्णन कर चुके हैं। फिर जब हम हदीसों की ओर आते हैं तो उन से भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु ही सिद्ध होती है। उदाहरण के तौर पर मेराज की हदीस को देखो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात में★ हज़रत मसीह को मृत्यु पा चुके नबियों में देखा है। यदि वह आसमान पर जीवित होते तो मृत्यु पा चुकी रूहों में हरगिज़ न देखे जाते। यदि कहो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

★हाशिया :- मेराज के लिए रात इसलिए निर्धारित की गई कि मेराज कश्फ़ का प्रकार था और कश्फ़ एवं स्वप्न के लिए रात उचित है। यदि यह जागने की अवस्था का मामला होता तो दिन उचित होता। इसी से।

वसल्लम भी जीवित थे, तो इसका अन्तर यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस अवलोकन (मुशाहद:) के समय इस अवस्था में नहीं थे बल्कि जिस प्रकार सोया हुआ आदमी दूसरी अवस्था में चला जाता है और उस हालत में कभी मृत्यु प्राप्त लोगों से भी मुलाकात करता है। इसी प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उस कश्फ की अवस्था में इस संसार से मृत्यु प्राप्त लोगों के आदेश में थे। ऐसा ही हदीस से सिद्ध होता है कि ईसा अलैहिस्सलाम ने एक सौ बीस वर्ष आयु पाई है, परन्तु प्रत्येक को मालूम है कि सलीब की घटना उस समय हज़रत ईसा के सामने समय आई थी जब आप की आयु तेतीस वर्ष छ: माह की थी। यदि यह कहा जाए कि शेष आयु उतरने के बाद पूरी कर लेंगे तो यह दावा हदीस के शब्दों के विरुद्ध है। इसके अतिरिक्त हदीस से केवल इतना ज्ञात होता है कि मसीह मौऊद अपने दावे के बाद चालीस वर्ष संसार में रहेगा। तो इस प्रकार से तेतीस वर्ष मिलाने से कुल तिहत्तर वर्ष हुए न एक सौ बीस वर्ष। हालांकि हदीस में यह है कि उनकी आयु एक सौ बीस वर्ष हुई।

यदि यह कहो कि हमारे समान ईसाई भी मसीह के दोबारा आने के प्रतीक्षक हैं तो इसका उत्तर यह है जैसा कि अभी हम वर्णन कर चुके हैं मसीह ने स्वयं अपने दोबारा आने को इल्यास नबी के दोबारा आने से समानता दी है। जैसा कि इंजील मती 17/10,11,12 से यही सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त ईसाइयों में से कुछ फ़िर्के स्वयं इस बात को मानते हैं कि मसीह का दोबारा आना इल्यास नबी की भांति बुरूज़ी तौर पर है। अत: "न्यूलाइफ़ आफ़ जीज़िस" जिल्द प्रथम पृष्ठ – 410 लेखक डी.एफ.स्ट्रास में यह इबारत है-

(जर्मनी के कुछ ईसाई अन्वेषकों की राय कि मसीह सलीब पर नहीं मरा)

Crucifiction they maintain, even if the feet as well as the hands are supposed to have been nailed occasions but very little loss of blood. It kills therefore only very slowly by convulsions

produced by the straining of the limbs or by gradual starvation. So if Jesus supposed indeed to be dead, had been taken down from the cross after about six hours, there is every probability of his supposed death having been only a death-like swoon from which after the descent from the cross Jesus recovered again in the cool cavern covered as he was with healing ointments and strongly scented spices. On this head it is usual to appeal to an account in Josephus, who says that on one occasion, when he was returning from a military recognizance, on which he had been sent, he found several Jewish prisoners who had been crucified. He saw among them three acquaintances whom he begged Titus to give to him. They were immediately taken down and carefully attended to, one was really saved, but two others could not be recovered.

(A new life of Jesus by D. F. Strauss. Vol I. page 410)

अनुवाद- "वे ये तर्क देते हैं कि यद्यपि सलीब के समय हाथ और पांव दोनों में कीलें मारी जाएं फिर भी मनुष्य के शरीर से बहुत थोड़ा ख़ून निकलता है। इसलिए लोग सलीब पर धीरे-धीरे अवयवों पर ज़ोर पड़ने के कारण अकड़न में ग्रस्त होकर मर जाते हैं या भूख से मर जाते हैं। अत: यदि मान भी लिया जाए कि लगभग छ: घंटे सलीब पर रहने के बाद यसू जब उतारा गया तो वह मरा हुआ था। तब भी अत्यन्त ही निश्चित बात यह है कि वह केवल एक

मौत की सी बेहोशी थी और जब स्वस्थ करने वाली मरहमें और अत्यन्त ही सुगंधित दवाइयां लगाकर उसे गुफ़ा की ठण्डी जगह में रखा गया तो उसकी बेहोशी (मूर्च्छा) दूर हुई। इस दावे के सबूत में सामान्यतया यूसफ़स की घटना प्रस्तुत की जाती है जहां यूसफ़स ने लिखा है कि मैं एक बार एक फौज के काम से वापस आ रहा था तो मार्ग में मैंने देखा कि कई एक यहूदी क़ैदी सलीब पर लटके हुए हैं। उनमें से मैंने पहचाना कि तीन मेरे परिचित थे। अतः मैंने टायटस (समय का हाकिम) से उनके उतार लेने की अनुमति प्राप्त की और उन्हें तुरन्त उतार कर उनकी देखभाल की तो अन्ततः एक स्वस्थ हो गया परन्तु शेष दो मर गए।"

और पुस्तक 'मार्डन डाउट एण्ड क्रिश्चियन बिलीफ़'* के पृष्ठ 455,457,348 में यह इबारत है-

> The former of these hypotheses that of apparent death, was employed by the old Rationalists, and more recently by Schleiermacher in his life of Christ Schleiermacher's supposition. That Jesus afterwards lived for a time with the disciples and then retired into entire solitude for his second death.

(Modern doubt & christian belief. P 347-455-457)

अनुवाद- "शलीर मेख़र और प्राचीन अन्वेषकों का यह मत था कि यसू सलीब पर नहीं मरा बल्कि प्रत्यक्षतः मौत की सी अवस्था हो गई थी और क़ब्र से निकलने के पश्चात् कुछ दिनों तक अपने हवारियों के साथ घूमता रहा और फिर दूसरी अर्थात् वास्तविक मृत्यु के लिए किसी पृथक स्थान की ओर प्रस्थान कर गया।"

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सलीबी मौत से बचने के संबंध में एक भविष्यवाणी यसइया बाब - 53 में इस प्रकार से है-

ואת - דורד מי ישוחח כי נגזר

و ایت دورد می یسوحیح کی نجزار

और उसकी शेष आयु की जो बात है अत: कौन यात्रा कर के जायेगा क्योंकि वह

מארץ חיים: ויתן את רשעים

مے ایریض حییم ویثین ایت رشاعیم

अलग किया गया है कबीलों की भूमि से और की गई दुष्टों के मध्य उसकी क़ब्र

ברו ואת עשיר במתיו

★قبرو وایت عاسیر بمو تایو

परन्तु वह धनवान लोगों के साथ हुआ अपने मरने में

אם - תשים אשם נפשו

ام تاسیم آشام نفشو

जबकि तू पाप के बदले में उसके प्राण को देगा (तू बच जाएगा)

יראה זרע יריך ימים

یرایه زیرع یے اریک یا میم

और सन्तान वाला होगा। उसकी आयु लाबी की जाएगी

מעמ נפשו יראה ישבע

مے عمل نفشو یرایه یسباع

और अपने प्राण का नितान्त कष्ट देखेगा (अर्थात सलीब पर बेहोशी) परन्तु वह

★**हाशिया :-** इस आयत का मतलब यह है कि मसीह को सलीब से उतार पर दण्ड प्राप्त लोगों की तरह क़ब्र में रखा जाएगा। परन्तु चूंकि वह वास्तविक तौर पर मुर्दा नहीं होगा। इसलिए उस क़ब्र में से निकल आएगा और अन्ततः प्रिय एवं सम्माननीय लोगों में उसकी क़ब्र होगी और यही बात प्रकटन में आई। क्योंकि श्रीनगर मुहल्ला ख़ानयार में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की इस स्थान पर क़ब्र है जहां कुछ आदरणीय सादात और ख़ुदा के वली दफ़्न हैं। इसी से।

अब संक्षिप्त तौर पर हम उन तर्कों का उल्लेख करते हैं जिन का हमने इस पुस्तक और अपनी दूसरी पुस्तकों में अपने मसीह मौऊद के दावे के संबंध में वर्णन किया है और वे ये हैं-

(1) प्रथम इस तर्क से मेरा मसीह मौऊद होना सिद्ध होता है कि जैसा कि हम अपनी पुस्तकों में सिद्ध कर चुके हैं। याजूज-माजूज के निकलने और उनकी विजय तथा समृद्धि का युग आ गया है और पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है कि ख़ुदा के समस्त वादे जिनमें से मसीह मौऊद का संसार में प्रकट होना है। या याजूज-माजूज के प्रकटन और समृद्धि के बाद प्रकट हो जाएंगे जैसा कि यह निम्नलिखित आयत व्यापक तौर पर इसी को सिद्ध करती है-

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ۝ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ۝ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ

(अलअंबिया - 96 से 98)

अर्थात् जिन लोगों को हमने तबाह किया है उनके लिए हमने हराम (अवैध) कर दिया है कि दोबारा संसार में आएं। अर्थात् समरूप के तौर पर भी वे संसार में नहीं आ सकते जब तक वे दिन न आएं कि क़ौम याजूज-माजूज पृथ्वी पर विजयी हो जाए और हर प्रकार से उनको विजय प्राप्त हो जाए★ क्योंकि मनुष्य की पार्थिव शक्तियों की पूर्ण उन्नति याजूज माजूज पर समाप्त होती है और इस प्रकार से मनुष्य की ज़मीनी शक्तियां पोषण और विकास जो प्रारंभ से होता चला

★हाशिया :- ख़ुदा तआला के अद्‌भुत रहस्यों में से एक मामला बुरूज़ का है जो ख़ुदा तआला की पवित्र किताबों में जिसका वर्णन पाया जाता है। ख़ुदा की पवित्र किताबों में कुछ पहले नबियों के बारे में ये भविष्यवाणियां हैं कि वे दोबारा संसार में आएंगे और फिर वे भविष्यवाणियां इस प्रकार से पूरी हुईं कि जब कोई और नबी संसार में आया तो उस समय के पैग़म्बर ने ख़बर दी कि यह वही नबी है जिसके दोबारा आने का वादा था। विचित्रतम बात यह है कि यह नहीं कहा गया कि यह आने वाला उस पहले नबी का मसील (समरूप) है बल्कि यही कहा गया कि वही पहला नबी जिसके दोबारा आने की ख़बर दी गई थी संसार में आ गया है। उदाहरणतया जैसा कि इल्यास नबी के दोबारा आने का वादा था और

आया है वह केवल याजूज माजूज* के अस्तित्व से पूर्णता को पहुंचाता है। अत: याजूज माजूज के प्रकट होने का युग रज्अते बुरूज़ी के युग पर अटल तर्क है, क्योंकि याजूज माजूज का प्रकटन युग के दौरानी होने पर तर्क है और युग का

शेष हाशिया - मलाकी नबी ने अपनी किताब में ख़बर दी थी कि वह दोबारा संसार में आएगा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इल्यास जिसके दोबारा आने का वादा था वह यूहन्ना अर्थात् यह्या है। जैसा कि इंजील मती 17 अध्याय 10,11,12 में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इल्यास दोबारा संसार में आ गया, परन्तु लोगों ने उसे नहीं पहचाना और इस से अभिप्राय हज़रत मसीह ने यह्या नबी लिया अर्थात् वही इल्यास हैं। अब यह भविष्यवाणी बड़ी बारीक जा ठहरती है कि यह्या नबी जिसका दूसरा नाम यूहन्ना है इल्यास क्योंकर हो गया। यदि इल्यास को मसील कहते तब भी एक बात थी, परन्तु मलाकी की किताब में मसील का आना नहीं लिखा बल्कि स्वयं इल्यास नबी का दोबारा संसार में आना लिखा है, और हज़रत मसीह ने भी इंजील में जब ऐतराज़ किया गया कि इल्यास से पहले मसीह कैसे आ गया? तो मसील के शब्द को इस्तेमाल नहीं किया बल्कि इंजील मती अध्याय 17 में यही कहा है कि इल्यास तो आ गया परन्तु उन लोगों ने उसको नहीं पहचाना। इसी प्राकर शियों में भी कथन है कि अली और हसन, हुसैन दोबारा संसार में आएंगे और ऐसे ही कथन हिन्दुओं में बड़ी प्रचुरता से पाए जाते हैं, क्योंकि वे अपने पहले अवतारों के नामों पर भविष्य में आने वाले अवतारों की प्रतीक्षा करते रहे हैं और अब भी अन्तिम अवतार को जिसको कल्की अवतार का नाम देते हैं कृष्ण का अवतार मानते हैं और कहते हैं कि जैसा कि कृष्ण की विशेषताओं में से रुद्रगोपाल है अर्थात् 'सुअरों का वध करने वाला और गायों को पालने वाला,' ऐसा ही कल्की अवतार होगा। यह एक कृष्ण की विशेषताओं के संबंध में रूपक है कि वह दरिन्दों का वध करता था अर्थात् सुअरों और भेड़ियों को और गायों को पालता था अर्थात् नेक लोगों को। और विचित्र बात यह है कि मुसलमान तथा ईसाई भी आने वाले मसीह के बारे में यही विशेषताएं रुद्रगोपाल की जो कल्की अवतार की विशेषता है स्थापित करते हैं और कहते हैं कि वह सुअरों का वध करेगा और बैल उसके समय में प्रशस्ति योग्य होंगे। यहां यह अभिप्राय नहीं है कि वह अपने हाथ से सुअरों का वध करेगा या गायों की रक्षा करेगा, बल्कि अभिप्राय यह है कि समय का दौर ही ऐसा आ जाएगा और आसमानी वायु उद्दण्डों को नष्ट करती जाएगी तथा नेक बढ़ेंगे, फूलेंगे और पृथ्वी को भर देंगे। तब उस मसीह पर रुद्रगोपाल का नाम चरितार्थ होगा। और मैं जो वही मसीह

*इस्लाम के विरुद्ध खड़ी होने वाली दो बड़ी शक्तियों का सांकेतिक नाम - अनुवादक

दौरी होना रज्अते-बुरूजी को चाहता है। अत: मसीह ईसा बिन मरयम के संबंध

शेष हाशिया - तथा कथित विशेषताओं का द्योतक हूं। इसलिए कश्फ़ी तौर पर एक बार एक व्यक्ति मुझे दिखाया गया जैसे वह संस्कृत का एक विद्वान व्यक्ति है जो कृष्ण का* अत्यन्त श्रद्धालु है और मेरे सामने खड़ा हुआ तथा मुझे सम्बोधित करके बोला कि – "हे रुद्र गोपाल तेरी स्तुति गीता में लिखी है।" उसी समय मैंने समझा कि सारा संसार एक रुद्रगोपाल की प्रतीक्षा कर रहा है। क्या हिन्दू और क्या मुसलमान और क्या ईसाई, परन्तु अपने-अपने शब्दों और भाषाओं में और सब ने यही समय ठहराया है और उसकी ये दोनों विशेषताएं स्थापित की हैं अर्थात् सुअरों को मारने वाला और गायों की रक्षा करने वाला और वह मैं हूं जिसके बारे में हिन्दुओं में भविष्यवाणी करने वाले हमेशा से बल देते आए हैं कि वह आर्यावर्त में अर्थात् इस हिन्दू देश में पैदा होगा तथा उन्होंने उसके निवास स्थान के नाम भी लिखे हैं, परन्तु वे सब नाम रूपक के तौर पर हैं जिन के नीचे एक और वास्तविकता है तथा लिखते हैं कि वह ब्राह्मण के घर में जन्म लेगा। अर्थात् वह ब्रह्म को सच्चा और एक भागीदार रहित समझता है अर्थात् मुसलमान। अत: किसी अवतार या पैग़म्बर के दोबारा आने की आस्था जो रुद्र गोपाल की विशेषताएं अपने अन्दर रखता हो और चौदहवी सदी हिज्री में आने वाला हो केवल ईसाइयों और मुसलमानों की आस्था नहीं बल्कि हिन्दुओं और सभी धर्म वालों की यही आस्था है। यहां तक कि पारसियों के अनुयायी भी इस युग के बारे में ही आस्था रखते हैं और बौद्ध धर्म के बारे में मुझे विवरण के साथ मालूम नहीं, परन्तु कहते हैं कि वे भी इस युग में एक कामिल बुद्ध के प्रतीक्षक हैं और विचित्रतम यह कि सब फ़िर्क़े (समुदाय) रुद्रगोपाल की विशेषता उस प्रतीक्षा में स्थापित करते हैं। परन्तु अफ़सोस कि जन सामान्य इस दोबारा आने की आस्था की फ़िलास्फ़ी (दार्शनिकता) से अब तक अपरिचित पाए

***हाशिए का हाशिया -** स्पष्ट हो कि ख़ुदा तआला ने कश्फ़ की अवस्था में अनेक बार मुझे इस बात की सूचना दी है कि आर्य जाति में कृष्ण नाम का एक व्यक्ति जो गुज़रा है वह ख़ुदा के चुने हुए तथा अपने समय के नबियों में से था और हिन्दुओं में अवतार का शब्द वास्तव में नबी के ही समानार्थक है। हिन्दुओं की पुस्तकों में एक भविष्यवाणी है और वह यह कि अन्तिम युग में एक अवतार आएगा जो कृष्ण के गुणों पर होगा तथा उसका बुरूज़ होगा और मुझ पर प्रकट किया गया कि वह मैं हूं। कृष्ण के दो गुण हैं एक रुद्र अर्थात् दरिन्दों और सुअरों का वध करने वाला अर्थात् तर्कों और निशानों से। दूसरे गोपाल अर्थात् गायों का पालने वाला अर्थात् अपनी सांसो से भले लोगों का सहायक। और ये दोनों गुण मसीह मौऊद के गुण हैं और यही दोनों गुण ख़ुदा तआला ने मुझे प्रदान किए हैं। (इसी से)

में दोबारा लौटने की जो आस्था है उस आस्थानुसार ईसा मसीह का दोबारा

शेष हाशिया - जाते हैं और सामान्य तो सामान्य जो लोग इस युग में उलेमा कहलाते हैं वे भी इस फ़िलास्फ़ी से अपरिचित हैं। यों तो इस्लाम के समस्त सूफी बुरूज़ी तौर पर आने के बड़े ज़ोर से क़ायल हैं तथा कुछ लोग वलियों के बारे में मानते हैं कि किसी पहले वली की रूह दोबारा बुरूज़ी तौर पर उस में आई। उदाहरणतया वे कहते हैं कि लगभग सौ वर्ष के बाद बायज़ीद बस्तामी की रूह दोबारा बुरूज़ी तौर पर अबुल हसन ख़र्क़ानी में आ गई। परन्तु इस मान्य और मक़्बूल आस्था के बावजूद फिर भी कुछ मूर्ख मसीह के दोबारा आने के बारे में बुरूज़ी तौर पर आने के क़ायल नहीं जो सदैव से ख़ुदा की सुन्नत में दाख़िल है। वे लोग वास्तव में बुरूजी तौर पर दोबारा आने की फ़िलास्फ़ी से अपरिचित हैं। इस मामले की फ़िलास्फ़ी यह है कि ख़ुदा तआला ने प्रत्येक चीज़ को इस प्रकार से बनाया है कि जो उसकी तौहीद (एकेश्वरवाद) को सिद्ध करे। इसी कारण कृपालु हकीम ख़ुदा ने समस्त मूल तत्त्वों और आकाशीय पिण्ड समूहों को गोल आकार पर पैदा किया है, क्योंकि गोल वस्तु के किनारे और पहलू नहीं। इसलिए वह एकत्व (वहदत) से अनुकूलता रखती है। यदि ख़ुदा तआला के अस्तित्व में तस्लीस होती तो समस्त मूल तत्त्व और आकाशीय पिण्ड त्रिकोणीय आकार पर पैदा होते, परन्तु प्रत्येक मौलिक (अमिश्रित) में जो मिश्रितों का मूल है का गोलाकार होना देखोगे। पानी की बूंद भी गोल आकार में प्रकट होती है और सारे नक्षत्र जो हमें दिखाई देते हैं उन का आकार गोल है और वायु की आकृति भी गोल है। जैसा कि हवाई ग़ौल (चक्रवात) जिनका अरबी भाषा में اعصار कहते हैं अर्थात् बग़ौले जो किसी तीव्र वायु के समय गोल रूप में पृथ्वी पर चक्कर लगाते फिरते हैं हवाओं का गोलाकार होना सिद्ध करते हैं। अत: जैसा कि समस्त मौलिक (अमिश्रित) वस्तुओं में जिन को ख़ुदा तआला ने पैदा किया गोलाकार हैं। इसी लिए सूफ़ी इस बात की ओर गए हैं कि बनी आदम की संरचना अपनी बनावट में दौर (चक्कर) के रंग में घटित हुई हैं अर्थात् मानव जाति की रूहें बुरूज़ी तौर पर लौट-लौट कर संसार में आती हैं ⁕ । और जबकि मानव

⁕ **हाशिए का हाशिया -** बुरूजी तौर पर दोबारा आने के उच्चतम प्रकार केवल दो हैं (1) बुरूजुल अश्क़िया (दुर्भाग्यशाली लोगों के बुरूज) (2) (बुरूजुस्सादा) भाग्यशाली लोगों के बुरूज ये दोनों बुरूज़ क़यामत तक सुन्नतुल्लाह में सम्मिलित हैं। हां याजूज और माजूज के बाद उनकी बहुतात है ताकि लोगों के अंजाम पर एक तर्क हो और ताकि उस से दौर (चक्कर) का पूरा होना समझा जाए। यह समझना कि कोई ऐसा युग भी आएगा कि सब लोग और सब तबियतें एक मिल्लत पर हो जाएंगी, यह ग़लत है। जिस हालत में अल्लाह तआला मनुष्यों का विभाजन यह करता है कि-

आगमन का यही युग है। अतः वह दोबारा (आगमन) बुरूज़ी तौर पर प्रकटन

शेष हाशिया - उत्पत्ति भी दोरी (चक्कर) के रंग में है ताकि कायनात के स्रष्टा के एकत्व का पता दे। अतः इस से अनिवार्य हुआ कि मानव-उत्पत्ति के अन्तिम बिन्दुओं के प्रारंभिक बिन्दुओं से अर्थात् जहां से मानव उत्पत्ति दायरे का बिन्दु आरंभ होता है बहुत निकट हों तथा अपने प्रकटन और बुरूज़ में उन्हीं की ओर लौटें। और यही वह बात है जिसे दूसरे शब्दों में बुरूज़ी तौर पर दोबारा आना कहते हैं। जैसा कि उदाहरण के लिए यह दायरा है –

शेष हाशिए का हाशिया -

مِنۡهُمۡ شَقِیٌّ وَّ سَعِیۡدٌ (हूद - 106)
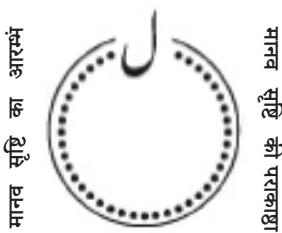
तो संभव नहीं कि किसी युग में केवल भाग्यशाली रह जाएं और समस्त दुर्भाग्यशाली मारे जाएं। और फ़रमाया है – وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمۡ (हूद - 120) अर्थात् मनुष्यों के स्वभावों में मतभेदता रखी गयी है। इसलिए जब मनुष्यों का स्वभाव धर्मों की अधिकता को चाहता है तो फिर वे एक धर्म पर कैसे हो सकते हैं। ख़ुदा ने प्रारंभ में क़ाबील और हाबील को पैदा करके समझा दिया कि दुर्भाग्य और सौभाग्य पहले से हीमानव प्रकृति (स्वभाव) में विभाजित किया गया है और आयत-

فَاَغۡرَیۡنَا بَیۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَ الۡبَغۡضَآءَ اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَةِ ؕ (अलमाइदह - 15)

और आयत-

وَ اَلۡقَیۡنَا بَیۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَ الۡبَغۡضَآءَ اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَةِ ؕ (अलमाईदह - 65)

और आयत-

وَ جَاعِلُ الَّذِیۡنَ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡۤا اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَةِ ۚ (आले इमरान-56)

और आयत-

اِهۡدِ نَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡهِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ (अलफ़ातिहा - 6,7)

ये सब आयतें बता रही हैं क़ि क़यामत तक मतभेद रहेगा مُنعم عَلَیۡهِمۡ भी रहेंगे। مغضوب علیهم भी रहेंगे। हां झूठी मिल्लतें तर्क की दृष्टि से तबाह हो जाएंगी। इसी से।

में आ गया। (2) दूसरा तर्क जो मेरे मसीह मौऊद होने के बारे में है वह यह है

शेष हाशिया - मान लो कि इस दायरे (वृत्त) में से जो भाग ل के दायीं ओर है उस मानव-उत्पत्ति का दायरा आरंभ हुआ है और जो भाग बायीं ओर है वहां समाप्त हुआ है इसलिए आवश्यक है कि जो ل के बायीं ओर का भाग है जो बिन्दु उसके निकट आएंगे वे प्रारंभिक बिन्दुओं से बहुत ही निकट आ जाएंगे। अत: इसी का नाम बुरूज़ी तौर पर लौटना है जो प्रत्येक के लिए आवश्यक है। इसी की ओर अल्लाह तआला इस आयत में संकेत करता है कि

حَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ (अलअंबिया - 96)

याजूज, माजूज से वह क़ौम अभिप्राय है जिन को पूर्णरूप से पार्थिव शक्तियां मिलेंगी और उन पर पार्थिव शक्तियों की उन्नति का दायरा समाप्त हो जाएगा। याजूज-माजूज का शब्द अजीज से लिया गया है जो आग के शेले को कहते हैं। अत: नाम रखने का यह कारण एक तो बाह्य अनिवार्यताओं की दृष्टि से है जिसमें यह संकेत है कि याजूज, माजूज के लिए आग मुफ़्त काम पर लगाई जाएगी और वे अपने सांसारिक आचार-व्यवहार में आग से बहुत काम लेंगे। उनकी ज़मीनी और समुद्री यात्राएं आग के द्वारा होंगी। उनके युद्ध भी आग द्वारा होंगे, उनके समस्त कारोबार के इंजन आग की सहायता से चलेंगे। नाम रखने का दूसरा कारण याजूज, माजूज की आन्तरिक विशेषताओं की दृष्टि से है। और वह यह है कि उनके स्वभाव में अग्नि-तत्त्व अधिक होगा, वे क़ौमें बहुत अभिमान करेंगी तथा अपनी तेज़ी, चुस्ती तथा चालाकी में आग्निय गुणों का प्रदर्शन करेंगी और जिस प्रकार मिट्टी जब अपने चरमोत्कर्ष को पहुंचती है तो वह मिट्टी का भाग पर्याप्त जौहर बन जाता है, जिस में अग्नि तत्त्व अधिक हो जाता है। जैसे सोना-चांदी तथा अन्य जवाहरात। अत: यहां क़ुर्आनी आयत का मतलब यह है कि याजूज-माजूज की प्रकृति में ज़मीनी जौहर का सर्वांगपूर्ण गुण है। जैसा कि खनिज जवाहरात और धातुओं में सर्वांगपूर्ण गुण होता है और यह तर्क इस बात पर है कि पृथ्वी ने अपनी अत्यधिक विशेषताएं प्रकट कर दीं और आयत-

وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا (अज़्ज़िलज़ाल - 3)

के अनुसार अपने श्रेष्ठतम जौहर को प्रकट कर दिया। और यह बात युग के दौर (चक्कर) पर एक तर्क है अर्थात् जब याजूज-माजूज की बहुतात होगी तो समझा जाएगा

कि न केवल पवित्र क़ुर्आनी ही मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव का यह युग ठहराता

शेष हाशिया - कि युग ने अपना पूरा दायरा (वृत्त) दिखा दिया और पूरे दायरे का बुरूज़ी तौर पर लौटना (रज्अत-ए-बुरूज़ी) अनिवार्य है तथा याजूज-माजूज पर ज़मीनी विशेषता का समाप्त होना इस बात पर तर्क है कि जैसे आदम की उत्पत्ति अ से आरंभ होकर जो आदम के शब्द के अक्षरों में से पहला अक्षर है इस या के अक्षर पर समाप्त हो गई कि याजूज के शब्द के सर (प्रारंभ में) पर आता है जो अक्षरों के क्रम का अन्तिम अक्षर है। मानो इस प्रकार से यह सिलसिला अलिफ़ (अ) से प्रारंभ हो कर और फिर या अक्षर पर समाप्त होकर अपनी स्वाभाविक पूर्णता को पहुंच गया।

कलाम का सारांश यह है कि वह बुरूजी लौटना जो मानव-उत्पत्ति के दायरे के दौरी होने के लिए आवश्यक है। उसकी निशानी यह है कि याजूज-माजूज का प्रकटन और निकलना सुदृढ़ एवं पूर्ण रूपेण हो जाए तथा उनके साथ किसी अन्य को मुकाबले की शक्ति न रहे। क्योंकि दायरे (वृत्त) की पूर्णता को यह अनिवार्य है कि-

(ज़िलज़ाल - 3)   وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا

का अर्थ पूर्ण रूपेण पूरा हो जाए और समस्त ज़मीनी शक्तियों का प्रकटन और बुरूज़ हो जाए तथा याजूज और माजूज का अस्तित्व इस बात पर पूर्ण तर्क है कि जो कुछ ज़मीनी शक्तियां और ताकतें मनुष्य के अस्तित्व (वुजूद) में रखी गई है वे सब प्रकटन में आ गई हैं, क्योंकि उस क़ौम की स्वाभाविक ईंट ज़मीनी विशेषताओं की खोज में इस प्रकार से सुदृढ़ हुई है कि उसमें किसी को भी आपत्ति नहीं। इसी रहस्य के कारण ख़ुदा ने उनका नाम याजूज-माजूज रखा क्योंकि अनेक स्वभाव की मिट्टी उन्नति करते-करते खनिज जवाहरात की भांति अग्नि- तत्व के समान पूर्ण रूप से वारिस हो गई, और स्पष्ट है कि मिट्टी की तरक़्क़ियां अन्तत: जवाहरात और खनिज धातुओं पर समाप्त हो जाती हैं। तब मामूली मिट्टी के संबंध में उन जवाहरात और धातुओं में आग का बहुत सा तत्व आ जाता है। मानो मिट्टी की अन्तिम विशेषता, विशेषता प्राप्त वस्तु को आग के निकट ले आती है और फिर जिन्सियत (जातीयता) के आकर्षण के कारण अन्य संबंधित आवश्यक वस्तुएं तथा विशेषताएं भी उसी सृष्टि को दी जाती हैं। अत: मनुष्य की यह अन्तिम विशेषता है कि बहुत सा आग्नेय भाग उनमें प्रविष्ट हो जाए और यह विशेषता याजूज-माजूज में पाई जाती है और जो कुछ इस क़ौम को संसार और संसार की युक्तियों में हस्तक्षेप है और इस क़ौम ने जितनी सांसारिक जीवन को चमक-दमक तथा उन्नति दी है उस से अधिक किसी के अनुमान में नहीं आ सकती। अत: इसमें सन्देह नहीं हो सकता कि मनुष्य की ज़मीनी शक्तियों का इत्र है जो

है अपितु ख़ुदा तआला की पहली किताबें भी मसीह मौऊद की प्रादुर्भाव का यही

शेष हाशिया - अब वह याजूज-माजूज के द्वारा निकल रहा है। इसलिए याजूज माजूज का प्रकटन और बुरूज़ तथा अपनी सम्पूर्ण शक्तियों में पूर्ण होना इस बात का निशान है कि इन्सानी अस्तित्व की सम्पूर्ण ज़मीनी शक्तियां प्रकटन में आ गईं और इन्सानी स्वभाव का दायरा अपनी पूर्णता को पहुंच गया तथा कोई प्रतीक्षारत अवस्था शेष नहीं रही। अत: ऐसे समय के लिए रज्अत-ए-बुरूज़ी एक अनिवार्य बात थी। इसलिए इस्लामी आस्था में यह सम्मिलित हो गई कि याजूज-माजूज के प्रकटन, समृद्धि एवं विजय के बाद पहले युगों के अधिकतर भले और सदाचारी लोगों का बुरूज़ी तौर पर दोबारा आगमन होगा और जैसा कि इस मामले पर मुसलमानों में से अहले सुन्नत बल देते हैं, ऐसा ही शियो की भी आस्था है, किन्तु अफ़सोस कि ये दोनों गिरोह इस मामले की फ़िलास्फ़ी से अपरिचित हैं। असल भेद तो दोबारा आने की आवश्यकता का यह था कि मानव उत्पत्ति के दायरे का दौर (चक्कर) के समय में जो छठे हज़ार का अन्त है उत्पत्ति के बिन्दुओं का इस दिशा की ओर आ जाना एक अनिवार्य बात है जिस दिशा से उत्पत्ति का प्रारंभ है। क्योंकि कोई दायरा जब तक उस बिन्दु तक न पहुंचे जिस से आरंभ हुआ था पूर्ण नहीं हो सकता और आवश्यक तौर पर दायरे के अन्तिम भाग को लौटना अनिवार्य पड़ा हुआ है। किन्तु इस भेद को सतही अक़्लें मालूम नहीं कर सकीं और अकारण ख़ुदा के कलाम के विपरीत यह आस्था बना ली कि जैसे समस्त अच्छे और बुरे लोगों की रूहों का निश्चित तौर पर दोबारा आना होगा न कि वास्तविक तौर पर। और वह इस प्रकार से कि वही नह्हाश जिसका दूसरा नाम ख़न्नास (पिशाच) है जिसको संसार के ख़ज़ाने दिए गए हैं जो पहले हव्वा के पास आया था और अपनी दज्जालियत (छल-कपट) से उसे अनश्वर जीवन का प्रलोभन दिया था फिर बुरूज़ी तौर पर अन्तिम युग में प्रकट होगा और ज़नाना स्वभाव रखने वाले तथा मंदबुद्धि लोगों को इस वादे पर अनश्वर जीवन का प्रलोभन देगा कि वे तौहीद (एकेश्वरवाद) को छोड़ दें। परन्तु ख़ुदा ने जैसा कि आदम को स्वर्ग में यह नसीहत की थी कि प्रत्येक फल तुम्हारे लिए वैध है निस्सन्देह खाओ परन्तु उस वृक्ष के निकट मत जाओ कि यह हुर्मत (निषिद्धता) का वृक्ष है। इस प्रकार ख़ुदा ने क़ुर्आन में फ़रमाया-

وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ..... الخ (अन्निसा - 49)

अर्थात् प्रत्येक गुनाह की माफी होगी परन्तु ख़ुदा शिर्क को माफ़ नहीं करेगा। इसलिए शिर्क के निकट मत जाओ और हुर्मत का वृक्ष समझो। अत: अब बुरूज़ी तौर पर वही नह्हाश

युग (समय) निर्धारित करती हैं। अत: दानियाल की किताब में स्पष्ट तौर पर इस बात की व्याख्या है कि इसी युग में मसीह मौऊद प्रकट होगा। यही कारण है कि ईसाइयों के सब फ़िर्के जो संसार में मौजूद हैं इन्हीं दिनों में मसीह के प्रादुर्भाव का समय बताते हैं और उसके उतरने (आने) की प्रतीक्षा कर रहे हैं अपितु कुछ के नज़दीक इस तारीख पर मसीह दोबारा आना चाहिए था। दस वर्ष के लगभग और कुछ के नज़दीक बीस वर्ष के लगभग अधिक गुज़र भी गए। इसलिए वे लोग

शेष हाशिया - जो हव्वा के पास आया था इस युग में प्रकट हुआ और कहा कि इस हुर्मत के वृक्ष को खूब खाओ कि अनश्वर जीवन इसी में है। अत: जिस प्रकार गुनाह (पाप) प्रारंभ में स्त्री से आया उसी प्रकार अन्तिम युग में स्त्री स्वभाव लोगों ने नह्हाश के बहकाने को स्वीकार कर लिया। चूंकि समस्त बुरूज़ों से पहले यही बुरूज़ है जो बुरूज़ नह्हाश है।

फिर दूसरा बुरूज़ याजूज माजूज के बाद आवश्यक था मसीह इब्ने मरयम का बुरूज़ है। क्योंकि वह रूहुल क़ुदुस के संबंध के कारण नह्हाश का शत्रु है ⁕ । कारण यह कि

⁕ **हाशिए का हाशिया -** रूहुल क़ुदुस का संबंध समस्त नबियों और पवित्र लोगों से होता है फिर मसीह की उस से क्या विशिष्टता है? इस का उत्तर यही है कि कोई विशिष्टता नहीं बल्कि रूहुल क़ुदुस के स्वभाव का श्रेष्ठ और बड़ा भाग हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्राप्त है। परन्तु चूंकि उद्दण्ड यहूदियों ने हज़रत मसीह पर यह लांछन लगाया था कि उनकी पैदायश रूहुल क़ुदुस की भागीदारी से नहीं बल्कि शैतान की भागीदारी से है अर्थात् अवैध तौर पर। इसलिए ख़ुदा ने उस लांछन के निवारण तथा दूर करने के लिए इस बात पर बल दिया कि मसीह की पैदायश रूहुल क़ुदुस की भागीदारी से है और वह शैतान के स्पर्श से पवित्र है। इस से यह परिणाम निकालना लानतियों का काम है कि दूसरे नबी शैतान के स्पर्श से पवित्र नहीं है, बल्कि यह कलाम यहूदियों के ग़लत विचार को दूर करने के लिए है कि मसीह की पैदायश शैतान के स्पर्श से है अर्थात् अवैध (हराम) के तौर पर। फिर चूंकि यह बहस मसीह में आरंभ हुई, इसलिए रूहुल क़ुदुस की पैदायश में मसीह कहावत हो गया, अन्यथा उसको पवित्र पैदायश में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर लेशमात्र वरीयता नहीं बल्कि संसार में पूर्ण मासूम केवल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रकट हुआ है और कुछ हदीसों के ये शब्द कि शैतान के स्पर्श से पवित्र केवल इब्ने मरयम और उसकी मां मरयम है। यह शब्द भी यहूदियों के मुक़ाबले पर मसीह की पवित्रता अभिव्यक्त करने के लिए है। जैसा कि यह कथन है कि संसार में

भविष्यवाणी के ग़लत निकलने के कारण बड़े आश्चर्य में पड़े। अन्तत: उन्होंने अपनी समझ की कमी के कारण इस ओर तो दृष्टि नहीं की कि मसीह मौऊद पैदा हो गया, जिसको उन्होंने नहीं पहचाना, परन्तु तावील के तौर पर यह बात

शेष हाशिया - सांप शैतान से सहायता पाता है और ईसा बिन मरयम रूहुल क़ुदुस से तथा रूहुल क़ुदुस शैतान का विपरीत है। अत: जब शैतान का प्रकटन हुआ तो उसका प्रभाव मिटाने के लिए रूहुल क़ुदुस का प्रकटन आवश्यक हुआ। जिस प्रकार शैतान बदी (बुराई) का जनक है। रुहूल क़ुदुस नेकी का जनक है। मनुष्य के स्वभाव को दो विभिन्न भावनाएं लगी हुई हैं-

(1) एक भावना बुराई की ओर जिससे मनुष्य के दिल में बुरे विचार, दुराचार और अत्याचार की कल्पनाएं जन्म लेती हैं यह भावना शैतान की ओर से है तथा कोई इन्कार नहीं कर सकता कि मानव-प्रकृति से संलग्न यह भावना है। यद्यपि कुछ क़ौमें शैतान के अस्तित्व का इन्कार भी करें, परन्तु इस भावना के अस्तित्व से इन्कार नहीं कर सकतीं।

(2) दूसरी भावना नेकी (अच्छाई) की ओर है, जिस से मनुष्य के दिल में अच्छे विचार और भलाई करने की इच्छाएं जन्म लेती हैं और यह भावना रूहुल क़ुदुस की ओर से है। यद्यपि सदैव से तथा जब से मनुष्य पैदा हुआ है ये दोनों प्रकार की भावनाएं मनुष्य में विद्यमान हैं, परन्तु अन्तिम युग के लिए प्रारब्ध था कि ये दोनों प्रकार की भवनाएं मनुष्यों में प्रकट हों। इसलिए इस युग में बुरूज़ी तौर पर यहूदी भी पैदा हुए और बुरूज़ी तौर पर मसीह इब्ने मरयम भी पैदा हुआ तथा ख़ुदा ने एक गिरोह बुराई का प्रेरक पैदा कर दिया जो वही पहला नह्हाश बुरूज़ी रंग में है। और दूसरा गिरोह भलाई का प्रेरक पैदा कर दिया जो मसीह मौऊद का गिरोह और तीसरा बुरूज़ यहूदियों का गिरोह है जिन से बचने के लिए सूरह फ़ातिहा में दुआ

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ (अलफ़ातिहा - 7)

सिखाई गई और चौथा बुरूज़ सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम का बुरूज़ है जो आयत وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अलजुमुअ: - 4)

आवश्यक था तथा इस हिसाब से इन बुरूज़ों की संख्या लाखों तक पहुंचती है। इसलिए यह युग रज्अत-ए-बुरूज़ी का युग कहलाता है। इसी से।

केवल दो गिरोह हैं- एक वह है जो आसमान पर इब्ने मरयम कहलाते हैं यदि मर्द हैं। और

शेष हाशिए का हाशिया - मरयम कहलाते हैं यदि औरत हैं। दूसरा वह गिरोह है जो आसमान पर यहूदी مغضوب علیھم कहलाते हैं। पहला गिरोह शैतान के स्पर्श से पवित्र है और दूसरा गिरोह शैतान के पुत्र हैं। इसी से

बना ली कि जो कार्य सरगर्मी से अब इन दिनों में कलीसा कर रही है अर्थात् तस्लीस की ओर दावत (बुलाना) और मसीह के कफ़्फारे का प्रचार यही मसीह का रूहानी (आध्यात्मिक) तौर पर दोबारा आगमन (आना) है। मानो मसीह ने ही उनके दिलों पर उतर कर उनको यह जोश दिया कि उस की ख़ुदाई के मामले को संसार में फैला दें। यदि तुम यूरोप का भ्रमण करो तो इस विचार के हज़ारों लोग उनमें पाओगे जिन्होंने मसीह के उतरने के युग को गुज़रता हुआ देख कर दिलों मे यह आस्था गढ़ ली है, परन्तु मुसलमान भविष्यवाणी के इन अर्थों को पसन्द नहीं करते और न ऐसी तावीलों (प्रत्यक्ष अर्थों से हटकर व्याख्या करना) से अपने दिलों को संतुष्टि देना चाहते हैं। हालांकि उन पर भी यही कठिनाइयां आ गई हैं, क्योंकि मुसलमानों में से बहुत से अहले कश्फ़ जिनकी संख्या हज़ार से भी कुछ अधिक होगी। अपने कश्फ़ों के माध्यम से तथा ख़ुदा तआला के कलाम से निष्कर्ष निकालने से सहमतिपूर्वक यह कह गए हैं कि मसीह मौऊद का प्रकटन चौदहवीं सदी (हिज्री) के सर से आगे हरगिज़ नहीं जाएगा और संभव नहीं कि अहले कश्फ़ का एक बहुसंख्यक गिरोह जो समस्त पहले और बाद में आने वालों का जमाव है वे सब झूठे हों और उनके निकाले समस्त निष्कर्ष भी झूठे हों। इसलिए यदि मुसलमान इस समय मुझे स्वीकार न करें जो क़ुर्आन, हदीस और पहली कताबों तथा समस्त अहले कश्फ़ की दृष्टि से चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट हुआ हूं तो भविष्य में उनकी ईमानी स्थिति के लिए बहुत आशंका है, क्योंकि मेरे इन्कार से अब उनकी यह आस्था होनी चाहिए कि प्रकाण्ड विद्वानों ने पवित्र क़ुर्आन से मसीह मौऊद के लिए जितने निष्कर्ष निकाले थे वे सब असत्य थे और जिस कद्र अहले कश्फ़ ने मसीह मौऊद के युग के लिए जितनी ख़बरें दी थीं वे सब ख़बरे भी असत्य थीं तथा जितने आकाशीय एवं पार्थिव निशान हदीस के अनुसार प्रकट हुए जैसे रमज़ान में निर्धारित तारीखों के अनुसार चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण का होना, पृथ्वी पर रेल की सवारी का जारी होना और पुच्छल तारे का निकलना और सूर्य का अंधकारमय हो जाना ये सब नऊजुबिल्लाह झूठे थे। ऐसे विचार का परिणाम अन्तत: यह होगा कि उस भविष्यवाणी को ही एक झूठी भविष्यवाणी ठहरा देंगे

और नऊज़ुबिल्लाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिथ्यावादी समझ लेंगे। और इस प्रकार से एक समय आता है कि एक बार लाखों लोग इस्लाम धर्म से मुर्तद हो जाएंगे। अब सदी पर भी सत्रह वर्ष गुज़र गए। ऐसी आवश्यकता के समय में उनके कथानुसार ईसाइयत की ख़राबियों को दूर करने के लिए कि वही बड़ी खराबियां थीं ख़ुदा की ओर से कोई मजद्दिद अवतरित न हुआ और निश्चित तौर पर मानना पड़ा कि अब इस्लाम कम से कम अस्सी वर्ष पतन की अवस्था में रहेगा, और जबकि इस्लाम में कुछ वर्षों ने यह परिवर्तन पैदा किया कि हज़ारों लोग मुर्तद हो गए तो क्या अस्सी वर्ष तक इस्लाम का कुछ अस्तित्व शेष रहेगा। और इस्लाम के मिट जाने के बाद यदि कोई मसीह आसमान से भी उतरा तो क्या फ़ायदा देगा बल्कि वही चरितार्थ होगा कि

"پس ازانکہ من نمانم بچہ کار خواہی آمد"

और अन्ततः ऐसी झूठी भविष्यवाणियों के बारे में अविश्वास फैल कर एक आम मुर्तद होने तथा नास्तिक होने का बाज़ार गर्म हो जाएगा और नऊज़ुबिल्लाह इस्लाम का अन्त होगा। ख़ुदा तआला हमारे विरोधी उलेमा के हाल पर रहम (दया) करे कि वे जो कार्रवाई कर रहे हैं वह धर्म के लिए अच्छी नहीं बल्कि अत्यन्त ख़तरनाक है। उनको वह समय भूल गया जब वे मिंबरों (डायसों) पर चढ़-चढ़ कर तेरहवीं सदी की भर्त्सना करते थे कि इस सदी में इस्लाम को बहुत हानि पहुंची है और आयत-

فَاِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ یُسۡرًا اِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ یُسۡرًا (अल इन्शिराह - 6,7)

पढ़ कर उससे सिद्ध किया करते थे कि इस عُسر (तंगी) के मुकाबले पर चौदहवीं सदी یُسر (आसानी) की आएगी, किन्तु जब प्रतीक्षा करते-करते चौदहवीं सदी आ गई और ठीक सदी के सर पर ख़ुदा तआला की ओर से एक व्यक्ति मसीह मौऊद के दावे के साथ पैदा हो गया और निशान प्रकट हुए तथा पृथ्वी और आसमान ने गवाही दी तो पहले इन्कारी यही उलेमा हो गए। परन्तु आवश्यक था कि ऐसा होता, क्योंकि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के भी पहले इन्कारी यहूदियों के मौलवी थे जिन्होंने उनके लिए दो फ़त्वे

तैयार किए थे। एक कुफ्र का फ़त्वा और दूसरे क़त्ल का फ़त्वा। अत: यदि ये लोग भी कुफ्र और क़त्ल का फ़त्वा न देते तो غير المغضوب عليهم की दुआ जो सूरह फ़ातिहा में सिखाई गई है जो भविष्यवाणी के रूप में थी क्योंकर पूरी होती? क्योंकि सूरह फ़ातिहा में غير المغضوب عليهم का वाक्य है। इस से अभिप्राय जैसा कि 'फ़त्हुलबारी' और 'दुर्रे मन्सूर' इत्यादि में लिखा है यहूदी है और यहूदियों की बड़ी घटना जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म के युग से निकटतम युग में घटित हुई और यही घटना थी कि उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को काफ़िर ठहराया तथा उसे लानती और क़त्ल योग्य ठहराया और उसके बारे में अत्यन्त आक्रोश एवं क्रोध में भर गए। इसलिए वे अपने ही आक्रोश के कारण ख़ुदा तआला की दृष्टि में مَغْضُوب عَلَيْهِمْ (जिन पर ख़ुदा तआला का प्रकोप हुआ) ठहराए गए। और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस घटना से छ: सौ वर्ष के बाद पैदा हुए। अत: स्पष्ट है कि आप की उम्मत को जो غير المغضوب عليهم की दुआ सूरह फ़ातिहा में सिखाई गई और बल दिया गया कि पांच समय की नमाज़, और तहज्जुद, इश्राक़ तथा दोनों ईदों में यही दुआ पढ़ा करें इस में क्या रहस्य था जिस हालत में यहूदियों का युग इस्लाम के युग से बहुत समय पहले समाप्त हो चुका था तो यह दुआ मुसलमानों को क्यों सिखाई गई और क्यों उस दुआ में यह शिक्षा दी गई कि मुसलमान लोग हमेशा ख़ुदा तआला से पांच समय शरण मांगते रहें कि यहूदियों का वह फ़िर्क़ा न बन जाएं जो مغضوب عليهم हैं। अत: इस दुआ से स्पष्ट तौर पर समझ आता है कि इस उम्मत में भी एक मसीह मौऊद पैदा होने वाला है और एक फ़िर्क़ा (समुदाय) मुसलमानों के उलेमा का उसको काफ़िर कहेगा और उसके क़त्ल के बारे में फ़त्वा देगा। इसलिए सूरह फ़ातिहा में غير المغضوب عليهم की दुआ को सिखा कर सब मुसलमानों को डराया गया कि वे ख़ुदा तआला से दुआ करते रहें कि उन यहूदियों के समान न बन जाएं जिन्होंने हज़रत ईसा बिन मरयम पर कुफ्र का फ़त्वा दिया था तथा उनके व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप करके उन की मां

पर झूठ बोला था और ख़ुदा तआला की समस्त किताबों में यह सुन्नत और सर्वदा आदत है कि जब वह एक गिरोह को किसी कार्य से मना करता है या उस कार्य से बचने के लिए दुआ सिखाता है तो इस से उसका मतलब यह होता है कि उनमें से कुछ अवश्य उस अपराध को करेंगे। इसलिए इस सिद्धान्त की दृष्टि से जो ख़ुदा तआला की समस्त किताबों में पाया जाता है स्पष्ट तौर पर समझ में आता है कि غیر المغضوب علیھم की दुआ सिखाने से यह मतलब था कि मुसलमानों का एक फ़िर्क़ा पूर्ण रूप से यहूदियों का अनुकरण करेगा और ख़ुदा के मसीह को काफ़िर कह कर और उस के बारे में क़त्ल का फ़तवा लिख कर अल्लाह तआला को आक्रोश में लाएगा और यहूदियों की भांति مغضوب علیھم का सम्बोधन पाएगा। यह ऐसी स्पष्ट भविष्यवाणी है कि जब तक मनुष्य जान बूझ कर बेईमानी पर कटिबद्ध न हो इस से इन्कार नहीं कर सकता। और केवल क़ुर्आन ने ही ऐसे लोगों को यहूदी नहीं बनाया बल्कि हदीस भी उनको यह सम्बोधन दे रही है और स्पष्ट तौर पर बता रही है कि यहूदियों की भांति इस उम्मत के उलेमा भी मसीह मौऊद पर कुफ़्र का फ़त्वा लगाएंगे और मसीह मौऊद के कट्टर दुश्मन इस युग के मौलवी होंगे, क्योंकि इस से उनकी विद्वता संबंधी सम्मान जाते रहेंगे और लोगों के उनकी ओर लौटने में अन्तर आ जाएगा। ये हदीसें इस्लाम में बहुत प्रसिद्ध हैं। यहां तक कि 'फ़ुतूहाते मक्किय:' में भी इस का वर्णन है कि मसीह मौऊद जब उतरेगा तो उस का यही सम्मान किया जाएगा कि उसे इस्लाम के दायरे से बहिष्कृत किया जाएगा और एक मौलवी साहिब उठेंगे और कहेंगे- ان ھذا الرجل غیّر دیننا अर्थात् यह व्यक्ति कैसा मसीह मौऊद है, इस व्यक्ति ने तो हमारे धर्म को बिगाड़ दिया अर्थात् यह हमारी हदीसों की आस्था को नहीं मानता और हमारी पुरानी आस्थाओं (अक़ीदों) का विरोध करता है तथा कुछ हदीसों में यह भी आया है कि इस उम्मत के कुछ उलेमा यहूदियों का कठोरता पूर्वक अनुकरण करेंगे, यहां तक कि किसी यहूदी मौलवी ने अपनी मां से व्यभिचार (ज़िना) किया है तो वे भी अपनी मां से व्यभिचार करेंगे। और यदि कोई यहूदी धर्मशास्त्र का

विद्वान गोह के छेद के अन्दर घुसा है तो वे भी घुसेंगे। यह बात भी याद रखने योग्य है कि इंजील और पवित्र क़ुर्आन में जहां यहूदियों की खराब स्थिति का वर्णन किया है वहां सांसारिक लोगों तथा जन सामान्य का वर्णन नहीं बल्कि उन के मौलवी, धर्म शास्त्री, सरदार और ज्योतिषी अभिप्राय हैं, जिनके हाथ में कुफ्र के फ़त्वे होते हैं और जिनके उपदेशों पर जनता क्रोधित हो जाती है। इसी लिए पवित्र क़ुर्आन में ऐसे यहूदियों का उदाहरण उस गधे से दिया है जो पुस्तकों से लदा हुआ हो। स्पष्ट है कि जनता को पुस्तकों से कुछ सरोकार नहीं, पुस्तकें तो मौलवी लोग रखा करते हैं। इसलिए यह बात याद रखने योग्य है कि जहां इंजील और क़ुर्आन तथा हदीस में यहूदियों का वर्णन है वहां उनके मौलवी और उलेमा अभिप्राय हैं और इसी प्रकार غير المغضوب عليهم के शब्द से सामान्य मुसलमान अभिप्राय नहीं हैं बल्कि उनके मौलवी अभिप्राय हैं।

फिर हम मूल वर्णन की ओर लौटते हुए कहते हैं कि चूंकि ईसाइयों एवं यहूदियों की किताबों में ये संकेत बड़ी संख्या में पाए जाते हैं कि इस चौदहवीं सदी हिज्री में मसीह मौऊद का प्रादुर्भाव होगा। इसी लिए ईसाइयों में से बहुत से लोगों ने वर्तमान युग में इस बात पर बल दिया है कि मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के यही दिन है। अत: अख़बार फ्री थिंकर लन्दन 7, अक्टूबर 1900 ई. में यह सूचना लिखी है कि पार्लियामेण्ट के सामान्य निर्वाचन के समय एक सीनेट से जो स्टलिंगटन का निवासी था जब राय लेने वाले ने पूछा तो उसने निर्वाचन के बारे में कुछ राय न दी और अपनी राय न देने का गंभीरता पूर्वक यह कारण वर्णन किया कि "इस वर्ष के समाप्त होने से पूर्व क़यामत का दिन अर्थात् मसीह के दोबारा आने का दिन आने वाला है। इसलिए ये सब बातें बे फ़ायदा हैं।"

इसी प्रकार पुस्तक 'हिज़ ग्लोरियस एपीयरिंग' प्रकाशित लन्दन सम्पूर्ण पुस्तक और 'क्राइस्ट सेकन्ड कमिंग' पुस्तक प्रकाशित लन्दन पृष्ठ-15 तथा पुस्तक 'दी कमिंग आफ़ दी लार्ड' प्रकाशित लन्दन पृष्ठ-1 में मसीह मौऊद को दोबारा आगमन के बारे में ये इबारतें हैं-

we stand on the eve of one of the greatest events the world has ever witnessed. Signs are multiplying on every side of us, compared with which there has been no parallel, either in the history of the church or the world. One of the greatest changes to both hangs upon this great event. It is the coming of the Lord Jesus Christ the second time in power and glory.	अब शीघ्र ही संसार में एक बहुत महान घटना होने वाली है। इसके लिए चारों ओर से निशान एकत्र हो रहे हैं। ऐसे निशान जो युग ने इस प्रकार के कभी नहीं देखे न संसार के इतिहास में उसका उदाहरण उपलब्ध है और न कलीसिया के इतिहास में इस महान घटना के घटित होने पर संसार और धर्म दोनों में एक महान परिवर्तन पैदा होगा। वह घटना हमारे ख़ुदावन्द यसू मसीह के दोबारा आगमन की है। शक्ति और प्रताप का आना
Can anyone reasonably doubt that these signs are not a sure and certain warning that the end draweth on space.	क्या कोई बुद्धिमान इस बात में सन्देह कर सकता है कि ये निशान असंदिग्ध तौर पर निश्चित रूप से इस बात की सूचना देते हैं कि अब अंजाम आया खड़ा है।
The signs are fulfilled, that generation has come. Christ's coming is at hand, glorious anticipation! glorious future!.	निशान पूर्ण हो गए हैं वह पीढ़ी आ गई है मसीह का आगमन बहुत ही निकट है। कैसा ही वैभव और प्रताप का समय आता है।

The impression prevails to some extent that he who teaches that Christ is soon coming is acting the role of alarmist. If so, we have seen that the great Teacher has placed himself at the head of the class.	किसी सीमा तक कुछ लोगों में यह विचार भी फैला हुआ है कि जो लोग मसीह के शीघ्र आने की शिक्षा देते हैं, वे लोगों को डराते हैं। यदि यह सही है तो स्वयं बड़ा उस्ताद यसू मसीह इस शिक्षा के देने में सब से प्रथम नम्बर पर है और हम इस बात को ऊपर सिद्ध कर चुके हैं।

इन उपरोक्त इबारतों से दर्शक समझ सकते हैं कि ईसाइयों को हज़रत मसीह के दोबारा आगमन की इस युग में कुछ प्रतीक्षा है और वे झूठ गढ़ते हैं कि यह समय वही समय है जिसमें हज़रत मसीह को आसमान से उतरना चाहिए। परन्तु इसके साथ उनमें से अधिकतर की यह भी आस्था है कि वह वास्तव में मृत्यु पा गए हैं आसमान पर नहीं गए। इसलिए उन में से जो लोग यह आस्था रखते हैं कि वह आसमान पर नहीं गए तथा इंजील के अनुसार यह भी आस्था रखते हैं कि इसी युग अर्थात् चौदहवीं सदी हिज्री के सर पर उनका आना आवश्यक है। निस्सन्देह उनको मानना पड़ता है कि मसीह के दोबारा आने की भविष्यवाणी इल्यास नबी के दोबारा आने की भविष्यवाणी के अनुसार प्रकटन में आएगी तथा उनमें से कुछ लोगों का यह कहना भी है कि आजकल ईसाई कलीसिया जो कार्य कर रहा है यही मसीह का दोबारा आगमन है। यह तावील आसमानी किताबों के अनुसार नहीं है और न किसी नबी ने कभी ऐसी तावील की है। आश्चर्य कि जिस हालत में वे अपनी इंजीलों के कई स्थानों में पढ़ते हैं कि एलिया नबी के दोबारा आगमन इसी प्रकार हुआ था कि युहन्ना नबी उनके रंग में और स्वभाव पर आ गया था तो क्यों वे मसीह के पुन: आगमन की तावील करने के समय कलीसिया की सरगर्मी (उत्साह) को मसीह के आगमन का समरूप समझ लेते हैं क्या मसीह ने एलिया नबी के पुन: आगमन की यही तावील की है? अत: जिस पहलू की तावील हज़रत मसीह के मुंह से निकली

थी उसकी खोज क्यों नहीं करते? और अकारण परेशानी में पड़ते हैं। स्पष्ट है कि जब मलाकी नबी ने एलिया नबी के दोबारा आने की भविष्यवाणी की थी, मसीह उसकी यह भी तावील कर सकता था कि जिस तन्मयता से यहूदियों के धर्मशास्त्र के विद्वान और फरीसी (यहूदियों का रूढ़िवादी समुदाय) काम कर रहे हैं यही एलिया का दोबारा आना है। इस तावील से यहूदी भी प्रसन्न हो जाते और शायद मसीह को स्वीकार कर लेते। किन्तु उन्होंने इस तावील को जो कलीसिया की तावील से बहुत समान थी प्रस्तुत न किया और यूहन्ना नबी को जो स्वयं यहूदियों की दृष्टि में नऊज़ुबिल्लाह झूठा और झूठ गढ़ने वाला था प्रस्तुत कर दिया जिस से यहूदियों का क्रोध और भी भड़का और उन्होंने सोचा कि जब इस व्यक्ति का हमारे इस प्रश्न के उत्तर में किसी जगह हाथ नहीं पड़ा तो अपने धर्म गुरू (मुर्शिद) अर्थात् इल्यास को एलिया ठहरा दिया इस विचार से कि वह अकारण सत्यापन कर देगा कि मैं ही एलिया हूं। परन्तु यहूदियों के दुर्भाग्य से हज़रत यूहन्ना ने एलिया होने से इन्कार किया और स्पष्ट कहा कि मैं एलिया नहीं हूं। यहां इन दोनों वर्णनों में अन्तर यह था कि हज़रत मसीह ने हज़रत यूहन्ना अर्थात् यह्या नबी को अवास्तविक तौर पर अर्थात् बुरूज़ी तौर पर एलिया नबी ठहराया, परन्तु यूहन्ना ने वास्तविक तौर को दृष्टिगत रखकर एलिया होने से इन्कार कर दिया और दुर्भाग्यशाली यहूदियों को यह भी एक परीक्षा का सामना करना पड़ा कि शिष्य अर्थात् ईसा कुछ और कहता है और उस्ताद अर्थात् यह्या कुछ कहता है और दोनों के बयान परस्पर विरोधाभासी हैं। परन्तु इस स्थान पर हमारा केवल यह उद्देश्य है कि मसीह के नज़दीक दोबारा आने के वही अर्थ हैं जो मसीह ने स्वयं वर्णन कर दिए। मानो यह एक संशोधनीय समस्या थी जो मसीह की अदालत में निर्णय पा गई और मसीह ने इंजील मती अध्याय 17/10,11,12 में स्वयं अपने दोबारा आगमन को ऐलिया नबी के दोबारा आगमन से समानता दे दी तथा एलिया नबी के दोबारा आगमन के बारे में केवल यह कहा कि यूहन्ना को ही एलिया समझ लो। मानो एक बड़ा चमत्कार जो यहूदियों की दृष्टि में था कि इस विचित्र प्रकार से एलिया आसमान से उतरेगा उसे अपने दो शब्दों से मिट्टी में मिला दिया। इस प्रकार के अर्थ स्वीकार करने के लिए ईसाइयों में से वह

समुदाय अधिक योग्यता रखता है जो आसमान पर जाने से इन्कारी है। अत: हम उन अन्वेषक ईसाइयों का नीचे एक कथन उद्घृत करते हैं ताकि मुसलमानों को मालूम हो कि उनकी ओर से तो मसीह के उतरने के बारे में इतना शोर मचा हुआ है कि इस व्यर्थ विचार के समर्थन में तीस हज़ार मुसलमानों को काफ़िर ठहरा रहे हैं। परन्तु वे लोग जो मसीह को ख़ुदा जानते हैं उनमें से यह फ़िर्क़ा (समुदाय) भी है जो बहुत से तर्कों के साथ सिद्ध करता है कि मसीह हरगिज़ आसमान पर नहीं गया बल्कि सलीब से मुक्ति पाकर किसी अन्य देश की ओर चला गया और वहीं मृत्यु पा गया। अत: सुपर नेचुरल रेलिजन पृष्ठ 522 में इस बारे में जो इबारत है उसे अनुवाद सहित नीचे लिखते हैं और वह यह है-

The first explanation adopted by some able critics is that Jesus did not really die on the cross but being taken down alive and his body being delivered to friends, he subsequently revived. In support of this theory it is argued that Jesus is represented by Gospels as expiring after having been but three or six hours upon the cross which would have been but unprecedentedly rapid death. It is affirmed that only the hands and not the feet were nailed to

पहली तफ़्सीर जो कुछ योग्य अन्वेषकों ने की है वह यह है कि यसू वास्तव में सलीब पर नहीं मरा बल्कि सलीब से जीवित उतार कर उसका शरीर उसके दोस्तों के सुपुर्द किया गया और वह अन्तत: बच निकला। इस आस्था के समर्थन में ये तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं कि इंजीलों के बयान के अनुसार यसू सलीब पर तीन घंटे या छ: घंटे रह कर मर गया, परन्तु सलीब पर ऐसी शीघ्रता की मृत्यु कभी पहले घटित नहीं हुई थी। यह भी स्वीकार किया जाता है कि केवल उसके हाथों पर कीलें ठोकी गईं थीं और पांव पर कीलें नहीं लगाई

the cross. The crucifragian not usually accompanying crucifixion is dismissed as unknown to the three synoptits and only inserted by the fourth evangelist for dogmatic reasons and of course the lance disappears with the leg- breaking. Thus the apparent death was that profound faintness which might well fall upon an organization after some hours of physical and mental agony on the cross, following the continued strain and fatigue of the previous night. As soon as he had sufficiently recovered it is supposed that Jesus visited his disciples a few times to re-assure them, but with pre-caution on account of the Jews, and was by them believed to have risen from the dead, as indeed he himself may likewise have supposed, reviving as he had

गई थीं। इसलिए कि यह आम नियम न था कि प्रत्येक सलीब दिए गए की टांग तोड़ी जाए। इसलिए तो इंजील के लेखकों ने तो इसकी कुछ चर्चा नहीं की और चौथे ने भी केवल अपनी वर्णन शैली को पूर्ण करने के लिए इस बात को वर्णन किया और जहां टांग तोड़ने की चर्चा नहीं है तो साथ ही बर्छी की घटना भी न होने जैसी हो जाती है। अत: प्रत्यक्ष तौर पर जो मृत्यु घटित हुई वह एक अत्यन्त मूर्छावस्था थी जो कि छ: घण्टे के शारीरिक एवं मानसिक आघातों के बाद उसके शरीर पर पड़ी। क्योंकि पिछली रात भी निरन्तर कष्ट और थकावट में गुज़री थी। जब उसे पुन: पर्याप्त स्वास्थ्य प्राप्त हो गया तो अपने हवारियों को पुन: विश्वास दिलाने के लिए कई बार मिला, परन्तु यहूदियों के कारण बहुत सावधानी की जाती थी। हवारियों ने उस समय यह समझा कि यह मरकर जीवित हुआ है और चूंकि मौत की सी मूर्च्छा तक पहुंच कर वह

done from the faintness of death. Seeing however that his death had set the crown upon his work the master withdrew into impenetrable obscurity and was heard no more.

Gfrorer who maintains the theory of Scheintod with great ability thinks that Jesus had believers amongst the rulers of the Jews who although they could not shield him from the opposition against him still hoped to save him from death. Joseph, a rich man, found the means of doing so. He prepared the new sepulchre close to the place of execution to be at hand, begged the body from Pilate - the immense quantity of spices bought by Nicomedus being merely to distract the attention of the Jesus

फिर स्वस्थ हुआ। इसलिए संभव है कि उसने स्वयं भी वास्तव में यही समझा हो कि मैं मर कर फिर जीवित हुआ हूं। अत: जब उस्ताद ने देखा कि इस मौत ने मेरे कार्य को पूर्ण कर दिया है तो वह फिर किसी अज्ञात, एकान्त तथा ऐसे स्थान पर चला गया जहां से उसकी प्राप्ति न हो सके और ग़ायब हो गया। गिफरोटर जिसने शिन्टोड के इस दृष्टिकोण का बड़ी योग्यता से समर्थन किया है। वह लिखता है कि यहूदियों के पदाधिकारियों के मध्य यसू के मुरीद (शिष्य) थे जो उसे यद्यपि इस विरोध से बचा नहीं सकते थे तथापि उन को आशा थी कि हम उसे मरने से बचा लेंगे। यूसुफ़ एक घनाढ्य व्यक्ति था। उसे मसीह को बचाने के साधन मिल गए। नई क़ब्र भी उस सलीब के स्थान के निकट ही उसने तैयार करा ली और शरीर भी पैलातूस से मांग लिया और निकोमीडस जो बहुत से मसाले खरीद लाया था तो वे केवल यहूदियों

being quickly carried to the sepulchre was restored to life by their efforts.

He interprets the famous verse John xx : 17 curiously, The expression "I have not yet ascended to my father." He takes as meaning simply the act of dying "going to heaven" and the reply of Jesus is

I am not yet dead, Jesus sees his desciples only a few times mysteriously and believing that he had set the final seal to the truth of his work by his death he then retires into impenetrable gloom Das Heiligthum and die Wabrhcit p 107 p 231 (Pp. 523 of the Supernatural religion)

का ध्यान हटाने के लिए थे और यसू के शीघ्रता से क़ब्र में रखा गया तथा इन लोगों के प्रयास से वह बच गया। गिफ़रोरर. ने यूहन्ना अध्याय20/17 की प्रसिद्ध आयत की विचित्र तफ़्सीर की है। वह लिखता है कि मसीह का जो यह वाक्य है कि मैं अभी अपने बाप के पास नहीं गया। इस वाक्य में आसमान पर जाने से अभिप्राय केवल मरना है और यसू ने जो यह कहा कि मुझे न छुओ क्योंकि मैं अभी तक मांस और ख़ून हूं। इसमें मांस और ख़ून होने से भी यही अभिप्राय है कि मैं अभी मरा नहीं। यसू इस घटना के बाद गुप्त तौर पर कई बार अपने हवारियों को मिला और जब उसे विश्वास हो गया कि उसकी मृत्यु ने उस के कार्य की सच्चाई पर अन्तिम मुहर लगा दी है तो वह फिर किसी ऐसे स्थान पर चला गया जहां से उसकी प्राप्ति न हो सके। देखो पुस्तक सुपरनेचुरल रेलीजन, पृष्ठ-523

और स्मरण रहे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के विषय को मुसलमान ईसाइयों से अधिक समझ सकते हैं, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में उसकी मृत्यु की बार-बार चर्चा है, किन्तु कुछ मूर्खों को यह धोखा लगा हुआ है कि पवित्र क़ुर्आन की इस आयत में अर्थात्

وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ط (अन्निसा - 158)

में शब्द شُبِّہ से अभिप्राय यह है कि हज़रत ईसा के स्थान पर किसी और को सूली दी गई और वे विचार नहीं करते कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जान प्यारी होती है। इसलिए यदि कोई अन्य व्यक्ति हज़रत ईसा के स्थान पर सलीब दिया जाता तो सलीब देने के समय पर वह अवश्य शोर मचाता कि मैं तो ईसा नहीं हूं और कई तर्क और कई अन्तर करने वाले रहस्यों को प्रस्तुत करके स्वयं को अवश्य बचा लेता, न यह कि बार-बार ऐसे शब्द मुंह पर लाता जिनसे उस का ईसा होना सिद्ध होता। रहा शब्द شبّہ لَھُمْ तो इसके वे अर्थ नहीं हैं जो समझे गए हैं और न उन अर्थों के समर्थन में क़ुर्आन और हदीस-ए-नबविया से कुछ प्रस्तुत किया गया है बल्कि ये अर्थ हैं कि मृत्यु की घटना को यहूदियों पर सन्देहात्मक किया गया। वे यही समझ बैठे कि हम ने क़त्ल कर दिया है। हालांकि मसीह क़त्ल होने से बच गया। मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कह सकता हूं कि इस आयत में شبِّہ لھم के यही अर्थ हैं और यह अल्लाह की सुन्नत (नियम) है। ख़ुदा जब अपने प्रेमियों को बचाना चाहता है तो विरोधियों को ऐसे ही धोखे में डाल देता है। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सौर गुफ़ा में छुपे तो वहां एक प्रकार के شبِّہ لھم से ख़ुदा ने काम लिया। अर्थात् विरोधियों को इस धोखे में डाल दिया कि उन्होंने सोचा कि इस गुफ़ा के मुंह पर मकड़ी ने अपना जाला बुना हुआ है और कबूतरी ने अण्डे दे रखे हैं। इसलिए कैसे संभव है कि इस में मनुष्य प्रवेश कर सके और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस गुफ़ा में जो क़ब्र के समान थी तीन दिन रहे। जैसा कि हज़रत मसीह भी अपनी शामी क़ब्र में जब मूर्च्छा की अवस्था में दाखिल किए गए तीन दिन ही रहे थे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

मुझे यूनुस पर श्रेष्ठता न दो। यह भी उस समरूपता की ओर संकेत था क्योंकि गुफ़ा में प्रवेश करना तथा मछली के पेट में प्रविष्ट होना ये दोनों घटनाएं परस्पर मिलती है। अत: श्रेष्ठता का इन्कार इसी कारण से है न कि हर एक पहलू से। इसमें क्या सन्देह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न केवल यूनुस से बल्कि प्रत्येक नबी से श्रेष्ठ हैं।

अत: कहने का सारांश यह है कि अल्लाह तआला की सदैव की सुन्नतों एवं आदतों में से एक यह भी है कि जब विरोधी उसके नबियों और रसूलों को क़त्ल करना चाहते हैं तो उनको उनके हाथ से इस प्रकार भी बचा लेता है कि वे समझ लेते हैं कि हमने उस व्यक्ति को मार दिया, हालांकि मौत तक उसकी नौबत नहीं पहुंचती और या वे समझते हैं कि अब वह हमारे हाथ से निकल गया, हालांकि वहीं छुपा हुआ होता है और उनकी उद्दण्डता से बच जाता है। अत: شُبِّهَ لَهُمْ के यही मायने हैं और यह वाक्य شُبِّهَ لَهُمْ केवल हज़रत मसीह से विशेष नहीं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब आग में डाले गए तब भी यह ख़ुदा की आदत प्रकट हुई। इब्राहीम आग से अलग नहीं किया गया और न आसमान पर चढ़ाया गया परन्तु आयत

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا (अलअंबिया - 70)

के अनुसार आग उसको जला न सकी। इसी प्रकार यूसुफ़ भी जब कुएं में फेंका गया आसमान पर नहीं गया, बल्कि कुआँ उसे मार न सका और इब्राहीम का प्यारा पुत्र इस्माईल भी ज़िब्ह के समय आसमान पर नहीं रखवाया गया था बल्कि छुरी उसको ज़िब्ह न कर सकी। ऐसा ही हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सौर गुफ़ा में घिराव के समय आसमान पर नहीं गए बल्कि निर्दय शत्रुओं की आंखें उनको न देख सकीं। इसी प्रकार मसीह भी सलीब के समय आसमान पर नहीं गया, बल्कि सलीब उसे क़त्ल नहीं कर सकी। निष्कर्ष यह कि इन समस्त नबियों में से कोई भी संकटों के समय आकाश पर नहीं गया हां आकाशीय फ़रिश्ते उनके पास आए और उन्होंने सहायता की। ये घटनाएं बहुत स्पष्ट हैं और उन से स्पष्ट तौर पर सबूत मिलता है कि हज़रत मसीह आसमान

पर नहीं गए और उनका उसी प्रकार का रफ़ा हुआ जैसा कि इब्राहीम और समस्त नबियों का हुआ था तथा वे अन्ततः मृत्यु पा गए। इसलिए आने वाला मसीह इसी उम्मत में से है और ऐसा ही होना चाहिए था ताकि दोनों सिलसिले अर्थात् मूस्वी सिलसिला और मुहम्मदी सिलसिला अपने प्रारंभिक और अन्तिम की दृष्टि से एक दूसरे के अनुसार हों। अत: स्पष्ट है कि जिस ख़ुदा ने इस दूसरे सिलसिले में मूसा के मसील (समरूप) से प्रारंभ किया इस से उसका स्पष्ट इरादा मालूम होता है कि वह इस सिलसिले को मसीह के मसील पर समाप्त करेगा, जब कि उसने फ़रमा दिया कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मूसा का मसील है और यह सम्पूर्ण सिलसिला मूस्वी ख़िलाफ़त के सिलसिले के समान है तो इस में क्या सन्देह रह गया कि इस सिलसिले का अन्त मसीह के मसील पर होना चाहिए था। किन्तु अब ये लोग जो मौलवी कहलाते हैं अपने विचारों को छोड़ नहीं सकते। ये उस मसीह के प्रतीक्षक हैं जो पृथ्वी को ख़ून से भर देगा तथा उन लोगों को पृथ्वी के बादशाह बना देगा। यही धोखा यहूदियों को लगा था, जिन्होंने हज़रत ईसा को स्वीकार नहीं किया। जैसा कि 'हिस्ट्री आफ दी क्रिश्चियन चर्च फार थ्री सेन्चरीज़' लेखक रवेन्द्र जे.जे ब्लाटी डी.डी. पृष्ठ-117 में यह इबारत है-

इस समस्त घटनाओं से ज्ञात होता है कि यहूदियों को मसीह के आने की कितनी प्रतीक्षा थी, वे किस प्रकार मसीह की जमाअत में सम्मिलित होने के लिए तैयार थे, किन्तु उनको मसीह के आगमन के संबंध में एक धोखा लगा हुआ था। नबियों की भविष्यवाणियों के ग़लत मायने समझ कर वे ये समझते थे कि क़ौमों पर विजयी होने वाला मसीह तथा पहले युग के युद्ध के सेनापतियों के समान अपनी क़ौम के लिए युद्ध करेगा और अत्याचारियों के पंजे से उनको मुक्त करेगा जो कि दार्शिनिकों की भांति उन पर शासक थे।

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अफ़ल्लाहु अन्हु, क़ादियान